मन्युं हरेंद्र धात्र्याः क्षिप कुलिशं शैलपक्षभंगाय॥ शक्रः कृतमित्यु
क्त्वा मा भैरिति वसुमतीमाह॥ ६॥ किं त्वनिलदहनसुरपतिवरुणाः
सदसत्फलाः ववबोधार्थं॥ प्राग्द्वित्रिचतुर्भागेषु दिननिशोः कंपयि
ष्यंति॥ ७॥ चत्वार्यार्यम्णाद्यान्यादित्यं मृगशिरोश्वयुक् चेति॥ मंड
लमेतद्वायव्यमस्य रूपाणि सप्ताहात्॥ ८॥ धूमाकुलीकृताशेन
भसि नभस्वान् रजः क्षिपन् भौमं॥ विरुजन् द्रुमांश्च विचरति रवि
पटुकरावभासीच॥ ९॥ वायव्ये भूकंपे सस्यांबुवनौषधीक्षयोभि
हितः॥ श्वयथुश्वासोन्मादज्वरकासभवा वणिक् पीडा॥ १०॥ रू
पायुधभृद्वैद्याः स्त्रीकविगांधर्वपण्यशिल्पिजनाः॥ पीड्यंते सौ
राष्ट्रककुरुमगधदशार्णमत्स्याश्च॥ ११॥ पुष्याग्नेयविशाखाभरणी
पित्र्याजभाग्यसंज्ञानि॥ वर्गो हौतभुजोऽयं करोति रूपाण्यथैता
नि॥ १२

हे इंद्र पर्वत पक्षके नाशार्थ वज्र छोडो और पृथ्वीका शोक दूर करो· ऐसी ब्र
ह्मदेवकी आज्ञा होतेही तैसे किया ऐसा इन्द्र ब्रह्मदेवके आगे बोलके हे भू
मि तुम पर्वतनसे भय मत मानो ऐसा भाषण करते भए॥ ६॥ परंतु वायु· अ
ग्नि· इन्द्र· वरुण· यह लोकको होनेवाला शुभाशुभ फलका ज्ञान पूर्वमे
होय इसवास्ते दिनरात्र इनके चार भाग करके वह चारो चार भागमे तु
मको कंपायमान करेंगे (दिनके पूर्वार्द्धमे वायु कंपित करेगा· दि· उत्तरा
र्द्धमे अग्नि॰ रात्रीके पूर्वार्द्धमे इंद्र· रा· उत्तरार्द्धमे वरुण कंपित करेगा)॥ ७॥
वायु· अग्नि· इंद्र कहिये आकाश· वरुण कहिये जल· यह चार तत्त्व पृथ्वी
तत्त्वमे युक्त होते हैं· तब भूकंप होता है॥ उत्तरा· हस्त· चित्रा· स्वाती पुन
र्वसु· मृगशीर्ष· अश्विनी· यह सात नक्षत्रका वायुमंडल होता है यह नक्ष
त्रमे दिनके पूर्वार्द्धमे भूमिकंप होय तो सात दिनमे यह वक्ष्यमाण चिन्ह
होते हैं॥ ८॥ धूमसे व्याप्त दिशा हैं जिस्मे ऐसे आकाशमे वायु· भूमिसंबंधी
धूली उडावते और वृक्ष तोडते फिरे· सूर्य शीत किरण भास होय॥ ९॥ वायूसे
भूकंप होय तो· धान्य· उदक· वनौषधी इनका क्षय होता है· सूज· श्वास
उन्माद ज्वर· काश· इनसे वैश्योंको पीडा होती है॥ १०॥ सुरूप· शस्त्र धा
रण करनेवाले· वैद्य· स्त्री· कवि· गायक· व्यापारी· शिल्पि· इन लोकको
पीडा होती है और सौराष्ट्र· कुरु· मगध· दशार्ण· मत्स्य· यह देशको भी पी
डा होती है॥ ११॥ पुष्य· कृत्तिका· विशाखा· भरणी· मघा· पूर्वाभाद्रपदा· पूर्वाफा· यह
नक्षत्र अग्निमंडल होता है· इस मंडलमे दिनके उत्तरार्धमे भूकंप होय तो उसके चिन्ह
आगे कहते हैं· १२

तारोल्कापातावृतमदीप्तमिवांबरं सदिग्दाहं॥ विचरति मरुत्सहायः सप्तार्चिः सप्तदिवसांतः॥ १३॥ आग्नेये ऽबुदनाशः सलिलाशयसंक्षयो नृपतिवैरं॥ दद्रुविचर्चिकाज्वरविसर्पिकाः पांडुरोगश्च॥ १४॥ दीप्तौजसः प्रचंडाः पीड्यंते चाश्मकांगवाल्हीकाः॥ तंगणकलिंगवंगद्रविडाः शबराश्चानेकविधाः॥ १५॥ अभिजिच्छ्रवणधनिष्ठाप्राजापत्यैंद्रवैश्वमैत्राणि॥ सुरपतिमंडलमेतद्भवंति चास्य स्वरूपाणि॥ १६॥ चलिताचलवर्ष्माणो गंभीरविराविणस्तडित्वंतः॥ गवलालिकुलाहिनिभा विसृजंति पयः पयोवाहाः॥ १७॥ ऐंद्रं श्रुतिकुलजातिख्यातावनिपालगणपविध्वंसि॥ अतिसारगलग्रहवदनरोगकृच्छर्दिकोपाय॥ १८॥ काशियुगंधरपौरवकिरातकीराभिसारहलमद्राः॥ अर्बुदसुवास्तुमालवपीडाकरमिष्टवृष्टिकरं॥ १९॥ पौष्णाप्याद्राश्लेषामूलाहिर्बुध्न्यवरुणदेवानि॥ मंडलमेतद्वारुणमस्यापि भवंति रूपाणि॥ २०॥

तारा और उल्का इनके पतनसे व्याप्त॰ दिग्दाहसे प्रदीप्त ऐसा आकाश रहते वायु युक्त अग्नि॰ सात दिनमे फिरेगा॥ १३॥ अग्नि भूकंप होय तो मेघनाश॰ जलसंचयका नाश राजोंका वैर॰ दद्रू (दाद गजकर्ण इत्यादि) विचर्चिका (खजूली) ज्वर॰ विसर्पिका (त्वचारोगवि॰) पांडुरोग॰ यह होता है॥ १४॥ तेजस्वी॰ क्रोधी॰ इनको पीडा होती है॰ अश्मक॰ अंग॰ वाल्हीक॰ तंगण॰ कलिंग॰ वंग॰ द्राविड॰ शबर॰ यह लोक बहुत प्रकारकी पीडा पावते हैं॥ १५॥ अभिजित्॰ श्रवण॰ धनिष्ठा॰ रोहिणी॰ ज्येष्ठा॰ उत्तराषाढा॰ अनुराधा॰ यह सात नक्षत्रका इंद्रमंडल॰ इस्मे भूकंपके चिन्ह होते हैं सो कथन करते हैं॥ १६॥ चंचल पर्वतके समान॰ गंभीर (मधुर) शब्द करनेवाले॰ बिजुलीसे युक्त॰ महिषशृंग॰ भ्रमरपंक्ति॰ सर्पके समान काले॰ ऐसे मेघ जलवृष्टि करेंगे॥ १७॥ यह इंद्रमंडलपर भूकंप होय तो कुलजातीसे प्रसिद्ध॰ कीर्तियुक्त राजा॰ समुदायमे मुख्य॰ इनका नाश होता है॰ अतिसार॰ गलरोग॰ मुखरोग॰ छर्दि (वांति) यह रोग होते हैं॥ १८॥ काशी॰ युगंधर॰ पौरव॰ किरात॰ कीर॰ अभिसार॰ हलमद्र अर्बुद॰ सुवास्तु॰ मालव॰ यह देशके लोकको पीडा होती है॰ और वृष्टि उत्तम होती है॥ १९॥ रेवती॰ पूर्वाषाढा॰ आर्द्रा॰ आश्लेषा॰ मूल॰ उत्तराभाद्रपदा॰ शततारका यह वारुणमंडल है॰ इनका भी सातदिनके पूर्वमे चिन्ह होता है॥ २०॥ इस नक्षत्रपर भूकंप होय तो नीलकमल॰ भ्रमर अत्यंत काला॰

नीलोत्पलालिभिन्नांजनत्विषो मधुररावीणो बहुलाः॥ तडिदुद्भासितदेहा धारांकुशवर्षिणो जलदाः॥२१॥ वारुणमर्णवसरिदाश्रितघ्नमतिवृष्टिदं विगतवैरं॥ गोनर्दचेदिकुकुरान्किरातवैदेहकान् हंति॥२२॥ षड्भिर्मासैः कंपो द्वाभ्यां पाकं च याति निर्घातः॥ अन्यानप्युत्पातान्जगुरन्ये मंडलैरेतैः॥२३॥ उल्काहरिश्चंद्रपुरं रजश्च निर्घातभूकंपककुप्प्रदाहाः॥ वातोतिचंडो ग्रहणं रवींद्वोर्नक्षत्रताराग णवैकृतानि॥२४॥ व्यभ्रे वृष्टिर्वैकृतं वा तवृष्टिर्धूमोऽनग्नेर्विस्फुलिंगार्चिषो वा॥ वन्यं सत्वं ग्राममध्ये विशेद्वा रात्रावैंद्रं कार्मुकं दृश्यते वा॥२५॥ संध्याविकाराः परिवेषखंडा नद्यः प्रतीपा दिवि तूर्यनादाः॥ अन्यच्च यत्स्यात्प्रकृतेः प्रतीपं तन्मंडलैरेव फलं नियाद्यं॥२६॥ हंत्यैन्द्रो वायव्यं वायव्यो वा पुरश्चाप्यैंद्रमेव मन्योन्यं॥ वारुणहौतभुजावपि वेलानक्षत्रजाः कंपाः॥२७॥ ॥ ॥

काजल इनके समान, मधुरशब्द करनेवाले, बिजुलीसे नजर पडनेवाले ऐसे बहुत मेघ बडे धारासे वृष्टि करते हैं॥२१॥ यह वारुणमंडल समुद्र और नदी इनके आश्रयसे रहनेवालोंका नाश करनेवाला, अतिवृष्टि करनेवाला, द्वेषरहित करनेवाला ऐसा होता है, गोनर्द, चेदि, कुकुर, किरात, वैदेह इस देशमेके लोकका नाश करता है॥२२॥ भूमिकंपका फल ६ महिनेसे और निर्घात (तुफान हवा किंवा मेघगर्जना) इनका फल दो महिनेसे होता है, अन्य भी उल्कादि उत्पातका फल यह वाय्वादि मंडलके समान जानना, ऐसा अन्य गर्गादि मुनि कहते हैं॥२३॥ उल्का, गंधर्वनगर, रज, निर्घात, भूकंप, दिग्दाह, प्रचंडवायू, सूर्य चन्द्रको ग्रहण, नक्षत्र तारागण इनको विकार॥२४॥ अभ्र न होते वृष्टि, बडे वायूसे युक्त वृष्टि, अग्नि न रहते धूम, ज्वाला का अग्निकण, आरण्य पशूका गांवमे प्रवेश, रात्रीमे इंद्रधनुष्य नजर पडे॥२५॥ संध्यासमयका विकार, टूटा मंडल, नदीके प्रतिकूल प्रवाह, स्वर्गमे वाद्यध्वनि, यह उत्पात और अन्य भी जो प्रकृति (स्वाभाविक रहना) उससे विरोध होना, यह भी उत्पात स्वरूपही है, यह सर्व उत्पातका फल पूर्वोक्त वायव्यादि मंडलके फल समान कहना॥२६॥ वायव्यमंडलपर भया जो भूकंपक, उस्का ऐंद्रमंडलपरका भूकंप नाश करता है, तैसेही ऐंद्रमंडलके भूकंपका वायुमंडल भूकंप नाश करता है, इसी रीतिसे वारुण और अग्नि यह भी परस्परका नाश करते हैं, वेला भूकंप (श्लोक ७) नक्षत्र भूकंप (श्लो० ८

प्रथितनरेश्वरमरणव्यसनान्याग्नेयवायुमंडलयोः॥क्षुद्भयमरका
वृष्टिभिरूपताप्यंते जनाश्चापि॥२८॥वारुणपौरंदरयोः सुभिक्ष
शिवरृष्टिहार्दयोलोके॥गावोऽतिभूरिपयसोनिवृत्तवैराश्च भूपा
लाः॥२९॥पक्षैश्चतुर्भिरनिलस्त्रिभिरग्निर्देवराट्‌चसप्ताहात्॥
सद्यःफलतिचवरुणो येषुनकालोऽद्भुतेषूक्तः॥३०॥चलयतिप
वनःशतद्वयंशतमनलोदशयोजनान्वितं॥सलिलपतिरशीति
संयुतंकुलिशधरोऽभ्यधिकंचषष्टिकं॥३१॥त्रिचतुर्थसप्तमदिने
मासेपक्षेतथात्रिपक्षेच॥यदिभवतिभूमिकंपःप्रधाननृपनाशनो
भवति॥३२॥ ॥इतिभूमिकंपलक्षणम्॥ ॥अथउल्कालक्षणं॥
दिविभुक्तशुभफलानांपततांरूपाणियानितान्युल्काः॥धिष्ण्यो
ल्काशनिविद्युत्तारा इतिपंचधाभिन्नाः॥१॥उल्कापक्षेणफलंत
द्वद्धिष्ण्याशनिस्त्रिभिःपक्षैः॥विद्युदहोभिःषड्भिस्तद्वत्तारा विपाच
यति॥२॥

यहपर स्परकानाशकरतेहैं॰ दिनकेपूर्वार्द्धमे भयाभूकंप वायव्य औरउस
वखत श्रवणनक्षत्रहोयतो ऐंद्रभूकंप ऐसाभयातो कोईकाभी फलहोता
नही॰२७॥आग्नेयमंडलमे वायुवेलापर भूकंपहोयतो प्रख्यातकोमरण
औरदुःखहोगा॰ और दुर्भिक्ष॰ महामारी॰ अवर्षण इसकरकेसर्वलो
कभीसंतप्तहोंगे॥२८॥वारुणमंडलमे ऐंद्रवेलापरभूकंपहोयतो सुभि
क्ष॰कल्याण॰ वृष्टि॰ संतोष यहलोकमेहोगा॰औरगौ बहुत दूधदेंगी॰रा॰
आवैरछोडेंगे॥२९॥ जिस अद्भुतके विषे फलकाकाल कथनकियानही
वहदेहस्फुरणादि अद्भुतकेविषे यहवक्ष्यमाण फलकालनियमलेना॰
वायुमंडलमे अद्भुतहोयतो उसका शुभाशुभ दोमहिनेसेहोताहै॰ अग्नि
मंडलमे डेढमहिनेसे॰ ऐंद्रमंडलमे सातमहिनेसे॰ वारुण मंडलमेत
त्काल॰ ऐसेशुभाशुभफलहोतेहैं॥३०॥ वायूमंडलमे भूकंपहोयतो भूमी
दोसेयोजनचलनपावतीहै अग्निमंडलमे भूकंप होयतो एकसेदसयोज
न॰ वरुणमंडलमेहोयतो एकसेअस्सीयोजन॰ ऐंद्रमंडलमे भूकंपहोय
तो एकसेसाठयोजन॰ ऐसेभूमीचलनपावतीहै॥३१॥ भूमिकंपहोनेके
बाद दुसरा भूमिकंप३।४।७ इतनेदिनसे॰ एकमहिनेसे॰ पंद्र दिनसे॰ डेढम
हिनेसे जोहोयतो श्रेष्ठराजोंकानाशहोताहै॥३२॥इतिबृहत्संहितायांभूमिकं
पलक्षणंनामद्वात्रिंशोध्यायः॥३२॥ स्वर्गमेशुभफलभोगके नीचेगिरनेवाले
केजोरूपसोउल्काहोतीहै॰वह धिष्ण्या॰उल्का॰अशनी॰बिजुली॰तारा यह भे
दसेपांचप्रकारकीहै॥१

तारा फलपादकरी फलार्धदात्री प्रकीर्त्तिता धिष्ण्या ॥ तिस्रः सं
पूर्णफला विद्युदथोल्काशनिश्चेति ॥ ३ ॥ अशनिः स्वनेन महता
नृगजाश्वमृगाश्मवेश्मतरुपशुषु ॥ निपतति विदारयंती ध
रातलं चक्रसंस्थाना ॥ ४ ॥ विद्युत्सत्वत्रासंजनयंती तटतटः
स्वना सहसा ॥ कुटिलविशाला निपतति जीवेंधनराशिषु ज्व
लिता ॥ ५ ॥ धिष्ण्या कृशाल्पपुच्छा धनूंषि दश दृश्यते ऽतरा
भ्यधिकं ॥ ज्वलितांगारनिकाशा द्वौ हस्तौ सा प्रमाणेन ॥ ६ ॥
तारा हस्तं दीर्घा शुक्ला ताम्राब्जतंतुरूपा वा ॥ तिर्यगधश्चोर्ध्वं
वा याति वियत्युह्यमानेव ॥ ७ ॥ उल्का शिरसि विशाला निपतंती
वर्धते प्रतनुपुच्छा ॥ दीर्घा भवति च पुरुषं भेदा बहवो भवंत्यस्या
॥ ८ ॥ प्रेतप्रहरणखरकरभनक्रकपिदंष्ट्रिलांगलमृगाभाः ॥ गो
धाहिधूमरूपाः पापा याचोभयशिरस्का ॥ ९ ॥ ७ ॥ ९ ॥ ॥

उल्का और धिष्ण्या · यह १५ दिनसे फल देती हैं · अशनि डेढ महिनेसे फल · वि
द्युत् और तारा ६ दिनसे फल देती है ॥ २ ॥ तारा उक्त फलका चतुर्थांश फल देती
है · धिष्ण्या उक्त फलका अर्द्ध फल देती है · विद्युत् · उल्का · अशनि · यह तीन
संपूर्ण फल देती हैं ॥ ३ ॥ बडा शब्द करके · मनुष्य · हाथी · अश्व · आरण्य पशु ·
पाषाण · गृह · वृक्ष · गवादि पशु · इनके विषे चक्रके समान फिरके पृथ्वीका वि
दारण करते जो गिरती है · सो अशनि नामक उल्का जानना ॥ ४ ॥ प्राणिमात्रको
त्रास करते तटतट् शब्द करके टेढी विस्तीर्ण और प्रज्वलित ऐसी प्राणी औ
र काष्ठसमुदाय इनके ऊपर गिरती है · वह विद्युत् नामक उल्का जानना ॥ ५ ॥
दुर्बल · अल्पपुच्छ कि · प्रज्वलित · अंगारेके समान जो प्रथम दो हाथ उसनंतरलो
पके बीचमें दस धनुष्य (४० हाथ) अधिक लंबी नजर पडती है · वह धिष्ण्या
नामक उल्का जानना ॥ ६ ॥ एक हाथ लंबी · शुभ्र वा ताम्रवर्ण · कमलतंतु
के समान (सूक्ष्म) टेढी · नीचे वा ऊपर होयके आकाशमे जाती है · वह ता
रा नामक उल्का जानना ॥ ७ ॥ मस्तकके विषे विस्तीर्ण · गिरते २ बढे · सूक्ष्म
पुच्छकी · पुरुषप्रमाण (साढे तीन हाथ) लंबी होय ऐसी उल्का है · इसके ब
हुत भेद होते हैं ॥ ८ ॥ प्रेत · शस्त्र · गर्दभ · ऊंट · मगर · वानर · सूवर · नाग
र · मृग · इनके समान · गोह · सर्प · धूम · इनके समान उल्का अशुभ और
दूनो तरफ मस्तक ऐसी जो उल्का वह भी अशुभ ॥ ९ ॥ ध्वज · मत्स्य · ग
ज · पर्वत · कमल · चन्द्र · अश्व · गरमचांदी · हंस · इनके समान · और

ध्वजझषकरिगिरिकमलेंदुतुरगसंतप्तरजतहंसाभाः। श्रीवत्स
वज्रशंखस्वस्तिकरूपाः शिवसुभिक्षाः॥१०॥ अंबरमध्याद्
बह्व्यो निपतंत्यो राजराष्ट्रनाशाय॥ बंभ्रमती गगनोपरि विभ्रम
माख्याति लोकस्य॥११॥ संस्पृशती चंद्रार्कौ तद्विसृता वा सभू
प्रकंपा च॥ परचक्रागमनृपवधदुर्भिक्षावृष्टिभयजननी॥१२॥
पौरेतरघ्नमुल्काऽपसव्यकरणं दिवाकरहिमांश्वोः॥ उल्का शुभदा
पुरतो दिवाकरविनिःसृता यातुः॥१३॥ शुक्ला रक्ता पीता कृष्णा
चोल्का द्विजादिवर्णघ्नी॥ क्रमशश्चैतान् हन्युर्मूर्धोरःपार्श्वपु
च्छस्थाः॥१४॥ उत्तरदिगादिपतिता विप्रादीनामनिष्टदा रूक्षा
॥ ऋज्वी स्निग्धाखंडा नीचोपगता च तद्वृद्ध्यै॥१५॥ श्यामारु
णा च नीलासृग्दहनासितभस्मनिभा रूक्षा॥ संध्यादिनजा व
क्रा दलिता च परागमभयाय॥१६॥ नक्षत्रग्रहघाते तद्भक्तीनां
शाप निर्दिष्टा॥ उदये घ्नती रवींदू पौरेतरमृत्यवेऽस्ते वा॥१७॥

श्रीवत्स (विष्णुके हृदयपरका चिन्ह) वज्र शंख स्वस्तिक इनके समान उल्का शुभ और सुभिक्षकारक होती है॥१०॥ आकाशमध्यमेसे उल्का बहुत गिरे तो राजा और देश इनका नाश होता है. उल्का आकाशमें जो फिरे तो लोकको भ्रांति करती है॥११॥ चंद्रसूर्यको स्पर्श करनेवाली किंवा चंद्रसूर्यसे दूर और भूमी कंपायमान करे ऐसी उल्का शत्रुचक्रका आगमन राजाका वध दुर्भिक्ष अवर्षण इनका भय उत्पन्न करती है॥१२॥ उल्का सूर्यको अप्रदक्षिण करे तो नागरिकलोकका और चंद्रको अप्रदक्षिण करे तो नागरिकसे अन्य लोकका नाश करती है जो उल्का सूर्यके पाससे निकली सो यात्रा करनेवाले राजाके आगे गिरे तो शुभ होती है॥१३॥ शुक्ल रक्त पीत कृष्ण इस वर्णकी उल्का क्रमसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यह चार वर्णका नाश करती है और उसमें क्रमसे मस्तक उरस्थल पार्श्वभाग पुच्छ यह अंगसे गिरी उल्का ब्राह्मणादि चार वर्णका नाश करती है॥१४॥ उत्तरादि४ दिशामें गिरी और रूक्ष उल्का ब्राह्मणादि चार वर्णको अशुभ होती है (उत्तरमें गिरे तो ब्राह्मणको पूर्वमें क्षत्रियको दक्षिणमें वैश्यको पश्चिममें शूद्रको अशुभ होती है) वह उल्का सीधी निर्मल अखंड आकाशमेंसे नीचे आवनेवाली ऐसी होय के उत्तरादि पतित होय तो ब्राह्मणादिकोंको शुभ होती है॥१५॥ श्याम आरक्त नील रक्तवर्ण अग्निवर्ण कृष्ण भस्म इस वर्णकी और रूक्ष संध्यासमय और दिन इसमें भई वक्र खंडित ऐसी उल्का शत्रुके आवनेका भय करनेवाली होती है॥१६॥

भाग्यादित्यधनिष्ठामूलेषूल्काहतेषु युवतीनां ॥ विप्रक्षत्रियपीडा पु
ष्यानिलविष्णुदेवेषु ॥१८॥ ध्रुवसौम्येषु नृपाणामुग्रेषु सदारुणेषु
चौराणां ॥ क्षिप्रेषु कलाविदुषां पीडा साधारणे च हते ॥१९॥ कुर्व
न्त्येताः पतिता देवप्रतिमासु राजराष्ट्रभयं ॥ शक्रोपरि नृपतीनां गृ
हेषु तत्स्वामिनां पीडां ॥२०॥ आशाग्रहोपघाते तद्देश्यानां खले कृ
षिरतानां ॥ चैत्यतरौ संपतिता सत्कृतपीडां करोत्युल्का ॥२१॥ द्वा
रि पुरस्य पुरक्षयमथेंद्रकीले जनक्षयोऽभिहितः ॥ ब्रह्मायतने विप्रान्
विनिहन्याद्गोमिनो गोष्ठे ॥२२॥ क्ष्वेडास्फोटितवादितगीतोत्कुष्टस्वना
भवंति यदा ॥ उल्कानिपातसमये भयाय राष्ट्रस्य सनृपस्य ॥२३॥

नक्षत्र किंवा ग्रह उल्कासे उपहत (ताडित) रहने पूर्वोक्त नक्षत्र ग्रह व्यूहोक्त भक्तोंका नाश होताहै· उदयकालमे वा अस्तकालमे चंद्र सूर्यको उल्का ताडन करे तो क्रमसे नागरिक और यायी (आवनेवाला इनको मृत्यु होताहै· (सूर्य ताडित रहते नागरिकका और चंद्र ताडित रहते यायीका नाश) ॥१७॥ पूर्वा· पुनर्वसु· धनिष्ठा मूल· यह नक्षत्रोंकी योगतारा उल्काहत रहते स्त्रीको पीडा होती है· पुष्य· स्वाती· श्रवण· यह नक्षत्र उल्का ताडित रहते ब्राह्मण और क्षत्रिय इनको पीडा होतीहै ॥१८॥ रोहिणी· उत्तराफा० उत्तराषा० उत्तराभा० मृग· चित्रा· अनुराधा· रेवती· यह नक्षत्र उल्काहत होयतो राजोंको पीडा होतीहै· पूर्वाफा· पूर्वाषा० पूर्वाभा० मघा· भरणी· आर्द्रा· आश्लेषा· ज्येष्ठा· मूल· यह नक्षत्र उल्काहत होयतो चोरको पीडा होतीहै· अश्विनी· पुष्य· अभिजित्· हस्त· कृत्तिका· विशाखा· यह नक्षत्र उल्काहत होयतो कला जाननेवालेको पीडा होतीहै ॥ १९॥ यह पूर्वोक्त उल्का देवप्रतिमापर गिरे तो राजाको और लोकको भय करतीहै· शक्र (राजा) पर गिरे तो राजोंको भय· गृहपर गिरे तो गृहस्वामीको पीडा ॥२०॥ (सूर्य· शुक्र· भौम· राहु· शनि· चन्द्र· बुध· गुरु· यह क्रमसे पूर्वादि दिशाके स्वामी है) यह दिक्पतिको उपघात उल्का करे तो· अथवा दिशाओं रग्रह इनके ऊपर गिरे तो वह दिशामे रहनेवाले लोकको· और वह ग्रहके देशमे रहनेवालेको पीडा होतीहै· खल (खरिहान) पर गिरे तो कृषीलोकको पीडा होतीहै· चैत्यतरु (गांवमेका बडा वृक्ष) उसपर गिरे तो सज्जनको पीडा करतीहै ॥ २१॥ नगरके द्वारपर गिरे तो नगरका नाश होताहै· पुरद्वारके कीलपर गिरे तो लोकका नाश होताहै· ब्रह्मदेवके मंदिरपर गिरे तो ब्राह्मणका नाश होताहै· गोशालापर उल्का गिरे तो गौ पालनेवालेका नाश होताहै ॥ ॥२२॥ वीरोंका सिंहनाद अथवा सिंहका शब्द· बाहूका वा वक्षस्थलका ना

यस्याश्चिरं तिष्ठति खेऽनुषंगो दंडाकृतिः सा नृपतेर्भयाय ॥ याचो
ह्यते तंतुधृतेव खस्था या वा महेंद्रध्वजतुल्यरूपा ॥ २४ ॥ श्रेष्ठिनः
प्रतीपगा तिर्यगा नृपांगनाः ॥ हंत्यधोमुखी नृपान्ब्राह्मणानथोर्
ध्वगा ॥ २५ ॥ बर्हिपुच्छरूपिणी लोकसंक्षयावहा ॥ सर्पवत्प्रस
र्पिणी योषितामनिष्टदा ॥ २६ ॥ हंति मंडला पुरं छत्रवत्पुरोहितं ॥
वंशगुल्मवत्स्थिता राष्ट्रदोषकारिणी ॥ २७ ॥ व्यालसूकरोपमा
विस्फुलिंगमालिनी ॥ खंडशोऽथवा गता सस्वना च पापदा ॥ २८
सुरपतिचापप्रतिमा राज्यं नभसि विलीना जलदान्हंति ॥ पवन
विलोमा कुटिलं याता न भवति शस्ता विनिवृत्ता वा ॥ २९ ॥ अभि
भवति यतः पुरं बलं वा भवति भयं तत एव पार्थिवस्य ॥ निपतति
च यया दिशा प्रदीप्ता जयति रिपून्चिरात्तया प्रयातः ॥ ३० ॥ ३३ ॥

डनका शब्द· वाद्यका शब्द· गायनका शब्द इनके समान विद्युत्का शब्द गिर
नेके समय होय तो राजाको और राष्ट्रको भय होता है· ॥ २३ ॥ जिस उल्काका सं
बंध आकाशमे बहुत देरतक रहे· जो दंडके समान· आकाशमे तंतु धरकेर्
खींची जाती है और जो इंद्रध्वज (पताका) इसके समान· यह चार प्रकारकी
उल्का राजाको भयकारक होती है ॥ २४ ॥ उल्का जहांसे आई तहां फिर गई
तो श्रेष्ठि (मुख्य) इनका नाश करती है· उल्का तिरछी जाय तो राजस्त्रियोंका
नाश· अधोमुख जाय तो राजोंका नाश· ऊर्ध्वमुख जाय तो ब्राह्मणका नाश·॥
॥ २५ ॥ मोरके पुच्छ समान उल्का· लोकका नाश करती है· सर्पके समान
गमन करनेवाली उल्का स्त्रियोंका नाश करती है ॥ २६ ॥ जो उल्का गिरते ही मं
डलके समान होती है सो नगरका नाश करती है· जो उल्का छत्रके समान नजर
पडे सो पुरोहितका नाश करती है· जो वंशगुल्म (बांसका समूह) इसके समान न
जर पडे तो राष्ट्रका नाश करती है ॥ २७ ॥ सर्प और सूवर इसके समान· अग्निकणके
माला समान अथवा अनेक प्रकारसे गई और शब्दयुक्त ऐसी उल्का अशुभ
होती है ॥ २८ ॥ इंद्रधनुष्यके समान उल्का राज्य नाश करती है· जो उल्का आका
शमे उत्पन्न होयके और गुप्त भई सो मेघका नाश करती है· जो उल्का वायूको प्र
तिकूल· टेढी गई अथवा आगे जायके पुनः पीछे आवे सो उल्का शुभ नहीं· ॥ २९ ॥
जिस दिशाके तरफ उल्काके पास नगर किंवा सैन्य पराजय पावते है· वह दिशाके तरफ
राजोंको भय होता है· जिस दिशाके तरफ प्रदीप्त उल्का गिरती है वह दिशासे गया जो राजा
सो शीघ्र शत्रु जीतता है ॥ ३० ॥ इति बृहत्संहितायां उल्कालक्षणं नाम त्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥

॥इतिउल्कालक्षणम्॥ अथपरिवेषलक्षणं॥ ॥संमूर्छितारवींदोः
किरणाःपवनेनमंडलीभूताः॥ नानावर्णाकृतयस्तन्वभ्रेव्योम्निप
रिवेषाः॥१॥तेरक्तनीलपांडुरकापोताभ्राभशबलहरिशुक्लाः॥इं
द्रयमवरुणनिर्ऋतिश्वसनेशपितामहाग्निकृताः॥२॥धनदःक
रोतिमेचकमन्योन्यगुणाश्रयेणचाप्यन्ये॥प्रविलीयतेमुहुर्मुहु
रल्पफलःसोऽपिवायुकृतः॥३॥चाषशिखिरजततैलक्षीरजला
भःस्वकालसंभूतः॥अविकलवृत्तःस्निग्धःपरिवेषःशिवसुभिक्ष
करः॥४॥सकलगगनानुचारीनैकाभःक्षतजसंनिभोरूक्षः॥
असकलशकटशरासनशृंगाटकवत्स्थितःपापः॥५॥शिखिग
लसमेतिवर्षंबहुवर्णेनृपवधोभयंधूम्रे॥हरिचापनिभेयुद्धान्यशो
ककुसुमप्रभेचापि॥६॥वर्णेनैकेनयदाबहुलःस्निग्धःक्षुराभ्र
काकीर्णः॥स्वर्त्तौसद्योवर्षंकरोतिपीतश्चदीप्तार्कः॥७॥ ७ ॥ ॥

प्रसारित-वायूसे गोल भये ऐसे अनेकरंगके और अनेक आकारके सूर्यचंद्रके
किरण-थोडेअभ्रसेयुक्तऐसे आकाशमेनजरपडतेहैं-वहपरिवेषहोताहै॥१॥
वहरक्तादिवर्णपरिवेषइंद्रादिकृतहोतेहैं-रक्तवर्णपरिवेषइंद्रकृत-नीलवर्ण
यमकृत-थोडाशुक्लवरुणकृत-कपोतवर्ण निर्ऋतिकृत-मेघवर्ण वायुकृत
कृष्णश्वेतशिवकृत-हरिद्वर्णब्रह्मकृत-श्वेतवर्णअग्निकृत-इसप्रकारके
परिवेषजानना॥२॥कुबेर-मयूरकंठकेरंगसमानपरिवेषकरताहै-अन्यवह
इंद्रादिदेवपरस्परवर्णोकाआश्रयकरतेहैं-इसवास्ते वहपरिवेषअनेकवर्ण
नजरपडतेहैं-जोपरिवेष वारंवारगुप्तहोताहै-सोवायुकृत-अल्पफलदेनेवा
लाहै॥३॥संपूर्णगोल-निर्मल-नीलादिवर्णोका परिवेष शिशिरादिऋतूमे
कल्याणऔरसुखकारकहोतेहैं-सोयहनीलवर्ण शिशिरऋतूमे-चि
त्रवर्ण वसंतमे शुक्लवर्ण ग्रीष्ममे-तैलवर्णवर्षाऋतूमे-दुग्धवर्ण शरद
तूमे-जलवर्णहेमंतऋतूमे-यहवर्णयहऋतूमेशुभहोतेहैं॥४॥सर्वआका
शमेफिरनेवाला(उदयसेअस्ततकरहनेवाला-)अनेकवर्ण-रक्तकेसमान-रूक्ष-
खंडित-गाडीऔरधनुष्य-चतुष्पथ-इनकेसमानपरिवेषअशुभहोतेहैं॥५
॥मयूरकंठसदृशपरिवेषहोयतोअतिवृष्टिहोतीहै-बहुवर्णकाहोयतोराज
वध-धूम्रवर्णहोयतोभय-इंद्रधनुष्यकेसमानऔरअशोककेपुष्पसमानहो
यतोयुद्धहोतेहैं॥६॥शिशिरादिऋतूमेचाषादिवर्ण(श्लो०४)परिवेषहोय-
जोएकवर्णका-काला-स्निग्ध-छूरीकेसमान अभ्रसेव्याप्त-ऐसाहोयतो त

दीप्तविहंगमृगरुतः कलुषः संध्यात्रयोत्थितोऽतिमहान् भय
कृत्तडिदुल्काद्यैर्हतो नृपं हंति शस्त्रेण ॥ ८ ॥ प्रतिदिनमर्कहिमांश्वो
रहर्निशं रक्तयोर्नरेंद्रवधः ॥ परिविष्टयोरभीक्ष्णं लग्नास्तमयस्थ
योस्तद्वत् ॥ ९ ॥ सेनापतेर्भयकरो द्विमंडलो नातिशस्त्रकोपकरः ॥
त्रिप्रभृतिशस्त्रकोपं युवराजभयं नगररोधं ॥ १० ॥ वृष्टिस्त्र्यहेण
मासेन विग्रहो वा ग्रहेंदुभनिरोधे ॥ होराजन्माधिपयोर्जन्मर्क्षे वा
शुभो राज्ञः ॥ ११ ॥ परिवेषमंडलगतो रवितनयः क्षुद्रधान्यनाशकरः
॥ जनयति च वातवृष्टिं स्थावरकृषिकृन्निहंता च ॥ १२ ॥ भौमे कु
मारबलपतिसैन्यानां विद्रवोऽग्निशस्त्रभयं ॥ जीवे परिवेषगते पु
रोहितामात्यनृपपीडा ॥ १३ ॥ मंत्रिस्थावरलेखकपरिवृद्धिश्चंद्र
जे सुवृष्टिश्च ॥ शुक्रे यायिक्षत्रियराज्ञां पीडा प्रियं चान्नं ॥ १४ ॥ ॥

त्काल (उसीदिन) वृष्टिहोतीहै· औरजो पीतवर्ण तप्तसूर्यऐसा भीपरिवेषतत्का
लवृष्टिकरताहै ॥ ७ ॥ जिसपरिवेषकालमे सूर्यकेसन्मुखहोयके पक्षी और
आरण्यपशुरोदनशब्दकरतेहैं· सोमेला· उदय मध्यान्ह अस्त यह तीनसं
ध्यामे उत्पन्नभया· ऐसा· अतिविस्तीर्ण· ऐसापरिवेष भयकारकहोताहै·
विद्युत् औरउल्का औरत्रिविधउत्पात इनकरकेताडितऐसापरिवेष श
स्त्रसेराजाकावधकरताहै ॥ ८ ॥ प्रतिदिन दिनरात आरक्तऔरपरिवेषयु
क्तसूर्यचन्द्र होंयतो राजवधहोताहै वहीपरिवेषयुक्तचंद्रसूर्य वारंवार राजाकेज
न्मलग्नमे वा सप्तमस्थानमे होयतो वहराजाकावधहोताहै ॥ ९ ॥ दोमंडलका
परिवेषसेनापतीको भयकरताहैं· औरबहुतशस्त्रभयकरतानहीं· तीनचार
इत्यादिमंडलोंका परिवेष शस्त्रभय युवराज (राजपुत्र) इनको भयऔरन
गरकारोधशत्रूकेसंबंधसे होताहै ॥ १० ॥ तीनचारइत्या[illegible]डलोंका परिवेष
होयतो तीनदिनसेवृष्टिहोतीहै· ग्रह· चंद्र· औरनक्षत्र इनका परिवेषसे विरो
धहोयतोयुद्धहोताहै· राजाकेजन्मलग्न औरजन्मराशि इनकेस्वामी और
जन्मनक्षत्र यहपरिवेषसे रोधितहोंयतो राजाकोअशुभहोताहै ॥ ११ ॥ परिवेष
मंडलमे शनिहोयतो क्षुद्रधान्य (सांवाइत्यादि) इनकानाशहोताहै· और वायु
युक्तवृष्टि होतीहै· वृक्षादिस्थावर औरकृषी[illegible] इनकानाशहोताहै ॥ १२ ॥
परिवेषगत भौमहोयतो बालक· सैन्यपति· सैन्य· यहदुःखीहोतेहैं· औरअ
ग्निभय शस्त्रभयहोताहै· परिवेषगतबृहस्पति होयतो· पुरोहित· प्रधान· रा
जा· इनकोपीडाहोतीहै ॥ १३ ॥ परिवेषगतबुधहोयतो· प्रधान· वृक्ष· लेखक·

क्षुदनलमृत्युनराधिपशस्त्रेभ्योजायतेभयंकेतौ॥परिविष्टेगर्भभयंराहौव्याधिर्नृपभयंच॥१५॥युद्धानिविजानीयात्परिवेषाभ्यंतरेद्वयोर्ग्रहयोः॥दिवसकृतःशशिनोवाक्षुद्वृष्टिभयंत्रिषुप्रोक्तं॥१६॥यातिचतुर्षुनरेंद्रःसामात्यपुरोहितोवशंमृत्योः॥प्रलयमिवविद्धिजगतःपंचादिषुमंडलस्थेषु॥१७॥ताराग्रहस्यकुर्यात्पृथगेवसमुत्थितोनरेंद्रवधं॥नक्षत्राणामथवायदिकेतोर्नादयो भवति॥१८॥विप्रक्षत्रियविट्शूद्रहाभवेत्प्रतिपदादिषुक्रमशः॥श्रेणीपुरकोशानांपंचम्यादिष्वशुभकारी॥१९॥युवराजस्याष्टम्यांपरतस्त्रिषुपार्थिवस्यदोषकरः॥पुररोधोद्वादश्यांसैन्यक्षोभस्त्रयोदश्यां॥२०॥नरपतिपत्नीपीडांपरिवेषोऽभ्युत्थितश्चतुर्दश्यां॥कुर्यात्तुपंचदश्यांपीडांमनुजाधिपस्यैव॥२१॥नागरकाणामभ्यंतरस्थितायायिनांचबाह्यस्था॥परिवेषमध्यरेखाविज्ञेयाक्रंदसाराणां॥२२॥

इनकी वृद्धि होती है· और उत्तम वृष्टि भी होती है· परिवेषगत शुक्र होय तो यायी (प्रवासी) क्षत्रिय· राजस्त्री इनको पीडा और दुर्भिक्ष भी होता है·॥१४॥परिवेषगत केतु होय तो दुर्भिक्ष· अग्नि· मृत्यु· राजा· शस्त्र· इनसे भय होते हैं· परिवेषगत राहु होय तो गर्भभय· रोग· राजभय· यह होते हैं·॥१५॥सूर्य के वा चंद्र के परिवेष मे दो ताराग्रह होय तो युद्ध होंगे· और तीन ग्रह होंय तो दुर्भिक्ष· अवर्षण इनका भय होगा·॥१६॥सूर्य चंद्र के परिवेष मे चार ग्रह होंय तो प्रधान· और उपाध्याय इनके सहित राजा मृत्युवश होता है· पांच छ ग्रह सूर्य चंद्र परिवेष मंडलस्थ होंय तो सर्व जगत को प्रलय समान दुःख होगा·॥१७॥चंद्र सूर्य के विना अलग भौमादि ग्रह को वा नक्षत्र को परिवेष उत्पन्न होय तो राजा का वध होता है· केतूदय होय तो उल्कामात्र फल होता है· ताराग्रह और नक्षत्र इनके ऊपर कथित परिवेष फल होता नहीं॥॥१८॥प्रतिपदादि चार तिथी मे परिवेष नजर पडे तो क्रमसे ब्राह्मण· क्षत्रिय· वैश्य· शूद्र इनका नाश होता है· पंचमी को एक जात के लोक का नाश· षष्ठी को नगर का· सप्तमी को भांडार का (खजाना) नाश होता है॥१९॥अष्टमी को युवराज का· नवमी· दशमी· एकादशी· यह तीन तिथी मे राजा का नाश होता है· द्वादशी· नगररोध· त्रयोदशी को सैन्य क्षोभ होता है·॥२०॥चतुर्दशी को परिवेष होय तो राजस्त्रियों का· और पौर्णिमा को राजा का ही नाश होता है॥२१॥

रक्तः श्यामो रूक्षश्च भवति येषां पराजयस्तेषां ॥ स्निग्धः श्वेतो द्युतिमान्येषां भागो जयस्तेषां ॥२३॥ ॥इति परिवेषलक्षणम् ॥ अथ इंद्रायुधलक्षणम् ॥ ॥सूर्यस्य विविधवर्णाः पवनेन विघट्टिताः कराः साभ्रे ॥ वियति धनुः संस्थाना ये दृश्यंते तेन दिंद्रधनुः ॥१॥ केचिदनंतकुलोरगनिःश्वासोद्भूतमाहुराचार्याः ॥ तद्यायिनां नृपाणामभिमुखमजयावहं भवति ॥२॥ अच्छिन्नमवनिगाढं द्युतिमत्स्निग्धं घनं विविधवर्णं ॥ द्विरुदितमनुलोमं च प्रशस्तमंभः प्रयच्छति च ॥३॥ विदिगुद्भूतं दिक्स्वामिनाशनं व्यभ्रजं मरककारि ॥ पाटलपीतकनीलैः शस्त्राग्निक्षुत्कृता दोषाः ॥४॥ जलमध्ये नावृष्टिर्भुवि सस्यवधस्तरौ स्थिते व्याधिः ॥ वल्मीके शस्त्रभयं निशि सचिववधाय धनुरैंद्रं ॥ वृष्टिं करोत्यवृष्ट्यां वृष्टिं वृष्ट्यां निवारयत्यैन्द्र्यां ॥ पश्चात्सदैव वृष्टिं कुलिशभृतश्चापमाचष्टे ॥६॥ ७॥ ७॥ ७॥

तीन वर्णके परिवेषकी तीन रेषा नजर पडती है॰ उस्मे भीतरकी रेषा नगर संबंधी राजोंकी बाहेरेषा यायी(मार्गस्थ) राजोंकी॰ मध्यरेषा आक्रंदसारकी(दुःखित राजोंकी) होती है ॥२२॥ जिन की रेषा रक्त॰ श्याम॰ रूक्ष॰ होय उनका पराजय और जिनकी स्निग्ध॰ श्वेत॰ प्रकाशित होय उनका जय होता है ॥२३॥ ॥इति बृहत्संहिता यां परिवेषलक्षणं नाम चतुस्त्रिंशोध्यायः ॥३४॥ वायूसे अवरुद्ध॰ अनेक रंगके सूर्यकिरण॰ मेघयुक्त आकाशमे धनुष्याकार नजर पडते हैं॰ वह इंद्रधनुष्य होता है ॥१॥ अनंत नामक नागराजके कुलमेके सर्पोंके निश्वाससे इंद्रधनुष्य उत्पन्न होता है॰ ऐसा कोई कश्यपादि आचार्य कहते हैं॰ वह इंद्रधनुष्य यात्रा गमन करनेवाले राजाको सन्मुख होय तो पराजयकारक होता है ॥२॥ वह इंद्रधनुष्य अखंड॰ भूमीसे स्पर्शित॰ तेजस्वी॰ सुकांति॰ घन॰ नानाप्रकारके रंगसे युक्त॰ एकके नीचे एक ऐसा दूसरे मार्गस्थ राजाके पृष्ठ भागमे रहे॰ ऐसा होय तो वह शुभ और जल भी देता है ॥३॥ इंद्रधनुष्य विदिशामे उत्पन्न होय तो वह दिशाके राजाका नाश होता है॰ अभ्र होयके इंद्रधनुष्य होय तो मृत्युभय होगा॰ पाटल॰ पीत॰ नील॰ यह वर्ण होय तो क्रमसे॰ शस्त्र॰ अग्नि॰ दुर्भिक्ष इनका भय होता है ॥४॥ इंद्रधनुष्य जलमे नजर पडे तो अवर्षण॰ भूमीपर नजर पडे तो धान्यनाश॰ वृक्षपर नजर पडे तो रोगभय॰ वल्मीक(सर्पस्थान) पर नजर पडे तो शस्त्रभय॰ रात्रीमे नजर पडे तो प्रधानवध यह फल होते हैं ॥५॥ दृष्टि न रहते पूर्वमे इंद्रधनुष्य नजर पडे तो दृष्टि होगी

चापं मघोनः कुरुते निशायां आखंडलायां दिशि भूपपीडां ॥ याम्या परोदक् प्रभवं निहन्यात्सेनापतिं नायकमंत्रिणौच ॥७॥ निशि सुरचापं सितवर्णाद्यं जनयति पीडां द्विजपूर्वाणां ॥ भवति च यस्यां दिशि तद्देश्यं नरपति मुख्यं न चिराद्धन्यात् ॥८॥ ॥ इति इंद्रायुधलक्षणं ॥ ॥ अथ गंधर्वनगरलक्षणं ॥ ॥ उदगादिपुरोहितनृपबलपति युवराजदोषदं खपुरं ॥ सितरक्तपीतकृष्णं विप्रादीनाम भावाय ॥१॥ नागरनृपतिजयावह मुदक्विदिक्स्थं विवर्णनाशाय ॥ शांताशायां दृष्टं सतोरणं नृपति विजयाय ॥२॥ सर्वदिगुत्थं सततोत्थितंच भयदं नरेंद्रराष्ट्राणां ॥ चौराटविकान्हन्याद्धूमानलशक्रचापाभं ॥३॥ गंधर्वनगरमुत्थितमापांडुरमशनिपातवातकरं ॥ दीप्ते नरेंद्रमृत्युर्वामेरिभयं जयः सव्ये ॥४॥ ७॥ ॥ ७ ॥

वृष्टि होतरहते नजर पडे तो वृष्टि बंद होगी· पश्चिम दिशामे इंद्रधनुष्य नजर पडे तो वृष्टि होती है· ॥६॥ इंद्रधनुष्य रात्रीमे पूर्वमे नजर पडे तो· राजाको पीडा होती है· दक्षिणमे नजर पडे तो सेनापतीका नाश होता है· पश्चिममे नजर पडे तो· श्रेष्ठ पुरुषका नाश होता है· उत्तरमे नजर पडे तो· प्रधानका नाश होता है॥७॥ इंद्रधनुष्य रात्रीमे श्वेत· रक्त· पीत· कृष्ण· यह चार वर्णका नजर पडे तो क्रमसे ब्राह्मणादि चार वर्णको पीडा करता है· और जिस दिशामे नजर पडे वह दिशामेके मुख्य राजाका शीघ्र नाश होता है॥८॥ ॥ इति बृहत्संहितायां इंद्रायुधलक्षणं नाम पंचत्रिंशोध्यायः ॥३५॥ ॥ गंधर्वनगर उत्तर दिशामे नजर पडे तो पुरोहितको अशुभ· पूर्वमे नजर पडे तो राजाको अशुभ· दक्षिणमे नजर पडे तो सेनापतीको अशुभ· पश्चिममे नजर पडे तो युवराजको अशुभ· गंधर्वनगर का शुभ्र वर्ण होय तो ब्राह्मणका नाश· रक्तवर्ण होय तो क्षत्रियका नाश· पीतवर्ण होय तो वैश्यका नाश· कृष्णवर्ण होय तो शूद्रका नाश होता है· ॥१॥ गंधर्वनगर उत्तरमे नजर पडे तो नगर संबंधी राजाका जय होता है ईशान्यादि विदिशामे नजर पडे तो हीन जातीका नाश· शांत दिशामे तोरण सहित नजर पडे तो राजाका जय होता है· ॥२॥ एककालमे सर्व दिशामे उत्पन्न भया और प्रतिदिन नजर पडे ऐसा गंधर्वनगर राजा और देश इनको भय देता है· धूम· अग्नि· इन्द्रधनुष्य इनके समान कांतीके गंधर्वनगर· चोर और अरण्यवासी इनका नाश करते हैं· ॥३॥ दृष्टिगोचर भया जो गंधर्वनगर सो पांडुरवर्ण होय तो अशनिसंज्ञक विद्युत्पात और वायु यह करता है· दीप्त दिशामे नजर

अनेकवर्णाकृतिरवे प्रकाशते पुरं पताकाध्वजतोरणान्वितं ॥ यदा
नदा नागमनुष्यवाजिनां पिबत्यसृग्भूरि रणे वसुंधरा ॥५॥ ॥इति
गंधर्वनगरलक्षणम्॥ ॥अथ प्रतिसूर्यलक्षणं॥ ॥प्रतिसूर्यकः
प्रशस्तो दिवसकृदृतुवर्णसप्रभः स्निग्धः॥ वैडूर्यनिभः स्वच्छः शु
क्लश्च क्षेमसौभिक्षः॥१॥पीतो व्याधिं जनयत्यशोकरूपश्च श
स्त्रकोपाय॥ प्रतिसूर्याणां माला दस्युभयातंकनृपहंत्री॥२॥दिव
सकृतः प्रतिसूर्यो जलकृदुदग्दक्षिणे स्थितोऽनिलकृत्॥ उभयस्थः
सलिलभयं नृपमुपरि निहंत्यधो जनहा॥३॥ ॥इति प्रतिसूर्य
लक्षणं॥ ॥अथ रजोलक्षणं॥ ॥ कथयंति पार्थिववधं रजसा घ
नतिमिरसंचयनिभेन॥ अविभाव्यमानगिरिपुरतरवः सर्वा दि
शश्छन्नाः॥१॥यस्यां दिशि धूमचयः प्राक्प्रभवति नाशमेति वा य
स्यां॥ आगच्छति सप्ताहात्तत्रैव भयं न संदेहः॥२॥

पडे तो राजा को मृत्यु होता है· सेनाके वाम भागमे नजर पडे तो· शत्रुभय और
दक्षिणभागमे नजर पडे तो जय· यह होता है॥४॥ बहुत वर्ण और बहुत आ
कारके· पताका· ध्वज· तोरण· इनकर के युक्त ऐसे गंधर्वनगर आकाशमे न
जर पडे तो· हाथी· मनुष्य· घोडा· इनके बहुत रक्त भूमी युद्धमे प्राशन कर
ती है· अर्थात् बहुत युद्ध होयके हाथी· मनुष्य· घोडा· इनका नाश होता है॥
५॥ ॥इति बृहत्संहितायां गंधर्वनगरलक्षणं नाम षट्त्रिंशोध्यायः॥३६॥
अथ प्रतिसूर्यलक्षणं॥ प्रतिसूर्य (दूसरा सूर्य) सूर्यके जो ऋतुवर्ण (अ॰ ३ श्लो॰
२३।२४) इनके समान· स्निग्ध· वैडूर्यमणीके समान· स्वच्छ· शुक्लवर्ण· क
ल्याण और सुभिक्ष करता है॥१॥ प्रतिसूर्य· पीतवर्ण होय तो व्याधि करता
है· अशोकपुष्पसमान (लोहितवर्ण) होय तो युद्ध होता है· प्रतिसूर्यकी मा
ला नजर पडे तो चोरभय· उपद्रव और राजाका नाश यह होते है॥२॥ यह आ
र्या अ॰ ३ इसमे ३७ की है इसका अर्थ उहां देखना॥ ॥इति बृहत्संहितायां प्र
तिसूर्यलक्षणं नाम सप्तत्रिंशोध्यायः॥३७॥ ॥अथ रजोलक्षणम्॥ ॥
बहुत अंधःकारतुल्य धूलीसे पर्वत· नगर· वृक्ष· यह नजर पडे और सर्व
दिशा भी आच्छादित होय तो राजाका वध होता है ऐसा ऋषि कहते हैं॥१॥
जिस दिशामे धूमसमुदाय प्रथम उत्पन्न होय किंवा जिस दिशामे लोप
होय वह दिशाके तरफसे सात दिनसे भय आवता है इसमे संशय नहीं॥
॥२॥ धूलीका समुदाय श्वेतवर्ण होय तो प्रधान और लोक इनको पीडा है

भ्यते रजोघनैर्येपीडास्यान्नृपविजनपदानांच॥ नचिरात्प्रकोपमुपयातिशस्त्रमतिसंकुलासिद्धिः॥३॥ अर्कोदयेविजृंभतियदिदिनमेकंदिनद्वयंवापि॥ स्थगयन्निवगगनतलंभयमत्युग्रंनिवेदयति॥४॥ अनवरतसंचयवहंरजनीमेकांप्रधाननृपहंतृ॥ क्षेमायचशेषाणांविचक्षणानांनरेंद्राणां॥५॥ रजनीद्वयंविसर्पतियस्मिन्राष्ट्रेरजोघनंबहुलं॥परचक्रस्यागमनंतस्मिन्नपिसंनिबोद्धव्यं॥६॥ निपततिरजनीत्रितयंचतुष्कमप्यन्नरसविनाशाय राज्ञांसैन्यक्षोभोरजसिभवेत्पंचरात्रभवे॥७॥ केत्वाद्युदयविमुक्तंयदारजोभवतितीव्रभयदायि॥ शिशिरादन्यत्रनौफलमविकलमाहुराचार्याः॥८॥ ॥इतिरजोलक्षणं॥ अथनिर्घातलक्षणं॥पवनःपवनाभिहतोगगनादवनौयदासमापतति॥भवतितदानिर्घातःसचपापोदीप्तविहगरुतः॥१॥ अर्कोदयेऽधिकरणिकनृपधनियोधांगनावणिग्वेश्याः॥ आप्रहरांशेःजाविकमुपहन्याच्छूद्रपौरांश्च॥२॥ आमध्याह्नाद्राजोपसेविनोब्राह्मणाश्चपीडयति॥ वैश्यजलदांस्तृतीयेचौरान्प्रहरेचतुर्थेच॥३॥ ७॥

तीहै· औरशीघ्र शस्त्रकोप (युद्ध) होताहै औरअतिसंकुलसिद्धीभीहोतीहै॥३॥ धूलीसूर्योदयमेप्रसारित एककिंवा दोदिन आकाशको आच्छादितकरेतो· बडाकठिनभयहोताहै·॥४॥ निरंतरसमूहसे बहनेवालाऐसा रज एकरात्ररहेतो· मुख्यराजाकानाशहोगा·और अन्यचतुरराजाकाकल्याणहोगा॥५॥ जिसराष्ट्रमेदोरात्र धूली बहुतप्रसारितरहे·उहांशत्रुचक्रका आगमनहोगाऐसाजानना॥६॥ तीनरात्रकिंवाचाररात्री धूलीहोयतो· अन्न औररस इनकानाशहोताहै· पांचरात्रीरजहोयतो· राजोंकेसैन्यमे क्षोभहोगा·॥७॥ केत्वादिकोंकेउदयमे भयाजो रजसो बडाभयदेनेवालाहोताहै· यहरजशिशिरऋतू (माघ फाल्गुन) इनकेविना अन्यऋतूमेहोयतो उस्कामात्रशुभाशुभफलहोताहै· ऐसाआचार्यकहतेहैं॥८॥ इतिरजोलक्षणं॥३८॥ ॥अथनिर्घातलक्षणं॥ वायूसेवायूकाताडनहोयके जबआकाशसे भूमीपरगिरताहै· तबनिर्घात (बडाशब्द) होताहै सोनिर्घात· सूर्यकेसन्मुख पक्षिशब्दकरकेयुक्तहोयतो अशुभहोताहै॥१॥ सूर्योदयमेनिर्घात होयतो· अधिकारी· राजा· धनवान्· योद्धा· स्त्री· व्यापारी· वेश्या· इनकानाशहोताहै· दिनके प्रथमप्रहरमेनिर्घातहोयतो· बकरीभेडी· शूद्र· नगरकेजन इनकानाश॥२॥

अस्तं याते नीचान्प्रथमे यामे निहंति सस्यानि ॥ रात्रौ द्वितीययामेपि शाचसंघान्निपीडयति ॥ ४ ॥ तुरगकरिणस्तृतीये विनिहन्त्याथाथि नश्चतुर्थेच ॥ भैरवजर्जरशब्दो याति यतस्तां दिशं हंति ॥ ५ ॥ ॥ इति निर्घातलक्षणं ॥ ॥ अथ सस्यजातकं ॥ वृश्चिकवृषप्रवेशे भानोर्ये बादरायणेनोक्ताः ॥ ग्रीष्मशरत्सस्यानां सदसद्योगाः कृतास्त इमे ॥ १ ॥ भानोरलिप्रवेशे केंद्रैस्तस्माच्छुभग्रहाक्रांतैः ॥ बलवद्भिः सौम्यैर्वा निरीक्षिते ग्रैष्मिक विवृद्धिः ॥ २ ॥ अष्टमराशिगतेऽर्के गुरुशशिनोः कुंभसिंहसंस्थितयोः ॥ सिंहघटसंस्थयोर्वा निष्पत्तिर्ग्रीष्मसस्यस्य ॥ ३ ॥ अर्कात्सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेव वा स्थितयोः ॥ व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्ट्या ॥ ४ ॥ ॥

दिनके द्वितीयप्रहरमे निर्घात होयतो · राजाके सेवक · ब्राह्मण · इनको पीडा · तृतीयप्रहरमे वैश्य · मेघ · इनको पीडा · चतुर्थप्रहरमे चोरको पीडा ॥ ३ ॥ अस्तमानमे नीचको पीडा · रात्रीके प्रथमप्रहरमे धान्यको पीडा · द्वितीयप्रहरमे पिशाचसमुदायको पीडा ॥ ४ ॥ तृतीयप्रहरमे अश्व · गज · इनका नाश · चतुर्थप्रहरमे याथि (जयेच्छु) इनका नाश होता है · निर्घातका भयंकर और फूटे बरतनके शब्दके समान शब्द जिस दिशामे जायगा उस दिशाका नाश होता है ॥ ५ ॥ ॥ इति बृहत्संहितायां निर्घातलक्षणं नामैकोनचत्वारिंशोध्यायः ३९ ॥

॥ अथ सस्यजातकं ॥ ॥ वृश्चिक और वृषभ यह राशीमे सूर्यका प्रवेश कहिये संक्रांति होती है · उस समयपरसे क्रमसे (ग्रीष्म (उष्णकाल) धान्य · और शरत (वर्षाकाल) धान्य · इनके शुभाशुभ योग बादरायणाचार्यने जो कथन किया सो यह (वक्ष्यमाण) हमने कथन किया है ॥ १ ॥ सूर्यके वृश्चिक प्रवेशकालमे वृश्चिक लग्नसे केंद्रस्थानमे १।४।७।१० शुभग्रह होय अथवा बलिष्ठ शुभग्रहोंसे सूर्य दृष्ट होयतो ग्रीष्मसंबंधी धान्योंकी वृद्धी होती है · (अक्षीण · चंद्र · बुध · गुरु · शुक्र · यह शुभग्रह हैं · इसमेसे स्वगृहमे · स्वोच्चमे · स्वमित्रगृहमे · जो ग्रह होय सो बलिष्ठ) ॥ २ ॥ वृश्चिकराशीमे सूर्य · गुरु कुंभमे · चंद्र सिंहमे · अथवा गुरु सिंहमे · चंद्र कुंभमे · ऐसे होयतो ग्रीष्मधान्य उत्पन्न होंगे ॥ ३ ॥ वृश्चिकस्थ सूर्यसे दूसरे शुक्र किंवा बुध होय अथवा दूनो भी एककालमे दूसरे होय अथवा वृश्चिकस्थ सूर्यसे शुक्र बारहे किंवा बुध बारहे अथवा दूनोही बारहे होयतो ग्रीष्मधान्यकी निष्पत्ती होगी · सूर्यके ऊपर गुरूकी दृष्टी होयतो उत्तम ग्रीष्मधान्य निष्पत्ती होगी · ॥ ४ ॥

शुभमध्येऽलिनिसूर्याद्गुरुशशिनोःसप्तमेपरासंपत् ॥ अल्पादि
स्थेसवितरिगुरौद्वितीयेऽर्धनिष्पत्तिः ॥ ५ ॥ लाभहिबुकार्थयुक्तैः
सूर्यादलिगात्सितेंदुशशिपुत्रैः ॥ सस्यस्यपरासंपत्कर्मणिजीवे
गवांचाग्र्या ॥ ६ ॥ कुंभेगुरुर्गविशशिसूर्योऽलिमुखेर्केतुजार्केजौम
करे ॥ निष्पत्तिरस्तिमहतीपश्चात्परचक्ररोगभयं ॥ ७ ॥ मध्येपाप
ग्रहयोःसूर्यःसस्यंविनाशयत्यलिगः ॥ पापःसप्तमराशौजातंजा
तंविनाशयति ॥ ८ ॥ अर्थस्थानेक्रूरःसौम्यैरनिरीक्षितःप्रथमं
जातं ॥ सस्यंनिहंतिपश्चाद्दुप्तंनिष्पादयेद्व्यक्तं ॥ ९ ॥ जामित्रकेंद्र
संस्थौक्रूरौसूर्यस्यवृश्चिकस्थस्य ॥ सस्यविपत्तिंकुरुतःसौम्यै
र्दृष्टौनसर्वत्र ॥ १० ॥ वृश्चिकसंस्थादर्कात्सप्तमषष्ठोपगौयदाक्रू
रौ ॥ भवतितदानिष्पत्तिःसस्यानामर्घपरिहानिः ॥ ११ ॥ ॥

शुभमध्यगत वृश्चिकस्थ सूर्यसे सप्तमस्थानमे गुरु वा चंद्र होंयतो धान्यसंप
त्ति उत्तम होगी· (वृश्चिकस्थसूर्य और उससे दुसरा· बुधशुक्रमेसे एक और दु
सरा बारहां ऐसे होंयतो· वह सूर्य शुभमध्यगत होताहै) वृश्चिकके आरंभमे
सूर्य और उससे दुसरा गुरु होयतो धान्यनिष्पत्ति आधी होती है ॥ ५ ॥ वृश्चि
कस्थसूर्यसे ११ शुक्र ४ चंद्र २ बुध ऐसे होंयतो धान्यकी उत्तमसंपत्ति होती है
पूर्वोक्त योग रहते उससे १० गुरु होयतो गौकी उत्तम संपत्ति होती है· कहिये·
धान्य होयके दूधभी बहुत होता है ॥ ६ ॥ कुंभराशीको गुरु· वृषभको चंद्र· वृ
श्चिकके प्रथमांशमे सूर्य· भौम और शनि यह मकरराशीमे· ऐसे होंयतो
धान्यकी उत्पत्ति उत्तम होती है· परंतु आगे शत्रुचक्र और रोग इनका भय हो
ता है ॥ ७ ॥ वृश्चिकस्थसूर्य भौम और शनि यह पापग्रहोंके मध्यमे होयतो
धान्यका नाश करता है· वृश्चिकसे भौम और शनि इनमेसे एक सप्तम होय
तो धान्य उत्पन्न होयतो भी उसका नाश होगा ॥ ८ ॥ वृश्चिकसे द्वितीयस्था
नमे पापग्रह होंय और उसपर शुभग्रहोंकी दृष्टि न होयतो प्रथम भया धान्य
नाश पावता है अनंतर बोआ धान्य उत्तम उत्पन्न होता है ॥ ९ ॥ वृश्चिकस्थ
सूर्यसे भौम· शनि यह पापग्रहमेसे एक सप्तमस्थानमे और दुसरा १।४।७
।१० यह स्थानमे होंयतो धान्यनाश होता है परंतु वह पापग्रहोंपर शुभग्रहों
की दृष्टि होयतो सर्वदेशमे धान्यनाश होगा नहीं (क्वचिद्देशमे होगा· ॥ १० ॥
वृश्चिकस्थसूर्यसे भौम· शनि यह पापग्रहोंमेसे एक ७ और एक ६ ऐसे हों
यतो धान्यनिष्पत्ति उत्तम होगी· परंतु मूल्यकी हानि होगी· अर्थात् महगा हो
गा ॥ ११ ॥

विधिनानेनैव रविर्वृषप्रवेशे शरत्समुत्थानां॥ विज्ञेयः सस्यानां नाशाय शिवाय वा तज्ज्ञैः॥१२॥ त्रिषु मेषादिषु सूर्यः सौम्ययुतो वीक्षितोऽपि वा विचरन्॥ ग्रैष्मिकधान्यं कुरुते समर्घमभिवृद्धियोग्यं च॥१३॥ कार्मुकमृगघटसंस्थः शारदसस्यस्य तद्वदेव रविः॥ संग्रहकाले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूरदृग्योगात्॥१४॥ ॥इति सस्यजातकं॥ ॥अथ द्रव्यनिश्चयः॥ ॥ये येषां द्रव्याणामधिपतयो राशयः समुद्दिष्टाः॥ मुनिभिः शुभाशुभार्थं तानागमतः प्रवक्ष्यामि॥१॥ ॥वस्त्राविककुतुपानां मसूरगोधूमरालकयवानां॥ स्थलसंभवौषधीनां कनकस्य च कीर्तितो मेषः॥२॥ गवि वस्त्रकुसुमगोधूमशालियवमहिषसुरभितनयाः स्युः॥ मिथुनेऽपि धान्यशारदवल्लीशालूककार्पासाः॥३॥ कर्किणि कोद्रवकदलीदूर्वाफलकंदपत्रचोचानि॥ सिंहे तुषधान्यरसाः सिंहादीनां त्वचः सगुडाः॥ ४॥

यह पूर्वोक्त प्रकारसे ही सूर्य वृषभराशीको जाय वह कालपरसे शरदऋतूमे उत्पन्न होनेवाले धान्यका नाश किंवा वृद्धि यह सस्यजातक समझनेवाले पंडितने जानना॥१२॥ सूर्य मेषादि तीन राशीके विषे बुध· गुरू· शुक्र· इन से युक्त किंवा दृष्ट होय तो ग्रीष्मऋतूमेके धान्य समर्घ (सस्ता) और इह· लोकमे बंधुवर्गको और परलोकमे धर्मार्थ योग्य ऐसे होंगे॥१३॥ धन· मकर· कुंभ· यह राशीमे सूर्य सौम्यग्रहयुक्त किंवा दृष्ट रहते· शरदतूमेके धान्यके फल· ग्रीष्मऋतूमेके धान्यके फल पूर्वमे कथन किया उसीके समान देखना· यह फल धान्य संग्रहकालमे देखना· परंतु पापग्रहोंके दृष्टियोगसे विपरीत होता है· महंगा होता है· धान्यविक्रयकालमे विपरीत होय शुभ होता है॥१४॥ इति बृहत्संहितायां सस्यजातकं नाम चत्वारिंशोध्यायः॥४०॥ ॥अथ द्रव्यनिश्चयः॥ जिस द्रव्यके स्वामी जो मेषादि राशी· कश्यपादि ऋषीने द्रव्योके शुभाशुभार्थ (सस्ता महंगा इनके ज्ञानार्थ) कथन किया· सो शास्त्रपरसे कथन करते है॥१॥ वस्त्र· आविक (कंबल इ॰) कुतप (वनभेडीके रोमका वस्त्र दुशाला इ॰) मसूर· गोधूम· राल· यव· जलरहित भूमीपरकी औषधी· सुवर्ण इनका स्वामी मेषराशी होती है॥२॥ वस्त्र· पुष्प· गोधूम· शालि (धान) यव· महिष· बैल इनका स्वामी वृषभराशी होती है· धान्य· शरदऋतूमेके पदार्थ· वल्ली· कमलकंद· कपास इनका स्वामी मिथुनराशी होती है॥३॥ कोदो· केला· दूर्वा· जायफल आदि सर्व फल· कंद· तमालपत्र· सालुकीनी·

षष्ठेऽतसीकलायाः कुलत्थगोधूममुद्गनिष्पावाः॥ सप्तमराशौमा षागोधूमाः सर्षपाः सयवाः॥५॥ अष्टमराशाविक्षुः सैक्यंलोहान्य जाविकंचापि॥ नवमेतुतुरगलवणांबरास्त्रतिलधान्यमूला नि॥६॥ मकरेतरुगुल्माद्यंसैक्येक्षुसुवर्णकृष्णलोहानि॥ कुं भेसलिलजफलकुसुमरत्नचित्राणिरूपाणि॥७॥ मीनेकपा लसंभवरत्नान्यंबूद्भवानिवज्राणि॥स्नेहाश्चनैकरूपाव्याख्या तामत्स्यजातंच॥८॥ राशेश्चतुर्दशार्थायसप्तनवपंचमस्थितो जीवः॥ त्र्येकादशादशपंचाष्टमेषुशशिजश्चवृद्धिकरः॥९॥ षट् सप्तमगोहानिंवृद्धिंशुक्रःकरोतिशेषेषु॥ उपचयसंस्थाःक्रूराः शुभदाःशेषेषुहानिकराः॥१०॥ राशेर्यस्यक्रूराःपीडास्थानेषुसं स्थिताबलिनः॥ तत्प्रोक्तद्रव्याणांमहार्घतादुर्लभत्वंच॥११॥ इ ष्टस्थानेसौम्याबलिनोयेषांभवंतिराशीनां॥ तद्द्रव्याणांवृद्धिः सामर्घ्यमदुर्लभत्वंच॥१२॥

वृक्षोंकेछाल· नरियर· इनकास्वामीकर्कराशीहोतीहै· तुषधान्य·(धान·) मधुर आम्ल·क्षार·कटु·तीता· कसार· यहषड्विधरस· सिंह· व्याघ्र·मार्जार· इत्या दिकोंका·चर्म·गुड· इनकास्वामीसिंहराशीजानना·॥४॥ तीसी· मंदर·कुल थी· गोहू· मूंग निष्पाव (सेमकादाना·) इनकास्वामीकन्याराशीजानना· उड दी· गोहूं· सर्सों·जव· इनकास्वामीतुलाराशीजानना·॥५॥ ऊंख·से क्य (सिं चनसेउत्पन्नवल्लीफलादि·) लोह· बकरा·मेढा·इनकास्वामीवृश्चिकजान ना· अश्व· लवण·वस्त्र·आयुध (धनुष्यबाणइ०) तिल·धान्य कहिये धनि या· सुरई· इनकास्वामीधनराशीजानना ·॥६॥ वृक्ष· गुल्म (कंटकरहितपू लहीमेउत्पन्नहोनेवालाकहिये झुंपड) वल्ली·ऊंख·सुवर्ण·कृष्णवर्णलो ह· इनकास्वामीमकरराशीजानना· जलसेउत्पन्नभये·फल·पुष्प·रत्न· नानाप्रकारकेरत्न·इनकास्वामीकुंभराशीजानना·॥७॥ गजकपोलसेउत्प न्न मोतीऔरसीपसेउत्पन्न मोती·हीरा· नानाप्रकारकेतेल· मच्छसेउत्पन्न मौक्तिकादिक· इनकास्वामीमीनराशीजानना·॥८॥ कोई अभीष्टराशीसे ४ ।१०।२।९।७।९।५। यहस्थानमेबृहस्पतीहोयतोवहराशीकेद्रव्योंकीवृद्धि होतीहै· २।११।१०।५।८। यहस्थानमेबुधहोयतो· वृद्धिहोतीहै ॥९॥ ६।७। यह स्थानमेशुक्रहोयतोहानिहोतीहै· इससेअन्यस्थानमेहोयतोवृद्धिहोतीहै· ३।६। ११।११। यहस्थानमेसूर्य·भौम·शनि· यहहोयतोवृद्धि·औरअन्यस्थानमेहो यतोहानिहोतीहै॥११

गोचरपीडायामपि राशिर्बलिभिः शुभग्रहैर्दृष्टः॥ पीडां न करोति तथा क्रूरैरेवं विपर्यासः॥१३॥ ॥ इति द्रव्यनिश्चयः॥ ॥ अथ अर्घकांडं॥ अतिवृष्ट्युल्कादंडाद्यान्परिवेषग्रहणपरिधिपूर्वांश्च॥ दृष्ट्वामावास्यायां [illegible]स्यातान् पूर्णमास्यां च॥१॥ ब्रूयादर्घविशेषानतिमासं राशिषु क्रमात्सूर्ये॥ अन्यतिथावुत्पाता ये ते डमरार्त्तये राज्ञां॥२॥ मेषोपगते सूर्ये ग्रीष्मज धान्यस्य संग्रहं कुर्यात्॥ वनमूलफलस्य वृषे चतुर्थमासे नयो लाभः॥३॥ मिथुनस्थे सर्वरसान् धान्यानि च संग्रहं समुपनीय॥ षष्ठमासे विपुलं विक्रीणन् प्राप्नुयाल्लाभं॥४॥ कर्किण्यर्के मधुगंधतैलघृतफाणितानि विनिधाय॥ द्विगुणा द्वितीयमासे लब्धिर्हीनाधिके छेदः॥५॥ सिंहे सुवर्णमणिचर्मवर्मशस्त्राणि मौक्तिकं रजतं॥ पंचममासे लब्धिर्विक्रेतुरतोऽन्यथा छेदः॥६॥

जिस राशीके पीडास्थान मे (१।२।४।५।७।८।९।१२ यह स्थानमे) बलिष्ठ (स्वगृह·स्वोच्च·मित्रगृह·स्वनवमांश मे स्थित·) पापग्रह होयतो वह राशीके पूर्वोक्तद्रव्य महंगा·और दुःखसे लब्ध होगा·॥११॥ जिस राशीके पूर्वोक्त शुभस्थानमे (श्लोक ११·) बलिष्ठ शुक्र·गुरु·बुध यह होय वह राशीके द्रव्योंकी वृद्धि होयके सुलभ सुखसे लब्ध होता है·॥१२॥ राशीसे गोचरमे अशुभस्थानमे ग्रह होय और उसके ऊपर बलिष्ठ शुभग्रहोंकी दृष्टि होयतो वह ग्रह विशेष पीडाकारक होता नहीं· पापग्रहोंकी दृष्टी होयतो शुभका अशुभफल होता है॥१३॥ ॥ इति बृहत्संहितायां द्रव्यनिश्चयो नामैकचत्वारिंशोध्यायः॥४१॥ अथ अर्घकांड॥ ॥ अतिवृष्टि·उल्का·दंड·परिवेष·ग्रहण·परिधि· इत्यादि उत्पात· अमावास्याको किंवा पूर्णिमाको देखके धान्यादिकोंका सुभिक्ष किंवा दुर्भिक्ष प्रतिमासमे सूर्यचारपरसे कथन करना· अन्यतिथीमे जो उत्पात होंगे·सो राजाको शस्त्र कलह (युद्ध) और पीडाकारक होते हैं·॥१॥२॥ मेषराशीमे सूर्य होय·अमावास्या वा पौर्णिमाको १।२ श्लोकमे कथित उत्पात होयतो ग्रीष्मऋतूमे होनेवाले धान्यका संग्रह करना·वृषभराशीको सूर्य॰ वनोत्पन्न मूलफलका संग्रह करना·वह पदार्थ आगे महंगा होयके वह दूनोके व्यापारमे चार महिनेसे लाभ होता है·॥३॥ मिथुनराशीमे सूर्य होय॰ सर्व मधुरादिरस और धान्य इनका संग्रह करके ६ महिनेसे विक्रय करे तो बहुत लाभ होता है॥४॥ कर्कराशीमे सूर्य॰ मधु·सुगंधिद्रव्य·तेल·घृत·राब·किंवा गुड·यह लेना·सो दूसरे महिने मे विक्रय करे तो दूना लाभ होता है·परंतु कम ज्यादे काल होय तो तटप[?]ती है॥५॥

कन्यागते दिनकरे चामरखरकरभ--वाजिनां क्रेता॥ षष्ठे मासे द्विगुणं लाभमवाप्नोति विक्रीणन्॥७॥ तौलिनि तांतव भांडं मणिकं बलकाचपीतकुसुमानि॥ आद्यान्धान्यानि च षण्मासाद्विगुणितावृद्धिः॥८॥ वृश्चिकसंस्थे सवितरि फलकंदकमूलविविधरत्नानि॥ वर्षद्वयमुषितानि द्विगुणं लाभं प्रयच्छंति॥९॥ चापगते गृह्णीयात्कुंकुमशंखप्रवालकाचानि॥ मुक्ताफलानि च ततो वर्षार्धाद्द्विगुणतां यांति॥१०॥ मृगघटगे गृह्णीयाद्दिवाकरे लोहभांडधान्यानि॥ स्थित्वा मासं दद्याल्लाभार्थी द्विगुणमाप्नोति॥११॥ सवितरि झषमुपयाते मूलफलकंदभांडरत्नानि॥ संस्थाप्य वत्सरार्धं लाभमकल्पमिष्टं समाप्नोति॥१२॥ राशौ राशौ यस्मिन्शिशिरमयूखः सहस्रकिरणो वा॥ युक्तोऽधिमित्रदृष्टस्तत्रायं लाभकोऽदिष्टः॥१३॥ सवितृसहितः संपूर्णो वा शुभैर्युतवीक्षितः शिशिरकिरणः सद्यो द्रव्यस्य पद्र्द्धिकारःस्मृतः

सिंहराशीमे सूर्य॰ स्वर्ण· हीरकादिमणि· चर्म· कवच· शस्त्र· मोती· रौप्य· यहलेना· उनका लाभ विक्रय करनेवालेको पांच महिनेसे होगा · अन्यकालमे तूट पडेगी॥६॥ कन्याराशीमे सूर्य॰ चंवर· गर्दभ· उष्ट्र· अश्व· यहलेना· वह छ महिनेसे विक्रय करनेमे दूना लाभ होता है॥७॥ तुलाराशीमे सूर्य॰ तांतवभांड (तंतुनिर्मित जो वस्त्र कथरी) मणि· कंवल· कांच· पीतवर्णपुष्प· धान्य यहलेना उनसे ६ महिनेमे व्यापारसे दूना होता है॥८॥ वृश्चिकराशीमे सूर्य॰ फल· कंद· (सूरणइ॰) मूल (औषधीमूल) नानाप्रकारके रत्न· यह दो वर्ष रखके अंतर विक्रय करना तो दूना लाभ होता है॥९॥ धनराशीमे सूर्य॰ कुंकुम· शंख· मूंगा· कांच· मोती· फल· यहलेना· व्यापारसे ६ महिनेमे दूना लाभ होता है॥१०॥ मकर वा कुंभ यह राशीमे सूर्य॰ लोहेका पात्र और धान्य· यहलेना· सो एक महिना रखके विक्रय करना तो दूना लाभ होता है॥११॥ मीनराशीमे सूर्य॰ मूल· फल· कंद· नानाप्रकारके धातु पात्र· रत्न· यह लेकरके रखना ६ महिनेसे विक्रय करनेवालेको इच्छाप्रमाण लाभ होता है॥१२॥ (पौर्णिमाको किंवा अमावास्याको उत्पात होय तो· पूर्वोक्त वस्तुसंग्रह कथन किया) सो जो जो राशीमे चंद्र किंवा सूर्य ग्रहमित्रकरके युक्त वा अधिमित्र दृष्ट होय तो उहां यह पूर्वोक्त लाभ होता है अन्यत्र होता नही॥१३॥ चंद्र सूर्यसहित (अमावास्याको वा संपूर्ण (पौर्णिमाको) होयके शुभग्रहसे युक्त किंवा दृष्ट होय तो· तत्काल मूल्यकी वृद्धि होती है· तैसे चंद्र पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट होय तो मूल्यका नाश होता है· अथवा वस्तु पशु भय

अशुभसहितःसंदृष्टोवाहिनस्त्यथवारविःप्रतिगृहगतान्भा वान्
बुध्वावदेत्सदसत्फलम्॥१४॥ ॥इतिअर्घकांडं॥ ॥अथइंद्र
ध्वजसंपत्॥ ॥ब्रह्माणमूचुरमराभगवंछक्ताःस्मनासुरान्स
मरे॥प्रतियोधयितुमतस्त्वांशरण्यशरणंसमुपयाताः॥१॥देवा
नुवाचभगवान्क्षीरोदेकेशवःसवःकेतुं॥पंदास्यतितंदृष्ट्वाना
जौस्थास्यंतिवोदैत्याः॥२॥लब्धवराःक्षीरोदंगत्वातेतुष्टुवुःसु
राःसेंद्राः॥श्रीवत्सांककौस्तुभमणिकिरणोद्भासितोरस्कं॥३॥
श्रीपतिमचिंत्यमसमंसमंततःसर्वदेहिनांसूक्ष्मं॥परमात्मानम
नादिंविष्णुमविज्ञातपर्यंतं॥४॥तैःसंस्तुतःसदेवस्तुतोषनारा
यणोददौचैषां॥ध्वजमसुरसुरवधूमुखकमलवनतुषारनीरंशु
ं॥५॥तंविष्णुतेजोभवमष्टचक्रेरथेस्थितंभास्वतिरत्नचि
त्रे॥देदीप्यमानंशरदीवसूर्यंध्वजंसमासाद्यमुमोदशक्रः॥६॥

इसेयुक्तवादृष्टहोयतोवृद्धिहोतीहै· वापापग्रहसेयुक्तदृष्टहोयतोनाशहोता
है·यहप्रकारसेसर्वभाव(राशि)समझकेशुभकिंवाअशुभफलकथनकर
ना॥१४॥ इतिबृहत्संहितायांअर्घकांडनामद्विचत्वारिंशोध्यायः॥४२॥ अ
थइंद्रध्वजसंपत्॥ ब्रह्मदेवसेदेवताभाषणकरतेहैं·हेभगवन् हमदैत्योंके
साथयुद्धकरनेमेंसमर्थनहीं· इसवास्तेहेशरण्य· तुमकोशरणआएहैं·॥१॥
क्षीरसमुद्रमेंविष्णुहैं सोतुमकोजोकेतुदेंगेउस्कोदेखकेयुद्धमेंतुम्हारे
सामनेदैत्यखडेरहेंगेनहीं·ऐसाब्रह्मदेवनेदेवतोंसेकथनकिया·॥२॥ऐसा
पूर्वोक्तब्रह्मदेवका वरदानप्राप्तहोनेहीं· वहइंद्रादिदेव·क्षीरसमुद्रपरजा
यके·श्रीवत्सचिन्हित·कौस्तुभमणीके किरणसेप्रकाशितहै·वक्षस्थल जि
स्का·ऐसेनारायणकीस्तुतीकरतेभए॥३॥ लक्ष्मीकेपती·अचिंत्य·अतुल्य·
सर्वकेविषसम·सर्वप्राणीकोदुर्विज्ञेय·परमात्मा· अनादि·व्यापक· जिस्का
अंतमालूमहोतानहीं·(अनंत)ऐसेतुमहो इसप्रकारकीनारायणकीस्तुती
देवतोंनेकिया·॥४॥वहइंद्रादिदेवतोंनेस्तुतीकरनेकेअनंतर· नारायणदेव
संतुष्टहोयके·देवतोंको·दैत्यस्त्रियोंकेमुख कमलसमूहको·चंद्रकेसमा
न आकुंचितकरनेवालाऔरदेवस्त्रियोंकेमुखकमलसमूहको·सूर्यकेस
मानप्रफुल्लितकरनेवालाऐसाध्वजदेतेभए॥५॥ विष्णुतेजसेउत्पन्नभया·देदी
प्यमान·रत्नसेचित्रविचित्र·आठचक्रकेरथपररक्खाऐसा·शरदऋतूमेंके
सूर्यकेसमानस्वच्छ·ऐसेध्वजकोप्राप्तहोयके इंद्रआनंदितहोताभया॥६

सकिंकिणीजालपरिष्कृतेन स्रक्छत्रघंटापिटकान्वितेन ॥ ससुरचितु
तेनामरराट् ध्वजेन निन्ये विनाशं समरेऽरिसैन्यं ॥७॥ उपरिचर
स्यामरपो वसोर्ददौ चेदिपस्य वेणुमयीं ॥ यष्टिं तां स नरेंद्रो विधिव
त्संपूजयामास ॥८॥ प्रीतो महेन मघवान् प्राहैवं येनृपाः करिष्यं
ति ॥ वसुवद्वसुमंतस्ते भुवि सिद्धाज्ञा भविष्यंति ॥९॥ मुदिताः प्र
जाश्च तेषां भयरोगविवर्जिताः प्रभूतान्नाः ॥ ध्वज एव चाभिधा
स्यति जगति निमित्तैः फलं सदसत् ॥१०॥ पूजातस्य नरेंद्रैर्बलव
द्विजयार्थिभिर्यथा पूर्वं ॥ शक्राज्ञया प्रयुक्ता तामागमतः प्रवक्ष्या
मि ॥११॥ तस्य विधानं शुभकरणदिवसनक्षत्रमंगलमुहूर्तैः ॥
प्रास्थानिकैर्वनमियाद्दैवज्ञः सूत्रधारश्च ॥१२॥ उद्यानदेवताल
यपितृवनवल्मीकमार्गचितिजाताः ॥ कुब्जोर्ध्वशुष्ककंटकिव
ल्लीवंदाकयुक्ताश्च ॥१३॥ बहुविहगालयकोटरपवनानलपी
डिताश्च ये तरवः ॥ ये च स्युः स्त्रीसंज्ञा न ते शुभाः शक्रकेत्वर्थे ॥१४

वह इंद्र· छोटे घंटासे सुशोभित और माला· छत्र· घंटा· पिटक (भूषण) इ
नकरके युक्त ऐसा ध्वज खडा करके युद्धमे शत्रूका नाश करता भया ॥७
इंद्रने· चेदिदेशका राजा उपरिचर (स्वर्गमे फिरनेवाला) जो वसु नामक राजा
उसको ध्वज दिया· सो राजा ध्वजको वेणुमय पताकाको यथाशास्त्र पूजा क
रता भया ॥८॥ पूजनसे संतुष्ट होयके इंद्र कथन करते भए· की ऐसे पूजन जो
राजा करेंगे सो वसु राजाके समान द्रव्यवान होंगे· और उनकी आज्ञा भूमी
पर सर्व पालन करेंगे ॥९॥ उनकी प्रजा आनंदित· भय और रोग इनसे रहित
बहुत अन्नसे युक्त होगी और ध्वजही भूमीपर निमित्तसे शुभाशुभ फल
कथन करेगा ॥१०॥ पराक्रम· कुलकी और धनकी वृद्धि· शत्रुपराजय· इनको
इच्छा करनेवाले राजोंने इंद्रके आज्ञासे पूर्वके प्रमाण प्रयुक्त जैसी वह ध्व
जकी पूजा करना· सो पूजा हम ऋषी कथित शास्त्रपरसे कहते हैं· ॥११॥
वह ध्वज करनेका प्रकार कहते हैं· शुभकरण· वार· नक्षत्र· मंगल शकुन
और प्रयाणोक्त मुहूर्त देखके· जोतिषी और बढई इन्ने अरण्यमे जाना·
॥१२॥ ग्राम· देवालय· स्मशान· सर्पस्थान· मार्ग· यज्ञभूमी· यह स्थानमे उत्प
न्न कुब्ज (छोटा) ऊपर सूखा· काटेका· वल्लीसे युक्त वंदाक (वंध्या) इनकरके
युक्त ॥१३॥ बहुत पक्षियोका घर· टिड्डी· इनकरके युक्त· तूला· जरा· और स्त्री
लिंगी नामके· ऐसे वृक्ष इंद्रध्वजाके वास्ते शुभ नही· ॥१४॥ ७॥ ८॥ ।

श्रेष्ठोऽर्जुनोऽश्वकर्णः प्रियकधवोदुंबराश्चपंचैते॥ एतेषामन्यतमं
प्रशस्तमथवापरंवृक्षं॥१५॥ गौरासितक्षितिभवंसंपूज्ययथावि
धिद्विजःपूर्वं॥ विजनेसमेत्यरात्रौस्पृष्ट्वाब्रूयादिमंमंत्रं॥१६॥ या
नीहवृक्षेभूतानितेभ्यःस्वस्तिनमोऽस्तुवः॥ उपहारंगृहीत्वेमंक्रि
यतांवासपर्ययः॥१७॥ पार्थिवस्त्वांवरयतेस्वस्तितेस्तुनगोत्त
म॥ ध्वजार्थंदेवराजस्यपूजेयंप्रतिगृह्यतां॥१८॥ छिंद्यात्प्रभात
समयेवृक्षमुदक्प्राङ्मुखोपिवाभूत्वा॥ परशोर्जर्जरशब्दोनेष्टः
स्निग्धोघनश्चहितः॥१९॥ नृपजयदमविध्वस्तंपतनमना कुंचि
तंचपूर्वोदक्॥ अविलग्नंचान्यतरौविपरीतमतस्त्यजेत्पतितं
॥२०॥ छित्वाग्रेचतुरंगुलमष्टौमूलेजलेक्षिपेद्यष्टिं॥ उद्धृत्यपुर
द्वारंशकटेननयेन्मनुष्यैर्वा॥२१॥ अरभंगेबलभेदोनेम्यांनाशो
बलस्यविज्ञेयः॥ अर्थक्षयोऽक्षभंगेनथाणिभंगेचवर्धकिनः॥२२

अर्जुन·साग·कलंव·धव·गुलर· यह पांचवृक्षशुभहैं अथवा अन्य प्रशस्त वृ (बान)
क्ष इंद्रध्वजकेवास्तेशुभहोताहै·॥१५॥ गौर·कृष्णानहीं ऐसे भूमीपरउत्पन्न
भयेवृक्षकोब्राह्मणनेप्रथम मनुष्यरहित कालमे रात्रीमेजायके· यथाशा
स्त्रपूजाकरकेस्पर्शकरना और यह कथितमंत्र कहनापठनकरना॥१६॥
जो यहवृक्षपरभुत होंगे उनका कल्याण होय· तुमकोनमस्काररहे· यह ह
मने दियाबलीग्रहणकरके अन्यत्र रहनेकोजाना॥१७॥ हेउत्तमवृक्षतुम्हा
रा कल्याणहोय· राजा·इंद्रध्वजकेवास्ते तुम्हारी प्रार्थनाकरतेहैं· यहपू
जाग्रहणकरना॥१८॥ अनंतरप्रातःकालमे उत्तरमुख वा पूर्वमुखहोयके·
तोडनेकेकालमे कुल्हाडीकाशब्दजैसाहोनेकोतैसा नहोयकेअन्यप्रकार
काहोयतो अशुभहोताहै· स्निग्ध(मधुर) घन(जोरका) शब्दहोयतो शुभहो
ताहै·॥१९॥ तोडनेबिनावा खीचेबिना· पूर्वकेतरफवा उत्तरकेतरफ· दुसरेवृ
क्षपरनलगते· ऐसावृक्षगिरेतोराजाकोजयदेताहै· इस्सेविपरीतगिरेतो
उस्कात्यागकरना·॥२०॥ अनंतर·वहवृक्षका चार अंगुल अग्रतोडना और
आठअंगुलमूल तोडना औरवहलकडी पानीमेरखना अनंतर पानीमेसे
निकालके गाडीपरसेलेजाना· अथवामनुष्यसेलेजाना·॥२१॥ गाडीके
चक्रका मध्यकाआरा टूटेतो सैन्यका भेदहोताहै· चक्रकेबाहरका भागटू
टेतोसैन्यकानाशहोताहै· स्कंधटूटेतोद्रव्यनाश होताहै· स्कंधकी कील
टूटेतो वढईकानाश होताहै॥२२॥

भाद्रपदशुक्लपक्षस्याष्टम्यां नागरैर्वृतो राजा ॥ दैवज्ञसचिवकंचुकिविप्रमुख्यैः सुवेषधरैः ॥ २३ ॥ अहतांबरसंवीतां यष्टिं पौरैर्दृढां पुरं पौरैः ॥ स्रग्गंधधूपयुक्तां प्रवेशयेच्छंखतूर्यरवैः ॥ २४ ॥ रुचिरपताकातोरणवनमालालंकृतं प्रहृष्टजनं ॥ संमार्जितार्चितपथं सुवेषगणिकाजनाकीर्णं ॥ २५ ॥ अभ्यर्चितापणगृहं प्रभूतपुण्याहवेदनिर्घोषं ॥ नटनर्त्तकगेयज्ञैराकीर्णचतुष्पथं नगरं ॥ २६ तत्र पताकाः श्वेता विजयाय भवं निरोगदाः पीताः ॥ जयदाश्च चित्ररूपा रक्ताः शस्त्रप्रकोपाय ॥ २७ ॥ यष्टिं प्रवेशयंती निपातयंती भयाय नागाद्याः ॥ बालानां तलशब्दे संग्रामः सत्वयुद्धे वा ॥ २८ संतस्य पुनस्तस्मा विधिवद्यष्टिं प्ररोपयेद्यंत्रे ॥ जागरमेकादश्यां नरेश्वरः कारयेच्चास्याः ॥ २९ ॥ सितवस्त्रोष्णीषधरः पुरोहितः शाक्रवैष्णवैर्मंत्रैः ॥ जुहुयादग्निं सांवत्सरो निमित्तानि गृण्हीयात् ३०

भाद्रपदशुक्ल अष्टमीको उत्तमवेष (पोसाग) धारण करनेवाले नागरिक लोक· दैवज्ञ· प्रधान· अंतःपुरका पहरेवाला· ब्राह्मणप्रमुख इनकरको युक्त राजाने ॥ २३ ॥ अहतवस्त्रसे वेष्टित और माला· धूप· इसकरके युक्त ऐसी इंद्रध्वजसंबंधी लकडी नागरिक लोकसहित शंख और वाद्य इनके शब्दके सहित नगरमें प्रवेश करना ॥ २४ ॥ सुंदर पताका· तोरण और वनमाला (पत्रपुष्पमाला) इनकरके स्कशोभित आनंदित जनोंसे युक्त· जलसे ठंढे औरस्कशोभित ऐसे है मार्ग जिसमें ऐसे सुंदर वेश्योंके समूहसे व्याप्त· ॥ २५ पूजित है बजारमेंके गृह (दुकान) जिस्के विषे ऐसे· बहुत मंगलशब्द और वेदघोष यह है जिसमें ऐसे· नट· नर्त्तक· गायक इन्होकरके व्याप्त है चतुष्पथ (चवहटा) जिस्मे ऐसे नगरमें राजाने वह लकडी ल्यावना ॥ २६ ॥ वह नगरमें खडा किया पताका· श्वेतवर्ण विजय देता है· पीतवर्ण रोग देता है· चित्रवर्ण जय देता है· रक्तवर्ण युद्ध देता है· ऐसा पताकाका फल जानना ॥ २७ ॥ नगरमें जानेवाले यष्टीको गजादिक पशू गिरावें तो भय होता है· लडकोने उस समय हस्तसे तलशब्द किया तो युद्ध होता है· बैल इत्यादि प्राणियोंका युद्ध होय तो राजोंका युद्ध होता है ॥ २८ ॥ बढईने वह लकडी पुनः काटके यथा यंत्रमें बैठावना (आसनपर कुछ आधार लगायके तिर्कस रखना) वह यष्टीके आगे राजाने एकादशीके दिन जागरण करना ॥ २९ ॥ श्वेत वस्त्र शोभित उष्णीष (पगडी) यह धारण करके पुरोहितने इंद्रदैवत्य और विष्णुदैवत्य मं

इष्टद्रव्याकारः सुरभिः स्निग्धो घनोऽनलोऽर्चिष्मान्॥ शुभकृदतोऽन्यो नेष्टो यात्रायां विस्तराभिहितः॥३१॥ स्वाहावसानसमयेऽस्वयमुज्ज्वलार्चिः स्निग्धः प्रदक्षिणशिखो हुतभुङ् नृपस्य॥ गंगादिवाकरसुताजलचारुहारां धात्रीं समुद्ररसनां वशगां करोति॥३२॥ चामीकराशोककुरंटकाब्जवैडूर्यनीलोत्पलसन्निभेऽग्नौ॥ न ध्वांतमंतर्भवनेऽवकाशं करोति रत्नांशुहतं नृपस्य॥३३॥ येषां रथौघार्णवमेघदंतिनां समस्वनोऽग्निर्यदि वापि दुंदुभेः॥ तेषां मदांधेभघटाविघट्टिता भवंति याने तिमिरोपमा दिशः॥३४॥ ध्वजकुंभहयेभभूभृतामनुरूपे वशमेति भूभृताम्॥ उदयास्तधराधराहिमवद्विंध्यपयोधरा धरा॥३५॥ द्विरदमदमहीसरोजलाजैर्घृतमधुना च हुताशने सगंधे॥ प्रणतनृपशिरोमणिप्रभाभिर्भवति पुरस्फुरितेव भूर्नृपस्य॥३६॥

त्रसे अग्नीमें हवन करना और जोतिषीने शुभाशुभचिन्हका विचार करना॥३०॥ इष्टद्रव्यके आकारसमान सुंदर स्निग्ध निबिडज्वालायुक्त ऐसा अग्नि कल्याणकारक होताहै. इससे अन्यप्रकारका अग्नि अशुभ. इसका विस्तार यात्राप्रकरणमें कथन कियाहै॥३१॥ पूर्णाहुती देनेके समय प्रयत्न करने के विना स्वतःही प्रज्वलित (तेजस्वी) ज्वालायुक्त निर्मल प्रदक्षिणज्वालायुक्त ऐसा अग्नि होय तो गंगा यमुना वा इनका जल यही सुंदर हार ऐसी और समुद्रही है वसन जिस्का ऐसी पृथ्वी राजाके स्वाधीन होतीहै॥ ३२॥ सुवर्ण अशोकपुष्प कुरंटकपुष्प कमल वैडूर्यमणि नीलकमल इनके समान पूर्णाहुतिके समय अग्नि होय तो रत्नोंके किरणसे नाश भयाहै अंधकार जिस्का ऐसा राजगृहका मध्यभाग होगा (रत्नोंसे पूर्ण राजगृह होगा॥३३॥ जिस राजोंके अग्नीका शब्द रथसमूह समुद्र मेघ गज इनके शब्दके समान शब्द होगा वह राजाके गमनकालमें मदांधगजसमूहसे चलित ऐसी दिशा अंधकारसमान होतीहै (वह राजोंके पील खानेमें बहुत गज होतेहैं)॥३४॥ वह अग्नि ध्वज कुंभ अश्व गज पर्वत इनके समान होय तो उदयपर्वत और अस्तपर्वत यहहैं ओष्ठ जिस्को ऐसी और हिमालय और विंध्य यहहैं स्तन जिस्को ऐसी पृथ्वी राजाके स्वाधीन होतीहै (सार्वभौम होताहै)॥३५॥ गजका मदोदक भूमी कमल लाजा घृत मधु इनके समान गंध अग्निमेंसे आवे तो प्रणत राजोंके मुकुटोंकी कांतिसे प्रका

उक्तं यदुत्थितशक्रकेतौ शुभाशुभं सप्तमरीचिरूपैः॥ तज्जन्म
यज्ञग्रहशांतियात्राविवाहकालेष्वपि चिंतनीयं॥३७॥ गुडपूप
पायसाद्यैर्विप्रानभ्यर्च्य दक्षिणाभिश्च॥ श्रवणेन द्वादश्यामुत्था
प्योऽन्यत्रवाश्रवणात्॥३८॥ शक्रकुमार्यः कार्याः प्राह मनुः स
प्त पंच वा तज्ज्ञैः॥ नंदोपनंदसंज्ञे पादेनार्धेन चोच्छ्रायात्॥३९॥
षोडशभागाभ्यधिके जयविजये द्वे वसुंधरे चान्ये॥ अधिकाः
शक्रजनित्री मध्येऽष्टांशेन चैतासां॥४०॥ प्रीतैः कृतानि विबुधै
र्यानि पुरा भूषणानि शक्रकेतोः॥ तानि क्रमेण दद्यात्पिटकानि
विचित्ररूपाणि॥४१॥ रक्ताशोकनिकाशं चतुरस्रं विश्वकर्मणा
प्रथमं॥ रशनास्वयंभुवा शंकरेण चानेकवर्णधरी॥४२॥ अष्टा
स्रि नीलरक्तं तृतीयमिंद्रेण भूषणं दत्तं॥ असितं यमश्च तु
र्थं मसूरकं कांतिमद्यच्छत्॥४३॥

——शित भूमी राजाके स्वाधीन होती है (सकल राजा शरण आवते हैं) ३६॥
इंद्रध्वज उठावनेसे जो शुभाशुभ फल अग्निस्वरूपसे कथन किया सो ज
न्मसमय· यज्ञ· गृहशांति· यात्रा· विवाह· इत्यादि कर्ममें भी विचार करना
(कुल· शील· वृत्त· वित्त· इनका विचार करके जो यथायोग्य हो यसो करना)।
॥३७॥ गुड· अनरसा· खीर इत्यादि पक्वान्न और दक्षिणा इसकरके ब्रा
ह्मणकी पूजा करके श्रवणयुक्त द्वादशीको अथवा अन्यत्र श्रवणपर
वह इंद्रध्वज खडा करना· (सामने खडा करना)। श्रवण न होय तो भी द्वा
दशीको करना॥३८॥ शक्रध्वजके शोभार्थ कुमारिका सात किंवा पांच श
क्रध्वजविधिज्ञने करना· ऐसा मनु राजा कहता भया· वह कुमारिका इंद्र
ध्वजके उंचाईके चतुर्थांशप्रमाण नंदा और अर्धांशप्रमाण उपनंदा· षोड
शभाग प्रमाण जय· विजय और दो वसुंधरा नामक करना और सातवी
अष्टांश प्रमाण इंद्रमाता नामक कुमारिका करना सो यह ६ कुमारिकाके म
ध्यमे रखना॥३९॥४०॥ संतुष्ट भये देवतोंने इंद्रध्वजको पूर्वमे जो भूषण
किया सो विचित्रस्वरूप भूषण क्रमसे राजाने देना॥४१॥ लाल अशोक
पुष्पके समान चतुष्कोण अलंकार प्रथम विश्वकर्माने इंद्रध्वजको दिया
ब्रह्मदेवने और शंकरने अनेक वर्णकी रसना (कमर बांधने का पट्टा) दूसरा
दिया॥४२॥ अष्टकोण नीलवर्णका रक्तवर्णका तिसरा भूषण इंद्रने दि
या· काला मसूरक नामक चवथा तेजस्वी भूषण यमने दिया॥४३॥॥

मंजिष्ठाभंवरुणः षडस्रितत्पंचमंजलोर्मिनिभं ॥ मायूरंकेयूरंषष्ठंवायुर्जलदनीलं ॥ ४४ ॥ स्कंदःस्वंकेयूरंसप्तममदद्ध्वजायबहुचित्रं ॥ अष्टममनलज्वालासंकाशंहव्यभुग्दत्तं ॥ ४५ ॥ वैडूर्यसदृशमिंदुर्नवमंग्रैवेयकंददावन्यत् ॥ रथचक्राभंदशमंसूर्यस्त्वष्टाप्रभायुक्तं ॥ ४६ ॥ एकादशमुदूर्शंविश्वेदेवाःसरोजसंकाशं ॥ द्वादशमपिचनिवंशंमुनयोनीलोत्पलाभासं ॥ ४७ ॥ किंचिदधऊर्ध्वेनिर्णतमुपरिविशालंत्रयोदशंकेतोः ॥ शिरसिबृहस्पतिशुक्रौलाक्षारससंनिभंददतुः ॥ ४८ ॥ यद्यद्येनविनिर्मितममरेणविभूषणंध्वजस्यार्थे ॥ तत्तद्दैवतंविज्ञातव्यंविपश्चिद्भिः ॥ ४९ ॥ ध्वजपरिमाणत्र्यंशःपरिधिःप्रथमस्यभवतिपिटकस्य ॥ परतःप्रथमात्प्रथमादष्टांशाष्टांशहीनानि ॥ ५० ॥ कुर्यादहनिचतुर्थेपूरणमिंद्रध्वजस्यशास्त्रज्ञः ॥ मनुनात्वागमगीतान्मंत्रानेतान्पठेन्नियतः ॥ ५१ ॥

लोहितवर्ण षट्कोण जलमेके भवरे समान पांचवा भूषण वरुणने दिया· मोरके पंखके मेघके समान नीलवर्ण छटवां वा हु भूषण वायूनेदिया ४४ बहुतचित्रवर्ण· अपना बाहु भूषण ध्वजकेवास्ते सातवा कार्तिकस्वामीने दिया· अग्निज्वालाके समान आठवा भूषण अग्नीने दिया· ॥ ४५ ॥ वैडूर्यमणीकेसमान दुसरा नवम कंठभूषण चंद्रने दिया· रथचक्रके समान तेजस्वी दसवां भूषण त्वष्टानामक सूर्यने दिया· ॥ ४६ ॥ कमलके समान उदूर्शनामक ग्यारहा भूषण विश्वेदेवने दिया· नीलकमलके समान निवंशनामक बारहवा भूषण मुनीयोनेदिया ॥ ४७ ॥ थोडासा नीचे ऊपर नम और बडा माहुरके समानलाल· ऐसा तेरहवा छत्राकार भूषण इन्द्रध्वजके मस्तकपर बृहस्पति और शुक्र यह देतेभए ॥ ४८ ॥ जो २ भूषण जिस २ देवतोने इंद्रध्वजके वास्ते निर्माणकिया वह भूषणकी देवता निर्माणकर्ता देवहै ऐसा विद्वानने जानना· ॥ ४९ ॥ ध्वजप्रमाणका तिसराहिस्सा पहिले भुषणका घेरहोताहै· आगेके भूषणका घेर पीछेके भूषणके अपेक्षा अष्टमांश कमती रहना चाहिये· ॥ ५० ॥ अष्टमीसे चवथेदिन (एकादशीको) पूर्वोक्तअलंकारसे इंद्रध्वजका पूरण शास्त्रज्ञने करना (अलंकार पहिरावना· प्रथम राजाने नम्रहोयके खडे रहना मनूने कथित आगमोक्त मंत्र नियमसे कहना· ॥ ५१ ॥ ४३ ॥

हराकैवैवस्वतशक्रसोमैर्धनेशवैश्वानरपाशभृद्भिः॥महर्षिसं
घैः सदिगप्सरोभिः शुक्रांगिरःस्कंदमरुद्गणैश्च॥५२॥यथात्वमू
र्जस्करनैकरूपैःसमर्चितस्त्वाभरणैरुदारैः॥तथेहतान्याभर
णानिदेवशुभानिसंप्रीतमनागृहाण॥५३॥अजोऽव्ययःशाश्वत
एकरूपोविष्णुर्वराहः पुरुषःपुराणः॥त्वमंतकःसर्वहरःकृशानुः
सहस्रशीर्षाशतमन्युरीड्यः॥५४॥कविंसप्तजिव्हंत्रातारमिंद्र
मवितारंसुरेशं॥व्हयामिशक्रंवृत्रहणंसुषेणमस्माकंवीराउ
त्तरेभवंतु॥५५॥प्रपूरणेचोच्छ्रयणेप्रवेशेस्नानेनयामाल्यविधौ
विसर्गे॥पठेदिमान्नृपतिःसोपवासोमंत्राञ्छुभान्पुरुहूतस्यके
तोः॥५६॥छत्रध्वजादर्शफलार्धचंद्रैर्विचित्रमालाकदलीक्षुदंडैः
॥सव्यालसिंहैःपिटकैर्गवाक्षैरलंकृतंदिक्षुचलोकपालैः॥५७

शिव·सूर्य·यम·इंद्र·चंद्र·कुबेर·अग्नि·वरुण·महर्षिसमुदाय·दिशा·अप्सरा·
शुक्र·गुरु·स्कंद·वायू यहसर्वने॥५२॥जैसातुम्हाराअनेकप्रकारसे महान·
अलंकारकरके पूजनकिया·तैसा इहां यह शुभअलंकार·संतुष्टहोयकेग्रह
णकरो॥५३॥अज·नाशरहित·शाश्वत·एकरूप·विष्णु·वराह·पुराणपुरु
ष·अंतक·सर्वहरणकर्त्ता·अग्नि·सहस्रवदन·शतक्रतु·स्तवनकरनेयोग्य
॥५४॥आद्यविद्वान्·सप्तजिव्ह·पालनकर्त्ता·परमेश्वर·रक्षिता·देवाधिप·
वृत्रहंता·शोभनसेनायुक्त·ऐसे इंद्रको आमंत्रणकरताहै·हमारे वीर जय
वान् होय (यहमंत्रकाअर्थहै·यहमंत्र कौनवखत राजानेकहना सोप्रकार
आगेके श्लोकमेकहतेहैं·)॥५५॥ इंद्रध्वजको अलंकारपहिरावनेकेसमय·
खडाकरनेके समय·प्रवेशकालमे·स्नानकालमे·पुष्पमालासमर्पणमे·वि
सर्जनसमयमे उपवासयुक्त राजाने यहशुभमंत्रपठनकरना॥५६॥छत्र·
ध्वज·ऐना·फल·अर्धचंद्र·चित्रवर्णमाला·केला·ऊख·सर्प·सिंह·और ग
वाक्ष (झरोखा) इनकरकेयुक्त·ऐसे भूषण आठ दिशाकेतरफ·दिक्पा
लोंसे अलंकृत (यहसर्वकाष्ठकाकरना·) ऐसे॥५७॥ध्वजको अष्टदिशा
मे रज्जु बांधना·वहतूटानहोय·बलिष्ठकाष्ठकी दो मातृका ध्वजके दोनो
बगल·करना·उत्तमहै अर्गल और पादतोरण जिनके ऐसी·इसकेछा
लकीफूटीनही ऐसेकुमारिकासे युक्त·वह इंद्रध्वज खडाकरना·॥५८
मंगलशब्द·आशीर्वाद·नमस्कार·इनकरके सहित निरंतर जनशब्द·यु
क्त·सुंदर पटह (रणवाद्य·) मृदंग·शंख·दुंदुभी इत्यादि वाद्यशब्दयुक्त·

अच्छिन्नरज्जुरदृढकाष्ठमातृकं सुश्लिष्टयंत्रार्गलपादतोरणं उत्था
पयेल्लुप्तमहस्त्रवस्कः सारद्रुमाभग्नकुमारिकान्वितं ॥५८॥ अ
विरतजनरावं मंगलाशीःप्रणामैः पटुपटहमृदंगैः शंखभेर्यादिभि
श्च ॥ श्रुतिविहितवचोभिः पाठद्भिश्च विप्रैरशुभरहितशब्दं केतुमु
त्थापयीत ॥५९॥ फलदधिघृतलाजाक्षौद्रपुष्पाग्रहस्तैः प्रणिपतित
शिरोभिस्तुष्टुवद्भिश्च पौरैः ॥ धृतमनिमिषभर्त्तुः केतुमीशः प्रजानां
अरिनगरनताग्रं कारयेत् द्विड्वधाय ॥६०॥ नातिद्रुतं न च विलंबि
तमप्रकंपमध्वस्तमाल्यपिटकादिविभूषणं च ॥ उत्थानमिष्टमशुभं
यदतोऽन्यथा स्यात्तच्छांतिभिर्नरपतेः शमयेत्पुरोधाः ॥६१॥ क्रव्या
दकौशिककपोतककाककंकैः केतुस्थितैर्महदुशंति भयं नृपस्य ॥
चाषेण चापि युवराजभयं वदंति श्येनो विलोचनभयं निपतन्करो
ति ॥६२॥ छत्रभंगपतने नृपमृत्युस्तस्करान्मधुकरोति निलीनं ॥
हंति चाप्यथ पुरोहितमुल्का पार्थिवस्य महिषीमशनिश्च ॥६३
राज्ञीविनाशं पतिता पताका करोत्यवृष्टिं पिटकस्य पातः ॥ मध्याग्र
मूलेषु च केतुभंगो निहंति मंत्रिक्षितिपालपौरान् ॥६४॥ ७॥

वेदविहित वाक्यको पढनेवाले ब्राह्मणोके शब्दसे युक्त और शुभ शब्द युक्त ध्व
जा खडा करना ॥५९॥ फल·दधि·घृत·लावा·मधु·पुष्प·यह है हस्ताग्र मे जिनके
ऐसे·नम्र है मस्तक जिनके ऐसे और स्तुती करनेवाले नागरिकलोकसे वेष्टित
ऐसा इंद्रध्वज राजाने शत्रुवधार्थ शत्रुनगरके तरफ नम्र है अग्र जिस्का ऐसा
करना·॥६०॥ बहुत जल्दी नही· बहुत बिलंबित भी नही ऐसा·कंपित नही ऐ
सा·माला और भूषण गिरा नही ऐसे ध्वजका उत्थापन राजाको शुभ·और ऐ
से अन्यथा अशुभ होताहै· वह अशुभकी शांति करके पुरोहितने शमन कर
ना·॥६१॥ गृध्र·घुघु·कपोत·काक·कंक (जिस्का पक्ष वाण मे लगावते हैं·)
यह पक्षी जो ध्वजके ऊपर बैठे तो राजाको महाभय होताहै· चाषपक्षी
बैठे तो युवराजको भय होताहै· श्येन पक्षी बैठे तो नेत्रपीडा होतीहै ॥
॥६२॥ ध्वजके छत्रका भंग किंवा पतन होय तो· राजाको मृत्यु· ध्वजको
मधुमक्षिका लगे तो चोरभय होताहै· उल्का·(अ॰३३ श्लो॰८) पात हो
य तो पुरोहितका वध होताहै· अशनि (अ॰३३ श्लोक ७) पात होय तो
राजाके मुख्य स्त्रीका नाश होता है·॥६३॥ ध्वजकी पताका गिरे तो रा
जाके स्त्रियोंका नाश होताहै· पूर्वोक्त भूषण गिरे तो अवृष्टि होतीहै· मध्य

धूमावृते शिखिभयं तमसा च मोहो व्यालैश्च भग्नपतितैर्न भवं
त्यमात्याः॥ ग्लायंत्युदक्प्रभृति चक्रमशो द्विजाद्या भंगे च बंधकि
वधः कथितः कुमार्योः॥६५॥ रज्जूत्संगच्छेदने बालपीडा राज्ञो मा
तुः पीडनं मातृकायाः॥ यद्यत्कुर्युर्बालकाश्चारणा वा नत्तत्ताहृग्भा
वि पापं शुभं वा॥६६॥ दिनचतुष्टयमुत्थितमर्चितं समभिपूज्य नृ
पोऽहनि पंचमे॥ प्रकृतिभिः सह लक्ष्यविसर्जयेद्बलभिदः स्वब
लाभिविवृद्धये॥६७॥ उपरिचरवसुप्रवर्त्तितं नृपतिभिरप्यनुसंत
तं कृतं॥ विधिमिममनुमन्य पार्थिवो न रिपुकृतं भयमाप्नुयादिति
॥६८॥ ॥इति इंद्रध्वजसंपत्॥ ॥अथ नीराजनविधिः॥ भग
वति जलधरपक्ष्मक्षपाकरार्केक्षणे कमलनाभे॥ उन्मीलयति
तुरंगमकरिजननीराजनं कुर्यात्॥१॥ द्वादश्यामष्टम्यां कार्त्तिकशु
क्लस्य पंचदश्यां वा॥ आश्वयुजे वा कुर्यान्नीराजनसंज्ञितां शांतिं॥२॥

अग्र· मूल· इनके विषे केतूका भंग होय तो क्रमसे प्रधान· राजा· नागरिक लोक
इनका नाश होता है ॥६४॥ वह ध्वज धूमावृत (उसकाल मे आकाशमे धूम होय
तो) अग्निभय होता है· अंधकारसे व्याप्त होय तो चित्तको मोह होता है· व्याल (जं
तु विशेष) भग्न होयके गिरे तो प्रधानका नाश होता है· उत्तरादि दिशामे उत्पात
होय तो क्रमसे ब्राह्मणादि वर्णोंका नाश होता है· पूर्वोक्त इंद्रकुमारिकोंका भंग
होय तो वेश्याका नाश होता है ॥६५॥ ध्वजकी डोरी टूटे तो बालकोको पीडा·
तोरणके बाजूका काष्ठ टूटे तो राजाके माताको पीडा बालक किंवा चारण·
(भाट) जो २ करें सो सर्व शुभ किंवा अशुभ तैसा होनहार समझना· ॥६६॥
चार दिन पूजित अनंतर पांचवे दिन उत्थापित ऐसा इन्द्रका चिन्ह (ध्वज)
उसको राजाने पूजा करके प्रधानके सहित अपाने बलकी वृद्धी होय इसके वा
स्ते पांचवें दिन उसका उत्थापन करना ॥६७॥ उपरिचर वसुसे प्रवृत्त और रा
जाने भी किया ऐसे· यह इंद्रध्वजपूजनको जो राजा करे सो शत्रुकृत भयको
प्राप्त होगा नही॥६८॥ इति बृहत्संहितायां इंद्रध्वजसंपन्नाम त्रिचत्वारिं
शोऽध्यायः॥४३॥४४॥ ॥अथ नीराजनविधिः॥ मेघहै पक्ष्म जिसको ऐसा चं
द्र सूर्य यही है नेत्र जिसके ऐसा· कमलनाभि भगवान नारायण नेत्र खोलते हु
ते· अश्व· गज· मनुष्य इनका नीराजनविधि· अथवा नीरांजन (जलका अंज
न कहिये स्पर्श) विधि करना॥१॥ कार्त्तिक शुक्ल पक्षमे· द्वादशी· अष्टमी· पौर्णिमा
इन तिथीमे अथवा· आश्विन शुक्ल पक्षमे· इसी तिथीमे नीराजन संज्ञक शांति कर
ना॥२॥

नगरोत्तरपूर्वदिशि प्रशस्तभूमौ प्रशस्तदारुमयं ॥ षोडशहस्तो
च्छ्रायं दश विपुलं तोरणं कार्यं ॥३॥ सर्जोदुंबरखाककुभमयं
शांतिसद्म कुशबहुलं ॥ वंशविनिर्मितमत्स्यध्वजचक्रालंकृतद्वा
रं ॥४॥ प्रतिसरया तुरगाणां भल्लातकशालिकुष्ठसिद्धार्थान् ॥
कंठेषु निबध्नीयात्पुष्ट्यर्थे शांतिगृहगानां ॥५॥ रविवरुणविश्वे
देवप्रजेशपुरुहूतवैष्णवैर्मंत्रैः ॥ सप्ताहं शांतिगृहे कुर्याच्छांतिं
तुरंगाणां ॥६॥ अभ्यर्चितान परुषवक्तव्याना पिनाडनीयास्ते ॥
पुण्याहशंखतूर्यध्वनिगीतरवैर्विमुक्तभयाः ॥७॥ प्राप्तेऽष्टमेऽ
न्हि कुर्यादुदङ्मुखं तोरणस्य दक्षिणतः ॥ कुशचीरावृतमाश्र
ममग्निं पुरतोऽस्य वेद्यां च ॥८॥ चंदनकुष्ठसमंगाहरितालमनः
शिलाप्रियंगुवचाः ॥ दंतमृतांजनरजनीसुवर्णपुष्पाग्निमंथा
श्च ॥९॥ श्वेतासपूर्णकोशाकटंभरात्रायमाणसहदेवीः ॥ ना
गकुसुमं स्वगुप्तां शतावरीं सोमराजीं च ॥१०॥

नगरके ईशानमे शुद्धभूमीकेविषे यज्ञवृक्षका सोलहात ऊंचा और दसहा
तचवडा ऐसा तोरण करना ॥३॥ सर्ज (रालवृक्ष) गुल्लर ककुभ (अर्जुन
वृक्ष) यह वृक्षोंके -वांसके निर्मित जो मत्स्य ध्वज चक्र इनकरके सुशोभि
त है द्वार जिस्का ऐसा शांतिकरनेके वास्ते मंडप करना ॥४॥ प्रतिसर (कुंकु
मरंजित सूत्र अथवा पीतवर्ण सूत्र) इसकरके भेलावा धान कुलांजन
गौरसर्षप यह बांधके शांति गृहमे लेगये अश्वके पुष्ट्यर्थ कंठमे वह मा
ल बांधना ॥५॥ सूर्य वरुण विश्वदेव ब्रह्मा इंद्र विष्णु इनके मंत्रोंसे सा
त दिन शांति गृहमे जोररवे अश्वउनकी शांति करना ॥६॥ वह पूजित अ
श्वको अशुभशब्द बोलना नहीं और ताडन भी करना नहीं मंगल शब्दसे
और शंख वाद्य इनके शब्द और गीतशब्द इनकरके वह अश्व भयरहित
करना ॥७॥ अष्टमदिन वह पूर्वोक्त तोरणको दक्षिणतरफ उत्तरमुख गृह कर
के वह दर्भ और वल्कल इनकरके वेष्टित करें उस्के आगे वेदीमे अग्निस्थापन क
रना ॥८॥ चंदन कुलांजन मंजिष्ठ हरताल मैनशील ककुनी वच दंत
गुरुच नीलकपास हरदी स्वर्णपुष्प नरवेल ॥९॥ श्वेत कौवाठोडी
पूर्णकोशा पुनर्नवा (गदहपूर्णा) त्रायमाण सहदेवी पीतजूही कु
रई शतावरी सोमवल्ली ॥१०॥ यह औषधी कलशमे रखके वह बीचमे
रखना मधु पायस गोहू यह पदार्थ जिसमे बहुत ऐसे नाना प्रकारके भक्ष्य पद

कलशेष्वेतान्कृत्वा संभारानुपहरेद्बलिं सम्यक्॥ भक्ष्यैर्नानाकारैर्मधुपायसयावकप्रचुरैः॥११॥ खदिरपलाशोदुंबरकाश्मर्यश्वत्थनिर्मिताः समिधः॥ स्रुक्कनकाद्रजताद्वा कर्त्तव्या भूतिकामेन॥१२॥ पूर्वाभिमुखः श्रीमान्वैयाघ्रचर्मणि स्थितो राजा॥ तिष्ठेदनलसमीपे तुरगभिषग्दैववित्सहितः॥१३॥ यात्रायां यदभिहितं ग्रहयज्ञविधौ महेंद्रकेतौ च॥ वेदीपुरोहितानललक्षणमस्मिंस्तदवधार्यं॥१४॥ लक्षणयुक्तं तुरगं द्विरदं चैव दीक्षितं स्नातं॥ अहतसितांबरगंधस्रग्धूपाभ्यर्चितं कृत्वा॥१५॥ आश्रमतोरणमूलं समुपनयेत्सांत्वपूर्वकैर्वाचा॥ वादित्रशंखपुण्याहनिःस्वनापूरितदिगंतं॥१६॥ यद्यानीतस्तिष्ठेद्दक्षिणचरणं हयः समुत्क्षिप्य॥ स जयति तदा नरेंद्रः शत्रून्चिराद्विनायत्नात्॥१७॥ त्रस्यन्नेशाः सत्त्वः परिशेषं चेष्टितं द्विपहयानाम्॥ यात्रायां व्याख्यातं तदिह विचिंत्यं यथायुक्ति॥१८॥

र्थका यथाविधि बलि देना॥११॥ खैर·पनस·गूलर·शिवण·अश्वत्थ·इनकी समिधा सुवर्ण किंवा रजत इनकी स्रुची ऐश्वर्येच्छु राजाने करना॥१२॥ अश्व·वैद्य·दैवज्ञ·इनकरके सहित श्रीमान् राजाने व्याघ्रचर्मपर पूर्वाभिमुख अग्नीके समीप बैठना॥१३॥ यात्रा·ग्रहयज्ञ·इंद्रध्वज·इनके विषे जो वेदी·पुरोहित और अग्नि इनके लक्षण कथन किया है वह इहां भी दैवज्ञने देखना॥१४॥ कृतदीक्षा·स्नापित·ताल्वोष्ठतालुवदनादि·लक्षणयुक्त·अश्व·और गज·इनकी अहत (नवीनवस्त्र) श्वेतवस्त्र·चंदन·माला·धूप·इत्यादिकसे पूजन करके॥१५॥ गृहतोरणके पास वाणीसे शांति करते (पुचकारते) धीरे २ ले आवना·चलावना·उसकालमे·वाद्य·शंख·मंगल शब्द इनकरके दिशा पूर्ण करना॥१६॥ जो ले आये·घोडा·और हाथी·सो दक्षिण पांव उठाय के खडा होय तो·वह राजा यत्नके विना शत्रूको शीघ्र जीतेगा॥१७॥ वह अश्व और हाथी दुख पावे तो राजाको शुभ नही·वह हाथी और घोडा इनका परिशेष लक्षण·यात्रामे कथन किया है सो इहां यथायुक्ति देखना॥१८॥ पुरोहितने अन्नका पिंड अभिमंत्रण करके घोडेके मुखके पास खानेको देना·वह पिंडको घोडा·सूंघे किंवा भक्षण करे तो वह घोडा राजाको जय करनेवाला होता है सूंघे नही और भक्षण करे नही तो राजाका पराजय होगा॥१९॥ पूर्वोक्त औषधी मिश्रित स्थापित कुंभजलसे·गूलरके पत्र भेंकरके·शांतिकौ

पिंडमभिमंत्र्यस्वात्तुरोहितोवाजिनेसमुपदिशेत्॥ अग्नीषारुत्ज
पकुहूपरीतोनोन्यथाभिहितः॥१९॥ कलशोदकैः पुष्पाख्यामाकृष्यो
दुंबरीं स्पृशेत्तुरगान्॥ शांतिकपौष्टिकमंत्रैरेवंसेनांसनृपनागां॥२०॥ शं
तिरा ष्ट्रविवृध्यै कृत्वा भूयोभिचारकैर्मंत्रैः॥ मृन्मयमरिंविभिंद्याच्छू
लेनोरस्थले विप्रः॥२१॥ खलिनं हयायदद्यादभिमंत्र्यपुरोहितस्ततो
राजा॥ आरुह्योदक्पूर्वांयायान्नीराजितःसबलः॥२२॥ मृदंगशंखध्व
निहृष्टकुंजरस्त्रवन्मदामोदसुगंधिमारुतः॥ शिरोमणिव्रातचल०
त्प्रभाचयोज्वलन्निवस्वानिवतोयदात्यये॥२३॥ हंसपंक्तिभिरितस्त
तोद्रिराट्संपतद्भिरिवशुक्लचामरैः॥ मृष्टगंधपवनानुवाहिभिर्धूय
मानरुचिरस्त्रगंबरः॥२४॥ नैकवर्णमणिवज्रभूषितैर्भूषितोमुकुट
कुंडलांगदैः॥ भूरिरत्नकिरणानुरंजितः शक्रकार्मुकरुचंसमुद्वहन्
॥२५॥ उत्पतद्भिरिवखंतुरंगमैर्दारयद्भिरिवदंतिभिर्धरां॥ निर्जितारि
भिरिवामरैर्नरैः शक्रवत्परिवृतोव्रजेन्नृपः॥२६॥ सवज्रमुक्ताफल
भूषणोथवासितस्त्वगुष्णीषविलेपनांबरः॥ धृतातपत्रोगजपृष्ठ०
माश्रितोघनोपरीवेंदुतलेभृगोःसुतः॥२७॥ ७॥ ७॥ ७॥

ष्टिकमंत्रसे अश्व·राजा·गज·सेना इनको अभिषेककरना॥२०॥ यह शांति राज्य
वृद्धीकेवास्तेकरकेपुनः अभिचारिक(शत्रुमारणप्रयोग) आथर्वणमंत्रसे मृ
त्तिकाकीशत्रुमूर्त्ति· औरब्राह्मणनेहृदयमेकाष्ठके शूल से भेदनकरना॥२१॥
पुरोहितनेलगाम अभिमंत्रणकरके घोड़ेकोदेना· अनंतरराजाने उसपरबैठके
नीराजित (आरती किया) ऐसाराजानेसैन्यसहितईशान्यदिशामेगमनकर
ना॥२२॥ मृदंग·शंख· इनकेशब्दोंसेआनंदितजोहाथी· उनकाचूनेवालाजो
मद उसकेसुगंधसेसुगंधितवायुयुक्त· मस्तकमेके मुकुटमणीके समुदायसे
चंचलप्रभा· शरद्ऋतुमेके प्रज्वलित सूर्यकेसमान॥२३॥ इधरउधर गिरनेवा
लाहंसपंक्तीसेजैसापर्वतशोभायमानहोताहैतैसा श्वेतचामरसे शोभा
यमान· गंधयुक्तवायूसेकंपितहैसुंदरमालाऔरवस्त्र जिनकेऐसे॥२४॥
बहुतवर्णकेमणि औरहीराइनकरकेभूषितऔर मुकुट·कुंडल·बाहुभूषण
इनकरकेभूषित· नानाप्रकारकेरत्नकिरणसेशोभित इंद्रधनुष्यकेतेजकोधारण
करनेवाला॥२५॥ आकाशमेउड़नेवाले अश्वसेऔर भूमीको विदारणकरनेवा
लेहाथीसेजीतेहैशत्रुजिन्ने ऐसादेवकेसमान मनुष्यसेवेष्टित इंद्रकेसमान
राजाशत्रूकेऊपरगमनकरे॥२६॥ अथवाहीरामोती· इनसे भूषित· श्वेत

संप्रहृष्टनरवाजिकुंजरं निर्मलप्रहरणांशुभास्वरं॥ निर्विकारमरि
पक्षभीषणं यस्य सैन्यमचिरात्स गां जयेत्॥२८॥ ॥इतिनीराजन
विधिः॥ ॥अथ खंजनदर्शनम्॥ खंजनको नामायं यो विहगस्तस्य
दर्शने प्रथमे॥ प्रोक्तानि यानि मुनिभिः फलानि तानि प्रवक्ष्यामि॥
१॥ स्थूलोऽभ्युन्नतकंठः कृष्णगलो भद्रकारको भद्रः॥ आकंठमु
खात्कृष्णः संपूर्णः पूरयत्याशां॥२॥ कृष्णो गलेऽस्य बिंदुः सितक
रटांतः स रिक्तकृद्रिक्तः॥ पीतो गोपीत इति क्लेशकरः खंजनो दृष्टः
॥३॥ अथ मधुरसुरभिफलकुसुमतरुषु सलिलाशयेषु पुण्येषु
॥ करितुरगभुजगमूर्ध्नि प्रासादोद्यानहर्म्येषु॥४॥ गोगोष्ठस
त्समागमयज्ञोत्सवपार्थिवद्विजसमीपे॥ हस्तितुरंगमशाला
च्छत्रध्वजचामराद्येषु॥५॥ हेमसमीपसितांबरकमलोत्पलपूजि
तोपलिप्तेषु॥ दधिपात्रधान्यकूटेषु च श्रियं खंजनः कुरुते॥६॥ ॥

ष्पमाला· मुकुट· विलेपन· वस्त्र· इनकरके युक्त छत्रयुक्त हाथीपर बैठके जैसे मेघ
मंडलपर चंद्रके नीचे शुक्र देखाता है तैसे राजा गमन करे ॥२७॥ आनंद युक्त
हैं मनुष्य (सिपाही) अश्व· हाथी· जिनके ऐसे· स्वच्छ आयुधके किरणसे देदी
प्यमान· निर्विकार (उत्पात रहित) शत्रुपक्षको भयंकर नजर पड़े· ऐसा जिस
राजाका सैन्य सो राजा शीघ्र पृथ्वीको जीतेगा॥२८॥ ॥इति बृहत्संहितायां
नीराजनविधिर्नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः॥४४॥ ॥अथ खंजनदर्शनं॥ खंज
नक नामक (इसको खंजरीट· खंजखेटक कहते हैं) यह पक्षी श्रावणादि चार
महिने नजर पड़ने नहीं· इसके वास्ते उसके प्रथमदर्शनमें कश्यपादि ऋषीने
जो फल कथन किया सो कहते हैं ॥१॥ जो खंजन पक्षी शरीरसे बड़ा· ऊंची गर
दन· काले कंठका सो भद्र संज्ञक· कल्याणकारक होता है· मुखसे कंठतक कृष्ण
वर्ण जो खंजन सो बहुत कल्याणकारक होयके इच्छा पूर्ण करता है॥२॥ जिस
खंजनके कंठके ऊपर काले बिंदु रहते हैं और जिसके गाल श्वेत रहते हैं वह रि
क्तसंज्ञक सर्व फल शून्य करता है· पीतवर्ण खंजन सो पीत संज्ञक वह नजर पड़े
तो क्लेशकारक होता है ॥३॥ मिष्ट और सुगंधित हैं फल और पुष्प जिस वृक्षोंके उसके
ऊपर पवित्र जलाशयके विषे· हाथी· घोड़ा सर्प· इनके मस्तकपर· देवालयपर·
उद्यान (बगीचा) गृहके विषे ॥४॥ गौके ऊपर· गौके स्थानमें· साधुसमूहमें· यज्ञ
में विवाहादि उत्सव· राजा· ब्राह्मण· इनके समीप· हाथी· घोड़े इनके शाला·
(गृह) इसपर· छत्र· ध्वज· चामर· झारी· कुंभ· इत्यादिकोंपर ॥५॥ सुवर्णके पा

पंकेस्वाहन्नाप्तिर्यंप्रसंभक्षगोमध्येपगतेः॥ शाद्वलगेवस्त्राप्तिः श्शकटस्थेदेशविभ्रंशः॥७॥ गृहपटलेऽर्थभ्रंशोवधेबंधोऽशुचौभवति रोगः॥ पृष्ठेत्वजाविकानांप्रियसंगममावहत्याशु॥८॥ महिषोष्ट्रगर्दभास्थिश्मशानगृहकोणशर्करादिस्थः॥ प्राकारभस्मकेशेषु चाशुभोमरणरुग्भयदः॥९॥ पक्षौधुन्वन्नशुभः शुभःपिबन्वारि निम्नगासंस्थः॥ सूर्योदयेप्रशस्तोनेष्टफलःखंजनोऽस्तमये॥१०॥ नीराजनेनिवृत्तेयया दिशा खंजनंनृपोयातं॥ पश्येत्तया गतस्य क्षिप्रमरातिर्वशमुपैति॥११॥ तस्मिन्निधिर्भवति मैथुनमेति यस्मिन्यस्मिंस्तु छर्दयति तत्र तले स्तिकाचः॥ अंगारमप्युपदिशंति पुरीषणेस्य तत्कौतुकापनयना परवनेह्रदिस्थैः॥१२॥ मृतविकलविभिन्नरोगिनः स्वतनुसमानफलप्रदःखगः॥ धनकृदभिनिलीयमानकोवियतिचबंधुसमागमप्रदः॥१३॥ ७॥ ७॥ ७॥

स० श्वेतवस्त्र-कमल-नीलकमल पूजित और उपलिप्तस्थान इनके विषे दहीके पात्रपर-धान्यकी राशीपर खंजनपक्षी प्रथमदेखे तो लक्ष्मी प्राप्त होतीहै॥६॥ खंजनपक्षीको चडपर बैठे देखे तो उत्तम अन्न मिलताहै-गोबरपरदेखे तो गोरस संपत्ती होतीहै-हरेघासपर देखे तो वस्त्रप्राप्ती होतीहै-गाडीपर देखे तो देशनाश होताहै॥७॥ घरके ऊपर देखे तो द्रव्यनाश-सर्पके रज्जूपर देखे तो बंधन-अपवित्रस्थानपर देखे तो रोग होताहै-बकरा-मेढा इनके पीठपर देखे तो प्रिय प्राप्ती शीघ्र होतीहै॥८॥ महिष-ऊंट-गर्दभ-हाड-श्मशान-गृहकोण-बालूका पर्वत-प्राकार(पत्थरसे बांधा भया कोट) भस्म-केश-इनके विषे खंजनपक्षीदेखे तो अशुभ-और मृत्यु-रोग इनका भय करताहै॥९॥ पंख हिलतेहै ऐसे खंजनको देखे तो शुभ नही-नदीके तटपर बैठके जलप्राशन करते देखे तो शुभ होताहै-सूर्योदयमें खंजनदेखे तो शुभ-सूर्यास्तमें देखे तो अशुभ होताहै॥१०॥ नीराजनविधि समाप्तीके अनंतर जिस दिशामें खंजनपक्षी जाय ऐसा राजा देखे वह दिशामें राजा जाय तो शीघ्र शत्रू वश होंगे (शत्रूको जीतेंगे)॥११॥ खंजनपक्षी जिस स्थलपर मैथुन करे वह भूमीमें निधि (द्रव्य) रहताहै जिसस्थानमें वमन (छाडे) उसके नीचे भूमीमें कांच रहतीहै-जहा विष्टा करे उहां कोइला नीचे रहताहै ऐसा कपीकथन करतेहैं सो प्रत्यक्ष अनुभव करके देखना॥१२॥ मृत-विकल अंग-भिन्नशरीर-रोगी-ऐसा खंजन नजर पडे तो-वह देखनेवालेको अपने शरीरके समान फल देताहै (मृत देखे तो मरताहै इ०) अपने सामने परमें जाताहै ऐसा देखे तो धन देनेवाला

नृपतिरपि शुभं शुभप्रदेशे खगमवलोक्य महीतले विदध्यात्॥ सुरभिकुसुमधूपयुक्तमर्घं शुभमभिनंदितमेवमेति वृद्धिं॥१४॥ अशुभमपि विलोक्य खंजनं हि द्विजगुरुसाधुसुरार्चने रतः॥ न नृपतिरशुभं समाप्नुयान्न यदि दिनानि च सप्त मांसभुक्॥१५॥ आवर्षात्प्रथमे दर्शने फलं प्रतिदिनं तु दिनशेषे॥ दिक्स्थानमूर्तिलग्नर्क्षशांतदीप्तादिभिश्चोह्यं॥१६॥ ॥इति खंजनदर्शनम्॥ ॥अथ उत्पाताध्यायः॥ ॥यानत्रेरुत्पातान् गर्गः प्रोवाच तानहं वक्ष्ये॥ तेषां संक्षेपोयं प्रकृतेरन्यत्वमुत्पातः॥१॥ अपचारेण नराणामुपसर्गः पापसंचयाद्भवति॥ संसूचयंति दिव्यांतरिक्षभौमास्तदुत्पाताः॥२॥ मनुजानामपचारादपरक्ता देवताः सृजंत्येतान्॥ तत्प्रतिघाताय नृपः शांतिं राष्ट्रे प्रयुंजीत॥३॥ दिव्यं ग्रहर्क्षवैकृतमुल्कानिर्घातपवनपरिवेषाः॥ गंधर्वपुरपुरंदरचापादि यदांतरिक्षं तत्॥४॥

होताहै· आकाशमे उडतेदेखे तोवंधुसमागम होताहै॥१३॥ राजानेभी शुभखंजनपक्षी शुभस्थानमे देखके पृथ्वीपर सुगंधपुष्प धूपइनकरके युक्त अर्घकरना· ऐसाकरनेसे राजा आनंदितहोयके शुभफलवृद्धीकोप्राप्त होताहै॥१४॥ राजा· अशुभखंजनपक्षीदेखके ब्राह्मण· गुरु· साधु· देव· इन्होंके पूजामे तत्पर होय·(पूजाकरे) तोऔर सात दिन मांस भक्षण करे नहीं· तो उस्को अशुभफल होगा नहीं·॥१५॥ खंजनके प्रथमदर्शनका फल वर्षतक होताहै· और नित्यदर्शनका फल सूर्यअस्ततक शुभाशुभ होताहै· वह फल· दिशा· स्थान· मूर्ति· लग्न· नक्षत्र· शांत· दीप्त· इत्यादिकोंसे शुभाशुभ समझना·(पूर्व· उत्तर· ईशान यह दिशा शुभ· स्थान· श्लो॰४ देखना· मूर्ति श्लो॰२ और१२ लग्न·(शुभग्रहयुक्त औरदृष्ट) ध्रुव· मृदु· नक्षत्र शुभ· क्षिप्र· चर· साधारण· मध्यम· उग्र अशुभ· शांत दिशा शुभ दीप्त दिशा अशुभ·॥१६॥ (यह खंजनपक्षी काशीके इधर बहुत मिलता है·॥ ॥इति वृहत्संहितायां खंजनदर्शनं नाम पंचचत्वारिंशोध्यायः॥४५॥ ॥ अथ उत्पाताध्यायः॥ गर्गऋषीने जोउत्पात अत्रिऋषीके अग्रभागमे कथनकिया वह उत्पातको हम कहते हैं· पदार्थोंका स्वाभाविक गुणका विकार होना वह उत्पातका संक्षेप होताहै·॥१॥ मनुष्योंके अविनयसे पापसंचय होयके उस्से उपद्रव होते हैं· उस उपद्रवको दिव्य· अंतरिक्ष· भौम· ऐसे त्रिविध उत्पात सूचना करते हैं·॥२॥ मनुष्योंके अविनयसे प्रतिकूल (क्रोधयुक्त) देवता होयके उत्पात करते हैं·। वह उत्पात के नाशार्थ राजाने राज्यमे शांति करना·॥३॥ ग्रह और नक्षत्र इनके

भौमं चरस्थिरभवं तच्छांतिभिराहतं शममुपैति॥ नाभसमुपैति मृदुतां शाम्यति नो दिव्यमित्येके॥५॥ दिव्यमपि शममुपैति प्रभूतकनकान्नगोमहीदानैः॥ रुद्रायतने भूमौ गोदोहात्कोटिहोमाच्च॥६॥ आत्मसुतकोशवाहनपुरदारपुरोहितेषु लोकेषु॥ पाकमुपयाति दैवं परिकल्पितमष्टधा नृपतेः॥७॥ अनिमित्तभंगचलनस्वेदाश्रुनिपातजल्पनाद्यानि॥ लिंगार्चायतनानां नाशाय नरेशदेशानां॥८॥ दैवतयात्राशकटाक्षचक्रयुगकेतुभंगपतनानि॥ संपर्यासनसादनसंगाश्च न देशनृपशुभदाः॥९॥ ऋषिधर्मपितृब्रह्मप्रोद्भूतं वैकृतं द्विजातीनां॥ यद्रुद्रलोकपालोद्भवं पशूनामनिष्टं तत्॥१०॥ गुरुसितशनैश्चरोत्थं पुरोधसां विष्णुजं च लोकानां॥ स्कंदविशाखसमुत्थं मांडलिकानां नरेंद्राणां॥११॥ ॥ ॥

जोविकारसो दिव्य उत्पात होतेहैं· उल्का· निर्घात· महान्वायु· मंडल· गंधर्वनगर· इंद्रधनुष्य· यहहोना· सो अंतरिक्ष उत्पात होतेहैं॥४॥ चरस्थिर वस्तुको होताहै सो भौम उत्पात होतेहैं· सो भौम उत्पात शांतिकरनेसे शांत होताहै· अंतरिक्ष उ॰ शांतीकरनेसे कमती होताहै दिव्य शांतीकरनेसे शांत होता नहीं· ऐसा कोई ऋषि कहतेहैं॥५॥ बहुत सुवर्ण· अन्न· गौ· भूमी· इनके दानसे दिव्यभी उत्पात शांत होतेहैं· तैसेही शिवालयमे और भूमीपर गौके दोहनसे (दुग्धसे) कोटिहोमसे भी दिव्य उत्पात शांति होती है· शुभ होतेहैं॥६॥ दिव्य उत्पात· स्वशरीर· पुत्र· भांडार· अश्वादिवाहन· नगर· स्त्री· पुरोहित· देशके लोक और सेवक यह आठके विषे राजाको शुभाशुभ फल देताहै·॥७॥ शिवका लिंग देवनोंकी मूर्ति और स्थान इनके निमित्तविना भंग· चलन· घर्म (पसीना) रोदन· पतन संभाषण· हास्य इत्यादिक होयतो राजा और देश इनका नाश होता है॥८॥ देवताके उत्सवमे गाडीका अक्ष (मध्यकाष्ठ) चक्रयुग· ध्वज इनका भंग किंवा पतन अथवा परिवर्त्तन (फिरना) मज्जन आसक्ती (अटकना) यह होयतो देश और राजा इनको सुख होता नहीं·॥९॥ ऋषि· धर्मदेश· पितर· ब्रह्मदेव· इनके विषे जो वैकृत (विकार) सो ब्राह्मणको अनिष्ट होताहै· रुद्र (शिव) और इंद्रादि लोकपाल इनसे होय जो वैकृत सो पशूको अशुभ होताहै॥१० गुरु· शुक्र· शनि· इनसे होय जो वैकृत सो उपाध्यायको अशुभ॰ विष्णुसे होय जो वैकृत सो लोकको अशुभ· स्कंद और विशाख (देवविशेष) इनसे होय जो वैकृत सो मांडलिक राजाको अशुभ·॥११॥

वेदव्यासे मंत्रिणि विनायके वैकृतं च सेनान्ये ॥ धातरि सविश्वकर्मणि लोकाभावाय निर्दिष्टं ॥ १२ ॥ देवकुमारकुमारीवनिताप्रेष्येषु वैकृतं पत्युः ॥ नन्दपतेः कुमारककुमारिकास्त्रीपरिजनानां ॥ १३ ॥ रक्षःपिशाचगुह्यकनागानामेतदेव निर्देश्यं ॥ मासैश्चाप्यष्टाभिः सर्वेषामेव फलपाकः ॥ १४ ॥ बुध्वा देवविकारं शुचिः पुरोधास्त्र्यहोषितः स्नातः ॥ स्नानकुसुमानुलेपनवस्त्रैरभ्यर्च्चयेत्प्रतिमां ॥ १५ ॥ मधुपर्केण पुरोधा भक्ष्यैर्बलिभिश्च विधिवदुपतिष्ठेत् ॥ स्थालीपाकं जुहुयाद्विधिवन्मन्त्रैश्च तल्लिंगैः ॥ १६ ॥ इति विबुधविकारे शांतयः सप्तरात्रं द्विजविबुधगणार्च्चा गीतनृत्योत्सवाश्च ॥ विधिवदवनिपालैर्यैः प्रयुक्ता न तेषां भवति दुरितपाको दक्षिणाभिश्च वृद्धः ॥ १७ ॥ राष्ट्रे यस्यानग्निः प्रदीप्यते दीप्यते च नेंधनवान् ॥ मनुजेश्वरस्य पीडा तस्य सराष्ट्रस्य विज्ञेया ॥ १८ ॥

वेदव्याससे जो वैकृत सो प्रधानको अशुभ· गणपतीसे जो वैकृत सो सेनापतीको अशुभ· धाता (प्रजापति) और विश्वकर्मा इनसे जो वैकृत सो लोकके नाशार्थ कथन किया ॥ १२ ॥ देवतोंके पुत्र· कन्या· स्त्री· सेवक· इनसे जो वैकृत सो क्रमसे राजाके पुत्र· कन्या· स्त्री· सेवक· इनको अनिष्ट होता है ॥ १३ ॥ राक्षस· पिशाच· यक्ष· नाग· इनके पुत्रादिकोंको जो पूर्वोक्त वैकृत सो राजाके पुत्रादिकको अशुभ होता है· यह सर्व उत्पातका फल आठ महिनेमे शुभाशुभ होता है ॥ १४ ॥ देववैकृत जानके शुद्ध· तीन दिन उपवास और स्नान किया ऐसे पुरोहितने· विकार भये प्रतिमाकी स्ना· पुष्पगंध· वस्त्र इनकरके पूजा करना ॥ १५ ॥ तैसेही पुरोहितने मधुपर्क (दधिमधु) भक्ष (मोदक· पोलिका· अपूपादिक) और बलि इनकरके यथाशास्त्र पूजन करना· स्थालीपाक (चरु) इसके· यथायुक्त देवतामंत्रसे यथाशास्त्र हवन करना ॥ १६ ॥ यह पूर्वोक्त प्रकारसे देव वैकृत होय तो सात दिन पूर्वोक्त शांति और ब्राह्मण· देवगण (गणेशप्रमुख) इनका पूजा और· गीत· नृत्य· उत्साह इसकरके रात्रीमे जागरण· यह सर्व जिस राजाने यथाशास्त्र किया उसको दक्षिणादिकसे रोधित ऐसे अशुभ वैकृतका पाक (फल) होता नही ॥ १७ ॥ ॥ इति लिंगादिवैकृतम् ॥ जिस राजाके देशमे अग्नि रहते ज्वाला नजर पडे अथवा काष्ठयुक्त अग्नि रहते प्रदीप्त (ज्वालायुक्त) होय नही· तो वह राजाको व वह देशको पीडा होती है ॥ १८ ॥ जल· माहिषादि मांस वा कोई भी गीला पदार्थ इनका ज्व

जलमांसार्द्रज्वलनेनृपतिवधःप्रहरणेरणोरौद्रः॥सैन्यग्रामपु
रेषुचनाशोवन्हेर्भयंकुरुते॥१९॥प्रासादभवनतोरणकेत्वादिष्व
नलेनदग्धेषु॥तडितावाषण्मासात्परचक्रस्यागमोनियमात्
॥२०॥धूमोनग्निसमुत्थोरजस्तमश्चान्हिजंमहाभयदं॥व्यभ्रे
निश्युडुनाशोदर्शनमपिचान्हिदोषकरं॥२१॥नगरचतुष्पादां
डजमनुजानांभयकरंज्वलनमाहुः॥धूमाग्निविस्फुलिंगैः श
य्यांबरकेशगैर्मृत्युः॥२२॥आयुधज्वलनसर्पणस्वनाःकोशनि
र्गमनवेपनानिवा॥वैकृतानियदिवायुधेपराण्याशुरौद्ररणसं
कुलंवदेत्॥२३॥मंत्रैर्वान्हैःक्षीरवृक्षात्समिद्भिर्होतव्योग्निःसर्ष
पैःसर्पिषाच॥अग्न्यादीनांवैकृतेशांतिरेवंदेयंचास्मिन्कांचनंब्रा
ह्मणेभ्यः॥२४॥इत्यग्निवैकृतं॥शाखाभंगेकस्माद्वृक्षाणांनिर्दिशे
द्रणोद्योगं॥हसनेदेशभ्रंशंरुदितेचव्याधिबाहुल्यं॥२५॥छ॥

लनहोयतो राजाकावधहोताहै· खड्गादिशस्त्रजो प्रज्वलितहोयतो भयंक
रयुद्धहोताहै· सैन्य·ग्राम·नगर·इनमे अग्निनाशहोयतो अग्निभयहोताहै·॥
॥१९॥ देवालय·गृह·तोरण(बाहरकादरवाजा) ध्वज·भंडारइत्यादिक अग्नि
नहोने दग्धहोय· अथवा बिजुलीसे दग्धहोयतो· ६ महिनेके अनंतर निश्चय
करके शत्रुचक्रका आगमहोगा·॥२०॥ अग्निकेविना धूमउत्पन्नहोय औरदि
नमे धूली वा अंधकारहोयतो महाभय होताहै· अभ्ररहित रात्रीमे नक्षत्रनज
रपडेनही· औरदिनमे नजरपडे तो अशुभहोताहै॥२१॥ नगर·चतुष्पाद·अं
डज·मनुष्य·इनको अग्निका प्रज्वलन महान्भयदेताहै· शय्या·वस्त्र·केश·
इनकेविषे धूम· अग्नि·(ज्वाला) अग्निकण यह नजरपडेतो शय्यादिकोंके स्वामी
का मृत्युहोताहै·॥२२॥ शस्त्रका ज्वलन· गमन· शब्द· म्यानमेसे स्वतःबाहेर
आवना·कंपनअथवा अन्यआयुधकी वैकृति होयतो भयंकर युद्ध समीप
आयाऐसा कहना·॥२३॥ पूर्वोक्त अग्निवैकृत होयतो· क्षीरवृक्षकी समिधा·
सरसो·घृत· इसद्रव्य से अग्निदैवत्यमंत्रसे अग्निमे होमकरना औरयह अ
ग्निवैकृत होयतो ब्राह्मणको सुवर्णदानकरना· इसप्रकारसे अग्न्यादिवै
कृत·शांति कथनकिया सोकरनेसे शुभहोताहै·॥२४॥ ॥इत्यग्निवैकृतं॥
वृक्षोंकी·अकस्मात् डार तूटेतो युद्धका उद्योगहोताहै· वृक्षका हसन(हस
ना) होयतो देशनाशहोताहै· वृक्षरोदनकरेतो बहुत रोगउत्पन्न होते है·
॥२५॥ जिसऋतूमे जोवृक्ष फूलनेके सोवृक्ष वह ऋतू छोडके अन्यऋतूमे

राष्ट्रविभेदस्त्वनृतौ बालवधोऽतीवकुसुमितेबाले॥ वृक्षात्क्षीरस्रावे सर्वद्रव्यक्षयो भवति॥ २६॥ मद्ये वाहननाशः संग्रामः शोणिते मधुनि रोगः॥ स्नेहे दुर्भिक्षभयं महद्भयं निःसृते सलिले॥ २७॥ शुष्कविरोहे वीर्यान्नसंक्षयः शोषणे च विरुजानां॥ पतितानामुत्थाने स्वयं भयं दैवजनितं च॥ २८॥ पूजितवृक्षे ह्यनृतौ कुसुमफलं नृपवधाय निर्दिष्टं॥ धूमस्तस्मिन्ज्वालाथवा भवेन्नृपवधायैव॥ २९॥ सर्पत्सु तरुषु जल्पत्सु वापि जनसंक्षयो विनिर्दिष्टः॥ वृक्षाणां वैकृत्ये दशभिर्मासैः फलविपाकः॥ ३०॥ स्रग्गंधधूपांबरपूजितस्य छत्रं निधायोपरि पादपस्य॥ कृत्वा शिवं रुद्रजपोऽत्र कार्यो रुद्रेभ्य इत्यत्र षडंगहोमः॥ ३१॥ पायसेन मधुना च भोजयेद्ब्राह्मणान्घृतयुतेन भूपतिः॥ मेदिनी निगदितात्र दक्षिणा वैकृते तरुकृते महर्षिभिः॥ ३२॥ इति वृक्षवैकृतं॥ नालेऽब्जयवादीनामेकस्मिन्द्वित्रिसंभवो मरणं॥ कथयति तदधिपतीनां यमलं जातं च कुसुमफलं ३३

फूले तो देशनाश होता है वृक्ष छोटा (थोडे वर्ष का) रहते बहुत फूले तो बालवध होता है· वृक्ष से दुग्ध स्राव होय तो सर्व द्रव्यों का नाश होता है·॥ २६॥ वृक्ष से मद्यस्राव होय तो अश्वादि वाहनों का नाश होता है· रक्तस्राव होय तो युद्ध होता है· सहत निकले तो रोग होता है· तैलादि निकले तो दुर्भिक्ष भय होता है· जल निकले तो महाभय होता है॥ २७॥ सूखे वृक्ष को पल्लव आवे और रोग विना वृक्ष सूखे तो बल और अन्न इनका नाश होता है· गिरे वृक्ष का स्वतः (मनुष्य के विना) उत्थापन (खडा होय तो दैवकृत भय होगा·॥ २८॥ प्रधान (बडा) वृक्ष को स्वऋतु विना अन्य ऋतु मे पुष्प· फल· आवे तो अथवा वृक्ष के ऊपर धूम वा ज्वाला होय तो राजवध होता है·॥ २९॥ वृक्ष चले किंवा भाषण करे तो लोक का नाश होता है· वृक्षों के विकार का फल दस महिने से होता है॥ ३०॥ जिस वृक्ष को विकार भया होय वह वृक्ष की माला· सुगंधद्रव्य· धूप· वस्त्र· इन से पूजा करके उस्के ऊपर छत्र रखके यह वृक्ष वैकृती रुद्र मंत्र का जप करना और रुद्रेभ्यः स्वाहा ऐसा षडंग से होम करना तो कल्याण होता है·॥ ३१॥ और घृतयुक्त पायस और मधु इन करके ब्राह्मण भोजन राजा ने करना· इहां (वृक्षवैकृती) ब्राह्मण को भूमी दक्षिणा देना· ऐसा महर्षी ने कथन किया है॥ ३२॥ कमल· जव· गोधूम· कंगु इत्यादि धान्यों का एक डंठर पर दो वा तीन केसर आवे तो अथवा पुष्प और फल यमल (दो) होय तो उनके स्वामी को मृत्यु होता है ३३

अतिवृद्धिः सस्यानांनानाफलकुसुमसंभवोवृक्षे॥भवतिहियस्य बस्मिन्परचक्रस्यागमोकस्मात्॥३४॥अर्थेनयदातैलंभवतिविलानामतैलतावास्यात्॥अन्नस्यचवैरस्यंतदाचविद्याद्भयंसुमहत्॥३५॥विकृतकुसुमंफलंवाग्रामादथवापुराद्बहिःकार्यं॥सौम्योत्रचरुःकार्योनिर्वाप्योवापशुःशांत्यै॥३६॥सस्येचदृष्ट्वाविकृतिंप्रदेयंतत्क्षेत्रमेवप्रथमंद्विजेभ्यः॥तस्यैवमध्येचरुमत्रभौमंकृत्वानदोषान्समुपैतितज्जान्॥३७॥दुर्भिक्षमनावृष्ट्यामतिवृष्ट्यांक्षुद्भयंसपरचक्रम्॥रोगोह्यनृतुभवायांनृपतिवधोनभ्रजातायां॥३८॥शीतोष्णविपर्यासेनोसम्यगृतुषुसंप्रवृत्तेषु॥षण्मासाद्राष्ट्रभयंरोगभयंदैवजनितंच॥३९॥अन्यर्त्तौसप्ताहंप्रबंधवर्षेप्रधाननृपमरणं॥रक्तेशस्त्रोद्योगोमांसास्थिवसादिभिर्मरकः॥४०॥धान्यहिरण्यत्वक्फलकुसुमाद्यैर्वर्षितैर्भयंविंद्यात्॥अंगारपांसुवर्षेविनाशमायातितन्नगरं॥४१॥

धान्योंकी अतिवृद्धि (बहुत) होय और एकवृक्षपर नानाप्रकारके फल वा पुष्प आवैतो शत्रूका अकस्मात् आगमन होगा॥३४॥तिलका तेलआधाहोय अथवा तिलमे तेल आवे नही और अन्न रसरहित होयतो महान् भयहोय ऐसाजानना॥३५॥विकारभये जो पुष्प किंवाफल सो गांवमेसे वा नगरमेसे बाहरकरना और शांत्यर्थ सोमदेवत्य चरुहोमकरना अथवा पशूका (निर्वाप) बलिदानकरना॥३६॥धान्यके विषे विकार देखके वह धान्यका क्षेत्रही प्रथम ब्राह्मणकोदेना और वहक्षेत्रमे भौमदेवत्य चरुहोम करना उसकरके वह वैकृतसे होनेवाला अशुभहोतानही॥३७॥ इतिसस्यवैकृतं॥ ॥अवर्षणहोयतो दुर्भिक्षहोताहै अतिवृष्टिहोयतो दुर्भिक्ष और शत्रु इनका भयहोताहै वर्षाऋतूविना अन्यऋतूमे अतिवृष्टिहोयतो रोगभयहोताहै अभ्रनहोयके अतिवृष्टिहोयतोराजाकावधहोताहै॥३८॥शिशिरादिकऋतू गणितागत प्रवृत्त नरहते जाडा और गरमी इनका विपर्यास कहिये शिशिरऋतूमे उष्णता और ग्रीष्मऋतूमे शीत ऐसाहोयतो छमहिनेसे राष्ट्रभय और दैवकृत रोगभयभीहोताहै॥३९॥वर्षाऋतूकेविना इतरऋतूमे सातदिन अतिवृष्टिहोय तो मुख्यराजाका मृत्युहोताहै रक्तवृष्टिहोयतो युद्धभयहोताहै मांस अस्थि मज्जा घृत तेल इत्यादिकोंकी वृष्टिहोयतो लोकमरणहोताहै॥४०॥ धान्य सुवर्ण वृक्षछाल फल पुष्प पर्ण इत्यादिकोंकी वृष्टिहोयतो भयहो

उपलाविनाजलधरैर्विकृतावाप्राणिनोयदावृष्टाः॥छिद्रंचाप्यति
वृष्टेसस्यानामीतिसंजननं४२॥क्षीरघृतक्षौद्राणांदध्नोरुधिरो
ष्णवारिणांवर्षे।देशविनाशोज्ञेयोऽसृग्वर्षेचापिनृपयुद्धं॥४३
यद्यमलेऽर्केछायानदृश्यतेदृश्यतेप्रतीपावा॥देशस्यतदासुमह
द्भयमायातंविनिर्देश्यं॥४४॥व्यभ्रेनभसींद्रधनुर्दिवायदादृश्य
तेऽथवारात्रौ॥प्राच्यामपरस्यांवातदाभवेत्क्षुद्भयंसुमहत्॥४५
॥सूर्येंदुपर्जन्यसमीरणानांयोगःस्मृतोवृष्टिविकारकाले॥धा
न्यान्नगोकांचनदक्षिणाश्चदेयास्ततःशांतिमुपैतिपापं॥४६॥ इ
तिवृष्टिवैकृतं॥ ॥अपसर्पणंनदीनांनगरादचिरेणशून्यतांकुरु
ते॥शोषश्चाशोष्याणामन्येषांवाह्रदादीनां॥४७॥स्नेहासृङ्मां
सवहाःसंकुलकलुषाःप्रतीपगाश्चापि॥परचक्रस्यागमनंनद्यः
कथयंतिषण्मासात्॥४८॥ज्वालाधूमक्वाथारुदितोत्क्रुष्टानिचैव
कूपानां॥गीतप्रजल्पितानिचजनमरकायप्रदिष्टानि॥४९॥ ७॥

ताहै· अंगार(अग्निकण) धूली इनकी वृष्टिहोयतो उसनगरकानाशहोताहै ४१
मेघकेविना उपल(बनौरी) वृष्टिहोय अथवा विकारयुक्त· गर्दभ·ऊंट·अश्व·मार्जा
र·सियार इत्यादिप्राणी की वृष्टिहोय अथवा अतिवृष्टि होय अथवा अतिवृष्टि
होतरहने बीचमें अवर्षण होयतो धान्यको उपद्रवउत्पन्नहोताहै॥४२॥दूधघृ
त·मधु·दधि·रक्त·उष्णोदक·इनकीवृष्टिहोयतो देशनाशजानना· रक्तवृष्टिहोय
तो राजाका युद्धभी होनाहै॥४३॥स्वच्छसूर्य रहते छायानजरपडैनहीं अथवा
छाया प्रतिकूल (पूर्वमेंसूर्यरहते पूर्वमेछाया) होयतो· देशको महाभयहोयऐ
साजानना॥४४॥अभ्ररहित आकाशमें दिनको वा रात्रीमें पूर्वतरफकिंवा प
श्चिमकेतरफ इंद्रधनुष्य जिसकालमें नजरपडे उसकालमें बडादुर्भिक्षभयहो
गा॥४५॥सूर्य·चंद्र·पर्जन्य·वायु·इनकेप्रीत्यर्थ वृष्टिविकारकालमें याग(होमयु)
करना और धान्य·अन्न·गौ·सुवर्ण·यह क्रमसे दक्षिणा ब्राह्मणको देना उसकरके
पाप(अशुभ)शांति(नाश) होताहै॥४६॥ ॥इतिवृष्टिवैकृतं॥ नदीका नगरसे·
दूरगमन होय अथवा शुष्कनहोनेवाले स्थल किंवा ह्रद(गहीरा) तलाव·नदी·
यह शुष्क होयतो नगरशून्य (मनुष्यरहित) होगा॥४७॥नदीमेंसे तेल·रक्त·
मांस· यह पानीके समान बहे अथवा नदी थोडी मलीली किंवाजिधरसेआईउधरफि
रजायतो६महिनेसे शत्रुका आगमनहोगा ऐसा वहनदी कहतीहैं॥४८॥कूप
को ज्वाला·धूम·क्वाथ(फैन)रोदन·उद्घोष(बडाशब्द) गायन·प्रजल्पित·

तोयोत्पत्तिरखातेगंधरसविपर्ययेचतोयानां॥ सलिलाशयविकृतौवामहद्भयंनत्रशांतिरियं॥५०॥ सलिलविकारेकुर्यात्पूजांवरुणस्यवारुणैर्मंत्रैः॥तैरेवचजपहोमंशमयेवंपापमुपयाति॥५१॥ इतिजलवैकृतं॥ प्रसवविकारे स्त्रीणांहि त्रिचतुःप्रभृतिसंप्रसूतौवा॥हीनातिरिक्तकालेचदेशकुलसंक्षयो भवति॥५२॥ वडवोष्ट्रमहिषगोहस्तिनीषुयमलोद्भवेमरणमेषां॥ षण्मासात्सूतिफलंशांतौश्लोकौचगर्गोक्तौ॥५३॥नार्यः परस्यविषयेत्यक्तव्यास्ताहितार्थिना॥तर्पयेच्चद्विजान्कामैः शांतिंचैवात्रकारयेत्॥५४॥चतुष्पदाःस्वयूथेभ्यस्त्यक्तव्याःपरभूमिषु॥नगरंस्वामिनंयूथमन्यथाहिविनाशयेत्॥५५॥परयोनावभिगमनंभवतितिरश्चामसाधुधेनूनां॥उक्षाणोवान्योन्यंपिबतिश्वावासुरभिपुत्रं॥५६॥ मासत्रयेणविंद्यात्तस्मिन्निःसंशयंपरागमनं॥तत्प्रतिघातायैतौश्लोकौगर्गेणनिर्दिष्टौ॥५७॥

(बकवाद) यह जो होयतो लोकका नाश होताहै॥४९॥ खोदनेबिनाभूमीपर जल उत्पन्न होय किंवाजलके गंधका अथवा रसका विपर्यास कहिये दूसरेप्रकारका रस किंवा गंधहोय अथवाजलधाराकी विकृति (कुंवा·तलाव इ॰) होयतो महाभयहोताहै· उहां यह कथित शांतिकरना॥५०॥जलविकारमे वरुण दैवत्यमंत्रसे वरुणकी पूजाकरना औरवही मंत्रसे जप· अग्नीमेहोम· यहकरेतो अशुभ शांति होतीहै॥५१॥ ॥इतिजलवैकृतं॥ ॥स्त्रियोंकोप्रसूतभये अपत्यको विकार(अन्यप्राणिसादृश्य)औरदो· तीन· चार इत्यादि अपत्य एककालमे होना किंवा कमतीदिनसे प्रसूतिअथवा अधिकदिनसेप्रसूती यहहोयतो देशऔरकुलइनकानाशहोताहै·॥५२॥ घोडी·उंटनि· महिषी· गौ· हथनी इनको यमल(दो संतान) होयतो उनका मरण होताहै यह प्रसूति फल ६ महिनेसे होताहै इनके शांतीविषे गर्गऋषी प्रोक्त २ श्लोक है·॥५३॥ प्रसूतिवैकृति भई ऐसस्त्रीको हितेच्छूने अन्यदेशमे पोहचावना· औरब्राह्मण भोजन इच्छाप्रमाण करना· और इसके विषेशांती भी करना·॥५४॥ घोडी· गाय· इत्यादि चतुष्पदको प्रसूतिवैकृत होयतो अपनेसमुदायमेसे अन्य भूमीपर पहुचावना तोकल्याणहोताहै ऐसा नकरे तो नगर· स्वामी औरयूथ(समुदाय) इनका नाशहोताहै·॥५५॥ ॥इतिप्रसववैकृतं॥ पशु·पक्षि·इनका स्वजातीकेविना अन्ययोनीके विषे अभिगमन (मैथुन) होयतो अशुभहोताहै·गाय·गौका·बैल·बैलका स्तनपानकरे अथवा कुत्तावृषभका स्तनपानकरेतो॥५६

स्यागोविवासनंदानंतत्स्याशुशुभंभवेत्॥तर्पयेद्ब्राह्मणांश्चात्र जपहोमांश्चकारयेत्॥५८॥स्थालीपाकेनधानारं पशुनाचपुरोहितः॥ प्राजापत्येनमंत्रेणयजेद्बह्वन्नदक्षिणं॥५९॥ यानंवाहविमुक्तंप दिगच्छेन्नव्रजेद्वाहयुतं॥राष्ट्रभयंभवतितदाचक्राणांसादभंगेच ॥६०॥ अनभिहननतूर्यनादश्शब्दोवाताडितेषुयदिनस्यात्॥व्युत्पत्तौवा तेषांपरागमोनृपतिमरणंवा॥६१॥गीतरवतूर्यनादानभसियदाचा चरस्थिरान्यत्वं॥मृत्युस्तदागदावाविस्वरतूर्येपराभिभवः॥६२ ॥गोलांगलयोःसंगेदर्वीशूर्पाद्युपस्करविकारे॥क्रोष्टुकनादेचत थाशस्त्रभयंमुनिवचश्चेदं॥६३॥वायव्येषुनृपतिर्वासुसक्तुभि रर्चयेत्॥आवायोरितिपंचर्चोजाप्याश्चप्रयत्नैर्द्विजैः॥६४॥ब्राह्म णान्परमान्नेनदक्षिणाभिश्चतर्पयेत्॥बह्वन्नदक्षिणाहोमाःक र्तव्याश्चप्रयत्नतः॥६५॥ ॥इतिवायव्यवैकृतं॥

तीनमहिनेसेशत्रुचक्र निःसंशय आवेगा ऐसाजानना यह अशुभकानाशहोय इसवास्ते शांतिके यह वक्ष्यमाण दोश्लोक गर्गऋषीनेकियाहै ॥५७॥ पशुवैकृत मे यह पशूकात्याग अन्यदेशमेगमन ब्राह्मणकोदान यहकरनातो शीघ्रकल्या णहोताहै यहपशुवैकृतिमे ब्राह्मणसंतर्पण (पूजनादि) जप होम यह भीकरना॥ ५८॥पुरोहितनेचरूसे ओपशूसे (छागसे) प्रजापतीका प्रजापतिदेवत्य मंत्रसे य जनकरना उसमे बहुत अन्नकी दक्षिणा देना॥५९॥ ॥इतिचतुष्पदवैकृतं॥ अ श्वादि यान पुरुषादि वाहकके विना चले किंवा वाहकयुक्त रहते चलेनही अथवा चक्र गडे किंवा फूटेतो राष्ट्रभय होताहै॥६०॥ ताडनकियेविना वाद्यका शब्द हो य अथवा ताडनकरनेसे शब्दनहोय किंवा अनेक प्रकारकेशब्द होयतो शत्रु का आगमन होय अथवा राजाको मृत्युहोगा॥६१॥ आकाशमे गायनका शब्द किंवा वाद्यका नादश्रवण होय अथवा गाडी इन्चर पदार्थ हिलेनही औरवृक्षा दि स्थिरपदार्थ इत्यादि चलनहोयतो मृत्यु किंवारोगहोनाहै वाद्यका शब्द विस्वर (दूसरे प्रकारका) होयतो शत्रुपराजय करेंगे॥६२॥ बैल हलमे संलग्न (चकने) होय अथवा कलछी सूप ऊखरी मूसल इत्यादि गृहसंबंधी उपकर णउनकोविकार (अन्यस्वरूपवा हसन गायन रोदन इ०) होय अथवा सिया रकेशब्दसमान कलछी इत्यादिकोंका नाद होयतो शस्त्रभयहोताहै यह पूर्वो क्तउत्पातमेऋषिप्रोक्त वक्ष्यमाण शांतिजानना॥६३॥ यह वायव्य उत्पातमे राजाने अवसे वायुदेवताका पूजनकरना औरपवित्रब्राह्मणने आवायोः यह पांच ऋचाकाजपकरना ६४

पुरपक्षिणो वनचरा वन्या वा निर्भया विशंति पुरं॥ नक्तं वा दिवसचराः क्षपाचरा वा चरंत्यहनि॥ ६६॥ संध्याद्वयेपि मंडलमाबध्नंतो मृगा विहंगा वा॥ दीप्तायां दिश्यथवा क्रोशंतः संहता भयदाः॥ ६७॥ श्वानः प्ररुदंत इव द्वारे वाशंति जंबुका दीप्ताः॥ प्रविशेन्नरेंद्रभवने कपोतकः कौशिको यदि वा॥ ६८॥ कुक्कुटरुतं प्रदोषे हेमंतादौ च कोकिलालापाः॥ प्रतिलोममंडलचराः श्येनाद्याश्चांबरे भयदाः॥ ६९॥ गृहचैत्यतोरणेषु द्वारेषु च पक्षिसंघसंपाताः॥ मधुवल्मीकांभोरुहसमुद्भवाश्चापि नाशाय॥ ७०॥ श्वभिरस्थिशवावयवप्रवेशनं मंदिरेषु मरकाय॥ पशुशस्त्रव्याहारे नृपमृत्युर्मुनिवचश्चेदं॥ ७१॥ मृगपक्षिविकारेषु कुर्याद्धोमान्सदक्षिणान्॥ देवाः कपोत इति च जप्तव्याः पंचभिर्द्विजैः॥ ७२॥ सुदेवा इति चैके न देया गावश्च दक्षिणा॥ जपेच्छाकुनसूक्तं वा मनो वेद शिरांसि च॥ ७३ इ॰ मृ॰ प॰ वै (कृतं॥

पायससे ब्राह्मणभोजन करना और दक्षिणाभी बहुतदेना· बहुत अन्न· दक्षिणा इसकरके प्रयत्न सेहोम भीकरना उसकरके शुभहोताहै·॥ इतिवायव्यवैकृतम्॥ ॥ ६५॥ गांवमेंके पक्षी बनमेंगमनकरें औरबनमेंकेपक्षी गांवमें निर्भयप्रवेशकरें· अथवा काक इ॰ दिनमेंफिरनेवाले पक्षी रात्रीमें फिरें और घुघु इ॰ रात्रीमें फिरनेवाले पक्षी दिनमें गमनकरें·॥ ६६॥ आरण्यपशु वा पक्षी सूर्योदयमें वा सूर्यास्तमें चक्रकेसमान मंडलकरें वा जिधरसूर्य होय उसदिशामें एकत्रजमा होयके बडा आक्रोशशब्दकरें तो वह भय उत्पन्नकरेंगे॥ ६७॥ कुत्ता (और श्वेनपक्षी) रोदनकेसमान द्वारमें शब्दकरें अथवा जंबुक (सियार) सूर्यके सन्मुख शब्दकरें वा कपोत (कबूतर) अथवा घुघु राजगृहमें प्रवेशकरें॥ ६८॥ प्रदोषकालमें कुक्कुटशब्दकरे· हेमंतऋतूके आरंभमें कोकिला शब्दकरें· श्येनादिक मांस खानेवाले पक्षी आकाशमें प्रदक्षिण मंडलफिरें तो· यह सर्व भयदायक होते हैं॥ ॥ ६९॥ गृह· चैत्य (बडावृक्ष·) तोरण· द्वार· इनकेऊपर पक्षिसमुदाय बैठे अथवा गृहादि पूर्वोक्तपर मधु (सहतकाछत्ता·) वल्मीक (सर्पस्थान·) कमल यह उत्पन्न होयतो वह गृहादिकोंकानाशहोताहै॥ ७०॥ कुत्तेने हाड· मृतमनुष्यका अवयव घरमेंले आवे तो मृत्युहोताहै· और पशु· शस्त्र· यह मनुष्यकेसमान आपण करें तो राजाको मृत्युहोताहै· यह मृगपक्ष्यादिवैकृतमें ऋषिप्रोक्त वक्ष्यमाण शांतिहै·॥ ७१॥ पूर्वोक्त मृगपक्षिविकारमें दक्षिणासहित होमकरना· देवाः कपोत इस मंत्रकाजप पांचब्राह्मणसे करवावना॥ ७२॥ सुदेवा इसमंत्रका जप एक

शक्रध्वजेंद्रकीलस्तंभद्वारप्रपातभंगेषु॥तद्वत्कपाटतोरणकेतू
नांनरपतेर्मरणं॥७४॥संध्याद्वयस्य दीप्तिर्धूमोत्पत्तिश्चकाननेऽ
नग्नौ॥छिद्राभावे भूमेर्दरणं कंपश्च भयकारी॥७५॥पाखंडा
नांनास्तिकानांच भक्तः साध्वाचारप्रोज्झितः क्रोधशीलः॥ईर्ष्युः
क्रूरो विग्रहासक्तचेता यस्मिन्राजा तस्य देशस्य नाशः॥७६॥प्र
हरहरछिंधिभिंधीत्यायुधकाष्ठाश्मपाणयो बालाः॥निगदंतः
प्रहरेते तत्रापि भयं भवत्याशु॥७७॥अंगारगैरिकाद्यैर्विकृतप्रे
ताभिलेखनं यस्मिन्॥नायकचित्रितमथवा स्मयेक्षयं याति नचि
रेण॥७८॥लूतापटांगशबलं न संध्ययोः पूजितं कलहयुक्तं॥
नित्योच्छिष्टस्त्रीकंच यद्गृहं तत्क्षयं याति॥७९॥दृष्टेषु यातुधाने
षु निर्दिशेन्मरकमाशुसंप्राप्तं॥प्रतिघातायैतेषां गर्गः शांतिं चकार
(सः॥८०

ब्राह्मणसे करवावना· वह ब्राह्मणोंको गौ दक्षिणा देना· शाकुनसूक्तका जपकर
ना अथवा मनोमंत्रका जपवावे दशिरस(अथर्वशीर्ष इ०) इनका भी जप करना
॥७३॥ इतिमृगपक्षिवैकृतं॥ इंद्रध्वज(अ०४३) इंद्रकील(द्वारकी कील) खंभा·
द्वार इनका पतन किंवा भंग· तैसे ही कपाट (कवाडी) तोरण· ध्वज इनका पत
न किंवा भंग यह होय तो राजाको मृत्यु होता है॥७४॥ उदय संध्या और अस्तसं
ध्या समयमे तेज होय· अरण्यमे अग्नी विना धूम उत्पन्न होय छिद्र न रहते भूमी
का विदारण होय· और भूमिकंप भी होय तो भय उत्पन्न होता है॥७५॥ जिस देश
मे वेदबाह्य और नास्तिक इनकी भक्ति करनेवाला· उत्तम आचार जिन्ने त्याग
किया ऐसा· क्रोधस्वभावी· दुसरेसे द्वेष करनेवाला· दुष्ट सर्वकाल युद्धमे चित्त
है ऐसा राजा होय तो वह देशका नाश होता है॥७६॥ जहां लडके हाथमे· शस्त्र
काष्ठ· पाषाण लेके मारो· खींचो· तोडो· फोडो· ऐसा शब्द करके परस्पर प्रहार
करें तो उहां भी शीघ्र भय होता है॥७७॥ जिस गृहमे· कोइला· गेरु इत्यादिकसे
विरूपप्राणी किंवा मृतप्राणी इनके चित्र लेखन अथवा कोइला इत्यादिकसें
गृहस्वामीके विकृत चित्र लिखे तो वह गृह शीघ्र नाश होगा॥७८॥ लूता(मक
डी जाला) इनके तंतूके अवयवसे चित्रित· प्रातः साय संध्या समयमे पूजित
(शोभित) नहीं· नित्य कलहयुक्त· सर्वकाल उच्छिष्ट स्त्रियोंसे युक्त ऐसा जो गृ
ह सो नाश पावता है॥७९॥ प्रत्यक्ष राक्षस देखे तो नगीच मरण आया ऐसा सम
झना यह सर्व उत्पातके नाशार्थ गर्ग ऋषीने वक्ष्यमाण शांतिकथन किया॥८०॥
वह शांतिमे क्या शांतिप्रमुख महाशांति करना और दक्षिणा देना· अमुक

महाशांत्योथ बलयो भोज्यानि स्युर्महांति च॥ कारयेत महेंद्रं च माहेंद्रीभिः समर्चयेत्॥८१॥ नरपतिदेशविनाशे केतोरुदयेथ वा ग्रहे केंद्वोः॥ उत्पातानां प्रभवः स्वर्तुभवश्चाप्यदोषाय॥८२॥ ये च न दोषान्जनयंत्युत्पातास्तानृतुस्वभावकृतान्॥ ऋषिपुत्रकृतैः श्लोकैर्विद्यादेतैः समासोक्तैः॥८३॥ वज्राशनिमहीकंपसंध्यानिर्घातनिःस्वनाः॥ परिवेषरजोधूमरक्तार्कास्तमनोदयाः॥८४॥ द्रुमेभ्योन्नरसस्नेहबहुपुष्पफलोद्गमाः॥ गोपक्षिमदवृद्धिश्च शिवाय मधुमाधवे॥८५॥ तारोल्कापातकलुषं कपिलार्केंदुमंडलं॥ अनग्निज्वलनस्फोटधूमरेण्वनिलाहतं॥८६॥ रक्तपद्मारुणं सांध्यं नभः क्षुब्धार्णवोपमं॥ सरितां चांबुसंशोषं दृष्ट्वा ग्रीष्मे शुभं वदेत्॥८७॥ शक्रायुधपरीवेषविद्युच्छुष्कविरोहणं॥ कंपोद्वर्तनवैकृत्यं रसनं दरणं क्षितेः॥८८॥ सरोनद्युदपानानां वृद्ध्यूर्ध्वतरणप्लवाः॥ सरणं चाद्रिगेहानां वर्षासु न भयावहं॥८९॥

त्तम भोजनार्थ अन्नभी देना· और इंद्राणी सह इंद्रकी पूजाकरना॥८१॥ ॥इति शक्रध्वजेंद्रकीलकादिवैकृतं॥ राजाका नाश और देशका नाश· यह रहते और धूमकेतूका (पूछलतारा) उदयहोय अथवा सूर्य चंद्रका ग्रहणहोय रहते उत्पात होय तो वह उत्पात का अशुभफल होता नहीं· और स्वऋतूमेके उत्पातका भी अशुभफल होता नहीं॥८२॥ जो ऋतुस्वभावकृत उत्पात· जिस ऋतूमे अशुभफल करते नहीं· सो ऋषिपुत्रकृत वक्ष्यमाण संक्षिप्त श्लोकसे जानना॥८३॥ वज्र· (बिजुली) अशनि (पाषाणवृष्टि वा उल्काभेद) (अ॰३३ श्लो॰४) भूमिकंप· संध्या· (अ॰३०) निर्घातशब्द (अ॰३९) परिवेष (मंडल) धूलि· अरण्यमे धूम· आरक्त सूर्यका अस्त और उदय॥८४॥ वृक्षसे अन्न· षड्रस· तैलादिस्नेह· बहुत पुष्प और फल यह उत्पन्न होना· गौ और वृषभ और पक्षी इनको मदवृद्धि (कामोत्पत्ति) यह चैत्र और वैशाख इनमे (वसंत ऋतूमे) शुभ होता है॥८५॥ तारा और उल्का (अ॰३३ श्लोक ७।८) इनके पतनसे कलुष (मैला) भया· पिंगट वर्ण है सूर्य मंडल जिसमे ऐसा· अग्नी विना ज्वाला उसकरके शब्द· धूम· धूली· वायू· इसकरके आसमंतमे व्याप्त ऐसा॥८६॥ लाल कमलके समान ताम्रवर्ण· क्षुब्ध समुद्रके समान· ऐसा संध्यासमयमे आकाश और नदीके जल सूखजाना· ऐसा देखके ग्रीष्मऋतूमे शुभ कथन करना॥८७॥ इंद्रधनुष्य· परिवेष (मंडल) बिजुली शुष्कवृक्षको पल्लव फूटना· भूमीका कंपन· परिवर्तन· (किरण) अन्यस्वरूप· शब्द· गमन· यह होना· स

दिव्यस्त्रीभूतगंधर्वविमानाद्भुतदर्शनं॥ग्रहनक्षत्रताराणां दर्शनंच
दिवांबरे॥९०॥गीतवादित्रनिर्घोषावनपर्वतसानुषु॥सस्यवृद्धि
रपांहानिरपापाः शरदिस्मृताः॥९१॥शीतानिलतुषारत्वंनर्दनं मृग
पक्षिणां॥रक्षोयक्षादिसत्वानांदर्शनंवागमानुषी॥९२॥दिशोधूमां
धकाराश्च सनभोवनपर्वताः॥उच्चैः सूर्योदयास्तौच हेमंते शोभनाः
स्मृताः॥९३॥हिमपातानिलोत्पाता विरूपाद्भुतदर्शनम्॥कृष्णां
जनाभमाकाशंतारोल्कापातपिंजरं॥९४॥चित्रगर्भोद्भवाः स्त्रीषु
गोजाश्वमृगपक्षिषु॥पत्रांकुरलतानांच विकाराः शिशिरे शुभाः॥
९५॥ऋतुस्वभावजाह्येते दृष्टाः स्वर्तौ शुभप्रदाः॥ऋतोरन्यत्रचोत्पा
ताद्दृष्टास्ते भृशदारुणाः॥९६॥उन्मत्तानांच यागाथाः शिशूनां भाषि
तंच यत्॥स्त्रियोयच्च प्रभाषंते तस्य नास्तिव्यतिक्रमः॥९७॥पूर्वं
चरंति देवेषु पश्चाद्गच्छंति मानुषान्॥नाचोदिता वाग्वदति स
त्याह्येषा सरस्वती॥९८॥

रोवरकी वृद्धि· नदीका ऊर्ध्वगमन· वापीकूपादिकोंका प्लवन (पोडना बड्डबी मार
ना) पर्वत और गृह इनको सरण (गमन) यह वर्षाऋतूमें होयतो भय होता नहीं॥८८
८९॥अप्सरा· गंधर्व· विमान· आश्चर्य· इनका दर्शन· ग्रह नक्षत्र तारा इनका दिन
को आकाशमें दर्शन॥९०॥वन· पर्वत· शिखर इनके विषे गायन और वाद्य इनके
शब्द होना· धान्यकी वृद्धि और जलकी हानी (अल्पत्व) यह शरदऋतूमें शुभ
होनाहै॥९१॥ठंढ वायू· वर्फ· यह होना· आरण्य पशु और पक्षी इनका शब्द·
राक्षस· यक्ष· भूत· प्राणी इनके दर्शन· मनुष्यके विना भाषण॥९२॥आकाश·
वन· पर्वत· दिशा यह धूम और अंधकार इस करके व्याप्त होना· सूर्यका उदय
और अस्त उच्चस्थानसे होना· यह सर्व हेमंतऋतूमें शुभ होताहै॥९३॥वर्फ
गिरना· वायू चलना· विरूप और आश्चर्य इनके दर्शन· कृष्णवर्ण अंजनसमा
न और तारा· उल्का इनके पतनसे चित्रित· ऐसा आकाश होना॥९४॥स्त्री· गौ·
मेंढी· अश्व· आरण्यपशु· पक्षी इनके विषे नानाप्रकारके बहुत गर्भ होना· वृक्ष
के पत्ता· अंकुर· वल्ली· इनको विकार होना· यह सर्व शिशिरऋतूमें शुभ होताहै॥
॥९५॥ऋतुस्वभावज· यह उत्पात वह २ ऋतूमें देखेतो शुभ होताहै· स्वऋतु वि
ना अन्यऋतूमें देखेतो यह उत्पात बहुत अशुभ फल देतेहैं॥९६॥उन्मत्तका
जो गाथा (प्राकृतभाषण) वह· बालकके जो भाषण· और स्त्रियोंके जो भाषण·
यह सर्व भाषणका व्यतिक्रम होता नहीं· वह सत्य होताहै॥९७॥यह वाणी

उत्पातान्गणितविवर्जितोपि बुध्वा विख्यातो भवति नरेंद्रवल्लभश्च ॥एतन्मुनिवचनंरहस्यमुक्तंयज्ज्ञात्वाभवतिनरस्त्रिकालदर्शी॥ ११॥ ॥इतिउत्पातलक्षणम्॥ ॥अथमयूरचित्रकम्॥ दिव्यांतरिक्षाश्रयमुक्त मादौमयाफलंशस्तमशोभनंच ॥प्रायेणचारेषुसमागमेषुयुद्धेषुमार्गादिषुविस्तरेण॥१॥ भूयोवराहमिहिरस्यनयुक्तमेतत्कर्त्तुंसमासकृदसाविति तस्य दोषः॥ तज्ज्ञैर्नवाच्यमिदमुक्तफलानुगीतिपद्धि हिचित्रकमिति प्रथितंवरांगं॥२॥स्वरूपमेवतस्यततत्प्रकीर्त्तितानुकीर्त्तनं॥ब्रवीम्यहंनचेदिदंतथापिमेत्रवाच्यता॥३॥उत्तरवीथिगताद्युतिमंतःक्षेमसुभिक्षशिवायसमस्ता॥दक्षिणमार्गगताद्युतिहीनाःक्षुद्भयतस्करमृत्युकरास्ते॥४॥कोष्ठागारगते भृगुपुत्रेपुष्यस्थे च गिरांप्रभविष्णौ॥निर्वैराःक्षितिपाःसुखभाजःसंहृष्टाश्चजनागतरोगाः॥५॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रथमदेवतामेहोतीहै॰ नंतरमानुष्यकेपास आवतीहै॰ यहवाणी अप्रेरित बोलती नही इसवास्ते यह सरस्वती (वाग्देवता) सत्यहै ॥१०॥ इसउत्पातको ग्रहगणितके बिना भीजो पुरुषजानताहै सो कीर्त्तिमान और राजाको प्रियहोताहै यह गोप्यमुनिवचनकथनकिया॰ जोजाननेवाला मनुष्य॰ त्रिकालदर्शी॰ (भूत॰ भविष्य वर्तमान॰ यहतीनकालका जाननेवाला) ऐसाहोताहै॰॥११॥ ॥इतिबृहत्संहितायां उत्पातलक्षणंनामषट्चत्वारिंशोध्यायः॥४६॥ ॥अथमयूरचित्रकं॥ हम प्रथमदिव्य (ग्रहनक्षत्राश्रय) और अंतरिक्ष (उल्कानिर्घाताद्याश्रय) ऐसाशुभाशुभफल बहुतकरके सूर्यादि ग्रहचार॰ चंद्रग्रहयोग॰ ग्रहयुद्ध॰ ग्रहमार्ग॰ इत्यादिकमे विस्तारकरके कथनकिया॥१॥ यहसवे पुनःकथन वराहमिहिराचार्यको योग्य नही॰ कारण आचार्य संक्षेप करनेवालेहै॰ इसवास्ते यह उनको दोष है॰ ऐसा पंडितने कहना नही॰ यह जो श्रेष्ठ मयूरचित्रक सोउक्तफलकाही कथन ऐसा प्रसिद्धहै॰॥२॥ वहमयूरचित्रकका स्वरूप पूर्वोक्तकाही कथन करना यही है॰ इसवास्ते हम यह मयूरचित्रक नकथनकरें तथापि हमारी इसके विषयमे वाच्यता॰ (अपकीर्त्ति) होगी॰॥३॥ नागा॰ गजा॰ ऐरावता (अ॰९श्लो॰१) यह उत्तरमार्गमे रहनेवाले और तेजस्वी ऐसे सर्वग्रहहोयतो॰ कल्याण॰ सुभिक्ष॰ सुख॰ यहहोताहै॰ मृगा॰ अजा॰ दहना॰ यह दक्षिणमार्गमे रहनेवाले औरतेजहीन सर्वग्रहहोयतो॰ वह दुर्भिक्ष॰ चोर॰ मृत्यु॰ यहकरतेहैं॰ वृषभा॰ गो॰ जरद्गवा यह मध्यमार्गमेसर्वग्रहहोयतो मध्यमफल होताहै॰॥४॥ कोष्ठागार (मघा)

पीडयंतिपदिकृत्तिकांमघांरोहिणींश्रवणमैंद्रमेववा॥सोऽस्यमर्कम्
अपरेग्रहास्तदापश्चिमादिगनयेनपीड्यते॥६॥प्राच्यांचेत्ध्वज
वदवस्थितादिनांतेप्राच्यानांभवतिहिविग्रहोनृपाणां॥मध्येचे
द्भवतिहिमध्यदेशपीडारूक्षैस्तेनतुरुचिरैर्मयूखवद्भिः॥७॥द
क्षिणांककुभमाश्रितैस्तकैर्दक्षिणापथपयोमुचांक्षयः॥हीनरू
क्षतनुभिश्चविग्रहःस्थूलदेहकिरणान्वितैःशुभं॥८॥उत्तरमार्गे
स्पष्टमयूखाःशांतिकरास्तेतन्नृपतीनां॥ह्रस्वशरीराभस्मसवर्णा
दोषकाराःस्युर्देशनृपाणां॥९॥नक्षत्राणांतारकाःसग्रहाणांधू
मज्वालाविस्फुलिंगान्विताश्चेत्॥आलोकंवानिर्निमित्तंनयांति
यातिध्वंसंसर्वलोकःसभूपः॥१०॥दिविभातियदातुहिनांशुयुगं
द्विजवृद्धिरतीवतदाशुभा॥नदनंतरवर्णरणोऽर्कयुगेजगतःप्र
लयस्त्रिचतुःप्रभृति॥११॥

नक्षत्रपर शुक्र और पुष्य नक्षत्रपर गुरु ऐसे होंयतो राजा गतवैर और सुखी हो
गे लोक आनंदित और रोगरहित होंगे॥५॥सूर्यकेविना सर्वग्रह जो कृत्तिका·म
घा·रोहिणी·श्रवण·ज्येष्ठा इसनक्षत्रमे दक्षिणमार्ग गमनसे·योगताराके आच्छा
दनसे·किंवा भेदनसे·पीडाकरेंतो पश्चिमदिशा अनीतीसे पीडितहोतीहै·पश्चि
मदिशामे अन्यायहोतेहैं॥६॥सायंकालमे पूर्वकेतरफ सर्वग्रह ध्वजाके समान हों
यतो पूर्वदिशामेके राजोंका युद्धहोगा·आकाशमध्यभागमे होंयतो मध्यदेशको
पीडाहोगी परंतु वहग्रहरूक्ष होंयतो निर्मल और किरणयुक्त होंयतो पूर्वोक्त
युद्ध और पीडाहोगीनही॥७॥वहसर्वग्रह दक्षिणदिशाकेतरफ होंयतो दक्षि
णदिशाकेतरफके मेघोंकानाशहोताहै·वहग्रह अल्प और कलुषबिंबहोय
तो युद्धहोंगे और स्थूलबिंबतेजस्वीहोयतो कल्याणहोगा॥८॥वहग्रहउत्त
रमार्गमेतेजस्वीहोयतो राजाको सुखकारकहोते है·और अल्पबिंब·भस्मके
समानहोयतो देश और राजा इनको अशुभकारकहोते हैं॥९॥नक्षत्रोंकी यो
गतारा और ग्रहोंकी तारा·धूमज्वाला·अग्निकण इनकरके युक्तहोय अथवा अ·
श्मादिनिमित्तविना दृष्टिगोचर होंगे नहींतो राजाके सह सर्वलोकका नाशहोता
है॥१०॥जिसकालमे स्वर्गमे दो चंद्र भासमान होय उसकालमे ब्राह्मणकी अ
त्यंतवृद्धि शीघ्रहोतीहै दोसूर्य भासमान होयतो क्षत्रियोंका युद्धहोताहै·तीन
चार इत्यादिक सूर्य भासमान होयतो जगतका प्रलय होताहै॥११॥सप्तऋषी
अभिजित्नक्षत्रतारा·ज्येष्ठानक्षत्रतारा·इनको धूमकेतु (पुच्छलतारा) स्पर्शकरेतो

मुष्णीनभिजितंध्रुवंमघवतश्चभंसंस्पृशन् शिखीघनविनाशकृ
त्कुशलकर्महाशोककृत्॥भुजंगभमथस्पृशेद्भवतिवृष्टिनाशोध्रुवं
क्षयंव्रजतिविद्रुतोजनपदश्चबालाकुलः॥१२॥प्राग्द्वारेषुचरन्
रविपुत्रोनक्षत्रेषुकरोतिचवक्रं॥दुर्भिक्षंकुरुतेभयमुग्रंमित्राणां
चविरोधमवृष्टिं॥१३॥रोहिणीशकटकर्मनन्दनोयदिभिनत्तिरु
धिरोथवाशिखी॥किंवदामियदनिष्टसागरेजगदशेषमुपयाति
संक्षयं॥१४॥उदयतिसततंयदाशिखीचरतिभचक्रमशेषमेववा
॥अनुभवतिपुराकृतंनदाफलमशुभंसचराचरंजगत्॥१५॥ धनुः
स्थायीरूक्षोरुधिरसदृशःक्षुद्भयकरोबलोद्योगंचेंदुः कथयतिज
यंज्यास्यचयतः॥अवाक्शृंगोगोघ्नोनिधनमपिसस्यस्यकुरुते
ज्वलनधूमाद्यन्वानृपतिमरणायेव भवति॥१६॥स्निग्धःस्थूलः
समशृंगोविशालस्तुंगश्चोदग्विचरन्नागवीथ्यां॥दृष्टःसौम्यैरशु
भैर्विप्रयुक्तोलोकानंदंकुरुतेतीवचंद्रः॥१७॥पित्र्यमैत्रपुरुहू
तविशाखात्वाष्ट्रमेत्यचयुनक्तिशशांकः॥दक्षिणेननशुभोहि
तकृत्स्याद्युदकूचरतिमध्यगतोवा॥१८॥

अवर्षण· शुभकर्मनाश· शोक· यह होगा धूमकेतू आश्लेषा नक्षत्रको स्पर्शकरेतो
निश्चयसे अवर्षण होगा· और बालकके सह ---------- लोकनाशपावेंगे
॥१२॥ पूर्वके तरफके कृत्तिकादि सात नक्षत्रमे शनी रहने· वक्रगति होयतो दु
र्भिक्ष· बडाभय· मित्रका परस्पर विरोध· अवर्षण यह करताहै·॥१३॥ रोहिणी
शकटको शनिवाभौम· अथवा केतु यह ग्रह भेदनकरेतो दुःखसागरमे सर्वजग
त नाशपावेगा· इस्मे क्या आश्चर्य·॥१४॥ धूमकेतू निरंतर उदयहोय और स
र्वनक्षत्र चक्रमे फिरेतो· सर्वजगत् पूर्वजन्मार्जित पापका फल अनुभवकरे
॥१५॥ धनुष्यके समान· रूक्ष·(कांतिरहित·) रक्तवर्ण ऐसा चंद्र दुर्भिक्ष· सैन्यका
उद्योग (युद्ध) कारक होताहै· धनुष्यके आकृति चंद्रकी डोरी जिधर होय उधर
राजोंका जय होय चंद्रके शृंग नीचे होयतो गौका नाश और धान्यनाश होता
है· ज्वाला और धूम इसकरके चंद्रयुक्त होयतो राजाको मृत्यु होताहै १६॥
निर्मल· स्थूल· समशृंग· विस्तीर्ण· उच्च· उत्तरके तरफ नागवीथीमे (अ॰९ श्लो॰)
गमनकरनेवाला· शुभग्रहोंसे दृष्ट पापग्रह रहित ऐसा चंद्र लोकको अत्यं
त आनंद करताहै·॥१७॥ मघा· अनुराधा· ज्येष्ठा· विशाखा· चित्रा यह नक्ष
त्रमे चंद्र आयके दक्षिण दिशामेसे वह नक्षत्रसे योगकरेतो शुभनहीं· उ

परिघ इतिमेघरेखायानिर्यग्भास्करोदयेस्तेवा॥परिधिस्तुप्र
तिसूर्योदंडस्त्वृजुरिंद्रचापनिभः॥१९॥उदयेस्तेवाभानोर्येदीर्घा
रश्मयस्त्वमोघास्ते॥सुरचापखंडमृजुयद्रोहितमैरावतंदीर्घं॥
२०॥अर्धास्तमयात्संध्याव्यक्तीभूतानतारकायावत्॥तेजःपरि
हानिमुखाद्भानोरर्धोदयंयावत्॥२१॥तस्मिन्संध्याकालेचिन्हैरे
तैःशुभाशुभंवाच्यं॥सर्वैरेतैःस्निग्धैःसद्योवर्षंभयंरूक्षैः॥२२॥
अच्छिन्नःपरिघोविपच्चविमलंश्यामाममयूखारवेःस्निग्धादीधि
तयःसितंस्फुरधनुर्विद्युच्चपूर्वोत्तरा॥स्निग्धोमेघतरुर्दिवाकरकरै
रालिंगितोवायदावृष्टिःस्याद्यदिवार्कमस्तसमयेमेघोमहांश्छा
दयेत्॥२३॥खंडोवक्रःकृष्णोह्रस्वःकाकादैर्वाचिन्हैर्विद्धः॥य
स्मिन्देशेरूक्षश्चार्कस्तत्राभावःप्रायोराज्ञः॥२४॥ वाहिनींसमु
पयातिपृष्ठतोमांसभुक्खगगणोयुयुत्सतः॥ यस्यतस्यबल
विद्रवोमहानग्रगैस्तुविजयोविहंगमैः॥२५॥छ॥ छ॥ छ॥॥

नरसेवामध्यसे योगकरेतो शुभहोय॥१८॥सूर्यकेउदयमेवा अस्तमेजोअभ्रकी
तिर्यकरेषासोपरिघहोताहै·एकसूर्य रहते दुसरासूर्य नजरपडे वहपरिधिहो
ताहै·सोपरिधिस्पष्ट और इंद्रधनुष्यके वर्णसमान होयतो दंडसंज्ञकहोताहै
॥१९॥सूर्योदयमेवा अस्तमे जो लंबा किरणसो अमोघ संज्ञकहोताहै· तूटा ख
डित जो इंद्रधनु सो रोहित संज्ञक॰ और लंबा इंद्र धनुष्य सो ऐरावत संज्ञक होता है
॥२०॥सूर्यके अर्धास्तसे नक्षत्र स्पष्ट देखने तक सायंसंध्या और नक्षत्र तेजहीन
होनेके कालसे सूर्यके अर्धोदयतक प्रातःसंध्याहोती है॥२१॥ वह संध्यासमयमे
यह वक्ष्यमाण चिन्हसे शुभाशुभ कहना यह पूर्वोक्तपरिघादि सर्व स्निग्धहो
यतोतत्कालवृष्टिहोतीहै· और रूक्षहोयतो भयहोताहै॥२२॥ अखंडपरिघ·
आकाशनिर्मल· सूर्यके किरण श्यामवर्ण ·अमोघ संज्ञक किरण स्निग्ध· श्वेतइं
द्रधनुष्य· पूर्वदिशामे बिजुली· मेघ वृक्ष स्निग्ध और सूर्य किरणसे आलिंगित
ऐसाहोयतोवृष्टिहोतीहै· अथवा बडामेघ· अस्तमानकालमे सूर्यका आच्छाद
न करेतोवृष्टिहोतीहै॥२३॥ जिस देशमे खंडित· टेढा· कृष्णवर्ण ·अल्पबिंब·
काकादिचिन्हसेविद्ध· रूक्ष ऐसा सूर्य नजरपडे वह देशमे बहुतकरके राजाका
नाशहोताहै॥२४॥ मांसभक्षक पक्षिसमुदाय जिस युद्धेच्छु राजाके सेनाके पी
छेसेजायतो वह राजा का सैन्य भागेगा (पराजयहोगा·) वही पक्षी सेनाके आगे
होयतो राजाका जय होय॥२५॥ सूर्यके उदयमे वा अस्तमे गंधर्व नगरके समान

भावीस्व्ह्यपे यदिखस्त्रमये गंधर्वपुरप्रतिमाध्वजिनी॥ विवं निरुण्द्धितदा नृपतेः प्राप्नं समरं सभयं प्रवदेत्॥२६॥ शस्ताशांतद्विजमृगघुष्टा संध्या स्निग्धा मृदुपवना च॥ पांशुध्वस्ता जनपदनाशं धत्ते रूक्षा रुधिरनिभा वा॥२७॥ यद्विस्तरेण कथितं मुनिभिस्तदस्मिन्सर्वं मया निगदितं पुनरुक्तवर्जं॥ श्रुत्वापि कोकिलरुतं बलिभुग्विरौति यत्तत्स्वभावकृतमस्य पिकं न जेतुं॥२८॥ ॥इति मयूरचित्रकम्॥ अथ पुष्यस्नानं॥ मूलं मनुजाधिपतिः प्रजातरोस्तदुपघातसंस्कारात्॥ अशुभं शुभं च लोके भवति यतोतो नृपतिचिंता॥१॥ याव्याख्याता शांतिः स्वयं भुवा सुरगुरोर्महेंद्रार्थे॥ तां प्राप्य वृद्धगर्गः प्राह यथा भागुरेः श्रृणुत॥२॥ पुष्यस्नानं नृपतेः कर्त्तव्यं दैववित्पुरोधाभ्यां॥ नातः परं पवित्रं सर्वोत्पातांतकरमस्ति॥३॥ श्लेष्मातकासकंटकिकटुतिक्तविगंधिपादपविहीने॥ कौशिकगृध्रप्रभृतिभिरनिष्टविहगैः परित्यक्ते॥४॥ तरुणतरुगुल्मवल्लीलताप्रतानावृते वनोद्देशे॥ निरुपहतपत्रपल्लवमनोज्ञमधुरद्रुमप्राये॥५॥७॥ ॥

सेना सूर्यबिंबरोधन (आच्छादन) करे तो राजाको युद्ध और भयप्राप्त भया ऐसा कहना॥२६॥ शांत ऐसे पक्षी और आरण्यपशु इनके शब्द स्निग्ध (निर्मल) अल्पवायु ऐसी संध्या (उदयास्तसंध्यासमय) होयतो शुभ होय धूलीसेयुक्त रूक्ष (मलिन) रक्तवर्ण ऐसी संध्या लोकका नाश करती है॥२७॥ गर्गादिकऋषीनेजो मयूरचित्रक विस्तारसे कथनकिया वही इहां हमने पुनरुक्तिवर्ज सर्व कथनकिया कोइलका शब्द श्रवण करके कौवा भी शब्द करता है वह उसका करना स्वाभाविक ही है कोइलको जीतनेके वास्ते नही वैसा यह हमारा कहना है॥२८॥ इति मयूरचित्रकं नाम सप्तचत्वारिंशोध्यायः॥४७॥ अथ पुष्यस्नानम्॥ ॥ प्रजा रूप वृक्षका राजा यह मूल है इसवास्ते उसके नाशसे प्रजाका नाश होताहै और राजाकी वृद्धीसे लोकका कल्याण होता है इसवास्ते नृपति रक्षामें चिंता अवश्य करना॥१॥ ब्रह्मदेवने इंद्रप्रीत्यर्थ बृहस्पतीको जो शांति कथन किया वह शांतिको वृद्धगर्गऋषि प्राप्त होयके भागुरीनामक शिष्यको कहते भये सो शांति श्रवण करो॥२॥ दैवज्ञ और उपाध्याय इन्ने राजाको पुष्यस्नान करवाना यह पुष्यस्नानसे दुसरा पवित्र और सर्व उत्पातका नाश करनेवाला नही॥३॥ श्लेष्मातक भेलावा खदिरादि कंटकरस बरी आदि कटु निंबादितिक्त दुर्गंधि ऐसे वृक्षसे रहित उलूक गृध्र इत्यादि अशुभ पक्षीसे त्यक्त॥४॥ नवीन वृक्ष कीलता...

कुक्कुटजीवजीवकशुकशिखिशतपत्रचाषहारीतैः॥क्रकरच
कोरकपिंजलवंजुलपारावतश्रीकैः॥६॥कुसुमरसपानमत्तद्विरेफ
पुंस्कोकिलादिभिस्त्वान्यैः॥विरुतेवनोपकंठेसत्रागारेसुचावथवा
॥७॥ ह्रदिनीविलासिनीनांजलखगनखविक्षतेषुरम्येषु॥पुलिन
जघनेषुकुर्याद्दृढमनसोःप्रीतिजननेषु॥८॥प्रोत्फुल्लहंसकच्छे
कारंडवकुररसारसोद्गीते॥फुल्लेंदीवरनयनेसरसिसहस्राक्षकां
तिधरे॥९॥प्रोत्फुल्लकमलवदनाःकलहंसकलस्वनप्रभाषिण्यः॥
प्रोत्तुंगकुड्मलकुचायस्मिन्नलिनीविलासिन्यः॥१०॥कुर्याद्गोरो
मंथजफेनलवशकृत्खुरक्षतोपचिते॥अचिरप्रसूतहुंकृतवल्
गितवत्सोत्सवेगोष्ठे॥११॥अथवासमुद्रतीरेकुशलागतपोतरत्न
संबाधे॥घननिचुललीनजलचरसितखगशबलीकृतोपांते॥
१२

लीके समुदायसे वेष्टित और उत्तम पत्रके सुंदर और मधुर ऐसे हैं इसब वृक्ष जि
समें ऐसे वनमे पुष्यस्नान करना॥५॥ कुक्कुट जीवजीवक (पक्षिवि०) शुक मयूर
शतपत्र (चंदनीशुक) चाष हारीत (हराकबूतर) क्रकर (पक्षिवि०) चकोर कपि
जल (पक्षिवि०) वंजुल (पक्षिवि०) गोला कबूतर श्रीक (पक्षि०) यह पक्षीसे यु
क्त॥६॥ पुष्परसके पानसे मत्तजो भ्रमर और कोइल और अन्यभी पक्षीसे शब्दि
त (नादित) ऐसे अरण्यके पास अथवा शुद्ध सेत्रमे गृहमे पुष्यस्नान करना॥७॥
अथवा नदी यही स्त्री इनके जलपक्षीके नखसे विदारण कियाहै सुंदर नेत्र औ
र मन इनको आनंदकारक ऐसे तीर यही जघन (कटिप्रदेश) इनके विषे पुष्य
स्नान करना॥८॥ अथवा उडने वाले हंस यही है छत्र जिनके विषे ऐसे कारंडव
कुरर सारस यह पक्षिविशेषका है गायन जिनके विषे ऐसे फूले कमल है नय
न जिस्के ऐसे इंद्रके तेजको धारण करनेवाले ऐसे जो सरोवर उस्के विषे पुष्य
स्नान करना॥९॥ अथवा प्रफुल्लित कमल यही है मुख जिनके ऐसे कलहंसप
क्षीके मधुर शब्द यही भाषण जिनके ऐसे ऊंचीकमलकी कली यही है स्तन जि
नके ऐसे कमलिनी यही वारांगना (वेश्या) जिस स्थलमे होय उहां पुष्यस्नान
करना॥१०॥ अथवा गौके मुंह चलानेसे उत्पन्न भई जो लार और गोवर यह खुरसे
खंडित स्थलके युक्त ऐसे नवीन उत्पन्न वत्सके हुंकारसे और गमनसे उत्साह युक्त
ऐसे गोष्ठमे पुष्यस्नान करना॥११॥ अथवा निर्भय आई जो नौका उस्के रत्नसे
व्याप्त ऐसे घन वृक्षपर रहे जो जलचर श्वेत पक्षी उनकरके धवल (चित्रवर्ण)
कियाहै समीपभाग जिनका ऐसे समुद्रतीरपे पुष्यस्नान करना॥१२॥ ॥

क्षमया क्रोधद्वंजितः सिंहो मृगणाभिभूयते यत्र॥ दत्ताभयखगमृग
शावके षु ते ष्वाश्रमेष्वथवा॥१३॥ कांचीकलापनूपुरगुरुजघनो
द्वहनविघ्नितपदाभिः॥ श्रीमति मृगेक्षणाभिर्गृहेऽन्यभृतवल्गुवच
नाभिः॥१४॥ पुण्येष्वायतनेषु च तीर्थेषूद्यानरम्यदेशेषु॥ पूर्वोदक्
प्लवभूमौ दक्षिणां भोवहायां च॥१५॥ भस्मांगारास्थ्यूषर तुषके
शश्वभ्रकर्कटावासैः॥ श्वाविन्मूषकविवरैर्वल्मीकैर्यान्च संत्यक्ता
॥१६॥ धात्री घना सुगंधा स्निग्धा मधुरा समा च विजयाय॥ सेनावा
सेऽप्येवं योजयितव्या यथायोगं॥१७॥ निष्क्रम्य पुरान्नक्तं दैवज्ञा
मात्ययाजकाः प्राच्यां॥ कौबेर्यां वा कृत्वा वलिं दिगीशाधिपायां वा
॥१८॥ लाजाक्षतदधिकुसुमैः प्रयतः प्रणतः पुरोहितः कुर्यात्॥ आ
वाहनमथ मंत्रस्तस्मिन्मुनिभिः समुद्दिष्टः॥१९॥ आगच्छंतु सुराः स
र्वे येऽत्र पूजाभिलाषिणः॥ दिशो नागा द्विजाश्चैव ये चान्येऽप्यंशभागिनः॥
२०

अथवा क्षमासे क्रोधको जीतनेवाले ऐसे सिंहको हरिण जहां जीतते हैं ऐसे · प
क्षि और मृग इनके बालकको अभयदिया है जिनके विषे ऐसे ऋषिके आश्रम
के विषे पुष्यस्नानकरना॥१३॥ अथवा कांचीके विस्तारसे · नूपुरसे और बडे क
टिप्रदेशभागके वहनसे विघ्नितपदा (मंदचलनेवाली ऐसी) कोकिलाके सम
न सुस्वरभाषणकरनेवाली ऐसी मृगेक्षणा (मृगनयना) स्त्रियोंकरके युक्त ·
और लक्ष्मी युक्त ऐसे गृहमे पुष्यस्नान करना ॥१४॥ अथवा पवित्र देवस्थान
मे · अथवा तीर्थमे · उपवनमे · रमणीय देशमे · पूर्वके तरफ किंवा उत्तरके तरफ
उतरती भूमी होय तहां · जहां दक्षिण नदी गई होय तहां पुष्यस्नान करना ·
॥१५॥ भस्म · अंगार · हाड · खारे मट्टीका स्थल · भूसा · केश · गढा · कर्कट (खेकडा)
जहां रहते होंय तहां श्वावित् (साईका उत्पन्नस्थान ·) मूसाके बिल · सर्पस्थान
इत्यादिकोंसे त्यक्त ॥१६॥ ऐसी मजबूत · सुगंधि · मृदु मधुर · सम · ऐसी भू ·
मी विजयकारक होती है · इसवास्ते ऐसे भूमीपर पुष्यस्नानकरना · सैन्य
रहनेके वास्ते भी ऐसी भूमी उत्तम ॥१७॥ दैवज्ञ · प्रधान · पुरोहित · इन्होने रात्री
मे नगरसे निकलके पूर्वमे वा उत्तरमे अथवा ईशान्यमे बली करना ॥१८॥
एकाग्रचित्त और नम्र ऐसे पुरोहितने लावा · अक्षत · दही · पुष्प इनकरके ·
आवाहन करना · वह आवाहनका ऋषीने वक्ष्यमाण मन्त्रकथन कियाहै॥१९
जो यह यज्ञमे पूजाको इच्छा करनेवाले सर्वदेव वह आवें और दिशा · स
र्प · ऋषि और जो अन्य इहां अंशग्राहक वह सर्व आवें ॥२०॥ ॥ ॥

आवाह्येवंततः सर्वानेवंब्रूयात्पुरोहितः॥ श्वः पूजांप्राप्य यास्यंति
दत्वाशांतिं महीपतेः॥२१॥ आवाहितेषुकृत्वापूजांनांशार्वरींवसे
युस्ते॥ सदसत्स्वप्ननिमित्तंयात्रायांस्वप्नविधिरुक्तः॥२२॥ अपरे
हनिप्रभाते संभारानुपहरेद्यथोक्तगुणान्॥ गत्वावनिप्रदेशे
श्लोकाश्चाप्यत्रमुनिगीताः॥२३॥ तस्मिन्मंडलमालिख्यकल्पये
त्तत्रमेदिनीं॥ नानारत्नाकरवतीं स्थानानिविविधानिच॥२४॥
पुरोहितोयथास्थानेनागान्यक्षान्सुरान्पितॄन्॥ गंधर्वाप्सरस
श्चैवमुनीन्सिद्धांश्चविन्यसेत्॥२५॥ ग्रहांश्चसहनक्षत्रैरुद्रां
श्चसहमातृभिः॥ स्कंदंविष्णुंविशाखंचलोकपालान्सुरस्त्रियः॥
॥२६॥ वर्णकैर्विविधैःकृत्वाहृद्यैर्गंधगुणान्वितैः॥ यथास्वंपूजये
द्विद्वान्गंधमाल्यानुलेपनैः॥२७॥ भक्ष्यैरन्यैश्चविविधैःफलमू
लामिषैस्तथा॥ पानकैर्विविधैर्हृद्यैःसुरासीरासवादिभिः॥२८॥

इसप्रकारसे आवाहनकरकेनंतर कलपूजालेके राजाकोकल्याणदेके आ
पजाना ऐसासर्वको उपाध्यायनेकहना ॥२१॥ आवाहित देवताकी पूजाक
रके दैवज्ञ अमात्य पुरोहित इन्होनेरात्रीमे शुभाशुभस्वप्नदेखनेकेवास्ते
उहांरहना सो स्वप्नविधि यात्राप्रकरणमेकथनकियाहै॥२२॥ दूसरेदिन
प्रातःकालमे यथोक्तगुण (जैसीकथनकियातैसी) सामग्री (साहित्य) एकत्रकरना
औरपूर्वोक्त पवित्रस्थलमेजायकेक्याकरना इसके विषे गर्गऋषीनेश्लोककथनकि
याहै॥२३॥ वह पवित्रस्थलमे मंडलकरके भूमी पुष्पस्नानके विषेकल्पनाकरना
सो अनेकरत्नसमुदायसेयुक्त होय उहांअनेक देवतोंकास्थानकरना॥२४॥ पुरो
हितनेयथायोग्यस्थानमे नाग यक्ष देव पितर गंधर्व अप्सरा मुनि सिद्ध इन
कोस्थापनकरना॥२५॥ औरअश्विन्यादिनक्षत्रसहित नवग्रह मातृगण सहि
तएकादशरुद्र स्कंद विष्णु विशाख इंद्रादिलोकपाल देवस्त्री यह देवताका
स्थापनकरके॥२६॥ नानाप्रकारके वर्णसे मनोहर और सुगंधयुक्त सुगंधमा
ल्य अनुलेपन इसकरके विद्वान् पुरोहितने यथास्थानमे पूजाकरना॥२७॥
नानाप्रकारकेभक्ष्य फल मूल मांस औरनानाप्रकारकी मनोहर सुरा सीर
मद्य इसकरकेपूजाकरना॥२८॥ यह मंडलमे स्थापित देवतोंका पूजन
इसकेअनन्तर हमकहतेहैं यात्राप्रकरणमे ग्रहयज्ञमे जोग्रहोंका विधि
(पूजादि) कथनकिया सो इहांकरना॥२९॥

कथयाम्यतःपरमहं पूजामस्मिन्यथाभिलिखितानां॥ ग्रहयज्ञे यः प्रोक्तो विधिर्ग्रहाणां स कर्त्तव्यः॥२९॥ मांसौदनमद्याद्यैः पिशाचदितितनयदानवाः पूज्याः॥ अभ्यंजनांजनतिलैः पितरो मांसौदनैश्चापि॥३०॥ सामयजुर्भिर्मुनयस्त्वृग्भिर्गंधैश्च धूपमाल्ययुतैः॥ अश्लेषकवर्णैस्त्रिमधुरेणचाभ्यर्चयेन्नागान्॥३१॥ धूपाज्याहुतिमाल्यैर्विबुधान्रत्नैः स्तुतिप्रणामैश्च॥ गंधर्वानप्सरसो गंधैर्माल्यैश्च स्रक्स्रगंधैः॥३२॥ शेषांस्तु सार्ववर्णिकबलिभिः पूजान्यसेच्च सर्वेषां॥ प्रतिसरवस्त्रपताकाभूषणयज्ञोपवीतानि॥३३॥ मंडलपश्चिमभागे कृत्वाग्निं दक्षिणेथवावेद्यां॥ आद्यान्तं भाग्नान्दर्भान्दीर्घानगर्भांश्च॥३४॥ लाजाज्याक्षतदधिमधुसिद्धार्थकगंधसुमनसो धूपान्॥ गोरोचनांजनतिलान्स्वर्तुजमधुराणि च फलानि॥३५॥ सघृतस्य पायसस्य च तत्र शरावाणि तैश्च संभारैः॥ पश्चिमवेद्यां पूजां कुर्यात्स्नानस्य सा वेदी॥३६॥ तस्याः कोणेषु दृढान्कलशान्सितसूत्रवेष्टितग्रीवान्॥ सक्षीरवृक्षपल्लवफलापिधानान्व्यवस्थाप्य॥३७॥

मांस॰ ओदन (भात) मद्य इत्यादिकरके पिशाच॰ देव॰ दैत्य इनकी पूजाकरना॰ तैलाभ्यंग॰ काजल॰ और मांसौदन॰ इसकरके पितरोंकी पूजाकरना॰॥३०॥ साम॰ यजुष्॰ ऋग॰ यह तीनवेदमेके मंत्रसे और गंध॰ धूप॰ माल्य इसकरके ऋषीकी पूजाकरना॰ बहुतरंगका संयोग नही ऐसे रंगसे और त्रिमधुर (मधु॰ घृत शर्करा) इसकरके सर्पकी पूजाकरना॰॥३१॥ धूप॰ घृताहुति॰ माल्य॰ रत्न॰ स्तुति॰ नमस्कार इसकरके देवताकी पूजाकरना॰ गंध॰ स्रग॰ पिपुष्प॰ इसकरके गंधर्व॰ अप्सरा इनकी पूजाकरना॰॥३२॥ सर्वपदार्थका बलि इसकरके शेषरहे जो यक्षादिक उनकी पूजाकरना॰ रंगावस्त्र॰ पताका॰ अलंकार॰ यज्ञोपवीत॰ यहसर्व देवताको देना॰॥३३॥ मंडलके पश्चिमतरफ अथवा दक्षिणतरफ वेदीपर अग्निस्थापनकरके सामग्री एकट्ठे करना॰ लंबे और अलग किये ऐसे दर्भ॰॥३४॥ लावा॰ घृत अक्षत॰ दधि॰ मधु॰ सर्षप॰ गंध॰ पुष्प॰ धूप॰ गोरोचन॰ कज्जल॰ तिल॰ वह ऋतूमेके मधुरफल॰॥३५॥ घृतसहित पायस भरमृन्मयपात्र॰ यहसर्वसाहित्य उहां एकट्ठे करना और वह समारंभसे (साहित्यसे) पश्चिमवेदीकेविषे देवताकी पूजाकरना॰ वह वेदी पुष्यस्नानकी होतीहै॰॥३६॥ वहवेदीकेकोणपर दृढ (अछिद्र) श्वेतसूत गलेमे बांधे ऐसे॰

पुष्यस्नानविमिश्रेणा पूर्णानंभसा सरत्नांश्च॥पुष्यस्नानद्रव्याणि
द्यादगर्गगीतानि॥३८॥ज्योतिष्मतींत्रायमाणामभयामपराजि
तां॥जीवांविश्वेश्वरींपाठांसमंगांविजयांतथा॥३९॥सहांचसह
देवींचपूर्णकोशांशतावरीं॥अरिष्टिकांशिवांभद्रांतेषुकुंभेषुवि
न्यसेत्॥४०॥ब्राह्मींक्षेमामजांचैवसर्वबीजानिकांचनं॥मंगल्या
निपथालाभंसर्वौषध्योरसांस्तथा॥४१॥रत्नानिसर्वगंधांश्चबि
ल्वंचसविकंकतं॥प्रशस्तनाम्न्यश्चौषध्योहिरण्यंमंगलानिच॥
॥४२॥आद्यावनडुहश्चर्मजरयासंहतायुषः॥प्रशस्तलक्षणभृ
तःप्राचीनग्रीवमास्तरेत्॥४३॥ततोवृषस्ययोधस्यचर्मरोहित
मक्षतं॥सिंहस्याथतृतीयंस्याद्व्याघ्रस्यचततःपरं॥४४॥चत्वा
र्येतानिचर्माणितस्यांवेद्यामुपास्तरेत्॥शुभेमुहूर्तेसंप्राप्तेपुष्य
युक्तेनिशाकरे॥४५॥भद्रासनमेकतमेनकारितंकनेकरजतताम्रा
णां॥क्षीरतरुनिर्मितंवाविन्यस्यंचर्मणामुपरि॥४६॥ ७॥ ७॥

क्षीरवृक्षके पल्लव और फल इससे आच्छादित ऐसे कलश रखना॥३७॥और वह क
लशमें पुष्यस्नानके द्रव्य रखके जलसे पूर्ण करके वह रत्नसे युक्त करना. पुष्यस्ना
नके द्रव्य गर्गऋषीने कथन किया है सो ल्यावना (वह गर्गोक्त द्रव्य आगे कहते हैं.
॥३८॥ मालकांगुनी. त्रायमाणा. हरडा. शमी. वच. विश्वेश्वरी (इ. वि.) गुग्गुल. र
क्तमंजिष्ठ. रक्तबच. सहा. (वनमूंग) सहदेवी. पूर्णकोशा. (व. वि.) शतावरी. नी
ब. शिवा. (पुनर्नवा) भद्रा (सोमलता) ब्राह्मी. अजवाइन. अजा. (कौडेना) सर्व
बीज. सुवर्ण. दध्यक्षतादि मंगल द्रव्य. (मिलेसो) सर्वौषधी. सर्वरस. रत्न. सर्वगं
ध. बिल्वफल. विकंतफल. शुभनामक औषधी. सुवर्णादि धातु. गोरोचनादि मं
गल औषधी. यह सर्व पदार्थ पूर्वस्थापित कुंभमे डालना॥३९॥४०॥४१॥४२॥ वृ
द्ध होयके मरा. गोलक्षणोक्त शुभलक्षणयुक्त. ऐसे बैलका चर्म पूर्वके तरफ
ग्रीवा करके प्रथम वेदीपर रखना.॥४३॥ तदनंतर युद्ध करनेवाले बैलका लो
हितवर्ण और अच्छिद्र ऐसा दुसरा चर्म रखना. तिसरा सिंहका चर्म रखना.
चौथा व्याघ्रका चर्म रखना.॥४४॥ पश्चात् चर्म पुष्यनक्षत्रमे चन्द्र रहते
शुभमुहूर्तमे वेदीपर रखना.॥४५॥ सुवर्ण. रौप्य. ताम्र. इनमेसे कोई
एक धातूका अथवा क्षीरवृक्षका भद्रासन करके वह चर्म पर रखना.॥४६॥
वह भद्रासनकी तीन प्रकारकी उंचाई होय. मांडलिक राजाको हस्तपरिमि
मे. सवाहात (अंगुल ३०) जयेच्छु राजाको. १॥ डेड हात सर्वराज्य इच्छाकर

त्रिविधस्तस्योच्छ्रायो हस्तः पादाधिकोऽर्धयुक्तश्च ॥ मांडलिकानंतरजितसमस्तराज्यार्थिनां शुभदः ॥ ४७ ॥ अंतर्धाय हिरण्यं तत्रोपविशेन्नरेश्वरः सुमनाः ॥ सचिवाप्तपुरोहितदैवपौरकल्याणनामवृतः ॥ ४८ ॥ वंदिजनपौरविप्रप्रघुष्टपुण्याहवेदनिर्घोषैः ॥ समृदंगशंखतूर्यैर्मंगलशब्दैर्हृतानिष्टः ॥ ४९ ॥ अहतक्षौमनिवसनं पुरोहितः कंबलेन संछाद्य ॥ कृतबलिपूजं कलशैरभिषिंचेत्सर्पिषापूर्णैः ५० अष्टावष्टाविंशतिरष्टशतं वापि कलशपरिमाणं ॥ अधिकेऽधिके गुणोत्तरमयं च मंत्रोऽत्र मुनिगीतः ॥ ५१ ॥ आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परं ॥ आज्यं सुराणामाहार आज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ ५२ ॥ भौमांतरिक्षं दिव्यं च यत्ते किल्बिषमागतं ॥ सर्वं तदाज्यसंस्पर्शात्प्रणाशमुपगच्छति ॥ ५३ ॥ कंबलमपनीय ततः पुष्यस्नानांबुभिः सफलपुष्पैः ॥ अभिषिंचेन्मनुजेंद्रं पुरोहितोऽनेन मंत्रेण ॥ ५४ ॥ ७ ॥ ॥

नेवालेको ऐसा त्रिविध भद्रासन शुभ सूचक होताहै ॥ ४७ ॥ वह भद्रासनके मध्यदेशमे सुवर्ण रखना सुंदुमनकरके और प्रधान आप्त (बंधुवर्ग) पुरोहित ज्योतिषी नागरिक जन यह शुभ नामका (जयराज सिंहराज व्याघ्रराज इ०) इनकरके वेष्टित ऐसे राजाने वह भद्रासनपर बैठना ॥ ४८ ॥ स्तुतिपाठक नागरिक लोक ब्राह्मण इन्होने कियाजो शुभ शब्द औरवेदघोष इनकरके और मृदंग शंख वाद्य और मंगल शब्द इनकरके नष्ट भयाहै अशुभ जिस्का ऐसे राजाने भद्रासनपर बैठना ॥ ४९ ॥ नवीन क्षौम (रेशमी) वस्त्र धारण किया ऐसा बलि और पूजा किया जिन्ने ऐसे राजाको दुसालासे आच्छादन करके पुरोहितने घृतपूर्णकलशसे अभिषेक करना ॥ ५० ॥ आठ अठ्ठाईस अष्टाधिकशत इतने कलश होंय जितने अधिक होंय उतना गुणाधिक्य जानना यह आज्याभिषेकमे यह वक्ष्यमाण मंत्र गर्गऋषीने कथन कियाहै ॥ ५१ ॥ घृत यह देवतोंका तेज है घृत अत्यंत पाप हरण करनेवाला है घृत देवतोंका आहारहै घृतके विषे भूर्भुवादिलोक प्रतिष्ठित (स्थापन किया है) ॥ ५२ ॥ ग्रह नक्षत्रादिकसे भयासो दिव्य उल्कादिकसे भयासो अंतरिक्ष चरस्थिरसे भयासो भौम ऐसे त्रिविध प्राप्त भये अशुभसो सर्व घृतस्पर्शसे नाश होंय (यह मंत्रार्थ) ॥ ५३ ॥ घृताभिषेकके अनंतर दुशाला निकालके फलपुष्पसेसहित ऐसे पुष्यस्नानके जलसे राजाको पुरोहितने यह वक्ष्यमाण मंत्रसे अभिषेक करना ॥ ५४ ॥

सुरास्त्वामभिषिंचंतु येचसिद्धाःपुरातनाः॥ब्रह्माविष्णुश्चशंभुश्च
साध्याश्चसमरुद्गणाः॥५५॥आदित्यावसवोरुद्राअश्विनौचभि
षग्वरौ॥अदितिर्देवमाताचस्वाहासिद्धिःसरस्वती॥५६॥कीर्तिर्ल
क्ष्मीर्धृतिःश्रीश्चसिनीवालीकुहूस्तथा॥दनुश्चसुरसाचैवविनता
कद्रुरेवच॥५७॥देवपत्न्यश्चयानोक्तादेवमातरएवच॥सर्वास्त्वा
मभिषिंचंतुदिव्याश्चाप्सरसांगणाः॥५८॥नक्षत्राणिमुहूर्ताश्चप
क्षाहोरात्रसंधयः॥संवत्सरादिनेशाश्चकलाःकाष्ठाःक्षणालवाः॥
॥५९॥सर्वेत्वामभिषिंचंतुकालस्यावयवाःशुभाः॥वैमानिकाःसु
रगणामनवःसागरैःसह॥६०॥सप्तर्षयःसदाराश्चध्रुवस्थाना
नियानिच॥मरीचिरत्रिःपुलहःपुलस्त्यःक्रतुरंगिराः॥६१॥भृगुः
सनत्कुमारश्चसनकोथसनंदनः॥सनातनश्चदक्षश्चजैगीष
व्योभगंदरः॥६२॥एकतश्चद्वितश्चैवत्रितोजाबालिकश्यपौ॥
दुर्वासादुर्विनीतश्चकण्वःकात्यायनस्तथा॥६३॥मार्कंडेयोदी
र्घतपाःशुनःशेफोविदूरथः॥ऊर्वःसंवर्तकश्चैवच्यवनोत्रिःपरा
शरः॥द्वैपायनोयवक्रीतोदेवराजःसहानुजः॥एतेचान्येच
मुनयोवेदव्रतपरायणाः॥६५॥

(यह अभिषेकमंत्रश्लोकका अर्थसुबोधहैतथापि मंदबुद्धीको समझनेकेवास्ते
थोड़ासा कथनकरतेहैं) हेराजा·देवतुमकोअभिषेककरे जोसिद्ध देव·पुरातन·ब्र
ह्मा·विष्णु·शिव·साध्यदेव·मरुद्गण॥५५॥द्वादशादित्य·अष्टवसु·एकादशरुद्र·
वैद्यश्रेष्ठ दो अश्विनीकुमार·देवमाता·अदिति·स्वाहा·सिद्धि·सरस्वती॥५६॥की
र्ति·लक्ष्मी·धृति·श्री·सिनीवाली·कुहू·दनु·सुरसा·विनता·कद्रु॥५७॥अकथित
जोदेवस्त्री सोदेवतोंकी माता·दिव्यअप्सरागण·यहसर्वतुमकोअभिषेककरें॥
५८॥अश्विन्यादिनक्षत्र·मुहूर्त्त·पक्ष·अहोरात्र·संध्या·संवत्सर·दिनेश·(वार) क
ला·काष्ठा·क्षण·लव॥५९॥ यहसर्वशुभकालकेअवयव·तुमको अभिषेककरें·
वैमानिक देवगण·मनु·समुद्र·॥६०॥स्त्रीकेसहवर्तमानसप्तर्षी·स्थिरस्थान·मरी
चि·अत्रि·पुलह·पुलस्त्य·क्रतु·अंगिरा॥६१॥ भृगु·सनत्कुमार·सनक·सनंदन·
सनातन·दक्ष·जैगीषव्य·भगंदर·॥६२॥एकत·द्वित·त्रित·जाबालि·कश्यप·दु
र्वास·दुर्विनीत·कण्व·कात्यायन॥६३॥मार्कंडेय·दीर्घतपा·शुनःशेफ·विदूरथ·
ऊर्व·संवर्तक·च्यवन·अत्रि·पराशर·॥६४॥व्यास यवक्रीत·इन्द्र·इन्द्रानुज·(वाम
न)

सशिष्यास्तेभिषिंचंतु सदाराश्च तपोधनाः॥ पर्वतास्तरवो वल्यः पुण्यान्यायतनानि च॥ ६६॥ सरितश्च महाभागा नागाः किंपुरुषास्तथा॥ वैखानसा महाभागा द्विजा वैहायसाश्च ये॥ ६७॥ प्रजापतिर्दितिश्चैव गावो विश्वस्य मातरः॥ वाहनानि च दिव्यानि सर्वलोकाश्चराचराः॥ ६८॥ अग्नयः पितरस्तारा जीमूताः खंदिशो जलं॥ एते चान्ये च बहवः पुण्यसंकीर्तनाः शुभाः॥ ६९॥ तोयैस्त्वामभिषिंचंतु सर्वोत्पातनिबर्हणैः॥ कल्याणं ते प्रकुर्वंतु आयुरारोग्यमेव च॥ ७०॥ इत्येतैश्चान्यैश्चाप्यथर्वकल्पोद्भवैः सरुद्रगणैः॥ कौष्मांड महारौहिण कुबेर हृद्यैः समृध्या च॥ ७१॥ आपो हि ष्ठेति सृग्भिर्हिरण्यवर्णेति च तसृभिर्जप्तं॥ कार्पासिकवस्त्रयुगं बिभृयात्स्नातो नराधिपतिः॥ ७२॥ पुण्याह शंखशब्दैराचांतोभ्यर्च्य देवगुरुविप्रान्॥ छत्रध्वजायुधानि च ततः स्वपूजां प्रयुंजीत॥ ७३॥ आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषाभिर्ऋग्भिरेताभिः॥ परिजप्तं वैजयिकं वध्नीयाद्दलंकारं॥ ७४॥ ७॥ ७॥

यह और अन्यभी वेदव्रतके विषे तत्पर तपस्वी ऐसे ऋषी शिष्यके सहवर्तमान और स्त्रियोंके सहवर्तमान तुमको अभिषेककरें पर्वत वृक्ष वल्ली पवित्रस्थान॥ ६५॥ ६६॥ नदी महाभाग सर्प किंपुरुष वैखानस ब्राह्मण वैहायस॥ ६७॥ प्रजापति दिति सर्वजगतकी माता ऐसी गौ दिव्यवाहन चराचर सर्वलोक॥ ६८॥ अग्निपितर तारा (नक्षत्र) मेघ आकाश दिशा जल यह और सर्वपुण्यकीर्तन पवित्र॥ ६९॥ सर्व उत्पातकानाशकारक ऐसे जलसे तुमको अभिषेककरें और तुम्हारा कल्याण और आयुष्य और आरोग्यकरें॥ ७०॥ यह पूर्वोक्त मंत्र और अन्यभी अथर्वकल्पमेंके मंत्र रुद्रगणमंत्र कौष्मांड मंत्र महारौहिण कुबेरहृद्यमंत्र समृद्धिमंत्र इनकरके अभिषेककरना॥ ७१॥ आपोहिष्ठा इत्यादि ३ ऋचा और हिरण्यवर्णा इ॰ ४ ऋचा इनकरके अभिमंत्रित ऐसे कार्पासवस्त्र २ राजाने स्नानकरके धारण करना॥ ७२॥ अनंतर आचमनकरके मंगलशब्द और शंखशब्द इनकरके युक्त देव गुरु ब्राह्मण इनकी और छत्र ध्वज आयुध इनकी पूजाकरके अनंतर इष्टदेवताकी पूजाकरना॥ ७३॥ आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोष इत्यादि ६ ऋचासे अभिमंत्रित विजयदेनेवाला ऐसा नया अलंकार राजाने धारण करना॥ ७४॥ अनंतर राजाने दुसरे वेदीमें जायके चर्मपर बैठना उहां पहिला चर्म बैलका

गत्वा द्वितीयवेदीं समुपविशेच्चर्मणामुपरि राजा॥ देयानि चैव चर्माण्युपर्युपर्येवमेतानि॥७५॥ वृषस्य वृषदंशस्य रुरोश्च पृषतस्य च॥ तेषामुपरि सिंहस्य व्याघ्रस्य च ततः परं॥७६॥ मुख्यस्थाने जुहुयात्पुरोहितोऽग्निं समित्तिलघृताद्यैः॥ त्रिनयनशक्रबृहस्पतिनारायणनित्यगतिकृद्भिः॥७७॥ इंद्रध्वजनिर्दिष्टान्यग्निनिमित्तानि दैववित् ब्रूयात्॥ कृत्वा शेषसमाप्तिं पुरोहितः प्रांजलिर्ब्रूयात्॥७८॥ यांतु देवगणाः सर्वे पूजामादाय पार्थिवात्॥ सिद्धिं दत्वा स विपुलां पुनरागमनाय वै॥७९॥ नृपतिरतो दैवज्ञं पुरोहितं चार्चयेद्धनैर्बहुभिः॥ अन्यांश्च दक्षिणीयान्यथार्हतः श्रोत्रियप्रभृतीन्॥८०॥ दत्वाभयं प्रजानामाघातस्थानगान्विसृज्य पशून्॥ बंधनमोक्षं कुर्यादभ्यंतरदोषकृद्वर्जं॥८१॥ एतत्प्रयुज्यमानं प्रतिपुष्यं सुखयशोऽर्थवृद्धिकरं॥ पुष्यं विनार्धफलदा पौषी शांतिः परा प्रोक्ता॥८२॥ राष्ट्रोत्पातोपसर्गेषु राहोः केतोश्च दर्शने॥ ग्रहावमर्दने चैव पुष्यस्नानं समाचरेत्॥८३॥ ४८॥

दूसरा मार्जारका· निसरारुरूका (मृगविशेष) चवथा पृषत (मृगवि॰) इनका·उस्के ऊपर सिंहका· उस्के ऊपर व्याघ्रका ऐसा यह चर्म एकपर एक रखना और उस्के ऊपर राजाने बैठना· ॥७५॥७६॥ मुख्यस्थानमे (दक्षिणवेदीपर) अग्नीमे·समिधा·तिल·घृत·और श्रीफल इत्यादिक करके पुरोहितने रुद्र·इंद्र·बृहस्पति·विष्णु·वायु·इनके मंत्रसे होम करना· ॥७७॥ इंद्रध्वजके विषे कथन किया (अ॰ ४३ श्लो॰ ३१से ३६तक) जो अग्नीका शुभाशुभ लक्षण सो ज्योतिषीने कथन करना· पुरोहितने सर्व कर्मकी समाप्ती करके हाथ जोडके यह वक्ष्यमाण कहना॥७८॥ राजासे·(राजाने किया) पूजा लेके· राजाको बहुत सिद्धि देके पुनः कार्यमे आवनेके वास्ते सर्व देवगण जाय ऐसा पुरोहितने हाथ जोडके कहना॥७९॥ अनंतर राजाने ज्योतिषी और पुरोहित इनकी पूजा बहुत द्रव्यसे करना और अन्य भी दक्षिणा देनेको योग्य· होम करनेवाले वा अग्निहोत्री इत्यादि ब्राह्मणोंको यथा योग्य दक्षिणा देना·॥८०॥ अनंतर राजाने प्रजाको अभय देकरके मारनेके स्थानमे लेगये मेषादि पशूंको छोड देना·तैसेही बंदीमेके लोक भी छोड देना· परंतु राजाके शरीरको दुःख देनेवाले वा अंतःपुरमे दोष करनेवाले लोक उनके विना बंदीमेके लोक छोड देना·८१ यह कथित पुष्यस्नान प्रतिमहिनेके पुष्यनक्षत्रमे करे तो सुख·यश·द्रव्य·इनकी वृद्धि होती है· पुष्यनक्षत्रके विना करे तो अर्ध फल देता है· पुष्यनक्षत्रमे किं

नास्तिलोकेसउत्पातोयोह्यनेननशाम्यति॥ मंगलंचापरंनास्तियद्स्मादतिरिच्यते॥८४॥ अधिराज्यार्थिनोराज्ञः पुत्रजन्मचकांक्षतः॥ तत्पूर्वमभिषेकेचविधिरेषप्रशस्यते॥८५॥ महेंद्रार्थमुवाचेदंबृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिः॥ स्नानमायुःप्रजावृद्धिसौभाग्यकरणंपरं॥८६॥ अनेनैवविधानेनहस्त्यश्वंस्नापयीतयः॥ तस्यामयविनिर्मुक्तंपरांसिद्धिमवाप्नुयात्॥८७॥ ॥इतिपुष्यस्नानम्॥ अथपट्टलक्षणं॥ विस्तरशोनिर्दिष्टंपट्टानांलक्षणंयदाचार्यैः॥ तत्संक्षेपःक्रियतेमयात्रसकलार्थसंपन्नः॥१॥ पट्टःशुभदोराज्ञांमध्येष्टांगुलानिविस्तीर्णः॥ सप्तनरेंद्रमहिष्याःषड्युवराजस्यनिर्दिष्टः॥२॥ चतुरंगुलविस्तारःपट्टःसेनापतेर्भवतिमध्ये॥ द्वेचप्रसादपट्टःपंचैते कीर्तिताःपट्टाः॥३॥ सर्वेद्विगुणायामामध्यादर्धेनपार्श्वविस्तीर्णाः॥ सर्वेचशुद्धकांचनविनिर्मिताःश्रेयसोवृद्ध्यै॥४॥

वा पौष पौर्णिमामे करेतो यह पुष्यस्नानरूप शांति उत्तम होती है॥८२॥ राष्ट्रमे (राज्यमे) दिव्य भौमांतरिक्ष उत्पात उपद्रव (रोगादि) ग्रहण और धूमकेतु इनके दर्शन ग्रहयुद्ध यह होयतो पुष्यस्नानकरना॥८३॥ जो उत्पात पुष्यस्नानसे शांत होता नही ऐसा उत्पात लोकमे होता नही और यह पुष्यस्नानसे अधिक ऐसा मंगलकारक भी दूसरा नही॥८४॥ अधिराज्य (श्रेष्ठराज्य) किंवा पुत्रजन्म इच्छाकरनेवाले राजाको पुष्यस्नान पूर्वक अभिषेकमे यही विधि प्रशस्त है॥८५॥ बडाकीर्तिमान् बृहस्पति इंद्रके आगे आयुष्य संतति वृद्धि सौभाग्य इस्को करनेवाला उत्तम यह स्नान कथन करते भये॥८६॥ यही विधान करके हाथी घोडा इनको स्नान करावेतो उस्के वह हस्त्यश्व रोगनिर्मुक्त होयके उत्तम सिद्धि पावते हैं॥८७॥ ॥इति बृहत्संहितायां पुष्यस्नानं नामाष्टचत्वारिंशोध्यायः॥४८॥ ॥अथपट्टलक्षणम्॥ कश्यपादि आचार्यने मुकुटका लक्षण विस्तारसे जो कथन किया सो हम सर्व अर्थसे युक्त संक्षेपसे कहते हैं॥१॥ राजाका मुकुट मध्यमे आठ अंगुल विस्तीर्ण शुभ होता है राजस्त्रियोंका मुकुट सात अंगुल विस्तीर्ण शुभ युवराजका मुकुट छ अंगुल विस्तीर्ण शुभ होता है॥२॥ सेनापतीका मुकुट बीचमे चार अंगुल विस्तीर्ण शुभ प्रसाद मुकुट दो अंगुल शुभ यह पांच मुकुट कथन किया॥३॥ यह सर्व मुकुट विस्तारके दूना लंबा होय मध्य विस्तारका अर्ध पार्श्वभाग विस्तीर्ण होय सर्व मुकुट शुद्ध सुवर्णसे निर्मित कल्याण वृद्ध्यर्थ होते हैं॥४॥

पंचशिखोभूमिपतेस्त्रिशिखोयुवराजपार्थिवमहिष्योः॥एकशि
खःसैन्यपतेःप्रसादपट्टोविनाशिखया॥५॥क्रियमाणंयदिपट्टं
सुखेनविस्तारमेतिपट्टस्य॥वृद्धिजयौभूमिपतेस्तथाप्रजानांचसु
खसंपत्॥६॥जीवितराज्यविनाशंकरोतिमध्येव्रणःसमुत्पन्नः
॥मध्येस्फुटितस्त्याज्योविघ्नकरःपार्श्वयोःस्फुटितः॥७॥अशुभ
निमित्तोत्पन्नोशास्त्रज्ञःशांतिमादिशेद्राज्ञः॥शस्तनिमित्तःपट्टो
नृपराष्ट्रविवृद्धयेभवति॥८॥ ॥इतिपट्टलक्षणम्॥अथखड्गल
क्षणं॥अंगुलशतार्द्धमुत्तमऊनःस्यात्पंचविंशतिःखड्गः॥अंगु
लमानाज्ज्ञेयोव्रणोशुभोविषमपर्वस्थः॥१॥श्रीवृक्षवर्धमाना
तपत्रशिवलिंगकुंडलाब्जानां॥सदृशाव्रणाःप्रशस्ताध्वजायु
धस्वस्तिकानांच॥२॥कृकलासकाककंककव्यादकबंधवृश्चि
काकृतयः॥खड्गेव्रणानशुभदावंशानुगताःप्रभूताश्च॥३॥ ॥
स्फुटितोह्रस्वःकुंठोवंशच्छिन्नोनदृङ्मनोनुगतः॥अस्वनइ
तिचानिष्टःप्रोक्तविपर्ययस्तुइष्टफलः॥४॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राजाकामुकुटपंचशिखकरना· युवराज और राजस्त्री इनकात्रिशिख·
सैन्यपतीकाएकशिखमुकुट होय·और प्रसाद मुकुट शिखाविनाकरना·
॥५॥मुकुटकरनेकाजो पत्रा सो अनायासविस्तृतहोयतोराजाको वृद्धि·जय·य
हप्राप्तहोताहै·औरप्रजाकोसुख·संपत्तियह प्राप्तहोताहै·॥६॥वनावनेके मुकु
टको मध्यमेछिद्र उत्पन्नहोयतो· आयुष्य और राज्य इनका नाशहोताहै·मध्य
मेफुटेतोत्यागकरना· बाजूमेफूटेतो विघ्नकारकहोता है॥७॥मुकुटबनावने
केकालमे अशुभलक्षण उत्पन्नहोयतो पट्टशास्त्रज्ञने राजाको शांतिकहना·
शुभनिमित्तसे युक्त जो पट्ट(मुकुट) सोराजाको और राष्ट्रको वृद्धीकरताहै ८
॥इतिबृहत्संहितायांपट्टलक्षणंनामएकोनपंचाशोध्यायः॥४९॥ अथखड्ग
लक्षणम्॥खड्ग(तलवार)(पचाससे पचीस अंगुलतक लंबी होय)पचास
अंगुल लंबी उत्तम· पचीस अंगुल कनिष्ठ· खड्गपर व्रण(गड्हा) इ॰ अंगुलसे
विषम(१।३।५) इ॰ अंगुलपरहोयतो वह अनिष्ट जानना·॥१॥ बिल्ववृक्ष
वर्धमान·(एरंड)छत्र·शिवलिंग·कुंडल·कमल· ध्वज·खड्गादि आयुध·स्वस्तिक
इनके ऐसे व्रण चिन्ह शुभहोतेहैं॥२॥सरट·काक·कंक·मांसभक्षक·गृध्रादि
क· छिन्नमस्तकपुरुष· बीछी· इनके आकार समान और खड्गके मध्यभाग
मे और बहुत चिन्ह शुभहोतानही·॥३॥ स्फुटित(फूटा) प्रमाणहीन·अती

क्वणितं मरणाय पराजयाय प्रवर्तनं कोशात्॥ स्वयमुद्गीर्णे युद्धं ज्वलिते विजयो भवति खड्गे ॥५॥ नाकारणं विवृणुयान्न विघट्टयेच्च पश्येन्न तत्र वदनं न वदेच्च मूल्यं॥ देशं न चास्य कथयेत्प्रतिमानयेच्च नैव स्पृशेन्नृपतिरप्रयतोऽसियष्टिं॥६॥ गोजिव्हासंस्थानो नीलोत्पलवंशपत्रसदृशश्च॥ करवीरपत्रशूलाग्रमंडलाग्राः प्रशस्ताः स्युः॥७॥ निष्पन्नो न च्छेद्यो निकषैः कार्यः प्रमाणयुक्तः सः॥ मूले म्रियते स्वामी जननी तस्याग्रतश्छिन्ने॥८॥ यस्मिन्त्सरुप्रदेशे व्रणो भवेत्तद्वदेव खड्गस्य॥ वनितानामिव तिलको गुह्ये वाच्यो मुखे दृष्ट्वा॥९॥ अथवा स्पृशति यदंगं प्रष्टा निस्त्रिंशभृत्तदवधार्य॥ कोशस्थस्यादेश्यो व्रणोऽसिशास्त्रं विदित्वेदं॥१०॥ शिरसि स्पृष्टे प्रथमेंऽगुले द्वितीये ललाटसंस्पर्शे॥ भ्रूमध्ये च तृतीये नेत्रे स्पृष्टे चतुर्थे च॥११

स्थान मध्यभागमें तूटे समान· चक्ष और मन इनको प्रिय नही· मारे तो शब्द होय नही· ऐसा खड्ग अशुभ इससे अन्य प्रकारका खड्ग शुभ होता है ॥४॥ खड्गका स्वतः शब्द होय तो खड्ग स्वामीको मरण होता है कोश (म्यान) इसमेसे खड्ग निकले नही तो पराजय होता है· खड्ग स्वतः कोशमेसे निकले तो युद्ध होता है· खड्ग ज्वलित होय तो विजय होता है·॥५॥ खड्ग कारणके विना म्यानमेसे निकालना नही और हिलावना नही· उसमे मुख देखना नही· कारणके विना खड्गकी कीमत कहना नही· खड्गकी जाती कहना नही· खड्ग अंगुलसे नापना नही· राजाने अपवित्र रहने खड्गको स्पर्श करना नहीं·॥६॥ गौके जिव्हासमान· नीलकमलके समान· बांसके पत्ते समान· कनैलके पत्ते समान· शूलके अग्रसमान· मंडलाग्र (खड्ग) शुभ होते हैं·॥७॥ तयार भया खड्ग प्रमाणसे अधिक होय तो· तोडना नही· घिसके प्रमाण युक्त करना उसका मूल तोडे तो स्वामीको मृत्यु· अग्र तोडे तो स्वामीके माताको मृत्यु होता है·॥८॥ जिस खड्ग मुष्टि प्रदेशमे व्रण होय वही खड्ग प्रदेशमे व्रण है ऐसा कहना· मूठके मूलमे व्रण होय तो खड्ग मूलमे व्रण है· मध्यभागमे होय तो· खड्ग मध्यभागमे· अग्रभागमे होय तो खड्गाग्रमे व्रण है ऐसा कहना· जैसा स्त्रीके मुखपर तिलक देखके गुह्य पर है· ऐसा मालूम होता है तैसा यह मालूम करना·॥९॥ अथवा शस्त्र धारण करके पृच्छक जिस अंगमे स्पर्श करे सो देखके और यह वक्ष्यमाण खड्गशास्त्र जानके तैसा म्यानमेके खड्गको व्रण है ऐसा कथन करना·॥१०॥ पृच्छक मस्तकपर स्पर्श करे तो खड्गको प्रथम अंगुलमे व्रण है ऐसा कहना· ललाटपै स्पर्श करे तो

नासिकोष्ठकपोलहनुश्रवणग्रीवांसकेषु पंचाद्याः॥ उरसि द्वादश संस्थस्त्वपोदशोकक्षपोर्द्वेपः॥१२॥ स्तनहृदयोदरकुक्षीनाभिषु चतुर्दशाद्योज्ञेयाः॥ नाभीमूलेकट्यांगुह्ये चैकोनविंशतितः॥१३॥ ऊर्वोर्द्वौ विंशस्याद्‌ऊर्वोर्मध्येव्रणस्त्वपो विंशे॥ जानुनि च चतुर्विंशे जंघायां पंचविंशे च॥१४॥ जंघामध्ये गुल्फे पार्ष्ण्यां पादे तदंगुलीष्वपि च॥ षट्विंशतिकाद्यावत्त्रिंशदितिमतेन गर्गस्य॥१५॥ पुत्रमरणं धनाप्तिर्धनहानिः संपदश्च बंधश्च॥ एकाद्यंगुलसंस्थैर्व्रणैः फलं निर्दिशेत्क्रमशः॥१६॥ स्कतलाभः कलहो हस्तिलब्धयः पुत्रमरणधनलाभौ॥ क्रमशो विनाशवनिताप्ति चित्तदुःखानि षट्प्रभृति॥१७॥ लब्धिर्हानिः स्त्रीलब्धयो वधो वृद्धिमरणपरितोषाः॥ ज्ञेयाश्चतुर्दशादिषु धनहानिश्चैकविंशे स्यात्॥१८॥ वित्ताप्तिर्निर्वाणं धनागमो मृत्युसंपदौ स्वत्वं॥ ऐश्वर्यमृत्युराज्यानि चक्रमात्त्रिंशदिनियावत्॥१९॥

दुसरे अं० भ्रूमध्यमेस्पर्श० तिसरे अं० नेत्रकोस्पर्शकरेतो चौथे अंगुलमेव्रण है ऐसाकहना॥११॥ पृच्छक नासिका·ओष्ठ·गाल·हनु·कान·कंठ·अंस·इनकोस्पर्शकरेतो क्रमसे खड्गके ५।६।७।८।९।१०।११ इसअंगुलपरव्रणहै· वक्षस्थलमेस्पर्शकरेतो १२अंगुलमे० बगल स्पर्शकरेतो १३अंगुलपरव्रणहै ऐसाकहना·१२ ॥ पृच्छक·स्तन·हृदय·उदर·कुक्षी·नाभी·इनकोस्पर्शकरेतोक्रमसे १४।१५।१६। १७।१८। यह अंगुलमे·नाभिमूल·कटी·गुह्य इनको स्पर्शकरेतो १९।२०।२१। यह अंगुलमे॥१३॥ जंघामे स्पर्शक० २२अंगुलमे·जंघाकेमध्यमेस्पर्शक० २३अंगुलमे·जानूमे स्पर्शक०२४अंगुलमे·पेंडुरीमेस्पर्शक०२५अंगुलमे·॥१४॥ पेंडुरीके मध्यमे·गुल्फ·एडी·पांव और उनकी अंगुली इनको स्पर्शकरेतो क्रमसे २६।२७ ।२८।२९।३० वे अंगुलपर खड्गको व्रणहै ऐसा समझना·ऐसा गर्गऋषीका मतहै· ॥१५॥ एकादि अंगुलोंमे खड्गको जोव्रण उस्का यहवक्ष्यमाणफल क्रमसेजानना·१अंगुलमेपुत्रमरण·२धनप्राप्ती·३धननाश·४संपत्ति·५बंध·यहफल होतेहैं॥१६॥ ६स्कनलाभ·७कलह·८गजलाभ·९पुत्रमरण·१०धनलाभ·११विनाश·१२स्त्रीप्राप्ती·१३चित्तकोदुःख·यह६अंगुलसे फलजानना·॥१७॥ ॥ १४लाभ·१५हानि·१६स्त्रीलाभ·१७वध·१८वृद्धि·१९मरण·२०संतोष·यह फल चौदसेजानना·२१धनहानि होतीहै·॥१८॥ २२द्रव्यप्राप्ति·२३मृत्यु·२४धनप्राप्ति·२५मृत्यु·२६संपत्ति·२७निर्धनत्व·२८ऐश्वर्य·२९मृत्यु·३०राज्य·यह फलतीसतकजानना॥१९॥ तीसअंगुलकेआगेव्रणका विशेषफल नहीं·विषमअंगुलमे अशुभ

परतोनविशेषफलंविषमसमस्थास्तुपापशुभफलदाः॥केचिद्
फलाःप्रदिष्टास्त्रिंशत्परतोंगुलिमितियावत्॥ २०॥ करवीरोत्पलग
जमदघृतकुंकुमकुंदचंपकसगंधः॥ शुभदोनिष्टोगोमूत्रपंकमेदः
सदृशगंधः॥ २१॥ कूर्मवसासृक्क्षारोपमश्चभयदुःखदोभवति
गंधः॥वैडूर्यकनकविद्युत्प्रभोजयारोग्यवृद्धिकरः॥ २२॥ इदमौ
शनसंचशस्त्रपानंरुधिरेणश्रियमिच्छतःप्रदीप्तं॥ हविषागुणव
त्सुताभिलिप्सोःसलिलेनाक्षयमिच्छतश्चवित्तं॥ २३॥ वडवोष्ट्रक
रेणुदुग्धपानंयदिपापेनसमीहतेर्थसिद्धिं॥ झषपित्तमृगाश्वव
स्तदुग्धैःकरिहस्तच्छिदयेसतालगर्भैः॥ २४॥ आर्कंपयोहुडुवि
षाणमषीसमेतंपारावताखुशकृताचयुतंप्रलेपः॥ शस्त्रस्यतै
लमथितस्यततोस्यपानंपश्चाच्छितस्यनशिलासुभवेद्विघातः
॥ २५॥ क्षारेकदल्यामथितेनयुक्तेदिनोषितेपायितमायसंयत्
॥सम्यक्छितंचाश्मनिनैतिभंगंनचान्यलोहेष्वपितस्यकौंठ्यं॥ २६

फलऔर समअंगुलमेंशुभफलजानना॰ कोईआचार्यतीस अंगुलकेआगे अग्र
तक फलहीनहीं ऐसाकहतेहैं॥ २०॥ कनैलकाफूल॰ कमल॰ गजमद॰ घृत॰ कुंकु
म॰ कुंदपुष्प॰ चंपकपुष्प॰ इनकेसमान खड्गकागंध शुभहोताहै॰ गोमूत्रकीच
ड॰ मेद॰ इनकेसमान खड्गका गंध अशुभहोताहै॰ ॥ २१॥ कछुआ॰ वसा॰ (चरबी)
रक्त॰ क्षार॰ इनकेसमान गंधकाखड्ग भय और दुःखदेताहै॰ वैडूर्यमणी॰ सुवर्ण॰ बि
जुली इनकेसमान तेजस्वी खड्ग॰ जयआरोग्य और वृद्धिकरताहै॰ ॥ २२॥ यहव
स्यमाण शस्त्रपान (शस्त्रकोपानीदेना) शुक्रनेकथनकिया॰ उज्वल लक्ष्मी इच्छा
करनेवालेके खड्गको रक्तसेपानीदेना॰ गुणवान्पुत्रकीइच्छावालेके खड्गकोघृ
तसेपानीदेना॰ अक्षयद्रव्यइच्छावालेके खड्गको जलसे पानीदेना॥ २३॥ जो
पापसे (वधादिकसे) अर्थसिद्धि इच्छाकरेतो घोडी॰ ऊंट॰ हाथी॰ इनकेदूधसेपा
नीदेना॰ हाथीकी सुंडा तोडनेकी इच्छाकरनेवालेने खड्गको मत्स्यपित्त॰ मृगी॰
घोडी बकरी इनका दूध और तालगर्भ (ताडी) यह एकत्रकरकेपानीदेना॥ २४
मदारकादूध॰ मेंढेके सींगकीराखकरके उस्सेयुक्त करना और कबूतर॰ चूहा इनके
विष्ठासेयुक्तकरकेउस्कालेप तैलमर्दितशस्त्रकोकरना॰ नंतर पानीदेना॰ अनं
तर घिसके तीक्ष्णकरना तो खड्ग पाषाणपरमारेतो भीटूटेगानहीं॰ ॥ २५॥ के
लाकाक्षार (राख) मंठेसेयुक्तकरके असेराभ रखके वहपानी जिसलोहेको दिया
वाउत्तमपिलाया तो वह पाषाणपरभी नाशहोगानहीं॰ और अन्यलोहपरभीकुं
ठितहोगानहीं॰ ॥ २६

॥ इतिखङ्गलक्षणं ॥ ॥ अथ अंगविद्या ॥ दैवज्ञेन शुभाशुभं दिगुदितस्थानाहृतानीक्षता वाच्यं प्रश्नविजा परांगघटनां चालोक्य कालं धिया ॥ सर्वज्ञो हि चराचरात्मकतयासौ सर्वदर्शी विभुश्चेष्टाव्याहृतिभिः शुभाशुभफलं संदर्शयत्यर्थिनां ॥ १ ॥ स्थानं पुष्पसुहासि भूरिफलभृत्स्निग्धक्षितिच्छदासत्पक्षिच्युतशस्तसंज्ञितरुच्छायोपगूढं समं ॥ देवर्षिद्विजसाधुसिद्धनिलयं सत्पुष्पसस्योक्षितं सत्स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताल्हादं च सच्छाड्वलं ॥ २ ॥ छिन्नभिन्नकृमिखातकंटकिप्लुष्टरूक्षकुटिलैर्नसत्कुजैः ॥ क्रूरपक्षिपुनर्निद्यनामभिः शुष्कशीर्णबहुपर्णवर्मभिः ॥ ३ ॥ श्मशानशून्यापतनं चतुष्पथं तथामनोज्ञं विषमं सदोषरं ॥ अवस्करांगारकपालभस्मभिश्चितं तुषैः शुष्कतृणैर्नशोभनं ॥ ४ ॥ प्रव्रजितनग्ननापितरिपुबंधनसूनिकैः श्वपाकैश्च ॥ कितवयतिपीडितैर्युतमायुधमाध्वीकविक्रयैर्नशुभम् ॥ ५ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ इतिवृहत्संहितायांखड्गलक्षणंनाम पंचाशोध्यायः ॥ ५० ॥ ॥ अथ अंगविद्या ॥ पूर्वादि दिशा· पृच्छककाभाषण· स्थान· पृच्छकनेकुछलेआया पदार्थ· इसकोदेखनेवाले ज्योतिषीने· पृच्छक· अन्यमनुष्य इसके अंगकीघटना-(स्पर्शादिक) यहऔर काल (वखत) इसकोदेखके· पृच्छककोशुभाशुभकथनकरना· जिसकारण· यहकालस्थावरजंगमजगतका आत्माहै· इसवास्ते सर्वजाननेवाला· सर्वदेखनेवाला· सर्वव्यापकहै· इसवास्ते प्रश्नकरनेवालेको स्पर्शादिचेष्टा और भाषण इनकरकेशुभाशुभदेखावतेहैं ॥ १ ॥ प्रफुल्लितपुष्पसे हास्यकरनेवाले· बहुतफलसेयुक्त· ओरी डाल और पत्ता इनसेयुक्त· काकोलूकादि अशुभपक्षिरहित· ऐसेपलास· पीपल· वड· इत्यादि शुभनामकेजोवृक्षउनके छायासे आच्छादित· सम· (ऊंचाछोटा नहीं) देव· ऋषि· ब्राह्मण· साधु· सिद्ध· इनकेरहनेकेस्थान· उत्तमपुष्प· और धान्य इनसेयुक्त· मीठेजलके निर्मलत्वसे आनंददायक· दूर्वादिहरेतृणसेयुक्त· ऐसास्थान प्रश्नकरनेवालेको शुभहोताहै ॥ २ ॥ छिन्न· भिन्न· कीडेनेखाया· कांटेका· जला· रूक्ष· टेढा· काकादिक्रूरपक्षीसेयुक्त· विहेडादि निंद्यनामक· शुष्क और गलितहै बहुतपर्ण और त्वचा जिनकी ऐसेवृक्षसेयुक्तस्थान प्रश्नको शुभनहीं ॥ ३ ॥ श्मशान· शून्यस्थान· देवगृह· चवहटा· आनंदकारक नहीं· ऊंचानीचा सवेकाखारेतीसेयुक्त· अवस्कर (विष्ठा· कतवार) कोइला· हाड· भस्म इनकरकेव्याप्त· धान्य तचा (भूसी)

आग्नुत्तरैशाश्च दिशः प्रशस्ताः पृष्टुर्नवाक्यं शुभमाग्निरस्तः ॥ पूर्वा
ह्नकालेऽस्ति शुभं न रात्रौ सं ध्याद्वये प्रश्नकृतौ पराण्हे ॥६॥ यात्रावि
धाने हि शुभाशुभं यत्प्रोक्तं निमित्तं न तदिहापि वाच्यं ॥ दृष्ट्वा पुरो वा
जननाद्धृतं वा प्रष्टुः स्थितं पाणितले यवस्त्रे ॥७॥ अंघांगान्यूर्वोष्ठ
स्तनवृषणपादं च दशना भुजौ हस्तौ गंडौ कचगलनखांगुष्ठमपि
यत् ॥ सशंखं कक्षांसश्रवणगुदसंधीति पुरुषे स्त्रियां भ्रूनासास्फि
ग्वलिकटिसुलेखांगुलिचयं ॥८॥ जिव्हाग्रीवापिंडिके पार्ष्णियु
ग्मं जंघे नाभिः कर्णपाली ककाटी ॥ वक्त्रं पृष्ठं जत्रुजान्वस्थिपार्श्वे हृ
त्ताल्वक्षी मेहनोरस्त्रिकं च ॥९॥ नपुंसकाख्यं च शिरो ललाटं आ
श्वाद्यसंज्ञैरपरैश्चिरेण ॥ सिद्धिर्भवेज्ज्ञातु नपुंसकैर्नो रूक्षक्षतै
र्भग्नकृशैश्च पूर्वैः ॥१०॥

और शुष्कतृण इनकरके व्याप्त ऐसे स्थान प्रश्नको शुभनही ॥४॥ तपस्वी नग्न ना
पित शत्रु बंधनशाला पशुघाती चांडाल कपटी संन्यासी रोगी आयुधगृह
मद्यविक्रय इनकरके युक्त स्थान प्रश्नको शुभनही ॥५॥ पूर्व उत्तर ईशान यह
दिशाके तरफ प्रश्नकर्नेवालेका मुखहोय तो शुभहै वायव्य पश्चिम नैर्ऋति
इस तरफ होय तो अशुभ दिनके प्रथम भागमे प्रश्न शुभ रात्री प्रातः सायंसं
ध्या समयमे और अपराण्हमे अशुभ होताहै ॥६॥ यात्रा प्रकरणमे जो शुभा
शुभ शकुन निमित्त कथन किया सो भी प्रश्न समयमे देखना और अपने आगेका
पदार्थ और कोई ले आया पदार्थ और प्रश्न कर्नेवालेके हातमे अथवा वस्त्रमे
होय सो पदार्थ देखके शुभाशुभ कहना ॥७॥ जंघा ओष्ठ स्तन वृषण पाद दं
त भुज हस्त गाल केश कंठ नख हस्तपादांगुष्ठ बगल स्कंध कान गुद
संयोगकी संधी शंख यह सर्व अवयव पुरुषसंज्ञक हैं औ नासिका चूनर
वलि (उदरकी त्रिवली) कमर हस्तादिककी उत्तमरेषा अंगुलिसमूह ॥
८॥ जिव्हा गरदन पेंडुरी दूनो एडी पोटरी नाभी कानकी पाली ककाटी
(गरदनका सीधाभाग) यह अवयव स्त्रीसंज्ञक मुख पृष्ठ जत्रु (बाहु और
कंठ इनकी संधी हसुली) केहुनीहाड पार्श्व (पसुली) हृदय तालु नेत्र लिंग वक्ष
स्थल त्रिक (पीठके दंडके नीचे मिला जो तीन हाड सो) ॥९॥ शिर ललाट यह अवयव न
पुंसकसंज्ञक आद्य कहिये पुरुषसंज्ञक अवयवसे शीघ्र कार्यसिद्धि होतीहै अपर व
स्त्रीसंज्ञकसे बहुत कालसे कार्यसिद्धि नपुंसकसे सिद्धि होती नहीं और रूक्ष क्षत भग्न
कृश ऐसे पुरुषसंज्ञक और स्त्रीसंज्ञक अवयव होय तो सिद्धि होती नहीं (यह फल प्रश्नक
र्ताके अंगका जानना) ॥१०॥

स्पृष्टे वा चालिते वापि पादांगुष्ठेक्षिरुग्भवेत्॥ अंगुल्यां दुहितुः शोकं शिरोघाते नृपाद्भयं॥११॥ विप्रयोग मुरसि स्वगात्रतः कर्पटाहृतिरनर्थदा भवेत्॥ स्यात्प्रियाप्तिरभिगृह्य कर्पटं पृच्छतश्चरणपादयोजितुः॥१२॥ पादांगुष्ठेन विलिखेद्भूमिं क्षेत्रोत्थचिंतया॥ हस्तेन पादौ कंडूयेत्तस्य दासीमया चसा॥१३॥ तालभूर्जपटदर्शनेंशुकं चिंतयेत्कचतुषास्थिभस्मगं॥ व्याधिराश्रयति रज्जुजालकं वल्कलं च समवेस्य बंधनं॥१४॥ पिप्पलीमरिचशुंठिवारिदैरोध्रकुष्ठवसनांबुजिरकैः॥ गंधमांसिशतपुष्पया वदेत्पृच्छतस्तगरकेण चिंतनं॥१५॥ स्त्रीपुरुषदोषपीडितसर्वाध्वसुतार्थधान्यतनयानां॥ द्विचतुष्पदक्षितीनां विनाशनः कीर्त्तितैर्दृष्टैः॥१६॥ न्यग्रोधमधुकतिंदुकजंबुप्लक्षाम्रबदरिजातिफलैः॥ धनकनकपुरुषलोहांशुकरूप्योदुंबराप्तिरपि करगैः॥१७॥ धान्यपरिपूर्णपात्रं कुंभः पूर्णः कुटुंबवृद्धिकरो॥

पांवके अंगूठेको स्पर्श करे वा हिलावे तो पृच्छकको नेत्ररोग होना है अंगुलीको स्पर्श करके पूछे तो कन्याका नाश होता है मस्तकको ताडन करके पूछे तो राजासे पृच्छकको भय होता है॥११॥ पृच्छक हृदयमें स्पर्श करके प्रश्न करे तो कोईका भी वियोग होता है स्वशरीरसे वस्त्र छोडे तो अनर्थ होता है वस्त्र लेके गोडपर गोड रखके पृच्छक प्रश्न करे तो प्रियवस्तूकी प्राप्ति होगी ऐसा कहना॥१२॥ पादांगुष्ठसे भूमीपर रेषा निकाले तो वह पृच्छकको क्षेत्रोत्पन्न चिंता कहना हस्तसे पांव खजवावे तो उस्को दासीकृत चिंता कहना॥१३॥ ताडपत्र और भूर्जपत्र इनका दर्शन होय तो पृच्छकको वस्त्रकी चिंता कहना केश भूसा हाड भस्म इनका दर्शन होय तो व्याधी होती है डोरी जाल वल्कल यह प्रश्नकालमें दर्शन होय तो बंधन होता है॥१४॥ प्रश्नसमयमें पीपर देखे तो सदोषस्त्री विषयक चिंता मरिच वा मिरचा दे० सदोषपुरुष वि० चिंता सोंठ दे० व्याधित वा मृत वि० चिंता नागरमोथा दे० सर्वनाश वि० चिंता लोध्र दे० मार्गनाश वि० चिंता कुष्टवा कुलंजन दे० पुत्रनाश वि० चिंता वस्त्र दे० अर्थनाश वि० चिंता जल दे० धान्यनाशकृत चिंता जीरा दे० पुत्रनाशकृत चिंता जटामांसि दे० द्विशफनाशकृत चिंता शतपुष्पा (सौंफ) दे० चतुष्पादनाशकृत चिंता तगर दे० भूमिनाशकृत चिं० यह चिंता प्रश्न करनेवालेकी है ऐसा कहना॥१५॥१६॥ प्रश्न करनेवालेके हाथमें बडका फल होय तो धनप्राप्ति मौहाका फल होय तो सुवर्णप्राप्ति तेंदूका फल होय तो पुरुषप्राप्ति जामुनका फल होय तो लोहप्राप्ति पाकरका फल होय तो वस्त्रप्राप्ति आमका फल होय तो रौप्यप्राप्ति

गजगोशुनांपुरीषं धनयुवतिसुहृद्विनाशकरं॥१८॥पशुहस्तिमहिषपंकजरजतव्याघ्रैर्लभेतसंदृष्टैः॥अविधननिवसनमलयजकौशेयाभरणसंघातं॥१९॥पृच्छावृद्धश्रावकसुपरिव्राड्दर्शनेनृभिर्विहिता॥मित्रद्यूतार्थभवागणिकानृपसूतिकार्थकृता॥२०॥शाक्योपाध्यायार्हतनिर्ग्रंथनिमित्तनिगमकैवर्तैः॥चौरचमूपतिवणिजांदासीयोधापणस्थवध्यानां॥२१॥तापसेशौंडिकेदृष्टेप्रोषितःपशुपालनं॥हृद्गतंपृच्छकस्यस्यादुंछवृत्तौविपन्नता॥२२॥इच्छामिप्रष्टुंभणपश्यत्वार्यःसमादिशेत्युक्ते॥संयोगकुटुंबोत्थालाभैश्वर्योद्भवाचिंता॥२३॥निर्दिशेतिगदितेजयाध्वगामत्यवेस्यममचिंतितंवद॥आशुसर्वजनमध्यगंत्वयादृश्यतामितिचबंधुचौरजा॥२४॥

जाप्यफलहोयतोनाम्रप्राप्तिहोगीऐसाकहना॥१७॥ प्रश्नकरनेवालेके हाथमे धान्यसे पूरितपात्रवाजलपूर्णकुंभहोयतो कुटुंबकी वृद्धी होतीहै हाथीकी विष्ठा होयतो धननाश गौकी विष्ठाहोयतो स्त्रियोंकाव्यभिचार कुत्तेकी विष्ठाहोयतो मित्रनाश यहहोताहै ऐसाकहना ॥१८॥प्रश्नकालमे पशु नजरपडेतोकंबल लाभ हाथीनजरपडेतो धनलाभ महिष न॰ वस्त्रलाभ कमल न॰ मलयज (चंदन) लाभ रौप्य न॰ कौशेयवस्त्र (पीतांबर) लाभ व्याघ्र न॰ अलंकारलाभ यह प्रश्नकरनेवाले कोमिलेगाऐसाकहना ॥१९॥ प्रश्नकालमे वृद्धश्रावक (कापालिक जैनमती) इनकादर्शन होयतोमित्रार्थ वा द्यूतार्थ पुरुषनेप्रश्नकिया उत्तमसंन्यासीका दर्शन होयतो वेश्या राजा सूतिका इसविषयमे प्रश्नकिया ऐसाकहना ॥२०॥ शाक्य (बौद्धमतस्थापनकर्त्ता) नजरपडेतो चोर विषयकप्रश्न उपाध्यायनजर॰ सेनापति वि॰ अर्हत (बौद्धमतानुसारी) न॰ व्यापारवि॰ निर्ग्रंथ (दिगंबरसाधु) न॰ दासि वि॰ निमित्त (दैवज्ञ ज्योतिषी) न॰ योद्धावि॰ निगम (व्यापारीकासमूह काफला) न॰ आपणस्थ (कुलपरंपरागत शिल्पज्ञ किंवा बजारमे रहनेवाला) विषयक॰ जोलहा नजर॰ वध्य प्राणि विषयप्रश्नहै ऐसाकहना ॥२१॥ प्रश्नसमयमे तपस्वी नजरपडेतो कोई प्रवासमेगया उस्की चिंता प्रश्नकर्नेवालेके मनमेहै मद्यपी न॰ पशुपालनकृतचिंता उंछवृत्ति (खेतमेसेकाटनेकेबाद अन्नबीनल्यावेसो) न॰ विपत्ति विषयकचिंता पृच्छकके मनमेहै ऐसाकहना ॥२२॥प्रश्नकरनेकोइच्छाकरताहै ऐसा प्रश्नकर्त्ता भाषणकरेतो संयोग (भेट) विषयक चिंता भण (कहो) ऐसाबोलेतो कुटुंबोत्पन्न चिंता पश्यतु आर्याः (सत्पुरुष देखे) ऐसाबोलेतो लाभोत्पन्न चिंता समादिश (आज्ञाकरो) ऐसाबोलेतो ऐश्वर्योत्पन्न चिंता प्रश्नकरनेवालेकेम

अंतस्थेंगेस्वजनउदितो बाह्यजे बाह्य एवं पादांगुष्ठांगुलिकलनया
दासदासीजनः स्यात्॥ जंघे प्रेष्यो भवति भगिनी नाभितो हृत्स्वभा
र्या पाण्यंगुष्ठांगुलिचयकृतस्पर्शने पुत्रकन्ये॥२५॥ मातरं जठरे मू
र्ध्नि गुरुं दक्षिणवामकौ॥ बाहू भ्राता थ तत्पत्नी स्पृष्ट्वैवं चौरमादिशे
त्॥२६॥ अंतरंगमवमुच्य बाह्यगस्पर्शनं यदि करोति पृच्छकः॥
श्लेष्ममूत्रशकृतस्त्यजन्नधः पातयेत्करतलस्थवस्तु चेत्॥२७॥
भृशमवनामितांगपरिमोटनतोप्यथवा जनधृतरिक्तभांडमव-
लोक्य च चौरजनं॥ हृतपतितक्षतास्मृतविनष्टविभग्नगतोन्मु
षितमृताद्यनिष्टरवतो लभते न हृतं॥२८॥ निगदितमिदं यत्तत्स
र्वं तुषास्थिविषादिकैः सह मृतिकरं पीडार्तानां समं रुदितक्षुतैः॥
अवयवमपि स्पृष्ट्वांतःस्थं दृढं मरुदाहरेदतिबहुतदा भुक्त्वा न्य
संस्थितः स हितो वदेत्॥२९॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नमे है ऐसा कहना॥२३॥ निर्दिश (स्पष्ट कहो) ऐसा पृच्छक भाषण करे तो जयार्थ वा
मार्ग विषयक चिंता प्रत्यवेक्ष्य मम चिंतितं वद (देखके हमारा चिंतित कहो) ऐसा
भा॰ बंधु विषयक चिंता सर्वजन मध्यगत देखनेवाले को आमुख पादृश्यतां (शी
घ्र तुम देखो) ऐसा पूछे तो चौर विषयक चिंता प्रश्न करनेवाले को है ऐसा कहना॥२४
प्रश्नसमय में प्रश्नकर्त्ता अंतस्थ (गुप्त) अंग को स्पर्श करे तो स्वजन चोर कथन किया·
बाह्यअंग में स्पर्श करे तो बाहर का चोर कथन करना· पादांगुष्ठस्पर्श मे दास· पादां
गुलीस्पर्श मे दासी· जंघास्पर्श मे सेवक· नाभिस्पर्श मे भगिनी· हृदयस्पर्श मे स्व
स्त्री· हस्तांगुष्ठस्प॰ पुत्र· हस्तांगुलीस्प॰ स्वकन्या॥२५॥ उदरस्पर्श करे तो माता·
शिरस्पर्श॰ गुरु· दक्षिणबाहुस्पर्श॰ भ्राता· वामबाहुस्प॰ भ्रातृपत्नी· इस रीति से·
स्पर्श परसे चोर कथन करना॥२६॥ प्रश्नकर्त्ता अंतरंग (गुप्त·) अवयव छोडके बाह्य
अवयव को प्रश्नकाल मे स्पर्श करे अथवा श्लेष्मा (कफ·) मूत्र विष्टा यह नीचे छो
डे वा हाथमे की कोई वस्तु नीचे गिरावे॥२७॥ अंगपरिमोटन कहिये सरीर मोडे
हाड तोडे· लोकने धारण किया खाली पात्र वा चोर इसको देखे· वा लेगया· गिरा· व्र
ण· भूले· ढंगरा· तूटा· गया· उखाड के लेगये· मरा· यह शब्द किंवा ऐसे अर्थ के नी
चो लिंग मे अनिष्ट शब्द प्रश्न करनेवाले को सुनाई पडे तो नष्ट वस्तु मिलेगी नही· २८
॥१७॥ २८ श्लोक मे नष्ट वस्तु विषे कथन किया सो सर्व· तुष· (धान्य का भूसा·) हाड· विष·
रोदन· छिंक· इनके सहित होय तो रोगी को (रोगविषयक प्रश्न होय तो) मृत्युकारक
होता है अंतःस्थ स्थिर अवयव को स्पर्श करके वायु बाहर निकालते रहते प्रश्न करे तो·

ललाटस्पर्शनाच्छुकदर्शनाच्छालिजौदनं ॥ उरःस्पर्शात्षष्टिकान्नं ग्रीवास्पर्शेच यावकं ॥ ३० ॥ कुक्षिकुचजठरजानुस्पर्शे माषाः पयस्तिलयवाग्वः ॥ आस्वाद्यतश्चोष्ठौ लिहतो मधुररसं ज्ञेयं ॥ ३१ ॥ विसृक्के स्फोटयेज्जिह्वामाम्ले वक्त्रं विकूणयेत् ॥ कटुतिक्तकषायोष्णे हिक्के तृष्ठीवेच्च सैंधवे ॥ ३२ ॥ श्लेष्मत्यागे शुष्कतिक्तं तदल्पं श्रुत्वा क्रव्यादं प्रेक्ष्य वा मांसमिश्रं ॥ भ्रूगंडौष्ठस्पर्शने शाकुनं तद्भुक्तं तेनेत्युक्तमेतन्निमित्तं ॥ ३३ ॥ मूर्द्धगलकेशहनुशंखकर्णजंघं बस्तिंच स्पृष्ट्वा ॥ गजमहिषमेषशूकरगोशशमृगमांसयुग्भुक्तं ॥ ३४ ॥ दृष्टे श्रुतेऽपशकुने गोधामत्स्यामिषं वदेद्भुक्तं ॥ गर्भिण्या गर्भस्य च निपतनमेवं प्रकल्पयेत्प्रश्ने ॥ ३५ ॥ पुंस्त्रीनपुंसकाख्ये दृष्टेऽनुमिते पुरःस्थिते स्पृष्टे ॥ तज्जन्म भवति पानान्नपुष्पफलदर्शने च शुभं ॥ ३६ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ॥

प्रश्नकर्त्ता बहुत अन्न खायके तृप्त होयके प्रश्न करताहै ऐसा कहना ॥ २९ ॥ प्रश्नकर्त्ता ललाटस्पर्श करे किंवा शुक(सुग्गा) धान्यदेखेतो धान भक्षणकरके प्रश्नकरताहै हृदयस्पर्श करेतो साठी चावलका अन्न और कंठमे स्पर्श करेतो यवान्न भक्षण कीया ऐसा कहना ॥ ३० ॥ कुक्षि स्तन उदर जानु इनको स्पर्श करेतो क्रमसे माष दुग्ध तिल यवागू (भातकीकाञ्जी) यह भक्षण किया और आस्वादन (मिठासलोना) करे वा चाटेतो मीठा रस प्रश्न करनेवालेने भक्षण किया ऐसा कहना ॥ ३१ ॥ जीभ चलावेतो विसृक्क यह पदार्थ खाया मूं टेढा करेतो खट्टा खाया उचकी आवेतो तिक्त कडुआ और कषाय पदार्थ खाया है थूकेतो सैंधव वा खारा पदार्थ खायाहै ऐसा कहना ॥ ३२ ॥ पृच्छक कफत्याग करेतो शुष्क और कटु ऐसा अल्प भक्षण किया मांसभक्षण करनेवाले प्राणी को देखे वा श्रवण करेतो मांसयुक्त भक्षण किया भौं गाल ओष्ठ इनको स्पर्श करेतो पक्षिमांस पृच्छकने भक्षण किया ऐसा यह निमित्त (चिन्ह) कहना ॥ ३३ ॥ मस्तक गल केश हनु शंख कान पोटरी बस्ती (नाभीके नीचेका भाग गर्भाशय) इनको स्पर्श करेतो क्रमसे गज महिष मेढा सूकर गौ खरगोस मृग इनके मांससे युक्त भोजन पृच्छकने किया ऐसा कहना ॥ ३४ ॥ दुःशकुन देखे वा सुनेतो प्रश्न करनेवालेने गोह वा मत्स्य इनका मांस भक्षण किया ऐसा कहना गर्भिणीके प्रश्नविषयमे भी ऐसेही कल्पना करना दुःशकुन दृष्ट श्रुत होयतो गर्भपात होगा ऐसा पृच्छकको कहना ॥ ३५ ॥ गर्भप्रश्नसमयमे पुरुष दृष्ट अनुमित पुरःस्थित वा स्पृष्ट होयतो पुरुषजन्म स्त्री दृष्टादि होयतो स्त्रीजन्म नपुंसक दृष्टादि होयतो नपुंसकजन्म होगा ऐसा प्रश्नकर्त्ताको कहना मद्य अन्न पुष्प फल यह

अंगुष्ठेन भ्रूसंवांगुलिंवास्पृष्ट्वापृच्छेद्गर्भचिंतातदस्याद॥म
धाज्याद्येर्हेमरत्नप्रवालैरग्रस्थैर्वापात्रधान्यात्मजेषु॥३७॥ग
र्भयुक्ताजठरेकरंगेस्याद्दुष्टनिमित्तवशात्तदुदासः॥कर्षतितज्जठ
रंपरिपीठोस्यीडननः करेगेचकरेपि॥३८॥घ्राणापार्दक्षिणेद्वारे
स्पृष्टेमासोत्तरंवदेत्॥वामे द्वौकर्णएवंमाद्विचतुर्भिःश्रुतिस्तने॥
३९॥वेणीमूलेत्रीन्सुतान्कन्यकेद्वेकर्णेपुत्रान्पंचहस्तेत्रपंच॥
अंगुष्ठानेपंचकंचानुपूर्व्यापादांगुष्ठेपार्ष्णियुग्मेपिकन्यां॥४०॥
सव्यासव्योरुसंस्पर्शैःसूतेकन्यासुतद्वयं॥स्पृष्टेललाटमध्यांते
चतुस्त्रितनयाभवेत्॥४१॥शिरोललाटभ्रूकर्णगंडहनुरदागलं॥
सव्यापसव्यस्कंधश्चहस्तौचिबुकनालकं॥४२॥ छ ॥ छ ॥ ॥

प्रश्नसमयमेहोयतो सुखसेप्रसूतिहोगीऐसाकहना॥३६॥स्त्री·अंगुष्ठकरके·
भौं अथवा उदर वाअंगुली इस्को स्पर्शकरके प्रश्नकरेतो·गर्भकेविषे प्रश्नऐसा
कहना· अथवा मधु· घृत· पुरुषनामक उत्तमफल· सुवर्ण· रत्न· मूंगा· पानाधा
त्री·(दासी) पुत्र यह आगे होय और प्रश्नकरेतो गर्भके विषे प्रश्नऐसाकहना·॥
३७॥गर्भयुक्तस्त्री उदरपर हात रखके प्रश्नकरे और उसकालमे छींक इत्यादि
दुर्निमित्त होयतो गर्भपातहोगाऐसाकहना· अथवा आसनका मर्दनकरके· उद
रखजवावे· किंवाहाथसे हाथ परके प्रश्न करेतो· गर्भपातहोगा·ऐसाकहना·॥३८॥
नाकके दहिने तरफ स्पर्श करकेस्त्री·गर्भकेविषे प्रश्नकरेतो एकमहिनेसे आगे
गर्भग्रहणहोगा·॥बांएतरफ स्पर्शकरेतो दोवर्षसे· बाएँकानको स्पर्शकरेतो दो
वर्षसेदहिनेकानकोस्प० दोमहिनेसे· स्तनकास्पर्शकरेतोचारमहिनेसेगर्भधार
णहोगा ऐसाकहना·॥३९॥स्त्री·वेणीमूलको स्पर्शकरके प्रश्नकरेतो·तीनपुत्र
औरदोकन्याहोगी·कानकोस्प०पांचपुत्र· हाथसे हाथकोस्प० तीनपुत्र· हाथके
कनिष्ठिकाकोस्पर्श०१पुत्र·अनामिकाकोस्पर्श०२पुत्र· मध्यकोस्प०३पुत्र·तर्जनी
कोस्पर्शकरेतो ४पुत्र·अंगुष्ठकोस्प०५पुत्र· होंगे· पांवका अंगुष्ठ दूनोएडी इनको
स्पर्शकरेतो १कन्याहोगी· ऐसाकहना·॥४०॥ बाएं वा दहिने जंघाको स्पर्शकरेतो
दोकन्या और दोपुत्रहोंगे· ललाटके मध्यमेस्पर्शकरेतो ४पुत्र· ललाटके अंतमे
स्पर्शकरेतोतीनपुत्रहोंगे ऐसाकहना·॥४१॥ प्रश्नसमयमे गर्भिणी स्त्री· शिरादि
अवयवोंको स्पर्शकरेतो· वह स्त्रीकृत्तिकादि नक्षत्रमे प्रसूत होगी ऐसाजान
ना· शिरस्पर्शकरेतोकृत्तिका· ललाटस्प० रोहिणी· भ्रुकुटी स्पर्शक० मृगशिर·
कर्णस्प०आर्द्रा· गालस्प०पुनर्वसु हनुस्पर्श०पुष्य·दंतस्प०आश्लेषा· कंठ· मघा·

उरःकुचं दक्षिणमप्यसव्यं हस्तापार्श्वमेवं जठरं कटिश्च ॥ स्फिक्पायुसं
ध्यूरुयुगं च जानुजंघेऽथ पादाविति कृत्तिकाद्यौ ॥४३॥ इति निगदित
मेतद्गात्रसंस्थं शुभस्य प्रकटमभिमतास्ते वीक्ष्य शास्त्राणि सम्यक्
॥ विपुलमतिरुदारो वेत्ति यः सर्वमेतन्नरपतिजनताभिः पूज्यते सो
सदैव ॥४४॥ इत्यंगविद्या नामकम् ॥ ॥अथ पिटकलक्षणम्॥ ॥
सितरक्तपीतकृष्णा विप्रादीनां क्रमेण पिटका ये ॥ ते क्रमशः प्रोक्त
फला वर्णानामग्रजादीनां ॥१॥ सुस्निग्धव्यक्तशोभाः शिरसि धन
चयं मूर्ध्नि सौभाग्यमाराद्दौर्भाग्यं भ्रूयुगोत्थाः प्रियजनघटनामाशु
दुःशीलतां च ॥ तन्मध्योत्थाश्च शोकं नयनपुटगता नेत्रयोरिष्टदृष्टिं
प्रव्रज्यां शंखदेशेऽश्रुजलनिपतनस्थानगाश्चातिचिंतां ॥२॥ घ्राणागं
डे वसनसुतदाश्चोष्ठयोरन्नलाभं कुर्युस्तद्वच्चिबुकतलगा भूरिवित्तं ललाटे
॥ हन्वोरेवं गलकृतपदा भूषणान्यन्नपाने श्रोत्रे तद्भूषणगणमपि ज्ञानमा
त्मस्वरूपं ॥

दहिना खवा॰ पूर्वा॰ बांवा खवा॰ उत्तरा॰ हात॰ हस्त॰ चिबुक (ओठके नीचेका भाग) चि
त्रा॰ कंठकी नली॰ स्वाती॰ ॥४२॥ उर॰ विशाखा॰ दहिना स्तन अनुराधा बांए स्तन ज्येष्ठा॰ द
ह्य॰ मूल॰ दक्षिण पार्श्व॰ पूर्वाषाढा॰ वाम पार्श्व॰ उत्तराषा॰ उदर॰ श्रवण॰ कटि॰ धनि
ष्ठा॰ चूतड और गुद इसकी संधी वा योनि॰ शततारका॰ दहिनी जंघा॰ पूर्वाभा॰ वाम जं
घा॰ उत्तराभा॰ ढेउना॰ रेवती॰ पेडुरी॰ अश्विनी॰ पादस्य॰ भरणी॰ इस प्रमाण से जा
नना ॥४३॥ इस प्रकार करके बहुत शास्त्र देखके इच्छित मनोरथकी प्राप्ती होय इस
वास्ते शरीरस्पर्श लक्षण स्पष्ट कथन किया यह सर्व बहुत बुद्धिमान् और उदार (नि
र्लोभी) ऐसा जो ज्योतिषी जानता है सो राजाको और बहुत लोकको सर्वकाल पूज्य
होता है ॥४४॥ ॥ इत्यंगविद्यानामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥५१॥ अथ पिटकलक्षणं
॥ ब्राह्मणादि चार वर्णको क्रमसे श्वेत॰ रक्त॰ पीत॰ कृष्ण॰ यह रंगके पिटक (फोड़ाफुं
सी) कथन किया सो क्रमसे क्षत्रियादि तीन वर्णको फल देते हैं॰ ब्राह्मणको फल देते
नहीं कहिये श्वेत रक्त क्षत्रियको॰ श्वेत॰ रक्त॰ पीत॰ वैश्यको॰ श्वेत॰ रक्त॰ पीत॰ कृष्ण॰
शूद्रको फल देते हैं ॥१॥ मस्तकपर स्निग्ध (अरूक्ष) और स्पष्ट कांति ऐसे पिटक हो
यतो धनवृद्धि करेंगे॰ मूर्ध्नि (मुख पृष्ठ वा केशांत) इसके ऊपर शीघ्र सौभाग्यप्राप्ति॰ दू
नो भौंपर दौर्भाग्य॰ भौंके मध्यमें होयतो प्रियजनका योग और शीघ्र दुःस्वभाव॰ नेत्र
के पलकपर शोक॰ नेत्रपर इष्टदर्शन॰ शंखदेशपर प्रव्रज्या (सर्वसंगपरित्याग) ने
त्रोंद्रकगिरता है उसस्थलमें॰ अतिचिंता॰ यह फल इसस्थानमें फोड़ा होयतो हो
ता है॰ ॥२॥ नासिकापर पिटक होयतो वस्त्रलाभ॰ गालपर पुत्रप्राप्ति॰ ओठपर अ

शिरःसंधिग्रीवाहृदयकुचपार्श्वोरसिगताअथोघाते घातंसुतनयलाभंशुचमपि॥ प्रियप्राप्तिंस्कंधेप्यटनमथभिक्षार्थमसकृद्धिनाशंकक्षोत्थाविदधति धनानांबहुविधं॥४॥ दुःखशत्रुनिचयस्यविघातं पृष्ठबाहुयुगजारचयंति॥ संयमंचमणिबंधनजाताभूषणाद्यमुपबाहुयुगोत्थाः॥५॥ धनाप्तिंसौभाग्यंशुचमपिकरांगुल्युदरगाः सुपानान्नंनाभौतदधइहचौरैर्धनहृतिं॥ धनंधान्यंवस्तौयुवतिमथमेढ्रेसुतनयान्धनंसौभाग्यंवागुदवृषणजाताविदधति॥ ६॥ ऊर्वोर्यानांगनालाभंजान्वोःशत्रुजनात्क्षतिं॥ शस्त्रेणजंघयोर्गुल्फेध्वबंधक्लेशदायिनः॥७॥ स्फिक्पार्ष्णिपादजाताधननाशागम्यगमनमध्वानं॥ बंधनमंगुलिनिचयेंगुष्ठेचज्ञातिलोकतःपूजां॥८॥ उत्पातगंडपिटकादक्षिणतोवामतस्त्वभीघाताः॥धन्याभवंतिपुंसांतद्विपरीतास्तुनारीणां॥९॥ ॥ ॥ ॥ ॥

न्नलाभ· अधरोष्ठकेनीचेके भागपरभी अन्नलाभ· ललाटपरबहुतद्रव्यलाभ· हनूपरभीद्रव्यलाभ· गलेपर अलंकार और अन्नपानइनकीप्राप्ती· कानपरकर्णभूषण और आत्मस्वरूपज्ञानयहप्राप्तहोताहै॥३॥ शिरःसंधि· कंठ· हृदय· स्तन· कुक्षी· वक्षस्थल· इनकेऊपरफोडाहोयतोक्रमसे· लोहसेताडन· घात· सुतलाभ· पुत्रलाभ· शोक· मित्रलाभ· यहफलहोतेहैं· स्कंधपरवारंवारभिक्षार्थभ्रमण· कांखपरधनकाअनेकप्रकारसेनाश· यहफलहोतेहैं॥४॥ पीठपरफोडाहोयतोदुःखकानाश· दूनोबाहूपरहोयतोशत्रूकानाशकरतेहैं मणिबंध(हस्तमूल) इसपरहोयतो हस्तबंधनकरतेहैं· बाहूसमीपहोयतो भूषण(अलंकार) मिलेंगे॥५॥ हस्तगतफोडा· धनप्राप्ति· अंगुलिगत· सौभाग्य· उदरगत· शोक· नाभिगत उत्तम अन्न और पान नाभीकेनीचे· चोरसेद्रव्यहरण· वस्ति·(गर्भाशय) इसकेऊपरधन और धान्य· लिंगपर· स्त्रीलाभ और पुत्रलाभ· गुदापर· धन· अंडकोशपरसौभाग्य· यहफलहोतेहैं॥६॥ जंघापरफोडाहोयतो· वाहन और स्त्री इनकालाभ· ठेउनेपरशत्रुजनसेनाश· पेंडुरीपर शस्त्रसेनाश· गुल्फपरफोडा· होयतोमार्गमेंबंधनप्राप्तीहोतीहै॥७॥ चूतरपरफोडाहोयतो धननाश· एडीपरअगम्यागमन· पांवपर मार्गयहहोताहै· अंगुलीसमूहपर बंधन· अंगुष्ठपर फोडाहोयतोस्वजातीलोकसेसन्मान· यहहोताहै॥८॥ अंगस्फुरणादिउत्पात· तिलकादिचिन्ह· फोडायहदक्षिणअंगपर और प्रहार· घावइत्यादि वांए अंगपर पुरुषकोशुभहै· इससेविपरीतस्त्रीकोशुभहोताहै· दहिनेअंगस्फुरणादि वांएअंगपर और अ

इतिपिटकविभागःप्रोक्तआमूर्धतोपंचव्रणतिलकविभागोप्येवमेवप्रकल्प्यः॥भवतिमशकलक्ष्मावर्तजन्मापियद्वन्निगदितफलकारिप्राणिनांदेहसंस्थं॥१०॥ इतिपिटकलक्षणम्॥ अथवास्तुविद्या॥वास्तुज्ञानमथातःकमलभवान्मुनिपरंपरायातं॥क्रियतेधुनामयेदंविदग्धसांवत्सरप्रीत्यै॥१॥किमपिकिलभूतमभवद्रुंधानंरोदसीशरीरेण॥तदमरगणेनसहसाविनिगृह्याधोमुखंन्यस्तं॥२॥यत्रचयेनगृहीतंविबुधेनाधिष्ठितःसतत्रैव॥तदमरमयंविधातावास्तुनरंकल्पयामास॥३॥उत्तममष्टाभ्यधिकंहस्तशतंनृपगृहंपृथुत्वेन॥अष्टाष्टोनान्येवंपंचसपादानिदैर्घ्येण॥४॥षड्भिःषड्भिर्हीनासेनापतिसद्मनांचतुःषष्टिः॥पंचैवंविस्तारात्षड्भागसमन्विताःदैर्घ्यं॥५॥षष्टिश्चतुर्विहीनावेश्मानिभवंतिपंचसचिवस्य॥स्वाष्टांशयुतादैर्घ्यंतदर्धतोराजमहिषीणां॥६॥

हारादि दक्षिण अंगपर स्त्रीको शुभ होता है॥९॥ यह पूर्वोक्त प्रकारसे फोडेका प्रकार मस्तकसे पांवतक कथन किया· जखम और तिल इनका भी प्रकार फोडेके प्रमाणही कल्पना करना· प्राणीके शरीरपर रहनेवाले मशक(चिन्ह) लक्ष्म (केश आवनेकी जगा नरहते केशसमुदाय आवे) आवर्त (केशका भौंरा) यह जन्मका लहुडीमे जो होयतथापि उस्का फल फोडेके समान होता है॥१०॥ ॥इतिबृ०पिटकलक्षणंनामद्विपंचाशत्तमोध्यायः॥५२॥ ॥अथवास्तुविद्या॥ अब पंडितज्योतिषीके प्रीत्यर्थ ब्रह्मदेवसे गर्गादि मुनि परंपरासे प्राप्त भया है वास्तुज्ञान (गृह बांधना इ०ज्ञान) सो हम कथन करते हैं॥१॥ शरीरसे पृथ्वी और स्वर्ग इस्को व्याप्त करनेवाला ऐसा कोई एक भूत (प्राणी) होताभया वह देवतोंने अकस्मात् धरके अधोमुख (नीचेमुख करके) रखा॥२॥ जिसदेवतोंने जहां वह धरे सो देव तहां बैठे· वह देवमय भूतको ब्रह्मदेव वास्तुपुरुष ऐसी कल्पना करता भया॥३॥ राजाका गृह चौडा एकसे आठ हात उत्तम है· अन्य चार राजगृह आठ आठ हातकमती होय (दुसरा १०० हात· ति० ९२ चौथा· ८४ पांचवा ७६ हात) ऐसे पांच राजगृह चौडाईके चतुर्थांशसे अधिक लंबाई होय (१०८ चौडाईको १३५ लंबाई १०० चौ० १२५ लं० ९२ चौ० ११५ लं० ८४ चौ० १०५ लं० ७६ चौ० ९५ लंबाई॥४॥ सेनापतीके गृहकी चौडाई ६४ हाथ उत्तम है इस्मे छः छः हाथ कमती ऐसे पांच गृह करना (प्रथम ६४ हाथ· दु० ५८ ति० ५२ च० ४६ पां० ४०) यह चौडाईका छटवां हिस्सा अधिक लंबाई होय (उत्तम प्रथम गृहकी लंबाई ७४ हाथ १६ अंगुल ऐसी आगे छटवां हिस्सा अधिक लंबाई जानना)॥५॥

षड्भिः षड्भिश्चैवं युवराजस्यापवर्जिताशीतिः ॥ त्र्यंशान्विता च दैर्घ्ये पंच तदर्धं तदनुजानां ॥ ७ ॥ नृपसचिवांतरतुल्यं सामंतप्रवरराजपुरुषाणां ॥ नृपयुवराजविशेषः कंचुकिवेश्याकलाज्ञानां ॥ ८ ॥ अध्यक्षाधिकृतानां सर्वेषामेव कोशरतितुल्यं ॥ युवराजमंत्रिविवरं कर्मांताध्यक्षदूतानां ॥ ९ ॥ चत्वारिंशद्धीना चतुश्चतुर्भिस्तु पंच यावदिति ॥ षड्भागयुता दैर्घ्यं दैवज्ञपुरोधसोर्भिषजः ॥ १० ॥ वास्तुनि यो विस्तारः स एव चोच्छ्रायनिश्चयः शुभदः ॥ शालैकेषु गृहेष्वपि विस्ताराद्द्विगुणितं दैर्घ्यं ॥ ११ ॥ चातुर्वर्ण्यव्यासो द्वात्रिंशत्साचतुश्चतुर्हीनाः ॥ आषोडशादिति परं न्यूनतरमतीव हीनानां ॥ १२ ॥ सदशांशं विप्राणां क्षत्रस्याष्टांशसंयुतं दैर्घ्यं ॥ षड्भागयुतं वैश्यस्य भवति शूद्रस्य पादयुतं ॥ १३ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

प्रधानका गृह उत्तम ६० हात· इस्से चार चार हात कमती ऐसे पांच होय (पहिला ६० दु॰ ५६ ति॰ ५२ च॰ ४८ पां॰ ४४ हात) और इस्की लंबाई चौडाईके अष्टमांश अधिक होय (६७ हात १२ अंगुल इ॰) राजाके स्त्रियोंके गृह प्रधानके अर्धहोय (प्र॰ ३० दु॰ २८ ति॰ २६ च॰ २४ पां॰ २२ हात चौडाई और अष्टमांश अधिक लंबाई होय) ॥ ६ ॥ युवराजके गृह ८० हात चौडा उत्तम इस्से छ छ हात कमती ऐसे पांच गृह होय (प्र॰ ८० दु॰ ७४ ति॰ ६८ च॰ ६२ पां॰ ५६) इस्का तृतीयांश अधिक लंबाई (१०६ हात १६ अंगुल इ॰) वह युवराजके तंधू (भाईके) गृह इस्से आधा हाथ होय ॥ ७ ॥ राजगृह और प्रधानगृह इनके चौडाईके अंतर तुल्य (४८ हात) चौडाई और लंबाईके अंतर तुल्य ॥ ५८ हात लंबाई· मांडलिक राजा और श्रेष्ठ राजपुरुष इनके गृहकी होय· राजगृह और युवराजगृह इनके अंतर तुल्य भालदार· वेश्या· गायनादि कला जाननेवाले इनके गृहकी लंबाई और चौडाई होय ॥ ८ ॥ अश्वशालादि सर्व अधिकार चलावनेवाला और मुख्य इनके गृह वक्ष्यमाण (आगे कथित) कोश और रति गृह तुल्य होंय· युवराज और प्रधान इनके गृहांतर तुल्य कर्मशालादिकारी और दूत इनके गृह करना ॥ ९ ॥ दैवज्ञ· पुरोहित· वैद्य इनके गृहकी चौडाई ४० हात उत्तम· इस्से चार चार हाथ कमती ऐसे पांच करना· और वह चौडाईके छटवां हिस्सा अधिक लंबाई करना· प्र॰ ४० दु॰ ३६ ति॰ ३२ च॰ २८ पां॰ २४ ऐसी चौडाई और ४६ हात १६ अंगुल इ॰ लंबाई) ॥ १० ॥ गृहकी जितनी चौडाई उतनी ही उंचाई शुभकारक होती है· यह प्रकार चौवगला दलानके मजलेके हवेलीका है· एक दलानके गृहके विषे चौडाईके दूना लंबाई शुभ होती है· ॥ ११ ॥ ब्राह्मणादि चार वर्णोंके गृहोंकी चौडाई क्रमसे ३२ । २८ । २४ । २० हात उत्तम· इस्से चार

नृपसेनापतिगृहयोरंतरमानेनकोशरतिभवने॥सेनापतिचातुर्वर्ण्य
विवरनोराजपुरुषाणां॥१४॥अथपारसवादीनांस्वमानसंयोगदल
समंभवनं॥हीनाधिकंस्वमानादशुभकरंवास्तुसर्वेषां॥१५॥पश्वा
श्रमिणाममितंधान्यायुधवन्हिरतिगृहाणांच॥नेच्छंतिशास्त्रका
राहस्तशतादुच्छ्रितंपरतः॥१६॥सेनापतिनृपतीनांसप्ततिसहिते
द्विधाकृतेव्यासे॥शालाचतुर्दशहृतेपंचत्रिंशत्हृतेलिंदः॥१७॥ह
स्तद्वात्रिंशादिषुचतुश्चतुस्त्रित्रिकत्रिकाःशालाः॥सप्तदशत्रितय
तिथित्रयोदशकृतांगुलाभ्यधिकाः॥१८॥त्रित्रिद्विद्विद्विसमाःक्षय
क्रमादंगुलानिचैतेषां॥व्येकाविंशतिरष्टौविंशतिरष्टादशत्रितयं॥१९

चारहातकमती ऐसी १६हाततकचौडाईकेगृहहोय·(ब्राह्मण·प०३२दु०२८ति०२४
च०२० पं०१६क्षत्रियके·प·२८दु·२४ति·२०च·१६ वैश्यके·प·२४दु०२०ति·१६शूद्रके·
प·२०दु·१६) इसेअतिकमती हस्तप्रमाणगृहचांडालादिहीनजातीकेहोय॥१२॥ब्रा
ह्मणकेगृहकीलंबाई·चौडईकेदशांश अधिक·क्षत्रियकेअष्टांश·वैश्यकेषष्ठांश·
शूद्रकेचतुर्थांशअधिकहोय॥१३॥राजाऔरसेनापतिइनकेगृह प्रमाण(श्लो०४।५)इस्के
अंतर इतनी कोशगृह औरक्रीडागृह·यहहोय·सेनापतिगृह(श्लो०५) औरचातु
र्वर्ण्यगृह(श्लो०१२) इस्केअंतर इतनाराजपुरुषकेगृहकामानहोय·(राजपुरुष
ब्राह्मणहोयतो ३२हात·क्ष०२८वै०२४शू०२०इ·चातुर्वर्ण्यगृहलेना) १४॥ पारसव
(ब्राह्मणसे शूद्रीकेविषेभयापुत्र) पारसवादिसंकरजातीका गृह माताऔरपिताइ
नकेगृहमानकाऐक्यकरकेउस्केअर्धइतनागृहमानकरना·यहराजादिपारसवां
तगृहमानकहे·इसेकमतीवा अधिकगृह सर्वकोशुभकारकहोताहै·॥१५॥प
शुआश्रमी(संन्यासी)धान्य·शस्त्र·अग्नि·क्रीडा·इनके गृहकोप्रमाणनहीं·(अप
रिमितयहीप्रमाण) सोहातकेअपेक्षाअधिकऊंचागृहनहोय ऐसावास्तुशास्त्रज्ञ
कहतेहैं॥१६॥सेनापति·राजाइत्यादि·चातुर्वर्ण्यवर्जित·गृहकेचौडईमे७०युक्तक
रकेवहदोजगहरखना और पहिले १४सेभागदेनाजोलब्ध आवेउतनीशाला·
और दुसरा ३५सेभागदेनाजोलब्ध आवेउतना अलिंद·ऐसेकरना·शाला कहिये
गृहके भीतरका भाग(दलान)अलिंद कहिये घरहीके भीतके बाहर ओसाराकेस
मान भागचौककेसामनेकरतेहै सो·॥१७॥ब्राह्मणादिचारवर्णके ३२इत्यादिचौ
डईकेपांचगृहके विषेक्रमसे ४।४।३।३।३।हात और १७।३।१५।१३।४। अंगुलक्र
मसेशालाहोतीहै·(३२हातचोडईकेघर को ४हात १७अंगुलशालाकरना·॥१८॥
वैसेही ३२इत्यादिचौडईकेगृह क्रमसे ३।३।२।२।२ हात और १९।८।२०।१८।३अं

शाला त्रिभागतुल्या कर्तव्या वीथिका बहिर्भवनात्॥ यद्यग्रतो भवति
सा सोष्णीषं नाम तद्वास्तु॥ २०॥ सायाश्रयमिति पश्चाद्द्वारवष्टंभं तु पा
र्श्वसंस्थितया॥ सुस्थितमिति च समंताच्छास्त्रज्ञैः पूजिताः सर्वाः॥
२१॥ विस्तारषोडशांशः सचतुर्हस्तो भवेद्गृहोच्छ्रायः॥ द्वादशभाग
नोनो भूमौ भूमौ समस्तानां॥ २२॥ व्यासात्षोडशभागः सर्वेषां सद्म
नां भवति भित्तिः॥ पक्केष्टकाकृतानां दारुकृतानां तु सविकल्पः॥ २३
एकादशभागयुतः सप्तति निर्नृपबलेशयोर्व्यासः॥ उच्छ्रायोंगुल
तुल्यो द्वारस्यार्धेन विष्कंभः॥ २४॥ विप्रादीनां व्यासात् पंचांशोष्टाद
शांगुलसमेतः॥ साष्टांशो विष्कंभो द्वारस्य द्विगुण उच्छ्रायः॥ २५॥
उच्छ्रायहस्तसंख्यापरिमाणान्यंगुलानि बाहुल्यं॥ शाखाद्वयेपि
कार्यं सार्द्धं तत्स्यादुदुंबरयोः॥ २६॥ उच्छ्रायात्सप्तगुणादशीतिभा
गः पृथुत्वमेतेषां॥ नव गणितेशीत्यंशः स्तंभस्य दशांशहीनोग्रे॥ २७

गुलक्रमसे अलिंद होय· (३२ हात चौडई के गृहको ४ हात १७ अंगुल शाला और ३
हात १९ अंगुल अलिंद इत्यादि जानना· ॥ १९॥ शाला के तीन भाग इतनी गृह के बा
हर वीथिका (मार्ग) करना· वह पूर्व तरफ होय तो सोष्णीष नामक वह वास्तु होता
है॥ २०॥ पश्चिम तरफ होय तो सायाश्रय नामक· बाजू मे होय तो सावष्टंभ नामक·
चारो बाजू मे होय तो सुस्थित नामक वास्तु होता है· यह सर्व वीथीका वास्तुशास्त्र
ज्ञने शुभ कथन किया है॥ २१॥ चौडई के षोडशांशको ४ हाथ युक्त करके जितने हाथ होय
उतनी नीचे के मजले की उचाई करना· उस्के ऊपर के मजले की उचाई नीचे के मज
ला के द्वादशांश कमती करना· उस्के ऊपर के मजले की उचाई इस्के द्वादशांश क
मती करना· इस प्रकार से सर्व मजले की उचाई पूर्व मजले के अपेक्षा द्वादशांश
कमती कमती करना· ॥ २२॥ सर्व गृह के भित्ति (परदा) पक्के ईटाका करे तो उस्का प्र
माण चौडई के षोडशांश होय· काष्ठका होय तो उस्को नियम नही· वह यथेच्छ
करना· ॥ २३॥ चातुर्वर्ण्य रहित· राजा· सेनापति इत्यादि गृहों के चौडई का एकादशांश
चौडई मे युक्त करके· उस्मे ७० युक्त करना और जितने हात होय· उतने अंगुल द्वार की
उचाई करना· द्वार के उचाई के अर्ध इतनी द्वार की चौडई करना· ॥ २४॥ ब्राह्मणादि
चार वर्णो के गृहों के चौडई का पंचमांश लेके· उस्मे १८ अंगुल युक्त करके· पुनः चौडई के
अष्टमांश से युक्त करना तो जितने अंक आवे उतने अंगुल द्वार की चौडई और चौडई के
दूना उचाई करना· ॥ २५॥ द्वार के उचाई के हस्त परिमित अंगुल बाजू के काष्ठका बा
हुल्य (मोटाई) होय और उस्के डेवढा मोटा दूनो देहली करना· द्वार की उचाई सप्त

समचतुरस्रो रुचको वज्रोऽष्टास्रिर्द्विवज्रको द्विगुणः॥ द्वात्रिंशता तु
मध्ये प्रलीनको वृत्त इति वृत्तः॥२८॥ स्तंभं विभज्य नवधा वहनं भागो
घटोऽस्य भागोऽन्यः॥ पद्मं तथोत्तरोष्ठं कुर्याद्भागेन भागेन॥२९॥ स्तं
भसमं बाहुल्यं भारतुलानामुपर्युपर्यासां॥ भवति तुलोपतुलानामू
नं पादेन पादेन॥३०॥ अप्रतिषिद्धालिंदं समंततो वास्तु सर्वतोभद्रं॥
नृपविबुधसमूहानां कार्यं द्वारैश्चतुर्भिरपि॥३१॥ नंद्यावर्तमलिंदैः
शालाकुड्यात्प्रदक्षिणांतगतैः॥ द्वारं पश्चिममस्मिन्विहाय शेषा
णि कार्याणि॥३२॥ द्वारालिंदोंतगतः प्रदक्षिणोन्यः शुभस्ततश्चान्यः
॥तद्वच्च वर्धमाने द्वारं तु न दक्षिणं कार्यं॥३३॥ अपरोंतगतोलिंदः प्रा
गंतगतौ तदुत्थितौ चान्यौ॥ तदवधिविरतश्चान्यः प्राग्द्वारं स्वस्तिके शु
भदं॥३४

गुणित करके उस्का ८० वा हिस्सा इतना थांभा और देहली इस्की उंचाई करना·

स्तंभकी उचाई नव गुणित करके उस्का ८० वा हिस्सा इतना स्तं
भके नीचे का पृथुत्व (मोटाई) और उस्मे दशांश कमती करके जो आवे उतना ऊपरका पृ
थुत्व स्तंभ करना॥२९॥२७॥ जो स्तंभ मध्य भाग मे समचतुरस्र सो रुचक संज्ञक· जो म
ध्य भाग मे अष्टास्रि· सो वज्र संज्ञक· जो मध्य भाग मे षोडशास्रि सो द्विवज्र सं॰
जो बत्तीस अस्री सो प्रलीन सं॰ जो मध्य मे वर्तुल सो वृत्त संज्ञक जानना·॥२८॥
स्तंभके नव भाग करके उस्का पहिला नीचे का भाग वहन· दुसरा· घट· तिसरेसे
साततक भाग पंचक समचतुरस्र और अष्टम भाग कमलाकार· नवम भाग उ
त्तरोष्ठ करना· ऐसे ९ भाग की व्यवस्था करना॥२९॥ स्तंभके इतना भारतुला का
पृथुत्व होय (भारतुला कहिये स्तंभके ऊपर तिर्यक् काष्ठः भार सहन करनेके
वास्ते देते हैसो·) इस्के ऊपर तुला और उपतुला इनका पृथुत्व चतुर्थांश
कमती होय·॥३०॥ जिस गृह मे अलिंदका नियम नही सर्व दिशा मे अलिंद होते हैं व
ह गृह सर्वतोभद्र संज्ञक होय· यह गृह चार दिशा मे चार द्वारसे युक्त राजा और देवस
मूहः इनका करना·॥३१॥ शालाभित्तीसे प्रदक्षिण किये अलिंदसे नंद्यावर्त संज्ञक गृ
ह होता है· उस्को पश्चिम तरफ द्वार न करने तीन दिशा मे तीन करना·॥३२॥ मुख्यवा
स्तूका जो द्वार उहां जो अलिंद सो द्वारालिंद· वह दक्षिणोत्तर शाला मे उस्को संलग्न
करना· अन्य अलिंद उस्के प्रदक्षिण गत होय ऐसे चार जिस गृहको होय वह वर्ध
मान सं॰ इस गृह मे दक्षिण तरफ द्वार नही करना·॥३३॥ स्वस्तिक संज्ञक· गृह मे
पश्चिम तरफका अलिंद दक्षिणोत्तर शाला संलग्न करना· और दक्षिणोत्तर दो
अलिंद उस्के पाससे आरंभ करके पूर्व तरफकी शाला संलग्न करना· और पूर्व तरफ

प्राक्पश्चिमावलिंदावंतगतौतदवधिस्थितौशेषौ॥रुचकेद्वारंनशु
भदमुत्तरतोन्यानिशस्तानि॥३५॥श्रेष्ठंनंद्यावर्तंसर्वेषांवर्द्धमानसं
ज्ञंच॥स्वस्तिकरुचकेमध्येशेषंशुभदंनृपादीनां॥३६॥उत्तरशाला
हीनंहिरण्यनाभंत्रिशालकंधन्यं॥प्राक्शालयावियुक्तंसुक्षेत्रंवृ
द्धिदंवास्तु॥३७॥याम्याहीनंचुल्लीत्रिशालकंवित्तनाशकरमेतत्॥
पक्षघ्नमपरयावर्जितंसुतध्वंसवैरकरं॥३८॥सिद्धार्थमपरयाम्ये
यमसूर्यंपश्चिमोत्तरेशाले॥दंडाख्यमुदक्पूर्वेवाताख्यंप्राग्युता
याम्या॥३९॥पूर्वापरेतुशालेगृहचुल्लीदक्षिणोत्तरेकाचं॥सिद्धार्थे
ऽर्थावाप्तिर्यमसूर्येगृहपतेर्मृत्युः॥४०॥दंडवधोदंडाख्येकलहोहृ
गःसदैववाताख्ये॥वित्तविनाशश्चुल्ल्यांज्ञातिविरोधःस्मृतःकाचे
॥४१॥

का अलिंद दक्षिणोत्तरकेमध्यमे करना· ऐसेस्वस्तिकगृहमे पूर्वमेद्वारशुभकार
क होताहै॥३४॥ पूर्व और पश्चिम अलिंद दक्षिणोत्तर शाला संलग्न करना औ
र दक्षिणोत्तर अलिंद· पूर्वपश्चिम अलिंदसंलग्न करना· सोरुचक सं० गृहहोय·
यहगृहमेउत्तरमेद्वारशुभनही· अन्यदिशामेद्वारशुभहोतेहैं॥३५॥नंद्यावर्त·
औरवर्द्धमानसं० गृहसर्ववर्णको प्रशस्तहै· स्वस्तिक और रुचक मध्यहै· शेष स
र्वतोभद्रसं० गृह राजाऔर देव इनको शुभद होताहै॥३६॥ उत्तरमे शालारहि
तजोत्रिशाल गृह सोहिरण्यनाभ सं० शुभहै· पूर्वमे शालारहित जोत्रिशाल गृह
सोसुक्षेत्रसं० पुत्रादिककी वृद्धिकारक होताहै॥३७॥ दक्षिणमे शालारहित जो
त्रिशालगृहसोचुल्लीसं० द्रव्यनाशकारकहै· पश्चिममे शालारहित त्रिशालजोगृह
सोपक्षघ्नसं० पुत्रनाशऔरवैर करनेवालाहै॥३८॥जिसगृहमे दक्षिण और प
श्चिममे शालाहोयसोसिद्धार्थ सं० पश्चिम और उत्तरमे शाला होयसो गृह यम
सूर्यसंज्ञक० उत्तर और पूर्वमे शाला होयसो गृहदंड सं० पूर्व और दक्षिण मे शा
लाहोयसो गृह वातसंज्ञक॥३९॥ पूर्व और पश्चिम मे शाला होयसो गृहचुल्लिना
मक· दक्षिण और उत्तरमे शालाहोयसो गृह काचसंज्ञक होताहै· सिद्धार्थसं० गृ
हमेधनप्राप्ति· यमसूर्यसं० गृहमे गृहस्वामीको मृत्यु॥४०॥दंडाख्यगृहमे दंड
सेवध वाताख्यगृहमे निरंतर कलहसे चित्तशोक· चुल्लिसं० गृहमे द्रव्यनाश·
काचसं० गृहमे ज्ञातीकाविरोध यहफल यहगृहमे होतेहैं॥४१॥ ७ ॥ ७ ॥

वास्तुकोष्ठक न० १ पद का श्लोक ४१ से ५० तक

शिखी मस्तक १	पर्जन्य २ नयन	जयंत ३ कर्ण	इंद्र ४ वक्षस्थल	सूर्य ५ स्कंध	सत्य ६ भुज	भृश ७ भुज	अंतरिक्ष ८ भुज	अनिल ९ भुज
दिति ३२ वामनयन	आप ४२ मुख	जयंत कर्ण	इंद्र वक्षस्थल	सूर्य स्कंध	सत्य भुज	भृश भुज	सावित्र ४३ हस्त	पूषा १० भुज
अदिति ३१ कर्ण	अदिति कर्ण	आपवत्स वक्षस्थल	अर्यमा स्तन	अर्यमा ३४ स्तन	अर्यमा स्तन	सविता ३५ हस्त	वितथ पार्श्वभाग	वितथ ११ पार्श्वभाग
भुजग ३० वक्षस्थल	भुजग वक्षस्थल	पृथ्वीधर स्तन	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	विवस्वान् ३६ जठर	बृहस्पत पार्श्वभाग	बृहस्पत १२ पार्श्वभाग
सोम २९ स्कंध	सोम स्कंध	पृथ्वीधर ४० स्तन	ब्रह्मा	ब्रह्मा ३३	ब्रह्मा	विवस्वान् जठर	यम ऊरू	यम १३ ऊरू
भल्लाट २८ भुज	भल्लाट भुज	पृथ्वीधर स्तन	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	विवस्वान् जठर	गंधर्व जानु	गंधर्व १४ जानु
मुख्य २७ भुज	मुख्य भुज	राजयक्ष्मा ३९ हस्त	मित्र जठर	मित्र ३८ जठर	मित्र जठर	इंद्र ३७ लिंग	भृंगराज जंघा	भृंगराज १५ जंघा
अहि २६ भुज	रुद्र ४५ हस्त	शोष पार्श्वभाग	असुर पार्श्वभाग	अंबुपति ऊरू	कुसुमदंत जानु	सुग्रीव जंघा	जय ४४ लिंग	मृग १६ चूतड
रोग २५ भुज	पापयक्ष्मा भुज २४	शोष २३ पार्श्वभाग	असुर २२ पार्श्वभाग	अंबुपति ऊरू २१	कुसुमदंत जानु २०	सुग्रीव जंघा १९	दौवारिक चूतड १८	पितर पांव १७

वास्तुकोष्ठक ६४ पदका श्लोक ५५।५६। देवता ४५

शिखी १ / दिति ३२	पर्जन्य २	जयंत ३	इंद्र ४	सूर्य ५	सत्य ६	भृश ७	अंतरिक्ष ८ / अनिल ९
अदिति ३१	पर्जन्य / दिति	जयंत	इंद्र	सूर्य	सत्य	भृश / पूषा	पूषा १०
भुजग ३०	भुजग	आप ४२ / आपवत्स ४१	अर्यमा ३४	अर्यमा	सावित्र ४३ / सविता ३५	वितथ	वितथ ११
सोम २९	सोम	पृथ्वीधर	ब्रह्मा	ब्रह्मा	विवस्वान्	बृहस्पत	बृहस्पत १२
भल्लाट २८	भल्लाट	पृथ्वीधर ४०	ब्रह्मा ३३	ब्रह्मा	विवस्वान् ३६	यम	यम १३
मुख्य २७	मुख्य	रुद्र ४५ / राजयक्ष्मा ३९	मित्र ३८	मित्र	इंद्र ३७ / जय ४४	गंधर्व	गंधर्व १४
अहि २६	अहि / शोष	असुर	अंबुपति	कुसुमदंत	सुग्रीव	दौवारिक / भृंगराज	भृंगराज १५
रोग २५ / पापयक्ष्मा २४	२३ शोष	२२ असुर	२१ अंबुपति	२० कुसुमदंत	१९ सुग्रीव	१८ दौवारिक	पितर १७ / मृग १६

कोणगनसूत्रोंकेपान

रोगसे वायूतक- } वंशसंज्ञकसूत्र २
पितर- शिखी }
वितथ- शोष- }
मुख्य - भृश- } रज्जुसंज्ञकसूत्र ४
जयंत - भृंग }
अदिति- सुग्रीव- }

एकाशीतिविभागेदशदशपूर्वोत्तरायतारेखाः॥ अंतस्त्रयोदशसुराः
द्वात्रिंशद्बाह्यकोष्ठस्थाः॥५२॥ शिखिपर्जन्यजयंतेंद्रसूर्यसत्याभृ
शोंतरिक्षश्च॥ ऐशान्याद्याःक्रमशोदक्षिणपूर्वेनिलःकोणे॥५३॥ पूषा
वितथबृहत्क्षतयमगंधर्वाख्यभृंगराजमृगाः॥ पितृदौवारिकसु
ग्रीवकुसुमदंतांबुपत्यसुराः॥५४॥ शोषोथपापयक्ष्मारोगःकोणेत
तोहिमुख्योच॥ भल्लाटसोमभुजगास्ततोदितिर्दितिरितिक्रमशः
॥५५॥ मध्येब्रह्मानवकोष्ठकाधिपोस्यार्यमास्थितःप्राच्यां॥ एकांत
रात्वदक्षिणयस्मात्सवितावित्स्वांश्च॥५६॥ विबुधाधिपतिस्तस्मा
न्मित्रोन्योराजयक्ष्मनामाच॥ पृथ्वीधरापवत्सावित्येतेब्रह्मणःपरि
धौ॥५७॥ आपोनामैशानेकोणेहोताग्नेनेचसावित्रः॥ जयइतिचनै
र्ऋतेरुद्रआनिलेभ्यंतरपदेषु॥५८॥ आपस्तथापवत्सःपर्जन्योग्नि
र्दितिश्चवर्गोयं॥ एवंकोणेकोणेपदिकाःस्युःपंचपंचसुराः॥५९॥ ७॥

एकाशीति विभागकोष्ठको पूर्व पश्चिमरेषा १० और दक्षिणोत्तररेषा १० निकालनातो
एक्यासीकोष्ठकक्षेत्रउत्पन्नहोताहै उसमे भीतरके तेर कोष्ठकमे १३ देवताऔर
बाह्य ३२ कोष्ठकमे ३२ देवतारहतेहैं उनकेनाम आगेकेश्लोकमेकहतेहैं॥५२॥
१ शिखि २ पर्जन्य ३ जयंत ४ इंद्र ५ सूर्य ६ सत्य ७ भृश ८ अंतरिक्ष यह ८ ईशान
से आग्नेयतककोष्ठकमेस्थापनकरना और आग्नेयकोणमे ९ अनिल रहताहै॥५३॥
१० पूषा ११ वितथ १२ बृहत्क्षत १३ यम १४ गंधर्व १५ भृंगराज १६ मृग १७ पितर १८
दौवारिक १९ सुग्रीव २० कुसुमदंत २१ अंबुपति २२ असुर॥५४॥२३॥ शोष २४ पा
पयक्ष्मा २५ रोग (यहवायव्यकोणमे) २६ अहि २७ मुख्य २८ भल्लाट २९ सोम ३०
भुजग ३१ अदिति ३२ दिति यहक्रमसे बाह्यकोष्ठकमेदेवता रहतेहैं॥५५॥ मध्य
मेनवकोष्ठककास्वामीब्रह्मा इस्केपूर्वमे अर्यमा सविता आग्नेयकोणमे दक्षिण
मे विवस्वान् नैर्ऋत्यकोणमे इंद्र पश्चिममेमित्र वायव्यकोणमे राजयक्ष्मा उत्त
रमे पृथ्वीधर ईशानकोणमे आपवत्स यहब्रह्माके परिधीमे (चारोतरफ) स्थाप
नकरना उस्के ईशानकोणमे आप आग्नेयकोणमे सावित्र नैर्ऋत्यकोणमे जय
वायव्यकोणमे रुद्र यह भीतरके पदके कोणमे जानना॥५६॥५७॥५८॥ आप
अपवत्स पर्जन्य अग्नि दिति यह एक पांचोंकावर्ग ईशानकोणमे इसप्रकारसे पांच
पांच देव कोण कोणके विषे एकपदिक (एककोष्ठकके एक ऐसे) होतेहैं सविता सावि
त्र अंतरिक्ष अनिल पूषा यह आग्नेयकोणमे विबुधाधिपति (इंद्र) जय दौवारि
क पितर मृग यह नैर्ऋत्यकोणमे राजयक्ष्मा रुद्र पापयक्ष्मा रोग अहि यहवाय

बाह्या द्विपदास्तेषास्ते विबुधा विंशतिः समास्त्वाना:॥ अष्टौ च अष्टकोणः न्येनि पदादिस्त्वर्यमाद्यास्ते॥५०॥ पूर्वोत्तरदिङ्मूर्धा पुरुषोऽयमवाङ्मुखोऽस्य शिरसि शिखी॥ आपो मुखे स्तनेऽस्यार्यमा ह्युरस्यापवत्सश्च॥५१॥ पर्जन्याद्या बाह्या दृक्श्रवणोरःस्थलांसगा देवाः॥ सत्याद्याः पंच भुजे हस्ते सविता ससावित्रः॥५२॥ वितथो बृहत्क्षतयुतः पार्श्वे जठरे स्थितो विवस्वांश्च॥ ऊरू जानू जंघे स्फिगिति यमाद्यैः परिगृहीताः॥ ५३॥ एते दक्षिणपार्श्वे स्थाने ष्वेवं च वामपार्श्वस्थाः॥ मेढ्रे शक्रजयंतौ हृदये ब्रह्मा पितां घ्रिगतः॥५४॥ अष्टाष्टकपदमथवा कृत्वा रेखाश्च कोणगास्तिर्यक्॥ ब्रह्मा चतुःपदोऽस्मिन्नर्धपदा ब्रह्मकोणस्थाः॥५५॥ अष्टौ च बहिः कोणेष्वर्धपदास्तदुभयस्थिताः सार्धाः॥ उक्तेभ्यो ये शेषास्ते द्विपदा विंशतिस्ते च॥५६॥ संपाता वंशानां मध्यानि समानि यानि च पदानां॥ मर्माणि तानि विंद्यान्न तानि परिपीडयेत्प्राज्ञः॥५७॥७॥

त्र्यकोणमे ऐसे एकपदिक देव २० कथन किया है· शेष बाह्य २० द्विपद (दो दो कोष्ठक मे एक देव) जानना· शेष अन्य· अर्यमादि· चार सो पूर्वादि दिशाके विषे त्रिपद जानना· ॥४९॥५०॥ पूर्वोत्तर (ईशानमे) दिशामे मस्तक और नीचे मुख (औंधा) ऐसा वास्तु पुरुष रहता है· इसके शिरके विषे अग्नि· मुखमे आप· स्तनमे अर्यमा· उरस्थलमे आपवत्स·॥५१॥ पर्जन्यादि बाह्य कोष्ठस्थ चार देव नयनादिकमे रहते है· (नयनमे पर्जन्य कर्णमे जयंत· उरस्थलमे इंद्र स्कंधमे सूर्य) सत्यादि पांच भुजमे· सावित्र और सविता हस्तमे·॥५२॥ बृहत्क्षत· और वितथ· यह पार्श्व भागमे· विवस्वान् जठरमे· ऊरु प्रदेशमे यम· जानूमे गंधर्व· जंघामे भृंगराज· स्फिक् (चूतड) प्रदेशमे मृग·॥५३॥ यह दक्षिण बाजूमे· ऐसेही वामबाजूमे भी जानना· सो ऐसा· वामस्तनमे पृथ्वीधर· नयनमे दिति· श्रवणमे अदिति· वक्षस्थलमे भुजंग· स्कंधमे सोम· भल्लाट· मुख्य· अहि रोग· पापयक्ष्मा· भुजमे· रुद्र और राजयक्ष्मा· हस्तमे· शोष· असुर पार्श्वभागमे· ऊरु प्रदेशमे वरुण· जानुप्रदेशमे कुसुमदंत· जंघाप्रदेशमे सुग्रीव· स्फिक् प्र दौवारिक· यह वामपार्श्व भागमे· लिंगदेशमे शक्र और जय· हृदयमे ब्रह्मा· पाद स्थानमे पितर रहते हैं· यह एकाशीतिपदसे नगर· ग्राम· गृह· इनके वास्तुपुरुषका विभाग जनना·॥५४॥ अथवा ६४ कोष्ठक करना· पूर्वपश्चिम और दक्षिणोत्तर नवनव रेखा खिंचाके ४ कोनेमे तिर्यक् रेखा निकालना· उसमे ब्रह्माको ४ पद· ब्रह्मकोणस्थ आठ देवको अर्धपद·॥५५॥ उसके बाहरके कोणमे अर्धपद चार देव और उसके बाहरके कोणमे अर्ध पद आठ देव· इनके बाजूके आठ देव डेढ पदिक· इससे और है चौबीस देव सो द्विपद जानना

तान्यशुचिभाण्डकीलस्तम्भाद्यैः पीडितानि शल्यैश्च ॥ गृहभर्तुस्तत्तुल्ये पीडामङ्गे प्रयच्छन्ति ॥ ५८ ॥ कण्डूयते यदङ्गं गृहपतिना यत्र वा मराहुत्यां ॥ अशुभं भवेन्निमित्तं विकृतिर्वाग्नेः सशल्यं तत् ॥ ५९ ॥ धनहानिर्दारुमये पशुपीडा रुग्भयानि चास्थिकृते ॥ लोहमये शस्त्रभयं कपालकेशेषु मृत्युः स्यात् ॥ ६० ॥ अङ्गारेस्तेनभयं भस्मनि च विनिर्दिशेत्सदाग्निभयं ॥ शल्यं हि मर्मसंस्थं सुवर्णरजतादृते ह्यशुभं ॥ ६१ मर्मण्यमर्मगो वा रुणद्ध्यर्थागमं तुषसमूहः ॥ अपि नागदन्तको मर्मसंस्थितो दोषकृद्भवति ॥ ६२ ॥ रोगाद्वायुं पितृतो हुताशनं शोषसूत्रमपि वितथात् ॥ मुख्याद्भृशं जयन्ताच्च भृङ्गमदितेश्च सुग्रीवं ॥ ६३ ॥ तत्सम्पाता नव ये तान्यतिमर्माणि सम्प्रदिष्टानि ॥ यच्च पदस्याष्टांशस्तत्प्रोक्तं मर्मपरिमाणं ॥ ६४ ॥ पदहस्तसंख्यया सम्मितानि वंशोऽङ्गुलानि विस्तीर्णः ॥ वंशव्यासोऽर्ध्यर्धः शिराप्रमाणं विनिर्दिष्टं ॥ ६५ ॥

कोणगत सूत्रोंके जो संपात (पूर्वापर सूत्रोंसे मिलाप) सो और सर्व पदोंके (कोष्ठकके) जो सममध्य पद सो यह वास्तुपुरुषके मर्म होते हैं उस्को सूत पुरुषोंने पीडाकरना नहीं ॥ ५७ ॥ वह पूर्वोक्त वास्तुपुरुषके मर्म अपवित्र पात्र कील स्तंभ पाषाणादि शल्य (भूमीमेंका अशुद्ध पदार्थ) इसकरके पीडित होय तो तत्तुल्य गृहस्वामीके अंगमे रोग होता है ॥ ५८ ॥ गृहस्वामी होमकालमे वा प्रश्नकालमे जो अंग खजुवावे वह अंगमे वास्तुपुरुषके शल्य है अथवा एकाशीतिपद वास्तुयंत्रमे शिख्यादि देवता (श्लो॰ ४३ से) है उस्मे जिस देवताके होमकालमे छींक रोदनादि अशुभ होय अथवा अग्नीको स्फुलिंगादि विकार होय वह देवताके पदमे शल्य है ऐसा समझना ॥ ५९ ॥ काष्ठमय शल्य होय तो धनहानि अस्थिकृत शल्य हो॰ पशुको पीडा और रोगभय लोहमय शल्य हो॰ शस्त्रभय कपाल और केशमय शल्य हो॰ मृत्यु ॥ ६० ॥ कोइलेका शल्य हो॰ चोरभय भस्ममय शल्य हो॰ अग्निभय यह होते हैं सुवर्ण रजतके विना मर्म (श्लो॰ ५७) स्थित शल्य बहुत अशुभ है ॥ ६१ ॥ मर्मस्थित वा मर्मके विना भी रहनेवाले जो तुषसमूहरूप शल्य सो द्रव्यप्राप्तीका रोध करता है हस्तिदंत शल्य जो भी शुभ है तथापि मर्मस्थित रहते अशुभ है ॥ ६२ ॥ रोगसे वायु तक पितरसे अग्नितक वितथसे शोषतक मुख्यसे भृशतक जयंतसे भृंगतक अदितीसे सुग्रीवतक रेषा निकालना ॥ ६३ ॥ उस्के संयोग जो नव वह अतिमर्म कहा जो पदका अष्टमांश सो मर्मका प्रमाण कथन किया ॥ ६४ ॥ पदकी जितनी हस्तसंख्या उतने अंगुल वंश (रोगाद्वायुमित्यादि सूत्रषट्क) विस्तार जानना वंशके व्यास

सुखमिच्छन्ब्रह्माणं यत्नाद्रक्षेद्गृही गृहान्तस्थं॥ उच्छिष्टाद्युपघाता
द्गृहपतिरुपतप्यते तस्मिन्॥६६॥ दक्षिणभुजेन हीने वास्तुनरेऽर्थक्ष
योऽङ्गनादोषाः॥ वामेऽर्थधान्यहानिः शिरसि गुणैर्हीयते सर्वैः॥६७॥ स्त्री
दोषाः सुतमरणं प्रेष्यत्वं चापि चरणवैकल्ये॥ अविकलपुरुषे वसतां
मानार्थयुतानि सौख्यानि॥६८॥ गृहनगरग्रामेषु च सर्वत्रैवं प्रतिष्ठिता
देवाः॥ तेषु च यथानुरूपं वर्णा विप्रादयो वास्याः॥६९॥ वासगृहाणि
च विंद्याद्विप्रादीनामुदग्दिगाद्यानि॥ विशतां च यथा भवनं भवंति ता
न्येव दक्षिणतः॥७०॥ नवगुणसूत्रविभक्तान्यष्टगुणेनाथवा चतुःष
ष्टेः॥ द्वाराणि यानि तेषामनलादीनां फलोपनयः॥७१॥ अनलभयं
स्त्रीजन्म प्रभूतधनता नरेंद्रवात्सल्यं॥ क्रोधपरतानृतत्वं क्रौर्यं चौ
र्यं च पूर्वेण॥७२॥ अल्पसुतत्वं प्रैष्यं नीचत्वं भक्ष्यपानसुतवृद्धिः॥
रौद्रं कृतघ्नमधनं सुतवीर्यघ्नं च याम्येन॥७३॥ ॥ ॥ ॥

धंशिरा (पूर्वापर और दक्षिणोत्तर दशदशरेषा) प्रमाणकथन किया॥६५॥ गृहस्वा
मी सुख इच्छा करे तो यत्नसे गृहमध्यस्थ ब्रह्मदेवका रक्षण करना उस्को उच्छि
ष्टादिकका उपद्रव होय तो गृहस्वामीको दुःख होता है॥६६॥ वास्तुपुरुष दक्षि
णभुजासे रहित होय तो धनक्षय स्त्रीकृतदोष होते हैं वामभुजासे रहित होय तो
द्रव्य धान्य इस्की हानि होती है मस्तकहीन हो॰ सर्व आरोग्यादि गुणसे गृहपति
हीन होता है॥६७॥ पादभागहीन हो॰ स्त्रीकृतदोष पुत्रमरण दासत्व यह होता
है वास्तुपुरुष परिपूर्णावयव होय तो सन्मान द्रव्य इसे युक्त सौख्य वह गृहमे
रहनेवाले पुरुषको होता है॥६८॥ यही प्रकारसे गृह नगर ग्राम इत्यादि सर्वस्थ
लमे देवता रहते हैं उनके विषे यथायोग्य ब्राह्मणादिकको रखना॥६९॥ चतुःशाल
गृह नगर ग्राम इनके विषे ब्राह्मणादि चार वर्णोके वास गृह उत्तरादि प्रदक्षिण
चार दिशामे क्रमसे करना वह गृहमे प्रवेश करनेवालेको दक्षिणभागसे होय (प्रा
ङ्मुखांगण गृहका द्वार उत्तराभिमुख दक्षिणमुखां॰ पूर्वाभि॰ पश्चिममुखां॰ दक्षि
णाभि॰ उत्तरमुखां॰ पश्चिमाभि॰ ऐसे होय)॥७०॥ नवगुणितसूत्रसे विभक्त (एका
शीतिपद) अथवा अष्टगुणितसूत्रसे विभक्त (चतुःषष्टिपद) इनके जो द्वार अ
ग्न्यादिक उनके फल आगेके श्लोकमे कथन किया है॥७१॥ शिखि देवस्थित ईशा
न द्वारमे अग्निभय कन्याजनन बहुद्रव्यप्राप्ति राजप्रियता क्रोधस्वभाव असत्य
भाषण क्रूरत्व चौर्य यह फल पूर्वतरफके द्वारमे होते हैं॥७२॥ अनिलद्वारमे १ अल्पपु
त्रत्व २ दासत्व ३ नीचत्व ४ भक्ष्य पान पुत्र इनकी वृद्धी ५ रौद्र (अशुभ) ६ कृतघ्न ७

स्तनपीडारिपुवृद्धिर्नधनसुतातिः सुतार्थबलसंपत्॥ धनसंपन्नृपतिभयंधनक्षयोरोगइत्यपरे॥७४॥ वधबंधौरिपुवृद्धिर्धनसुतलाभः समस्तगुणसंपत्॥पुत्रधनाप्तिर्वैरंसुतेनदोषाः स्त्रियानैःस्वं॥७५॥ मार्गतरुकोणकूपस्तंभभ्रमविद्धमशुभदंद्वारं॥उच्छ्रायाद्द्विगुणमितां त्यक्त्वा भूमिंनदोषाय॥७६॥रथ्याविद्धंद्वारंनाशायकुमारदोषदंतरुणा॥ पंकद्वारेशोकोव्ययोंबुनिस्राविणि प्रोक्तः॥७७॥कूपेनापस्मारोभवतिविनाशश्चदेवताविद्धे॥ स्तंभेनस्त्रीदोषाःकुलनाशोब्रह्मणोभिमुखे॥७८॥उन्मादः स्वयमुद्घाटितेथपिहितेस्वयंकुलविनाशः॥ मानाधिकेनृपभयंदस्युभयंव्यसनदंनीचं॥७९॥ द्वारंद्वारस्योपरियत्तन्नशिवायसंकटंयच्च॥आव्यात्तंक्षुद्भयदंकुब्जंकुलनाशनंभवति॥८०॥ पीडाकरमतिपीडितमंतर्विनतंभवेदभावाय॥बाह्यविनतेप्रवासोदिग्भ्रांतेदस्युभिःपीडा॥८१॥ ५॥

अधन·८पुत्र·बलनाश· यह फलदक्षिणमेहोनेहैं॥७३॥ पश्चिमद्वारमे१पुत्रपीडा·२शत्रुवृद्धी·३धनऔरपुत्र इनके प्राप्तीका अभाव·४पुत्र·अर्थ·बलइनकी संपत्ति·५धनसंपत्ति·६राजभय·७धनक्षय·८रोग· यह फल पश्चिमद्वारमेहोनेहैं॥७४॥ रोगादन्यद्वारमे१वधऔरबंध·२शत्रुवृद्धि·३धनऔरपुत्र इनकालाभ·४सर्वगुणसंपत्ति·५पुत्र·धनप्राप्ति·६पुत्रवैर·७स्त्रीदोष·८निर्धनत्व· यह फल उत्तरद्वारमे होनेहैं॥७५॥ मार्ग·वृक्ष·कोण· कूवा·स्तंभ·भ्रम·(पानीकानल ओघइ॰) इनसेविद्ध शुभनही· द्वारकेऊंचाईकेदूना भूमीछोडके मार्गादिवेध दोषप्रद (अशुभ·) होनानही॥७६॥ मार्गसेविद्धद्वार गृहस्वामीकानाशकरताहै· वृक्षसे वि॰ बालकनाशकरताहै· कीचडसेविद्धद्वाररहने शोक होताहै·जलनिर्गममार्गसेविद्ध·१०धनव्ययहोनाहै॥७७॥कूपसेवि॰अपस्मार (मिर्गीइत्यादि·) रोगहोतेहैं देवालयसेवि॰ नाशहोताहै· स्तंभसेवि॰ स्त्रीदुष्टहोतीहै· ब्रह्माकेसन्मुखद्वाररहते स्वामिकुलनाशहोताहै॥७८॥ द्वारस्वतः खुले ऐसाहोयतो अतिचिंता·स्वतः लगेऐसाहोयतोकुलनाश·प्रमाणसे अधिकहोयतो राजभय·प्रमाणसे कमतीहोयतो चोरभय· औरदुःखदायकहोताहै॥७९॥ द्वारकेऊपरजोदूसराद्वार (मजलेका) सोशुभनही· संकट· (बहुतछोटा) द्वारजोसोभीशुभनही· मध्यमविस्तृत द्वारक्षुद्भयदायक·कुब्ज (अस्पष्ट खोलनेमेकठिन·) द्वारकुलनाशकहोताहै॥८०॥ अतिपीडित (बहुतछोटा) द्वाररहने·गृहस्वामीकोपीडाकारक· भीतरझुकाहोयतो मरण·बाहरझुकाहोयतो गृहस्वामीकोप्रवास· दिग्भ्रांत (दिशाहीन) द्वारहोयतोचोर

मूलद्वारं नान्यैर्द्वारैरभिसंदधीत रूपर्द्ध्या। घटफलपत्रप्रमथादिभिश्च तन्मंगलैश्चिनुयात्॥८२॥ ऐशान्यादिषु कोणेषु संस्थिता बाह्यतो गृहस्यैताः॥ चरकी विदारिनामाथ पूतना राक्षसी चेति॥८३॥ पुरभवनग्रामाणां ये कोणास्तेषु निवसतां दोषाः॥ श्वपचादयोंत्यजात्यास्तेष्वेव विवृद्धिमायांति॥८४॥ याम्यादिष्वशुभफलाजातास्तरवः प्रदक्षिणेनैते॥ उदगादिषु प्रशस्ताः प्लक्षवटोदुंबराश्वत्थाः॥८५॥ आसन्नाः कंटकिनो रिपुभयदाः क्षीरिणोर्थनाशाय॥ फलिनः प्रजाक्षयकरा दारूण्यपि वर्जयेदेषां॥८६॥ छिंद्याद्यदि न तरूंस्तान् तदंतरे पूजितान्वपेदन्यान्॥ पुन्नागाशोकारिष्टबकुलपनसान् शमीशालौ॥८७॥ शस्तौषधिद्रुमलतामधुरासुगंधास्निग्धासमानसुषिरा च मही नराणां॥ अप्यध्वनि श्रमविनोदमुपागतानां धत्ते श्रियं किमुत शाश्वतमंदिरेषु॥८८॥ ७॥ ७॥ ७॥

मूलद्वार (मुख्यद्वार) अन्यद्वारोके रूपसमृद्धीसे यनहोय. वहमुख्यद्वार कलश. फल. अश्वादिवाहन. पान. तांबूल. प्रमथादिगण. सिंहसर्प. हंस. चकोर. इत्यादि. मंगलसे युक्त करना. (वहद्वारपर पूर्वोक्त समान चित्रनिकालना॥८२॥ ईशानादि चारकोणके विषे गृहके बाहर चरकी. विदारि. पूतना. राक्षसी. यह चार देवता क्रमसे रहते हैं. (ईशानमे चरकी. अग्निमे विदारी नैर्ऋतीमे पूतना. वायव्यमे राक्षसी यह क्रमसे॥८३॥ नगर. गृह. ग्राम. इसके जो कोण उसके विषे रहनेवालेको अशुभ होता है. परंतु चांडालादि अंत्यजको णपर रहेतो उहांही उनकी वृद्धी होती है. (उनका कल्याण होता है. ॥८४॥ प्लक्ष. (पाकर) वट. उदुंबर. अश्वत्थ. यह चारवृक्ष दक्षिणादि दिशामे. प्रदक्षिण क्रमसे होयतो अशुभ होता है. उत्तरादि दिशामे होयतो प्रशस्त होता है. (उत्तरमे प्लक्ष. पूर्वमे वट. दक्षिणमे उदुंबर. पश्चिममे अश्वत्थ. ऐसे शुभ होते हैं. ॥८५॥ गृहके समीपभागमे खदिरादि कंटकवृक्ष होयतो शत्रुभय. मंदार इत्यादि दुग्धके वृक्षहो. द्रव्यनाश. आम्रादि फलवान् हो. संततिक्षय. यह फल होते हैं. इनके गृहको काष्ठभी नहीं होय. ॥८६॥ जो यह वृक्ष है तो छेदेकी इच्छा नहीं तो इसके बीचमे. पुन्नाग. अशोक. निंब. बकुल. पनस. शमी. सागवान् यह पूजित वृक्ष लगावना. ॥८७॥ जपा. जयंती इत्यादि औषधी. पिप्पलादि वृक्ष और वल्ली इनकरके प्रशस्त जिस जमीनको मधुररसविहै. सुगंधयुक्त स्निग्ध हिये. चिकण सम कहिये बराबर. अंतःसार कहिये कठिन ऐसी भूमी मनुष्यको घर बांधनेके वास्ते शुभ है. ऐसी पूर्वोक्त भूमी मार्गमे श्रम भए उसको भी लक्ष्मी

सचिवालयेऽर्थनाशो भूर्तगृहे सुतवधः समीपस्थे ॥ उद्वेगो देवकुले च
तुष्पथे भवति चाकीर्त्तिः ॥ ८९ ॥ चैत्ये भयं ग्रहकृतं वल्मीकश्वभ्रसंकुले विप
दः ॥ गर्त्तायां तु पिपासा कूर्माकारे धनविनाशः ॥ ९० ॥ उदगादिप्लुव
मिष्टं विप्रादीनां प्रदक्षिणेनैव ॥ विप्रः सर्वत्र वसेदनुवर्णमथेष्टमन्ये
षां ॥ ९१ ॥ गृहमध्ये हस्तमितं खात्वा परिपूरितं पुनः श्वभ्रं ॥ यद्यूनम
निष्टं तत्समे समं धन्यमधिकं यत् ॥ ९२ ॥ श्वभ्रमथवाम्बुपूर्णं पदशत
मित्वागतस्य यदि नोनं ॥ तद्धन्यं यच्च भवेत्पलानि पांस्वाढकं चतुः
षष्टिः ॥ ९३ ॥ आमे वा मृत्पात्रे श्वभ्रस्थे दीपवर्तिरभ्यधिकं ॥ ज्वलति
दिशि यस्य शस्ता सा भूमिस्तस्य वर्णस्य ॥ ९४ ॥ श्वभ्रोषितं न कुसुमं
यस्मिन्प्रम्लायतेऽनुवर्णसमं ॥ तत्तस्य भवति शुभदं यस्य च यस्मिन्म
नोरमते ९५

हारकरके शोभादेती है· तो स्थिर गृह को लक्ष्मी देगी इस्मे आश्चर्य क्या·

॥ ८८ ॥ प्रधान का गृह समीप होय तो द्रव्यनाश· धूर्तका गृह स० पुत्रमरण
देवगृह स० चित्तोद्वेग· चवहटा स० अपकीर्त्ति· यह फल होता है ॥ ८९ ॥ चैत्य (पिप
लादि अत्युच्च वृक्ष) स० ग्रह और पिशाच कृत भय होता है· वल्मीक (सर्पस्थान)
वा गडहा स० विपत्ति· खंदक स० तृषा· कूर्माकार भूमी समीप होय तो· धननाश य
ह फल होते हैं ॥ ९० ॥ ब्राह्मणादि चार वर्णको क्रमसे उत्तरादि प्लुव (उतरती) भूमी प्रदक्षि
ण शुभ होती है· (उत्तर मे उतरती ब्राह्मणको· पूर्व मे उ० क्षत्रियको· दक्षिण मे उ० वै
श्यको· पश्चिम मे उ० शूद्रको·) ब्राह्मणने सर्वत्र रहना· अन्यने अपने वर्ण क्रमसे रह
ना शुभ होता है ॥ ९१ ॥ गृह भूमी मे हस्त परिमित· लंबा· चवडा· गहीरा· गडहा खो
द के वही मृत्तिकासे पुनः भरना· मृत्तिका कमती होय तो अनिष्ट· बराबर होय तो म
ध्यम· अधिक होय तो शुभ ऐसी भूमी जानना· ॥ ९२ ॥ अथवा वही श्वभ्र (गडहा) ज
ल पूर्ण करके सो पाँव जाय के फिर आवे तक उस्मे का जल कमती होय नहीं तो शुभ·
अन्यथा अशुभ है· अथवा गडहे मे से निकली जो मृत्तिका उस्मे से एक आढक कहि
ये १ धडा ४ शेर प्रमाण माप भर लेके उस्का तोल करना वह तोल ६४ पल कहिये २५६
तोला होय तो वह भूमी शुभ· अन्यथा अशुभ होती है ॥ ९३ ॥ ------ अथवा अप
क मृत्पात्र (कच्चे मट्टी का दिया वगैरे) श्वभ्र मे रख के उस्मे चार दिशा मे बत्ती प्रज्वलि
त करना· उस्मे से जिस दिशा मे की बत्ती अधिक प्रज्वलित होय वह दिशा मे पूर्वोक्त
(श्लोक ९०) ब्राह्मणादि वर्णको वह भूमी शुभ होती है ॥ ९४ ॥ ब्राह्मणादि वर्णक्रम
से· श्वेत· रक्त· पीत· श्याम· ऐसे चार पुष्प रात्री मे गडहे मे डालना· और प्रातःका
ल देखना उस्मे जिस रंग का पुष्प म्लान होय नहीं उस वर्ण को उहां कल्याण होगा·

सितरक्तपीतकृष्णा विप्रादीनां प्रशस्यते भूमिः॥ गंधश्च भवति य
स्याघृतरुधिरान्नाद्यमद्यसमः॥९६॥कुशयुक्ताशरबहुला दूर्वा
काशावृताक्रमेण मही॥ अनुवर्णं वृद्धिकरी मधुरकषायाम्लकटुका
च॥९७॥कृष्टां प्ररूढबीजां गोध्युषितां ब्राह्मणैः प्रशस्तां च॥गत्वाम
हीं गृहपतिः काले सांवत्सरोद्दिष्टे॥९८॥भक्ष्यैर्नानाकारैर्दध्यक्षतसु
रभिकुसुमधूपैश्च॥ दैवतपूजां कृत्वा स्थपतीनभ्यर्च्य विप्रांश्च॥९९
॥विप्रःस्पृष्ट्वाशीर्षं वक्षश्च क्षत्रियो विशश्चोरू॥शूद्रःपादौ स्पृष्ट्वाकु
र्याद्रेखां गृहारंभे॥१००॥अंगुष्ठकेन कुर्यान्मध्यांगुल्याथवा प्रदेशि
न्या॥कनकमणिरजतमुक्तादधिफलकुसुमाक्षतैश्च शुभं॥१०१॥
शस्त्रेण शस्त्रमृत्युर्बंधो लोहेन भस्मनाग्निभयं॥तस्करभयं तृणेन
च काष्ठोल्लिखिता च राजभयं॥१०२॥वक्रा पादालिखिता शस्त्रभय
क्लेशदा विरूपा च॥चर्मांगारास्थिकृता दंतेन च कर्तुरशिवाय॥१०३

अथवा जिस्का चित्त जहां रमेगा तहां उन्ने गृह बनावना· बिचार करना नहीं·
॥९५॥ ब्राह्मणादि चारवर्णको श्वेत· रक्त· पीत· कृष्ण यह रंगकी भूमी क्रमसे शु
भहोतीहै· तैसेही· घृत· रक्त· अन्न· मद्य· इस्केसमान गंधकी भूमी क्रमसे शुभ॥
॥९६॥ दर्भ· शर· (तृणवि॰) दूर्वा· काश· इसे युक्त भूमी ब्राह्मणादि वर्णको क्रमसे
शुभ· मिष्ट· कसेला· खट्टा· तीता· ऐसी भूमी वर्ण क्रमसे वृद्धि कारक होती है॥
॥९७॥ हलसे जोती· धानसे युक्त· गौ जिस्मे रहे· ब्राह्मणने प्रशंसित ऐसी भूमी
पर ज्योतिर्वितने कथित मुहूर्त मे गृहपतीने जा ना·॥९८॥ और नाना प्रकारके
अपूप मोदकादि भक्ष्यपदार्थ· दधि अक्षत· सुगंधपुष्प· धूप· दीप· इत्यादिकसे
हे वाधिपतीकी पूजा करके अनंतर ब्राह्मण और शिल्पविद्याजाननेवाले बढ
ई इनकी पूजा करना·॥९९॥ ब्राह्मणने मस्तकको· क्षत्रियने वक्षस्थलको·
वैश्यने जंघाको· शूद्रने पांवको· ऐसा अपने शरीरको स्पर्शकरके गृहारंभ
मे रेषा करना·॥१००॥ गृहपतीने वह रेषा अंगुष्ठ· मध्यांगुलि· तर्जनी· स्वर
र्ण· मणि· रौप्य· मोती· दधि· फल· पुष्प· अक्षत· इसकरके करेतो शुभहोताहै·
॥१०१॥ शस्त्रसे करेतो शस्त्रसे मृत्यु· लोहसे करेतो बंध· भस्मसे करेतो अग्नि
भय· तृणसे करेतो चोरभय· काष्ठसे करेतो राजभय· यह होताहै·॥१०२॥ टेढी
वा पांवसे निकाली· विरूप ऐसी जो रेषा वह शस्त्रभय और क्लेशदायक· चर्म
कोइला· हाड· दंत· इससे निकाली रेषा गृहकर्नेवालेको अशुभकारक होतीहै·
॥१०३॥ रेषा अपसव्य निकाले तो वैर होय· प्रदक्षिण निकाले तो संपत्ति होती है·

वेश्मप्रसञ्चलिखितास्त्रप्रदक्षिणंसंपदोविनिर्देश्याः॥वाचःपरुषा
निष्ठीवितंक्षुतंवाशुभंकथितं॥१०४॥अर्धनिचितंकृतंवाप्रविश्यस्थ
पतिर्गृहेनिमित्तानि॥अवलोकयेद्गृहपतिःक्वसंस्थितःस्पृशति
किंचांगं॥१०५॥रविदीप्तोयदिशकुनिस्तस्मिन्कालेविरौतिपरुषर
वः॥संस्पृष्टांगसमानंतस्मिन्देशेऽस्थिनिर्देश्यं॥१०६॥शकुनसम
येऽथवान्येहस्त्यश्वश्वादयोऽनुवाशंते॥तत्रभवमस्थितस्मिंस्त
दंगसंभूतमेवेति॥१०७॥सूत्रेप्रसार्यमाणेगर्दभरावोऽस्थिशल्य
माचष्टे॥श्वसृगाललंघितेवासूत्रेशल्यंविनिर्देश्यं॥१०८॥दिशि
शांतायांशकुनोमधुरविरावीयदातदावाच्यः॥अर्थस्तस्मिन्स्थाने
गृहेश्वराधिष्ठितेंगेवा॥१०९॥सूत्रच्छेदेमृत्युःकीलेचावाङ्मुखे
महारोगः॥गृहनाथस्थपतीनांस्मृतिलोपेमृत्युरादेश्यः॥११०॥

जैसेही उसवखत कठोरभाषण निष्ठीविन (मूसे फूकना) च्छींक यह और शुद्धश
ब्द होयतो गृहकरनेवालेको अशुभकथनकिया है॥१०४॥ पाया (नेह) अर्थवा
सर्वे होनेपर उसमे गृहपति प्रवेश किये रहते वह वास्तुपुरुषके कौन अंगपर खं
डाहै और अपने कौन अंगमे स्पर्श करता है यह चिन्ह स्थपतिने (कारीगरने) दे
खना॥१०५॥ वह गृहप्रवेशसमयमे दीप्तदिशामे अथवा सूर्यके सन्मुख पक्षि
होयके रूक्षशब्द करे तो गृहपतीसे स्पृष्ट अंगसमान खडा है उसस्थानपर भू
मीमे हाड है ऐसा कथन किया है (ईशान्यादि दिशा सूर्योदयसे प्रथम प्रहरमे अं
गारिणी दीप्ता धूमिता शेष ५ शांत द्वितीय॰ पूर्वादि तृ॰ आग्नेयादि च॰ दक्षि
णादि पं॰ नैर्ऋ॰ ष॰ पश्चि॰ स॰ वायु॰ अ॰ उत्तरादि होती है॥१०६॥ अथवा निमित्त
कालमे गज अश्व कुत्ता इत्यादि इन्होमे कोई भी सूर्याभिमुख शब्द करे वह प्रा
णीका हाड गृहपतिस्पृष्ट अंगतुल्य गृहपतिस्थित देशमे है ऐसा समझना॥१०७
॥ सूत्र फैलावनेके समय गर्दभका शब्द होयतो हाड भूमीमे है ऐसा कहना कुत्ता
वा सियार यह सूत्रपरसे जायतो उनका शल्य (हाड) भूमीमे है ऐसा कहना॥१०८
जिसकालमे शांत दिशामे पक्षी मधुर शब्द करेंगे उसकालमे गृहेश्वराधिष्ठित स्था
नमे किंवा गृहेश्वर स्पृष्ट वास्तुपुरुषके अंगमे द्रव्य है ऐसा कहना वह द्रव्य गृ
हपतीके उचाई इतना नीचे है॥१०९॥ सूत्र तूटे तो गृहपतीको मृत्यु खूंटी गाड
ते वक्त उलटा गडी रहजायतो महान् रोग होते हैं गृहस्वामी और कारीगर इनके स्म
रण लोप (भ्रम) होयतो उनको मृत्यु होता है॥११०॥ जलपूर्ण कुंभ खंदेपरसे
गिरे तो मस्तकरोग होते हैं अधोमुख गिरे तो कुलको उपद्रव होय फूटे तो कामक

स्कंधात्च्युते शिरोरुक्कुलोपसर्गो ऽपवर्जिते कुंभे ॥ भग्ने च शिल्पिमरणं
च्युते कराद्गृहपतेर्मृत्युः ॥ १११ ॥ दक्षिणपूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां
न्यसेत्प्रथमां ॥ शेषाः प्रदक्षिणेन स्तंभाश्चैवं समुत्थाप्याः ॥ ११२ ॥ छत्र
स्रगंबरयुतः कृतधूपविलेपनः समुत्थाप्यः ॥ स्तंभस्तथैव कार्यो द्वाःशे
च्छ्रायः प्रयत्नेन ॥ ११३ ॥ विहगादिभिरवलीने राकंपितपतितदुःस्थि
ते च फलं ॥ शक्रध्वजफलसदृशं तस्मिंश्च शुभं विनिर्दिष्टं ॥ ११४ ॥
प्रागुत्तरोन्नते धनसुतनाशः सुतवधश्च दुर्गंधे ॥ वक्रे बंधुविनाशो
न संतिगर्भश्च दिङ्मूढे ॥ ११५ ॥ इच्छेद्यदि गृहवृद्धिं ततः समंताद्वि
वर्द्धयेत्तुल्यं ॥ एकोद्देशे दोषः प्रागथवाप्युत्तरे कुर्यात् ॥ ११६ ॥ प्राग्भ
वति मित्रवैरं मृत्युभयं दक्षिणेन यदि वृद्धिः ॥ अर्थविनाशः पश्चादु
दग्विवृद्धौ मनस्तापः ॥ ११७ ॥ ऐशान्यां देवगृहं महानसं चापि कार्य
माग्नेय्यां ॥ नैर्ऋत्यां भांडोपस्करोर्थधान्यानि मारुत्यां ॥ ११८ ॥ प्राच्या
दिस्थे सलिले सुतहानिः शिखिभयं रिपुभयं च ॥ स्त्रीकलहः स्त्री
दौष्ट्यं नैःस्व्यं वित्तात्मजविवृद्धिः ॥ ११९ ॥

रनेवालेको मृत्यु॰ हस्तमेसे गिरे तो गृहपतीको मृत्यु होता है ॥ १११ ॥ पहिली शिला॰ पू
जाकरके ईशानमे स्थापन करना॰ ननर शेष शिला (पत्थर॰) प्रदक्षिणस्थापन करना॰ वै
सेही स्तंभभी खडे करना ॥ ११२ ॥ छत्र॰ माला॰ वस्त्र॰ इनसे युक्त और धूप गंधादि पूजित
स्तंभ खडा करना और द्वार भी तैसेही प्रयत्नसे खडा करना ॥ ११३ ॥ स्तंभ और द्वार पक्षा
दिकसे आलिंगित (स्पृष्ट) वा कंपित अथवा दुःस्थित (टेढा किया) रहते उसका फल श
क्रध्वज (अ॰ ४३ श्लो॰ ६२ से ६६ तक) फल समान शुभाशुभ कथन किया ॥ ११४ ॥ गृह
भूमी पूर्वतरफ वा उत्तरतरफ ऊंची होय तो धन और पुत्र इनका नाश॰ दुर्गंधियुक्त होय तो
पुत्रवध॰ टेढी कहिये समान न होय तो बंधुनाश॰ पूर्वादि दिशासाधके न होय तो गर्भना
श यह फल होता है॰ ॥ ११५ ॥ गृहकी वृद्धि (बढावना॰) इच्छा करे तो सर्व दिशामे समान
करना एकतरफ बढावनेमे दोष है परंतु अल्पदोषके वास्ते पूर्वमे वा उत्तरमे गृहवृद्धि
करना ॥ ११६ ॥ पूर्वतरफ गृह बढावे तो मित्रवैर॰ दक्षिणमे मृत्युभय॰ पश्चिममे द्रव्यनाश॰ उ
त्तरमे बढावे तो चित्तसंताप॰ यह फल होते हैं ॥ ११७ ॥ चौदलान गृहमे ईशानमे देवगृह॰ अ
ग्निमे महानस (पाकस्थान) निर्ऋतीमे भांडोपस्कर (उपयोगी पात्र बरतन वगैरे रखनेकी
जगा॰) वायव्यमे द्रव्य और धान्य इनका गृह॰ ऐसे करना॰ (इसका अन्यत्र विस्तार है ॥ ११८ ॥
वास्तुके पूर्वमे जलस्थान (कूंवा वगैरे) होय तो पुत्रनाश॰ आग्नेयीमे अग्निभय॰ दक्षिण
मे शत्रुभय॰ नैर्ऋतीमे स्त्रीकलह॰ पश्चिममे स्त्रीके विषे दुष्टस्वभाव॰ वायव्यमे निर्धनत्व॰

अशनिहतमनसंभुक्षरथ्यदेवालयश्मशानस्थान्॥ क्षीरतरुध वविभीतकनिंबारणिवर्जितांश्छिंद्यात्॥१२०॥ रात्रौ कृतबलिपूजं प्रदक्षिणंछेदयेद्दिवावृक्षं॥ धन्यमुदक्प्राक्पतनंन ग्राह्योतोन्यथा पतितः॥१२१॥ छेदो यद्यविकारी ततःशुभंदारुनगृहोपयिकं॥ पीते तु मंडलेनिर्दिशेत्तरोमध्यगांगोधां॥१२२॥ मंजिष्ठाभे भेकोनीलेसर्प स्तथारुणेसरटः॥ मुद्गाभेश्माकपिलेतुमूषकोंभश्चखड्गाभे॥१२३ ॥धान्यगोगुरुहुताशसुराणांनस्वपेदुपरिनाप्यनुवंशं॥ नोत्तराप रशिरानचनग्नोनैवचार्द्रचरणःश्रियमिच्छन्॥१२४॥ भूरिपुष्प निकरंसतोरणंतोयपूर्णकलशोपशोभितं॥ धूपगंधबलिपूजि तामरंब्राह्मणध्वनियुतंविशेत्गृहं॥१२५॥ ॥इति वास्तुविद्या॥ ॥अथ दगार्गलं॥ धर्म्यंयशस्यंचवदाम्यतोहंदगार्गलंयेनजलोप लब्धिः॥पुंसांयथांगेषुशिरास्तथैवक्षितावपिप्रोन्नतनिम्नसंस्थाः॥१॥

उत्तरमेद्रव्यवृद्धी· ईशानमे पुत्रवृद्धी· यह फल होते हैं॥११९॥ पक्षीके रहनेका· टूटा· खजरा· देवालयके पासका· श्मशानस्थानके· यह वृक्ष और पीपल आदि दूधके वृक्ष· धवका॰ भेलावाका॰ निंब· आरणी (वृक्षविशेष॰ शमीतिकेचित्॥) यह वृक्षके विना गृहकोवृक्षतोडना काटना॥१२०॥ रात्रीमे बली और पूजाकरके दिनमे वृक्ष पूर्वादि प्रदक्षिण काटना· वह वृक्षका गिरना उत्तरमे वा पूर्वमे होय तो शुभ· इनसे अन्य दिशामे गिरा वृक्ष गृहको लेना नही॥१२१॥ वृक्षका छेद विकाररहित होय तो· वह काष्ठ गृहको उपयुक्त (शुभ) है· तोडे वृक्षके मंडल (बुंद) पीतवर्ण होय तो वृक्षमे गोह है ऐसाकहना ॥१२२॥ लालहो॰ मंडूक· नीलहो॰ सर्प· किंचित् लालहो॰ सरट· (गिर्गिटान) मुद्गाभ· (हरा) हो॰ पाषाण· पिंगटवर्णहो॰ मूषक· खड्गाभ (श्वेत) होय तो जल· यह काटे भए वृक्षमे है ऐसाकहना॥१२३॥ धान्य· गो· पित्रादि गुरु· अग्नि· देव· इनके ऊपर और वंश· (श्लो॰ ६३) यह सूत्र पर शयनकरना नही· उत्तर और पश्चिम दिशामे मस्तक करके· नग्न· गीलेपाँवसे लक्ष्मीकी इच्छावाले पुरुषने निद्राकरना नही॥१२४॥ बहुत पुष्पसमूहसे युक्त· तोरणयुक्त· जलपूर्णकलशोसे शोभित· धूप· गंध· बलि इनकरके पूजित है देवता जिसमे ऐसे और ब्राह्मणध्वनि· (वेदध्व· शब्द) इनकरके युक्त गृहमे सुमुहूर्तमे प्रवेशकरना॥१२५॥ ॥इति बृहत्संहितायांवास्तुविद्यानामत्रिपंचाशोध्यायः॥ अथ दगार्गलं॥ वास्तुविद्याप्रकरणके अनंतर धर्म्य और यशप्रद और जिससे जल प्राप्ति होती है ऐसा दगार्गल हम वराहमिहिराचार्य कहते हैं· जैसे पुरुषके अंगमे ऊपर नीचे जाने वाली शिरा (नस) रहती है वैसे ही भूमीमे भी जलवाहिनी शिरा है॥१॥

एकेनवर्णेनरसेनचांभश्च्युतंनभस्तोवसुधाविशेषात् ॥ नानारसत्वं बहुवर्णतांचगतंपरीक्ष्यंक्षितितुल्यमेव ॥२॥ पुरुहूतानलयमनिर्ऋतिवरुणपवनेंदुशंकरादेवाः ॥ विज्ञातव्याःक्रमशःप्राच्यादीनांदिशांपतयः ॥३॥ दिक्पतिसंज्ञाश्चशिरानवमीमध्येमहाशिरानाम्नी ॥ एताभ्योन्याःशतशोविनिःसृतानामभिःप्रथिताः ॥४॥ पातालादूर्ध्वशिराःशुभाश्चतुर्दिक्षुसंस्थितायाश्च ॥ कोणेदिगुत्थानशुभाःशिरानिमित्तान्यतोवक्ष्ये ॥५॥ यदिवेतसोंबुरहितेदेशेहस्तैस्त्रिभिःपश्चात ॥ सार्धेपुरुषेतोयंवहतिशिरापश्चिमातत्र ॥६॥ चिन्हमपिचार्धपुरुषेमंडूकःपांडुरोथमृत्पीता ॥ पुटभेदकश्चतस्मिन्पाषाणोभवतितोयमधः ॥७॥ जंब्वाश्चोदग्घस्तैस्त्रिभिःशिराधोनरद्वयेपूर्वा ॥ मृल्लोहगंधिकापांडुराथपुरुषेत्रमंडूकः ॥८॥ जंबूवृक्षस्यप्राग्वल्मीकोयदिभवेत्समीपस्थः ॥ तस्माद्दक्षिणपार्श्वेसलिलंपुरुषद्वयेस्वादु ॥९॥ ॥

जल आकाशसे एकवर्णसे और एकरससेही भूमीपर गिरताहे परंतु नानाप्रकार की भूमीहै इसवास्ते वहजल नानारस (बहुतस्वाद) औरबहुवर्ण भए इसवास्ते भूमितुल्य जलकेरस औरवर्णजानना· तथाचवक्ष्यति (सशर्करातास्र मही कषाय क्षारं धरित्रीकपिलाकरोति॥ आपांडुरायांलवणंप्रदिष्टं मृष्टंजलंनीलवसुंधरायामिति ॥२॥ इंद्र·अग्नि·यम·निर्ऋति·वरुण·वायु·सोम·शिव यह ८देव पूर्वादि ८ दिशाके स्वामीक्रमसेजानना ॥३॥ जिसदिशाकेतरफसेजोशिरा (जलवाहिनी) आवेतोवहशिराको उस्केदिक्पतीकानाम जानना· और मध्यमे नवमशिरा महाशिरा नामकजानना· इस्से अन्यभी शिरा सेंकडो निकलीहे उनकेभीनाम प्रसिद्धहे· तथाचवक्ष्यति (कुमुदानामशिरासापुरुषत्रयवाहिनीभवति) ॥४॥ पातालमेसे·कहियेनीचेसे ऊपरजो शिरा आवेसो औरचारदिशामेजोशिरा रहती हैसोशुभहोतीहै· आग्नेयादिकोण दिशामेउत्पन्न जोशिरासो शुभनही इस्केअनंतर शिरोंके चिन्हकहतेहैं ॥५॥ जहां स्वभावतःजलनही· ऐसेजलरहित देशमे बेंतका पेड होयतो उस्के पश्चिमतरफ तीनहातपर डेडपुरुषकेनीचेजलरहताहै उहां पश्चिममे (शिरा (झरा) बहताहै ॥६॥ अर्धपुरुष पर सफेद मेंडुका· और पीतवर्ण मृत्तिका·उस्केनीचे पुटभेदकपाषाण यहचिन्हललेंगे उसकेनीचे जलमिलेगा· (इहां पुरुष ऊर्ध्वबाहु·उस्का प्रमाण अंगुल १२० होतेहे· इस्का पंचमांशहस्त जानना ॥७॥ जंबु (जामुन) वृक्षके उत्तरमे तीनहाथके आगे दोपुरुषके नीचे पूर्वमे शिराहै॥ इहां पुरुष भर खोदेतो लोहके समान गंधकी थोडी सफेद मट्टी और उ

अर्धपुरुषेचमत्स्यः पारावतसन्निभश्चपाषाणः॥ मृद्भवतिचात्रनीला
दीर्घकालंबहुचतोयं॥१०॥ पश्चादुदुंबरस्यत्रिभिरेवकरैर्नरद्वयेसार्धे
॥पुरुषेसितोहिरथ्यांजनोपमोधःशिरासुजला ॥११॥ उदगर्जुनस्य
दृश्यो वल्मीकोयदितनोर्जुनाद्धस्तैः॥ त्रिभिरंबुभवतिपुरुषैस्त्रिभि
र्र्धसमन्वितैःपश्चात्॥१२॥ श्वेतागोधार्धनरेपुरुषेमृद्धूसराततःकृ
ष्णा॥ पीतासितासिकताततोजलंनिर्दिशेदमितं॥१३॥ वल्मीको
पचितायांनिर्गुंड्यांदक्षिणेनकथितकरैः॥ पुरुषद्वयेसपादेस्वादुज
लंभवतिचाशोष्यं॥१४॥ रोहितमत्स्योर्धनरेमृत्कपिलापांडुराततः
परतः॥ सिकतासशर्कराथक्रमेणपरतोभवत्यंभः॥१५॥ पूर्वेणय
दिबदर्यावल्मीकोदृश्यतेजलंपश्चात्॥ पुरुषैस्त्रिभिरादेश्यंश्वेता
गृहगोधिकार्धनरे॥१६॥ सपलाशाबदरीचेद्दिश्यपरस्यांततोज
लंभवति॥ पुरुषत्रयेसपादेपुरुषेत्रचदुंडुभिश्चिन्हं॥१७॥ ७॥

समेचुका यहचिह्न नजरपडेंगे॥८॥ जामुनके पूर्वमे पास वल्मीक(सर्पस्थान)
होयतो उसके दक्षिणमे दोपुरुषके नीचे मीठा जल है॥९॥ इसकेचिन्ह अर्धपुरुषखो
दनेपर उहां मत्स्य और नीचे गोलेके वर्णका पत्थर और उहांनीलवर्ण मृत्तिका य
ह चिन्हहोयतो बहुतदिन रहनेवाला ऐसा बहुतजल लगेगा॥१०॥ जलवर्जित
देशमे गुलरका वृक्ष होयतो उसके पश्चिममे तीन हाथके आगे अढाई पुरुषकेनी
चे उत्तम जल युक्त शिराहै॰ इसके चिन्ह॰ एकपुरुष खोदनेपर उहां श्वेतसर्प नज
रपडे औरकाजलके समान पत्थर नजरपडे तो उसके नीचे जललगेगा॥११॥ अ
र्जुन वृक्षके उत्तरमे वल्मीक होयतो वृक्षसे पश्चिमतरफ तीन हात परखोदेतो साढे
तीनपुरुषके नीचेजल है॥१२॥ चिन्ह॰ अर्धपुरुष खोदनेपर सफेद गोधा(बिस्तुय्या)
एकपुरुषपर धूसरा(कालीसफेद) मट्टी॰ अनंतर कालीमट्टी॰ नंतरपीत मट्टी नं
तररेतीसे युक्त सफेद मट्टी॰ उसके नीचे बहुत जलहै ऐसा कहना॥१३॥ वल्मीक
युक्त मेउडीका वृक्ष होयतो उसके दक्षिणतरफ तीन हाथपर सवा दो पुरुष खोदे तो
उहांशुष्क न होनेवाला और मिष्टजलहै॥१४॥ इसके चिन्ह॰ अर्धपुरुषपर रोही म
त्स्य पिंगटमट्टी॰ नंतरसफेद मट्टी॰ नंतर पत्थरसे युक्त रेती॰ उसके नीचेजलहै॥१५
बेरकेवृक्षसे पूर्वमे वल्मीक होयतो वृक्षके पश्चिमतरफ तीनहात आगे तीनपुरुष
खोदेतो जलहै ऐसा कहना उहां चिन्ह॰ अर्धपुरुषपर सफेद बिसतुया होयतो उ
सकेनीचे खोदेतो जललगेगा॥१६॥ पलास और वल्मीक युक्त बेरका वृक्ष होयतो उ
सके पश्चिममे तीन हात के नंतर सवातीन हात खोदेतो नीचे जलहै॰ इसके चिन्ह॰ पुरुषपर

बिल्वोदुंबरयोर्योगे विहाय हस्तत्रयं तु याम्येन ॥ पुरुषैस्त्रिभिरंबु भवे
त्कृष्णोऽर्धनरे च मंडूकः ॥ १८ ॥ काकोदुंबरिकायां वल्मीको दृश्यते यदि
रा तस्मिन् ॥ पुरुषत्रये सपादे पश्चिमदिक्स्था वहति सा च ॥ १९ ॥
आपांडुपीतिका मृद्गोरसवर्णश्च भवति पाषाणः ॥ पुरुषार्धे कुमुद
निभो दृष्टिपथं मूषको याति ॥ २० ॥ जलपरिहीने देशे वृक्षः कंपिल्लको
यदा दृश्यः ॥ प्राच्यां हस्तत्रितये वहति शिरा दक्षिणा प्रथमं ॥ २१ ॥
मृन्नीलोत्पलवर्णा कापोता चैव दृश्यते तस्मिन् ॥ हस्तेऽजगंधि मत्स्यो
भवति पयोऽल्पं च सक्षारं ॥ २२ ॥ शोणाकतरोरपरोत्तरे शिरा द्वौ करावति
क्रम्य ॥ कुमुदा नाम शिरा सा पुरुषत्रयवाहिनी भवति ॥ २३ ॥ आ
सन्नो वल्मीको दक्षिणपार्श्वे विभीतकस्य यदि ॥ अध्यर्धे तस्य शिरा
पुरुषे ज्ञेया दिशि प्राच्यां ॥ २४ ॥ तस्यैव पश्चिमायां दिशि वल्मीको य
दा भवेद्धस्ते ॥ तत्रोदग्भवति शिरा चतुर्भिरर्धाधिकैः पुरुषैः ॥ २५ ॥

डुंडुभि (निर्विष दुमुहां सर्प) होय ॥ १७ ॥ बेल और गूलर इनका योग (एकत्र रह
ना) जहां होय उसके दक्षिण में तीन हाथ भूमी छोडके तीन पुरुष खोदे तो जल है·
इसके चिन्ह· अर्ध पुरुष खोदने पर उहां काला मेंडुका मिलेगा· ॥ १८ ॥ काकोदुंबरि
का (कोठारे का वृक्ष) इसके नीचे वल्मीक नजर पडे तो उहां सवा तीन पुरुष खोदे
तो पश्चिम तरफ जल शिरा बहती है ॥ १९ ॥ इहां चिन्ह· थोडी सफेद मट्टी· आगे पी
ली· नंतर सफेद पत्थर और अर्ध पुरुष खोदे तो सफेद चूहा नजर पडेगा· ॥ २० ॥
जलरहित देशमें कंपिल्लक· (रूई मंदार· बडी मोसरी) वृक्ष नजर पडे तो उसके पूर्व
में तीन हाथ के आगे सवा तीन हाथ के नीचे दक्षिण तरफ जलशिरा बहती है ॥ २१
॥ इसके चिन्ह प्रथम नीलकमल के समान मट्टी· नंतर कबूतर के रंग की मट्टी नज
र पडेगी· हात भर खोदने से अजगंधि मत्स्य लखेंगे उहां खारा थोडा जल है ॥ २२
॥ शोणाक (टेसुवा वृक्ष वि॰) वृक्ष के वायूकोण में दो हात छोडके तीन पुरुष खोदे
तो॰ उहां कुमुदा नामक शिरा बहती है ॥ २३ ॥ विभीतक (बेहेडा) वृक्ष के दक्षिण
दिशा के तरफ नजीक वल्मीक होय तो· वह बेहेडे के पूर्व में दो हात आगे डेड पुरुष
खोदे तो· जलशिरा है ऐसा जानना· ॥ २४ ॥ बेहाडे के ही पश्चिम में वल्मीक हो
य तो· वह वृक्ष के उत्तर में एक हात छोडके आगे साढे चार पुरुष के नीचे जलशि
रा है ॥ २५ ॥ चिन्ह प्रथम एक पुरुष खोदने से· सफेद· विश्वंभरक (प्राणि विशेष)
नजर पडता है· नंतर कुंकुमवर्ण पाषाण· उसके नीचे पश्चिम में जलशिरा है· पर
न्तु वह तीन वर्ष में नाश होगी· ॥ २६ ॥

पूर्वितोविश्वंभरकः प्रथमेपुरुषेतुकुंकुमाभोऽश्मा॥अपरस्यांदिशिचशिरा
नश्यतिवर्षेत्रयेऽतीते॥२६॥सकुशासितएेशान्यांवल्मीकोयत्रकोविदा
रस्य॥मध्येतयोर्नरैरर्धपंचमैस्तोयमक्षोभ्यं॥२७॥प्रथमेपुरुषेभुजगःकम
लोदरसन्निभोमहीरक्ता॥कुरुविंदःपाषाणश्चिन्हान्येतानिवाच्यानि॥२८
॥यदिभवतिसप्तपर्णोवल्मीकवृतस्तदुत्तरेतोयं॥वाच्यंपुरुषैःपंच
भिरत्रापिभवंतिचिन्हानि॥२९॥पुरुषार्धेमंडूकोहरितोहरितालसन्नि
भाभूश्च॥पाषाणोऽभ्रनिकाशःसौम्याचशिराशुभांबुवहा॥३०॥सर्वे
षांवृक्षाणामधःस्थितोदर्दुरोयदादृश्यः॥तस्माद्धस्तेतोयंचतुर्भिरर्धाधि
कैःपुरुषैः॥३१॥पुरुषेतुभवतिनकुलोनीलामृत्पीतिकाततःश्वेता॥दर्दु
रसमानरूपःपाषाणोदृश्यतेचात्र॥३२॥यद्यहिनिलयोदृश्योदक्षिणतः
संस्थितःकरंजस्य॥हस्तद्वयेतुयाम्येपुरुषत्रितयेशिरासार्धे॥३३॥क
च्छपकःपुरुषार्धेप्रथमंचोद्भिद्यतेशिरापूर्वा॥उदगन्यास्वादुजलाहरि
तोश्मांधस्ततस्तोयं॥३४॥उत्तरतश्चमधूकादहिनिलयःपश्चिमेनतोयं
॥परिहृत्यपंचहस्तानर्धाष्टमपौरुषेप्रथमं॥३५॥अहिराजःपुरुषेऽस्मिन्धू
म्राधात्रीकुलत्थवर्णोऽश्मा॥माहेंद्रीभवतिशिरावहतिसफेनंसदातोयं ३६

कोविदार (कचनार) वृक्षके ईशानमे दर्भयुक्तसफेद वल्मीक जहां होय उहां कोविदा
र और वल्मीक इस्के मध्यमे साढेचार पुरुषकेनीचे बहुत जल है॥२७॥प्रथम एक
पुरुष खोदनेसे उहां कमलके मध्यसमान पीतवर्ण सर्प नजर पडेगा· नंतर लाल म
ट्टी· नंतर कुरुविंद पाषाण· यह चिन्ह है ऐसा कहना॥२८॥ सप्तपर्ण (छितवन) वृक्ष
वल्मीकसे वेष्टित होय तो उस्के उत्तरमे एक हाथ आगे पांच पुरुषके नीचे जल है उहां यह
चिन्ह है॥२९॥अर्धपुरुषखोदनेसे· हरामेंडुका मिलेगा· नंतर हरतालके समान पीत
भूमी· नंतर काला पाषाण· उस्के नीचे उत्तरमे उत्तम जल बहनेवाली शिरा (झरा) है॥३०॥
सर्ववृक्षमे जिस्के नीचे (मूलमे) मेंडुका नजर पडे उस वृक्षके उत्तरमे एक हाथ आगे साढे
चार पुरुषके नीचे जल है॥३१॥ इहां यह चिन्ह· एक पुरुष खोदनेपर· नेउर नजर प
डेगा· नंतर नीली मट्टी· नंतर पीतवर्ण· नंतर श्वेतवर्ण मट्टी· उस्के नीचे मेंडुकाके व
र्णका पाषाण नजर पडेगा॥३२॥ करंजवृक्षके दक्षिणमे वल्मीक (सर्पवासस्थान) न
जर पडे तो वह वृक्षके दक्षिणमे दोहाथ आगे साढेतीन पुरुषके नीचे जल है॥३३॥ इ
हां चिन्ह· अर्धपुरुषखोदनेपर कच्छ (कछुवा) नजर पडेगा उहां प्रथम पूर्वमे झ
रा उत्पन्न होगा· नंतर उत्तरमे दुसरा झरा मीठे जलका निकलेगा· नंतर हरा पाषा
ण उस्के नीचे जल उत्तम है॥३४॥ मधूक (मौहा) वृक्षके उत्तरमे सर्पगृह (वल्मीक)
नजर पडे तो· वह वृक्षके पश्चिममे पांच हाथ भूमी छोडके आगे साढेसात पुरुषके
नीचे जल है· इहां चिन्ह· प्रथम॥३५॥ एक पुरुष खोदनेपर बडा सर्प नजर पडेगा·

वल्मीकः स्निग्धो दक्षिणेन तिलकस्य सकुशदूर्वश्चेत्। पुरुषैः पंच-
भिरंभो दिशि वारुण्यां शिरा पूर्वा॥ ३७॥ सर्पावासः पश्चाद्यदा कदंब
स्य दक्षिणेन जलं॥ परतो हस्तत्रितयात्षड्भिः पुरुषैस्तु रीयोनैः॥
३८॥ कौवेरी चात्र शिरा वहति जलं लोहगंधि चाक्षोभ्यं॥ कनकनिभो मं
डूको नरमात्रे मृत्तिका पीता॥ ३९॥ वल्मीकसंवृत्तो यदि तालो वा भव
ति नालिकेरो वा॥ पश्चात्षड्भिर्हस्तैर्नरैश्चतुर्भिः शिरा याम्या॥ ४०॥
याम्येन कपित्थस्याहिसंश्रयश्चेदुदग्जलं वाच्यं॥ सप्त परित्यज्य क-
रान्खात्वा पुरुषान्जलं पंच॥ ४१॥ कर्बुरकोहिः पुरुषे कृष्णा मृत्पुट
भित्पिच्च पाषाणः॥ श्वेता मृत्पश्चिमतः शिरा ततश्चोत्तरा भवति॥
४२॥ अश्मंतकस्य वामे बदरी वा दृश्यते हि निरुपो वा॥ षड्भिरुदक्.
तस्य करैः सार्धे पुरुषत्रये तोयं॥ ४३॥ कूर्मः प्रथमे पुरुषे पाषाणो धू
सरः ससिकता मृत्॥ आदौ शिरा च याम्या पूर्वोत्तरतो द्वितीया च॥ ४४

नन्तर धूम्रवर्ण भूमी· कुलथी के वर्ण का पाषाण· उस्के नीचे माहेंद्री (पूर्व तरफकी)
शिरा फेनयुक्त जलसे निरंतर बहती है॥ ३६॥ तिलक (सौवर्चल) के दक्षिण मे कुश·
और दूर्वा इनकरके ‑‑ युक्त आर्द्र वल्मीक होय तो· वह वृक्षके पश्चिममे पांच हाथ
भूमी छोडके आगे पांच पुरुषके नीचे पूर्व मे जल शिरा है॥ ३७॥ कदंब वृक्षके पश्चि
ममे वल्मीक होय तो· वह वृक्षके दक्षिणमे तीन हाथके आगे साढे चार पुरुषके नी
चे जल है॥ ३८॥ इहां उत्तरमे शिरा बहती है· वह जल लोहगंधयुक्त अक्षोभ (स्थि
र) है· इहां चिन्ह· सुवर्णके समान रंगका मेंडुका एक पुरुष पर नजर पडेगा नंतर
पीतवर्ण मृत्तिका· उस्के नीचे अक्षोभ (स्थिर) जल है॥ ३९॥ वल्मीकसे वेष्टित ताड
वृक्ष वा नारिकेलका वृक्ष होय तो वह वृक्षके पश्चिम मे ६ हाथ आगे चार पुरुषके
नीचे दक्षिण तरफ जलशिरा है॥ ४०॥ कपित्थ (कैथ) वृक्षके दक्षिणमे वल्मीक हो
य तो· वह वृक्षके उत्तरमे सात हाथ भूमी छोडके पांच पुरुष खोदनेपर जल है ऐसा
कहना॥ ४१॥ चिन्ह· एक पुरुषपर कर्बुर (चित्रवर्ण) सर्प· नंतर काली मट्टी नंतर
पुटभित् ऐसा पाषाण· नंतर पश्चिममे सफेद मट्टी· उहां उत्तरमे शिरा झरा है॥ ४२
अश्मंतक (आपटा) वृक्षके उत्तरमे बेर वा वल्मीक नजर पडे तो वह वृक्षके उत्तरमे ६ हा
थ भूमी छोडके साढे तीन पुरुष खोदनेपर जल है॥ ४३॥ चिन्ह· प्रथम एक पुरुष खो
दनेपर कछुआ नजर पडेगा· नंतर धूसरवर्ण पाषाण· नन्तर रेतीकी मट्टी· उहां प्र
थम दक्षिणमे झरा लगेगा नंतर ईशानमे झरा लगेगा॥ ४४॥ हरिद्रा (दारुहरदी वा
शणपर्णी· वृक्षविशेष) वृक्षके उत्तरमे वल्मीक होय तो· वह वृक्षके पूर्वमे तीन हाथ

वामेनहरिद्रुतरोर्वल्मीकश्चेन्नतोजलंपूर्वे॥हस्तत्रितयेपुरुषैःसप्तं
शैःपंचभिर्भवति॥४५॥नीलोभुजगःपुरुषेमृत्पीतामरकतोपमश्चा
श्मा॥कृष्णाभूःप्रथमंवारुणीशिरादक्षिणेनान्या॥४६॥जलपरि
हीनेदेशेदृश्यंतेनूपजानिचिन्हानि॥वीरणदूर्वामृदवश्चयत्रनस्मि
न्जलंपुरुषे॥४७॥भार्ङ्गीत्रिवृतादंतीसूकरपादीचलक्ष्मणाचैव॥न
वमालिकाचहस्तद्वयेंबुयाम्येत्रिभिःपुरुषैः॥४८॥स्निग्धाःप्रलंब
शाखावामनविटपद्रुमाःसमीपजलाः॥सुषिराजर्जरपत्रारूक्षाश्च
जलेनसंत्यक्ताः॥४९॥तिलकाम्रातकवरुणकभल्लातकबिल्वतिंदु
कांकोल्लाः॥पिंडारशिरीषांजनपरूषकावंजुलातिबलाः॥५०॥एते
यदिसुस्निग्धावल्मीकैःपरिवृतास्ततस्तोयं॥हस्तैस्त्रिभिरुत्तरतश्च
तुर्भिरर्धेन चनरस्य॥५१॥अतृणेसतृणायस्मिन्सतृणेतृणवर्जि
तामहीयत्र॥तस्मिन्शिराप्रदिष्टावक्तव्यंवाधनंतस्मिन्॥५२॥ ॥

भूमीछोडके यवने छ पुरुषखोदनेपरजलहै॥४५॥चिन्ह एकपुरुषपर नीलवर्ण
सर्पनजरपडेगा नंतर पीली मट्टी नंतर हरा पाषाण नंतर काली मट्टी उस्मे प्रथम
पश्चिममे शिरा झरा लगेगा नंतर दुसरा दक्षिणमे झरा लगेगा॥४६॥जलहीन दे
शमे जिसस्थलमे वीरण(कालाखसतृणवि॰) दूर्वायहजलस्थानज चिन्ह देखाते
है वहस्थानमे एकपुरुष खोदनेपर जलहै ऐसा कहना॥४७॥ भारंगी त्रिवृता
(निसोत लायचि) दंती(वृक्षवि॰) उडूकटकी लक्ष्मणा अडहुर मुचुकुंद नवमालि
का(वेला) यह औषधीजहांहोय उस्के दक्षिणमे दोहात आगे तीनपुरुषके नीचे
जलहै॥४८॥स्निग्ध लंबीडारके ह्रस्व विस्तीर्ण ऐसे वृक्षकेपासजल रहता है सु
षिर(भीतर पोला) जर्जरपत्र रूक्ष ऐसे वृक्षके पास जल नही॥४९॥ तिलक वृक्ष
आम्रातक(अमडा) वरुण(वायवर्णा) भल्लातक(भीलावा) वेल तिंदुक(तेंदू) अंको
ल पिंडार(पेंडारू) शिरीष(सर्सो) अंजन(कालामुना) पुरुष(फालसा) वंजुल
(अशोक) अतिवला(विकंकत)॥५०॥ यह वृक्ष जो स्निग्ध और वल्मीकसे वेष्टित हो
यतोवह वृक्ष से उत्तरमे तीनहात आगे साढेचारपुरुषके नीचे जलहै॥५१॥ तृ
ण उत्पन्न होनेवाले जमीनपर तृणन होय किंवान होनेवाले जमीनपर तृण उ
त्पन्न होयतो उहां नीचे जलका झराहै अथवा धनहै(सोना चांदी द्रव्य धातु अ
न्यरत्नीजपदार्थ) है ऐसा कहना इहां साढेचारपुरुषके नीचे पानी है ऐसा कह
ना ऐसा कोई कहते हैं॥५२॥ पलाशादि अकंटकवृक्ष खदिरादि कंटकयुक्त वृक्ष
होयअथवा कंटकयुक्त वृक्षमे अकंटक वृक्ष होयतो वहवृक्षके पश्चिममे तीन

कंटक्यकंटकानांव्यत्यासेंभस्त्रिभिःकरैःपश्चात्॥ खात्वापुरुषत्रि
तयंत्रिभागयुक्तंधनंवास्यात्॥५३॥ नदतिमहीगंभीरंयस्मिंश्चर
णाहताजलंतस्मिन्॥ सार्धैस्त्रिभिर्मनुष्यैःकौबेरीतत्रचशिरास्या
त्॥५४॥ वृक्षस्यैकाशाखायदिविनताभवतिपांडुरावास्यात्॥वि
ज्ञातव्यंशाखातलेजलंत्रिपुरुषंखात्वा॥५५॥ फलकुसुमविकारो
यस्यतस्यपूर्वेशिरात्रिभिर्हस्तैः॥ भवतिपुरुषैश्चतुर्भिःपाषाणो
ऽधःक्षितिःपीता॥५६॥ यदिकंटकारिकाकंटकैर्विनादृश्यतेसितैःकु
सुमैः॥तस्यास्तलेंबुवाच्यंत्रिभिर्नरैरर्धपुरुषेच॥५७॥ खर्जूरीद्वि
शिरस्कायत्रभवेज्जलविवर्जितेदेशे॥ तस्याःपश्चिमभागेनिर्दे
श्यंत्रिपुरुषेवारि॥५८॥ यदिभवतिकर्णिकारःसितकुसुमःस्यात्प
लाशवृक्षोवा॥सव्येनतत्रहस्तद्वयेंबुपुरुषत्रयेभवति॥५९॥ऊ
ष्मायस्यांधात्र्यांधूमोवातत्रवारिनरयुग्मे॥ निर्देष्टव्याचशिरामह
तातोयप्रवाहेण॥६०॥ यस्मिन्क्षेत्रोद्देशेजातंसस्यंविनाशमुप
याति॥स्निग्धमतिपांडुरंवामहाशिरानरयुगेतत्र॥६१॥ ७॥

हाथआगे पवनेचार पुरुष खोदनेपरजल लगेगा॰ अथवा द्रव्यमिलेगा॰॥५३॥ पांव
से ताडनकरनेसे भूमीकाशब्द गंभीर(मधुर) जहांहोयवहस्थलमेसाढेतीन
पुरुष खोदनेपरउत्तरमेशिरा(झरा) है॰॥५४॥ वृक्षकी एकशाखा(डार) विनत
(झुकी) होय किंवा पांडुरवर्णहोयतोवहडारकेनीचे तीनपुरुषखोदनेपरज
लहैऐसाजानना॰॥५५॥ जिसवृक्षकेफलको वा पुष्पको विकार(अन्यवृक्षफल
पुष्प सदृशत्व) होय॰ वहवृक्षके पूर्वमे तीनहाथआगेचारपुरुषखोदनेपरजल
लगेगा॰ यहांचिन्ह नीचे पत्थर औरपीतवर्ण भूमीहोगी॰॥५६॥ कंटकारिका(भ
टकटैय्या॰सांभरी॰) वृक्षकांटेसे रहित और सफेद पुष्पसेयुक्त नजरपडेतोउ
स्केनीचे साढेतीनपुरुषपरजलहै॰॥५७॥ जिसजलरहितदेशमेदोशिरका(दोडा
रका॰) खर्जूरी(खजूरका) वृक्ष॰जहांहोयउस्केपश्चिममे दोहाथआगेती
नपुरुषखोदनेपरजलहैऐसाकहना॰॥५८॥ कर्णिकारवृक्ष अथवा पलाशयह
दोनोवृक्षश्वेतपुष्पकेहोयतोउनकेदक्षिणमेदोहाथभूमीछोडके दोपुरुषखोद
नेपरजलहै॰॥५९॥ बाफ वा धूआं जिसभूमीपर होयतहांदोपुरुषकेनीचे बडीज
लप्रवाहसेयुक्तशिराहै ऐसाकहना॰॥६०॥ जिसखेतमे भयाधान्य नाशपावे॰
अथवा स्निग्धधान्य बहुत होयवासफेदहोय॰ वहक्षेत्रमे दोपुरुषकेनीचेबडा
झराहै॰॥६१॥ मरुदेश(जलरहितदेश मारवाड) उहांकी शिराकहतेहैं॰ वह

मरुदेशे भवति शिरा यथा तथातःपरं प्रवक्ष्यामि ॥ ग्रीवा करभाणामि
व भूतलसंस्थाः शिरा यांति ॥ ६२ ॥ पूर्वोत्तरेण पीलोर्यदि वल्मीको जलं
भवति पश्चात् ॥ उत्तरगमना च शिरा विज्ञेया पंचभिः पुरुषैः ॥ ६३ ॥ चि
न्हं दर्दुर आदौ मृत्कपिला ततः परं भवेद्धरिता ॥ भवति च पुरुषेऽधोश्मा त
स्य तले वारि निर्देश्यं ॥ ६४ ॥ पीलोरेव प्राच्यां वल्मीको तोर्ध पंचमैर्ह
स्तैः ॥ दिशि याम्यायां तोयं वक्तव्यं सप्तभिः पुरुषैः ॥ ६५ ॥ प्रथमे पुरुषे
भुजगः सितासितो हस्तमात्रमूर्तिश्च ॥ दक्षिणतो वहति शिरा सक्षारं
भूरिपानीयं ॥ ६६ ॥ उत्तरतश्च करीराद्यदि निलये दक्षिणे जलं स्वादु
॥ दशभिः पुरुषैर्ज्ञेयं पुरुषे पीतोऽत्र मंडूकः ॥ ६७ ॥ रोहीतकस्य पश्चा
द्यदि वासश्चेत्त्रिभिः करैर्याम्ये ॥ द्वादशपुरुषान् खात्वा सक्षारा पश्चि
मेन शिरा ॥ ६८ ॥ इंद्रतरोर्वल्मीकः प्राग्दृश्यः पश्चिमे शिरा हस्ते ॥ खा
त्वा चतुर्दश नरान् कपिला गोधा नरे प्रथमे ॥ ६९ ॥ यदि वा सुवर्णना
म्नस्तरोर्भवेद्वामतो भुजंगगृहं ॥ हस्तद्वये तु याम्ये पंचदशनरावसानेषु ७०

देशमे ऊंटके गरदन प्रमाण जमीनमे शिरा जाती है (बहुनगहिरी) ६२ ॥ पीलु (अखो
डवा किंकवन) वृक्षके ईशानमे वल्मीक होयतो वह वृक्षके पश्चिममे साढेचार हा
थ आगे पांच पुरुषके नीचे उत्तरमे शिरा है ऐसा जानना ॥ ६३ ॥ चिन्ह प्रथम एक पु
रुष खोदनेपर मेंडुका नंतर कपिलावर्ण मृत्तिका नंतर हरी मृत्तिका नंतर पत्थर
उस्के नीचे जल है ऐसा कहना ॥ ६४ ॥ पीलू वृक्षके ही पूर्वमे वल्मीक होयतो वह
वृक्षके दक्षिणमे साढेपांच हाथ छोडके सात पुरुषके नीचे जल है ऐसा कहना ॥ ६५
॥ चिन्ह प्रथम पुरुषके नीचे काला सफेद हस्तमात्र लंबा सर्प लगेगा उस्के नीचे
दक्षिण तरफसे शिरा लगेगी उस्मेसे खारा बहुत जल वहता है ॥ ६६ ॥ करीर
(करील) वृक्षसे उत्तरमे वल्मीक होयतो वह वृक्षके दक्षिणमे साढेचार हाथ आगे
दस पुरुषके नीचे मिष्ट जल है चिन्ह एक पुरुष नीचे पीतवर्ण मेंडुका नजर पडेगा
॥ ६७ ॥ रोहीतक (रक्तरोडा) वृक्षके पश्चिममे वल्मीक होयतो वह वृक्षके दक्षिण
मे तीन हाथ आगे १२ पुरुष खोदनेपर पश्चिममे खारे पानीकी शिरा नजर पडेगी
॥ ६८ ॥ इंद्रतरु (अर्जुन वा देवदारु वा सफेद कोरई) वृक्षके पूर्वमे वल्मीक होय
तो वह वृक्षके पश्चिममे एक हाथ भूमी छोडके १४ पुरुष खोदनेपर नीचे शिरा
बहती है चिन्ह प्रथम पुरुषके नीचे गोधा (गोह) कपिलवर्ण नजर पडेगी ॥ ६९
॥ सुवर्ण (नागकेशर वा पीलाखस) नामक वृक्षके उत्तरमे वल्मीक होयतो वह
वृक्षके दो हाथ आगे दक्षिणमे १५ पुरुष खोदनेपर खारा जल है ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ॥

एक.निभा यत्रमहीतृणतरुवल्मीकगुल्मपरिहीना॥तस्यां यत्र विकारो भवति धरित्र्यांजलंतत्र॥८९॥ यत्रस्निग्धानिम्नासवालुकासानुनादिनीवास्यात्॥तत्रार्धपंचमैर्वारिमानवैःपंचभिर्यदि वा॥९१॥ स्निग्धतरूणांयाम्ये नरैश्चतुर्भिर्जलंप्रभूतंच॥तरुगहनेपिहि विकृतो यस्तस्मात्तद्देववदेत्॥९२॥ नमते यत्र धरित्री सार्धेपुरुषेंबुजांगलानूपे॥कीटावायत्रविनालयेनबहवोंबुतत्रापि॥९३॥उष्णाशीनाचमहीशीतोष्णांभस्त्रिभिर्नरैःसार्धैः॥इंद्रधनुर्मत्स्योवावल्मीकोवाचतुर्हस्तात्॥९४॥वल्मीकानांपंक्त्यांयद्येकोभ्युच्छ्रितःशिरातदधः॥शुष्यतिनरोहतेवासस्यंयस्यांचतत्रांभः॥९५॥न्यग्रोधपलाशोदुंबरैःसमेतैस्त्रिभिर्जलंतदधः॥वटपिप्पलसमवायेतद्वद्वाच्यंशिराचोदक्॥९६॥आग्नेयेयदिकोणेग्रामस्यपुरस्यवाभवतिकूपः॥नित्यंसकरोतिभयंदाहंचसमानुषंप्रायः॥९७॥

यहपूर्वोक्तलक्षण अनूप(उदकस्थल·बहूदक)देशमेकहना·स्वल्पोदक देशमेतो यही लक्षणसे पांच पुरुष कहना· यही लक्षण से मरुदेश(निर्जलदेश) इस्मेसात पुरुषसे जल कहना॥८९॥जहांएकही रंगकी भूमी तृण·वृक्ष·वल्मीक·गुल्म·इनसेरहित·ऐसीरहे उस्केबीचमे दुसरे रंगकी मृत्तिका का भागहोयतो तहांजलहै ऐसाकहना॥॥९०॥जहां आर्द्र· निम्न(उनती)वालुकायुक्त·सशब्द·ऐसीभूमीहोयतहां साढे पांचपुरुषकेनीचे अथवा पांचपुरुषकेनीचेजलहै॥९१॥स्निग्धवृक्षके दक्षिणमे चार पुरुषकेनीचे बहुतजलहै ऐसाकहना·जहांबहुतवृक्षहोय उस्मेएकवृक्ष अन्यवृक्षके समानहोयतोवहवृक्षकेदक्षिणमे चारपुरुषकेनीचेजलहै॥९२॥जहां पांव मारनेसे जमीननीचेजाय ऐसेजंगलमे वाजलस्थानमे डेढपुरुषकेनीचेजलहै·गृहविना कीट(कृमि चिटी इ॰)बहुतहोय उहां भी डेढपुरुषकेनीचेजलहै॥९३॥सर्व उष्णभूमीहोय उस्मेजहां शीतभूमी होय· अथवा सर्वशीतभूमीहोय उस्मेउष्ण भूमीहोयतहां साढेतीन पुरुषकेनीचेजलहै·अथवा जहां(सूर्यकिरणकेयोगसे)इंद्रधनुष्यवा मत्स्याकार नजर पडे अथवा वल्मीकनजरपडे·तहांजंगल और जलस्थलजगेमे ४ हाथ आगे पानीहै॥९४॥वल्मीककी पंक्ती होय उस्मेएक ऊंचा होयतो उस्केनीचे चार हाथ परजलहै·जहां धान्य शुष्क होताहै अथवा बहुतानही तहां चार हाथ परजलहै॥९५॥वट·पलाश·गुलर·यहतीन एकत्रहोय तहां नीचेजलहै·वट पीपल यह एकत्रहोय तहांभीउत्तरमे चार हाथ परजलहै॥९६॥ग्रामके अथवा नगरके आग्नेयकोणमे कूप(जलाशय)होयतो वह नित्य भय और मनुष्यको दाह प्रायः करताहै ९७

नैर्ऋतकोणेबालभयंचवनिताभयंचवायव्ये॥दिक्त्रयमेतत्त्यक्त्वा शेषासुशुभावहाःकूपाः॥९८॥सारस्वतेनमुनिनादगार्गलंयत्कृतंतद्वलोक्य॥आर्याभिःकृतमेतद्वृत्तैरपिमानवंवक्ष्ये॥९९॥स्निग्धाएतःपादपगुल्मवल्योनिश्छिद्रपत्राश्चततःशिरास्ति॥पद्मक्षुरोशीरकुलाःसगुंड्राःकाशाःकुशावानलिकानलोवा॥१००॥खर्जूरजंब्वर्जुनवेतसाःस्युःक्षीरान्वितावाद्रुमगुल्मवल्ल्यः॥छत्रेभनागाःशतपत्रनीपाःस्युर्नक्तमालाश्चससिंदुवाराः॥१०१॥विभीतकोवामदयंतिकाच्चयत्रास्तितस्मिन्पुरुषत्रयेंभः॥स्यात्पर्वतस्योपरिपर्वतोन्यस्तत्रापिमूलेपुरुषत्रयेंभः॥१०२॥यामौंजकैःकाशकुशैश्चयुक्तानीलाचमृद्यत्रसशर्कराच॥तस्यांप्रभूतंसुरसंचतोयंकृष्णाथवायत्रचरक्तमृद्वा॥१०३॥सशर्करातामृमहीकषायंक्षारंधरित्रीकपिलाकरोति॥आपांडुरायांलवणंप्रदिष्टंमिष्टंपयोनीलवसुंधरायां॥१०४

नैर्ऋत्यकोणमे होयतो बालभय करताहै· वायव्य कोणमेहोयतो स्त्रीकोभय करता है· यहतीन दिशाछोडके अन्यदिशामेकूपशुभसूचकहोताहै॥९८॥सारस्वतमुनीने जो दगार्गलकियावहदेखके यह हमने आर्याछंदमेकिया अबमानवदगार्गल· वृत्तसे(श्लोकछंदसे) कहतेहैं॥९९॥ जिसस्थलमेवृक्ष· गुल्म· वल्ली· यहस्निग्ध(प्रफुल्लित) होयतहां औरछिद्ररहित पत्रकेवृक्षहोय तहांतीनपुरुषकेनीचेजलशिराहै ऐसाकहना· स्थलकमल· गोखरू· खस· कचनार· नागरमोथा दर्भजाति· सुगंध्योषधिवि० बागुलसबू नरकट॥१००॥ खर्जूर· जामुन· अर्जुन· वेत· क्षीरवृक्ष· गुल्म·(एकमूल शाखासमूह) औरवल्ली· छत्र·(सुगंधरोहिततृण) इभ(रतालू) नाग·(नागकेसर) कमलकरंज· मेउडी॥१०१॥ बेहेडा· वेला· यहवृक्षजिसस्थलमेहोंय वहस्थलमे तीनपुरुषकेनीचेजलहै ऐसाकहना· जहां पर्वतपर दुसरापर्वत होयतहां पर्वतके मूलमे तीनपुरुषकेनीचजलहै॥१०२॥जो भूमी· मूंज· काश· कुश· यहतीनप्रकारकेतृण· इसमेसेकोईभी तृणयुक्त· नीलवर्ण· वालुकायुक्त अथवा कृष्णवर्णवारक्तवर्ण ऐसेभूमीकेविषे बहुतऔर सुरस जलरहताहै॥१०३॥शर्करा(रेतीसमान·कंकर इ०) युक्तऔरताम्रवर्ण भूमीकषाय(कटु) जलकारक· कपिल(पिंगट) वर्णभूमी क्षारजलकरतीहै· धूसरवर्णभूमीकेविषे लवण(नोन) जल होताहै· नीलवर्णभूमीकेविषे मिष्टजल होताहै॥१०४॥ साकवृक्ष· सलकावृक्ष· अर्जुनवृक्ष· बिल्ववृक्ष· सर्जवृक्ष· सेवनवृक्ष· निंबवृक्ष· धव वृक्ष· सीसोवृक्ष· औरच्छिद्रयुक्त पर्णवृक्ष ऐसेवृक्ष· गुल्म· वल्ली· य

शाकाश्वकर्णार्जुनबिल्वसर्जाःश्रीपर्ण्यरिष्टाधवशिंशपाश्च॥छिद्रै
श्चपर्णैर्द्रुमगुल्मवल्ल्यो रूक्षाश्च दूरेंबु निवेदयंति ॥१०५॥सूर्याग्नि
भस्मोष्ट्रखरानुवर्णा या निर्जला सा वसुधा प्रदिष्टा ॥रक्तांकुराःक्षीर
युताः करीरा रक्ता धरा चेज्जलमश्मनोधः॥१०६॥वैडूर्यमुद्गांबुदमे
चकाभा पाकोन्मुखोदुंबरसन्निभा वा॥भृंगांजनाभा कपिलाथवा
या ज्ञेया शिला भूरिसमीपतोया॥१०७॥पारावतक्षौद्रघृतोपमा वा
क्षौमस्य वस्त्रस्य च तुल्यवर्णा॥ या सोमवल्ल्याश्च समानरूपा सा
प्याशु तोयं कुरुतेक्षयं च॥१०८॥नानाैः समेता पृषतैर्विचित्रैरापांडु
भस्मोष्ट्रखरानुरूपा॥ भृंगोपमांगुष्ठिकपुष्पिका वा सूर्याग्निवर्णा
च शिला वितोया॥१०९॥ चंद्रातपस्फटिकमौक्तिकहेमरूपा याश्चेंद्र
नीलमणिहिंगुलुकांजनाभाः॥सूर्योदयांशुहरितालनिभाश्च याः
स्युस्ताः शोभना मुनिवचोत्र च वृत्तमेतत्॥११०॥एता ह्यभेद्याश्च
शिलाः शिवाश्च यक्षैश्च नागैश्च सदाभिजुष्टाः॥ येषां च राष्ट्रेषु भवं
ति राज्ञां तेषामवृष्टिर्न भवेत्कदाचित्॥१११॥छ॥ छ॥ छ॥ छ॥

ह जहां होय तहां से दूर जल है ऐसा कहते हैं ॥१०५॥ सूर्य· अग्नि· भस्म· ऊंट· गर्दभ
इनके समान वर्ण जिस भूमी का है· वह निर्जल कथन किया जहां करीर वृक्ष· रक्तपल्ल
व और क्षीर इस करके युक्त होंय और रक्त भूमी जो होय तो वहां पाषाण के नीचे ज
ल है ऐसा कहना ॥१०६॥ वैडूर्यमणि· मूंगा· मेघ· मेचक (मेघा) इनके समान और कृ
ष्णवर्ण वा गुलर के फल समान अथवा भ्रमर· कज्जल· इनके समान अथवा कपिल
वर्ण जो शिला (पाषाण·) उसके नीचे जल है ऐसा समझना ॥१०७॥ पारावत (कबू
तर· पक्षी·) मधु· घृत· इनके समान· अथवा रेसमी वस्त्र के समान वा सोमवल्ली के स
मान· जो शिला वह भी अक्षय शीघ्र जल करती है·॥१०८॥ नाना प्रकार के लाल बिंदू
से युक्त· थोडा पांडुर वर्ण· भस्म· ऊंट· गर्दभ· इनके समान· भ्रमर के समान· अंगु
ष्ठ पुष्पिका (वृ॰ वि॰) सूर्य और अग्नि इनके समान वर्ण की ऐसी शिला वह जलरहि
त जानना·॥१०९॥ चंद्रकांती समान· स्फटिकमणि· मौक्तिक· सुवर्ण· इंद्रनीलम
णि· हिंगुल· कज्जल· इनके समान· सूर्योदय के किरण· हरताल· इनके समान जो
शिला वह सर्व शुभ (जलयुक्त·) ऐसा जानना· ऐसा मुनी ने कहा है·॥११०॥ यह पू
र्वोक्त शिला अभेद्य (तोडना नहीं·) कारण· कल्याणकारक और यक्ष· नाग· इन कर
के सर्वकाल सेवित (आश्रित) है ऐसी शिला जिस राजा के राज्य मे होय तहां क
धी भी अवर्षण होगा नहीं·॥१११॥ कारण होय तो शिला फोडने का उपाय)

भेदं पदा नैति शिला न दानीं पालाशकाष्ठैः सह तिंदुकानां ॥ प्रज्वालयित्वानलमग्निवर्णा सुधांबुसिक्ता प्रविदारमेति ॥ ११२ ॥ तोयं श्रृतं मोक्षकभस्मना वा यत्सप्तकृत्वः परिषेचनं तत् ॥ कार्यं शरक्षारयुतं शिलायाः प्रस्फोटनं वन्हिवितापितायाः ॥ ११३ ॥ तक्रकांजिकसुराः सकुलत्था योजितानि बदराणि च तस्मिन् ॥ सप्तरात्रमुषितान्यभितप्तां दारयंति हि शिलां परिषेकैः ॥ ११४ ॥ नैंबं पत्रं त्वक् च नालं तिलानां सापामार्गं तिंदुकं स्याद्गुडूची गोमूत्रेण स्रावितः क्षार एषां षट्कृत्वोऽतस्तापितो भिद्यते श्मा ॥ ११५ ॥ आर्कं पयो हुडविषाणमषीसमेतं पारावताखुशकृता च युतं प्रलेपः ॥ टंकस्य तैलमथितस्य ततोऽस्य पानं पश्चाच्छितस्य न शिलासु भवेद्विघातः ॥ ११६ ॥ क्षारे कदल्या मथितेन युक्ते दिनोषिते पायितमायसं यत् ॥ सम्यक्छितं चाश्मनि नैति भंगं न चान्यलोहेष्वपि तस्य कौंठ्यं ॥ ११७ ॥ पाली प्रागपरायतांबु सुचिरं धत्ते न याम्योत्तरा कल्लोलैरवदारमेति मरुता सा प्रायशः प्रेरितैः ॥ तां चेदिच्छति सारदारुभिरपां संपातमावारयेत् पाषाणादिभिरेव वा प्रतिचयं क्षुण्णं द्विपाश्वादिभिः ॥ ११८ ॥ छ ॥ छ ॥

शिला फूटे नहीं तो तत्काल तेंदूके और पलाशके काष्ट इसकरके अग्नि प्रज्वलित करके वह शिला लाल करना और चूनेके पानीसे ठंढी करना तो फूटती है ॥ ११२ ॥ मोसक (मरुवक जमीरी नींबु) वृक्षके भस्ममे गरम किया जल शर (सरनामक तृण) तृणके भस्मसे युक्त करके गरम किये शिलाका सातवार सिंचन पुनः पुनः गरम करके करना तो वह शिला फूटती है ॥ ११३ ॥ तक्र (मठा) कांजी मद्य कुलित्थ यह एकत्र करके उसमे बेर डालना और सात रात्र रखना उस करके गरम शिला ठंढी करना तो फूटती है ॥ ११४ ॥ निंबके पत्र और त्वचा तिल नाल चिचिंडा तेंदुवा गुरुच इनका भस्म गोमूत्रसे युक्त करके उसे गरम किया पाषाण (पत्थर) ६ बार पुनः पुनः गरम करके सिंचन करे तो फूटती है ॥ ११५ ॥ यह दो श्लोकका अर्थ (अ० ५० श्लो० २५।२६) इसमे कहा है प्रथम श्लोकमे का टंकस्य यह पदका अर्थ (टांकी इ०) ऐसा है ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ पूर्वपश्चिम पाली (वापी कुंवा) बहुत दिन जल धारण करते हैं दक्षिणमे वापि कुंवा बहुत दिन रहता नहीं कारण वायूसे प्रेरित जो तरंग उसकरके उसका विदारण बहुधा प्रायः होता है ऐसे कुंवाको जो अच्छा करनेकी इच्छा करे तो जिधर जलतरंग जाते होंय उधर दृढकाष्ठसे वा पत्थरसे बा धूंजे ईंटसे जल पतन स्थल

ककुभवटाम्रप्लक्षकदंबैः सनिचुलजंबूवेतसनीपैः॥ कुरवकतालाशोकमधूकैर्बकुलविमिश्रैश्चावृततीरं॥११९॥ द्वारंच नैर्वाहिकमेकदेशेकार्यं शिलासंचितवारिमार्गं॥ कोशस्थितंनिर्विवरंकपाटंकृत्वा ततःपांशुभिरावपेत्तं॥१२०॥ अंजनमुस्तोशीरैःसराजकोशातकामलकचूर्णैः॥ कतकफलसमायुक्तैर्योगःकूपेप्रदातव्यः॥१२१॥ कलुषंकटुकंलवणंविरसंसलिलंयदिवाशुभगंधिभवेत्॥ तदनेनभवत्यमलंसुरसंसुसुगंधिगुणैरपरैश्चयुतं॥१२२॥ हस्तोमघानुराधापुष्यधनिष्ठोत्तराणिरोहिण्यः॥ शतभिषगित्यारंभेकूपानांशस्यतेभगणः॥१२३॥ कृत्वावरुणस्यबलिंवटवेतसकीलकंशिरास्थाने॥ कुसुमैर्गंधैर्धूपैःसंपूज्यनिधापयेत्प्रथमं॥१२४॥ मेघोद्भवंप्रथममेवमयाप्रदिष्टंज्येष्ठामतीत्यबलदेवमतादिदृष्ट्वा॥ भौमंदगार्गलमिदंकथितंद्वितीयंसम्यग्वराहमिहिरेणमुनिप्रसादात्॥१२५॥ इतिदगार्गलं॥

बनावना॰ प्रतिचयं(समूह) गज॰ अश्व॰ ऊंट॰ महिष॰ बैल॰ इनकरके भूमीकामर्दन करनातोबहुत मजबूत होताहै॰॥११८॥ ककुभ॰(अर्जुनवृक्ष॰) वट॰ आम्र॰ प्लक्ष॰ (इमली) कदंब॰ निंब जामुन॰ वेत॰ कटसरई॰ ताड॰ अशोक॰ मोहा॰ मोसरी॰ यहवृक्षोंसे बापी॰ कूवा इनकेतीर आच्छादितकरना॰(यहवृक्षलगावना॰)॥११९॥ शिलासेकियाहै जलकामार्ग जिस्को ऐसे एकतरफ निर्वाहार्थद्वारकरना॰ उस्के ऊपरबीचमे छिद्ररहितकपाटकरके अनंतरवह मृत्तिकासेयुक्तकरना॥१२०॥ अंजन॰(कुटकी॰ वाकृष्णकपास॰)नागरमोथा॰ खस॰ वननरोई॰ वाबडीनरोई इनकेचूर्णऔर कतकफल(निर्मलीकाबीज) इस्कायोगकरके कूंवेमेडालना॥१२१॥ उस्कर केमैला॰ कटु॰ खार॰ विरस॰ अशुभगंध ऐसाभीजलस्वच्छ॰ सुरस॰ सुगंधि यहगुणसे औरअन्यभीउत्तमगुणसेयुक्तहोतेहै॥१२२॥ हस्त॰ मघा॰ अनुरा॰ पुष्य॰ धनिष्ठा॰ उत्तरा॰ उ॰षा॰ उ॰भा॰ रोहिणी॰ शततारका यहनक्षत्रसमुदाय कूपके(कुंवा)आरंभमेप्रशस्तहै॥१२३॥ वरुण॰(अपांपति) इस्कोबलिदेके वटऔर वेत इस्की कीलकरके उस्की पुष्पगंध॰ धूप॰ इत्यादिकसे पूजाकरके शिरा(झरा) स्थानमे प्रथम स्थापनकरना॥१२४॥ ज्येष्ठीपौर्णिमाको ज्येष्ठानक्षत्रजायके मेघोद्भव जलप्रथमही अध्याय २३ उस्मे बलदेवादिकोंका मतदेखके हमनेकहाहै॰ यहअध्यायमे भूमिसंबंधि यहदुसरा दगार्ग(जलदेखना) हम(वराहमिहिरने)मुनिप्रसादसे उत्तमकथनकिया॥१२५॥ ॥इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांदगार्गलंनामचतुःपंचाशोध्यायः॥५४॥ ॐ॥

अथवृक्षायुर्वेदः॥ ॥प्रांतच्छायाविनिर्मुक्तानमनोज्ञाजलाशयाः॥ यस्माद्तोजलप्रांतेष्वारामान्विनिवेशयेत्॥१॥मृद्वीभूःसर्ववृक्षाणांहितातस्यांतिलान्वपेत्॥पुष्पितांस्तांश्चगृह्णीयात्कर्मैतत्प्रथमंभुवि॥२॥अरिष्टाशोकपुन्नागशिरीषाःसप्रियंगवः॥मंगल्याःपूर्वमारामेरोपणीयागृहेषुवा॥३॥पनसाशोककदलीजंबूलकुचदाडिमाः॥द्राक्षापालीवताश्चैवबीजपूरातिमुक्तकाः॥४॥एतेद्रुमाःकांडरोप्यागोमयेनप्रलेपिताः॥मूलच्छेदेथवास्कंधेरोपणीयाःप्रयत्नतः॥५॥अजातशाखान्शिशिरेजातशाखान्हिमागमे॥वर्षागमेचसुस्कंधान्यथादिक्प्रतिरोपयेत्॥६॥घृतोशीरतिलक्षौद्रविडंगक्षीरगोमयैः॥आमूलस्कंधलिप्तानांसंक्रामणविरोपणं॥७॥शुचिर्भूत्वातरोःपूजांकृत्वास्नानानुलेपनैः॥रोपयेद्रोपितश्चैवपत्रैस्तैरेवजायते॥८॥

अथवृक्षायुर्वेदः॥ ॥आसमंताद्बागमेछायासे रहित ऐसेजलाशय(कुंवा·तलाव इ॰)सुंदर देखातानही इसवास्ते जलाशयके चारोतरफ आराम (बाग) करना॥ ॥१॥ मधुरऔर कोमल (मृदु) भूमी सर्व वृक्षको हितकारक होतीहै· इसवास्ते वह भूमीपर तिल बोवे वह फूले तब उस्का तहां ही मर्दन करना· पेडलगावनेके भूमीपर यहकृत्य प्रथमकरना·॥२॥निंब· अशोक· पुन्नाग· शिरिष· प्रियंगु· यहवृक्षमंगलकारक इसवास्ते प्रथम बागमेवा गृहके पास यह लगावना·॥३॥कटहर· अशोक· केला· जामुन· बडहर· अनार· दाख· पालीवत·(वृक्षवि॰)विजोरा निंबू· वेला· वा मोतिया ॥४॥ यहवृक्ष कांडरोप्य हैं कहिये बीजहीसे पेड करनेकी गरजनही· यहवृक्षोंकी डारतोडके लगावेतोलगताहै· इसवास्ते तोडीहुई डारको गोबर गौका लगायके फेर वहजमीनमे लगावना· अथवा एकवृक्ष तोडके उस्के ऊपर वाडार पर दुसरे (सजातीय वा विजातीय) वृक्षके डारका कमलु करना· उस्के ऊपर मट्टीका लेपट देना· जिस्को फूल और फल आवनेहैं सोडार सजीव रहतीहै·॥५॥ अंकुर नफूटे वृक्ष शिशिरमे(माघफाल्गुनमे) अंकुर फूटे भए हेमंतमे(मार्गशीर्ष पौषमे) डारफूटे भए वर्षाकालमे(श्रावण भाद्रपदमे) लगावना· वृक्षउपाडलेनेके वा तोडनेके पूर्वमे उस्का जो अंग जिसदिशामे रहा वहअंग वही दिशामे होय ऐसा वृक्ष लगावना· (उपाडनेके पूर्वमे दिशासमझनेके वास्ते कुछ चिन्ह वगैरे करना·॥६॥ घृत·खस·तिल·मधु·वायविडंग·दूध·गौका गोबर· इस्का मूलसे शाखातक लेपकरके· वृक्ष अन्य देशमे लेजायके लगावे तोभी उगताहै·॥७॥ शुद्धहोयके· वृक्षको स्नानकरायके अनु

सायंप्रातश्च घर्मर्तौ शीतकाले दिनांतरे ॥ वर्षासु च भुवः शोषे सेक्तव्या रोपिता द्रुमाः ॥९॥ जंबूवेतसवानीरकदंबोदुंबरार्जुनाः ॥ बीजपूरकमृद्वीकालकुचाश्च सदाडिमाः ॥१०॥ वंजुलो नक्तमालश्च तिलकः पनसस्तथा ॥ तिमिरोऽम्रातकश्चैव षोडशानूपजाः स्मृताः ॥११॥ उत्तमं विंशतिर्हस्ता मध्यमं षोडशांतरं ॥ स्थानात्स्थानांतरं कार्यं वृक्षाणां द्वादशावरं ॥ ॥१२॥ अभ्याशजातास्तरवः संस्पृशंतः परस्परं ॥ मिश्रैर्मूलैश्च न फलं सम्यग्यच्छंति पीडिताः ॥१३॥ शीतवातातपै रोगो जायते पांडुपत्रता अवृद्धिश्च प्रवालानां शाखाशोषो रसस्रुतिः ॥१४॥ चिकित्सितमथैतेषां शस्त्रेणादौ विशोधनं ॥ विडंगघृतपंकाक्तान् सेचयेत्क्षीरवारिणा ॥१५॥ फलनाशे कुलत्थैश्च माषैर्मुद्गैस्तिलैर्यवैः ॥ शृतशीतपयः सेकः फलपुष्पाभिवृद्धये ॥१६॥ अविकाजशकृच्चूर्णस्याढके द्वे तिलाढकं ॥ सक्तुप्रस्थो जलद्रोणो गोमांसतुलया सह ॥१७॥ ॥ ॥ ॥

लेपादिकसे उसकी पूजाकरके लगावना रोपना· ऐसा रोपा भया वृक्ष वहीपत्तेसे होता है पूर्वके पत्र सूखते नहीं ॥८॥ ग्रीष्मऋतूमे लगाए वृक्ष सायंकालमे और प्रातःकालमे सिंचन करना· हेमंत और शिशिर ऋतूमे एक दिन छोडके सिंचन करना· वर्षाऋतूमे भूमी सूखे तब सिंचन करना ॥९॥ जामुन· वेत· पाकर· कदंब· गुलर· अर्जुन· निंबू· द्राक्ष· बडहर· अनार· अशोक· कांज· तिल· कटहर· तिमिर(वृक्षवि०) अम्रातक(अमडा) यह सोल वृक्ष जल सन्निध देशमे होनेवाले हैं ॥१०॥११॥ एक वृक्ष स्थानसे दुसरा वृक्ष रोपण· वीस हाथपर उत्तम· सोलहाथपर मध्यम· बारहाथपर कनिष्ठ होता है ॥ १२॥ समीप भए वृक्ष परस्पर स्पर्श करते हैं और मूल मिश्रित होते हैं इसवास्ते पीडित होयके उत्तम प्रकारके फल देते नहीं ॥१३॥ शीत· हवा और घाम इसकरके वृक्षको रोग होते हैं· वह रोगसे सफेद पत्ता· अंकुर नबढना· शाखा सूखना· रस चूना· यह होता है· इस चिन्हपरसे रोग भया ऐसा समझना ॥१४॥ ऐसे रोगग्रस्त वृक्षोंका प्रथम शस्त्रसे व्रणादिकका शोधन करना· वाभिरंग घृत· कर्दम(कीचड) यह एकत्र करके उसका लेप व्रणादिकपर करना· और जल और दूध एकत्र करके सिंचन करना तो रोग जाते हैं ॥१५॥ वृक्षके फल नाश होय वा गिरे गल जाय तो· कुलथी· उडदी· मूंग· तिल· जव यह पदार्थ दूधमे डालके सिझावना नंतर ठंढा होय तब उसकरके वृक्षका सिंचन करना तो फल और पुष्प इनकी वृद्धि होती है ॥१६॥ मेढा और बकरा· इनकी विष्टाका चूर्ण २ आढक तिलका चूर्ण १ आढक· जवका चूर्ण एक प्रस्थ· जल एक द्रोण और इतनेके बराबर गोमांस ॥१७॥

सप्तरात्रोषितैरेतैः सेकः कार्यो वनस्पतेः॥ वल्लीगुल्मलतानांच फलपु
ष्पाय सर्वदा॥१८॥ वासराणि दश दुग्धभावितं बीजमाज्ययुतहस्त
योजितं॥ गोमयेन बहुशो विरूक्षितं क्रोडमार्गपिशितैश्च धूपितं॥
१९॥ मत्स्यसूकरवसासमन्वितं रोपितंच परिकर्मितावनौ॥ क्षीर
संयुतजलावसेचितं जायते कुसुमयुक्तमेव तत्॥२०॥ तिंतिडीत्य
पि करोति वल्लरीं ब्रीहिमाषतिलचूर्णसक्तुभिः॥ पूतिमांससहितैश्च से
चिता धूपिता च सततं हरिद्रया॥२१॥ कपित्थवल्लीकरणाय मूलान्या
स्फोतधात्रीधववासिकानां॥ पलाशिनी वेतससूर्यवल्ली श्यामाति
मुक्तैः सहिताष्टमूली॥२२॥ क्षीरे शृते चाप्यनया सुशीते ताला शतं
स्थाप्य कपित्थबीजं॥ दिने दिने शोषितमर्कपादैर्मासं विधिस्त्वेष ततो
ऽधिरोप्यं॥२३॥ हस्तायतं तद्द्विगुणं गभीरं खात्वावटं प्रोक्तजलावपूर्णं॥
शुष्कं प्रदग्धं मधुसर्पिषा तत्प्रलेपयेद्भस्मसमन्वितेन॥२४॥७॥ ॥

यह एकत्र करके सप्तरात्र रखना उसकरके चाहे जिस ऋतूमे सिंचन करना तो· वल्ली·
गुल्म· लता· इनको सर्वकाल फलपुष्प आवते हैं·। आढक ज्ञान होनेके वास्ते प्रमा
ण·५ गुंजाका १ मासा· १६ मासे· १ तोला· ४ तोला· १ पल· ४ पल· १ कुडव ४ कुडव· १ प्रस्थ· ४ प्र
स्थ· १ आढक· ४ आढक· १ द्रोण· ४ द्रोण· १ मण· ४ मण· १ खंडी· १०० पल· १ तुला· २०
तुला कहिये १ भार॥१८॥ हाथमे घृत लगायके उस हाथसे दस दिन दूधसे कोई भी
वृक्षके बीजको सिंचन करना नंतर गोबरसे बहुत काल मर्दन करना नंतर वह·
बीज बरतनमे रखके· उसको सूवर और हरिण इनके मांसका धूप देना और मत्स्य
और सूवर इनके वसासे (चर्बी) युक्त करके पूर्वोक्त कमाए भूमीपर रोपण करना·
नंतर दूध और पानी एकत्र करके उसे सिंचन करना तो वह बीज त्वरित पुष्पयु
क्त होता है·॥१९॥२०॥ धान· उडदी· तिल· इनका चूर्ण और सत्तु और दुर्गंधियुक्त मां
स इससे सिंचन करके हरदीसे धूपित किया जो इमलीका वृक्ष· अतिकठिन रहते भी
नूतन अंकुर ऐसा होता है· फेर इतर वृक्ष होगा इसमे क्या संशय है·॥२१॥ कपित्थ
(कैथ) इसको नवीन पल्लव उत्पन्न करना हो यतो उपाय· कचनार· आंवरा· अडूसा· इ
न··· के मूल· वेत और मंदार अर्क· इनकी पर्णयुक्त वल्ली धतूरा थीवर इसके मूल·
ऐसे आठ डालके॥२२॥ औटाया दूध शीतल करके उसमे कैथका बीज छोडके १०० ताली
शब्दके कालतक रखना· वह बीज दिनमे सूर्यकिरणसे सुखावना· ऐसा विधी प्रति
दिन (३० दिन) करना नंतर वह बीज रोपण करना·॥२३॥ एक हाथ लंबा और चौडा·
और दो हाथ गहिरा ऐसा गडहा बनायके वह पानी और दूध मिश्रित करके उसे

चूर्णीकृतैर्माषतिलैर्यवैश्चप्रपूरयेन्मृत्तिकयांतरस्थैः॥मत्स्यामिषां
भःसहितंचहन्याद्यावद्घनत्वंसमुपागतंतत्॥२५॥उप्तंचबीजं
चतुरंगुलाधोमत्स्याम्भसामांसजलैश्चसिक्तं॥वल्लीभवत्याशुशुभ
प्रवालाविस्मापनीमंडपमावृणोति॥२६॥शतशोंऽकोल्लसंभूतफल
कल्केनभावितं॥एतत्तैलेनवाबीजंश्लेष्मातकफलेनवा॥२७॥
वापितंकरकोन्मिश्रमृदितत्क्षणजन्मकं॥फलभारान्विताशाखाभ
वतीतिकिमद्भुतं॥२८॥श्लेष्मातकस्यबीजानिनिष्कुलीकृत्यभाव
येत्प्राज्ञः॥अंकोल्लविज्जलाद्भिश्छायायांसप्तकृत्वेवं॥२९॥माहि
षगोमयघृष्टान्यस्यकरीषेचतानिनिक्षिप्य॥करकाजलमृद्योगे
न्युप्तान्यन्हाफलकराणि॥३०॥ध्रुवमृदुमूलविशाखागुरुभंश्रव
णस्तथाश्विनीहस्तं॥उक्तानिदिव्यदृग्भिःपादपसंरोपणेभानि॥३१
॥ ॥इतिवृक्षायुर्वेदः॥ ॥अथप्रासादलक्षणं॥कृत्वाप्रभूतंसलिलमा
रामान्विनिवेश्यच॥देवतायतनंकुर्याद्यशोधर्माभिवृद्धये॥१॥७॥॥

पूर्णकरना·औरसूखनेपरअग्नीसेदग्धकरना·नंतरमधु·घृतउसमेभस्मडालके
वहगड्हामेलेपकरना॥२४॥उड्दी·तिल·जवइनकाचूर्णकरकेवहभीतरकेमृ
त्तिकामेयुक्तकरनाऔरमत्स्य·मांसजलयुक्तकरकेकठिनहोनेतकताड़नकर
ना(ठोकना)॥२५॥उसमेचारअंगुलकेनीचेबीजरोपणकरनाऔरमत्स्य·मांसस
हितजलसेसिंचनकरना·तोवृक्षकोउत्तमऔरआश्चर्यकारकऐसेअंकुरआवतेहैं
औरवहमंडपकोशीघ्रआवरण(वेष्टन)करतेहैं॥२६॥अंकोलवृक्षकेफलक
ल्केन(रससे)१००वारसिंचनअथवाउसीकेतेलसे१००वारसिक्तअथवाश्ले
ष्मातक(लिसोरा)केरससेवातेलसे१००वारकोईभीबीजसिंचनकरके॥२७॥पत्थर
केपानीसेमिश्रभूमीमेरोपणकरनातोउसीकालमेवहबीजकोअंकुरआवतेहैं·नं
तरफलभारसेयुक्तडारहोगीइसमेक्याआश्चर्यहै॥२८॥लिसोरकाबीजबुद्धि
वाननेकृत्रिमतुष(त्वचा)निकालकेअंकोलयुक्तजलसेभेंकेछायामेसुखावना
ऐसासातदिनकरकेभैंसकेगोबरमेघर्षणकरकेवहीगोबरमेओलेकेजलसे
युक्तमृत्तिकामेरोपणकरना·उसकोएकदिनमेफलआवतेहैं॥३०॥ ॥उत्तरा
त्रय·रोहिणी·मृग·रेवती·चित्रा·अनुराधा·मूल·विशाखा·पुष्य·श्रवण·अश्विनी·
हस्त·यहनक्षत्रदिव्यदृष्टीऋषीनेवृक्षलगावनेकोशुभकहेहैं॥३१॥इतिबृह
त्संहितायांवृक्षायुर्वेदोनामपंचपंचाशत्तमोध्यायः॥५५॥अथप्रासादलक्षण॥बहु
तजलकरकेवृक्षवाटिकास्थापनकरके·यशऔरधर्मवृद्धिकेअर्थउहांदेवालयकरना
॥१॥

इष्टापूर्तेन लभ्यंते ये लोकास्तान्बुभूषता॥ देवानामालयः कार्यो
द्वयमप्यत्र दृश्यते॥२॥ सलिलोद्यानयुक्तेषु कृतेष्वकृतकेषु च॥ स्था
नेष्वेतेषु सान्निध्यमुपगच्छंति देवताः॥३॥ सरःसु नलिनीछत्रनिर
स्तरविरश्मिषु॥ हंसांसास्फिप्तकल्हारवीचीविमलवारिषु॥४॥ हंस
कारंडवक्रौंचचक्रवाकविराविषु॥ पर्यंतनिचुलच्छायाविश्रांतजल
चारिषु॥५॥ क्रौंचकांचीकलापाश्च कलहंसकलस्वनाः॥ नद्यस्तो
यांशुका यत्र शफरीकृतमेखलाः॥६॥ फुल्लतीरद्रुमोत्तंसाः संगम
श्रोणिमंडलाः॥ पुलिनाभ्युन्नतोरस्या हंसहासाश्च निम्नगाः॥७॥
वनोपांतनदीशैलनिर्झरोपांतभूमिषु॥ रमंते देवता नित्यं पुरेषूद्या
नवत्सु च॥८॥ भूमयो ब्राह्मणादीनां याः प्रोक्ता वास्तुकर्मणि॥ता ए
व तेषां शस्यंते देवतायतनेष्वपि॥९॥ चतुःषष्टिपदं कार्यं देवतायत
नं सदा॥ द्वारं च मध्यमं तत्र समदिक्स्थं प्रशस्यते॥१०॥ ७॥ ७॥

यज्ञ और वापीकूपतडागादि इनकरके जो लोक प्राप्त होते है उसको इच्छा करनेवा
ले पुरुषने देवालय करना· देवालय करनेमे यज्ञ और वाप्यादिक यह दूनोही
प्राप्त होता है·॥२॥ जल और उपवन इनकरके युक्त और नवीन बनाए वास्तनः
सिद्ध ऐसे स्थानमे देवता सान्निध्य करते है·(तहां आवते है)॥३॥ कमल पत्री
छत्र इन्होने दूर किया है सूर्य किरण जहां ऐसे सरोवरमे· हंस भुजसे ताडित क
मलयुक्त तरंगसे स्वच्छ है जल जहां ऐसे· हंस· कारंडव· क्रौंच· चक्रवाक· यह
शब्द करते हैं जहां ऐसे· आसमंताद्भागमे जलवेतसोंकी छायेमे विश्रांत है जल
चर जहां ऐसे सरोवरमे देवता रहते हैं·॥४॥५॥ क्रौंचपक्षी यही है कांची (मेख
ला) समुदाय जिनके ऐसे· पीनवर्ण हंसके है मधुर शब्द जिनके विषे ऐसे· जल
यही है वस्त्र जिनके ऐसे· छोटे मत्स्य है मेखला जिनके ऐसे नदीके विषे देव
तारममाण होते हैं॥६॥ प्रफुल्लित जो तीरस्थ वृक्ष यही है कर्णभूषण जिनके ऐ
से· दो नदीका संगम सो है श्रोणिमंडल जिनका ऐसे· तीरमे जो उन्नत भाग व
ही है स्तन जिनके ऐसे· हंस यही है हास्य जिनका ऐसी नदी जहां होय तहां देवता
रहते हैं·॥७॥ वनसमीप नदी और पर्वतके झरनेके समीप भूमीके विषे और बा
गयुक्त ऐसे नगरमे भी नित्य देवता रहते हैं·॥८॥ ब्राह्मणादि वर्णको जो भूमी वास्तु
कर्ममे (अ·५३ श्लो·९६।९७) कथन किया वही ब्राह्मणादि वर्णको देवालय बांधनेके वा
स्ते प्रशस्त होती है·॥९॥ देवालय सर्वकाल चतुःषष्टिपद (अ·५३ श्लो·५५) इसके कथ
न किये समान ६४ पदका करना· वह देवालयको समदिशाके मध्यभागमे द्वार प्रश
स्त होता है·॥१०॥

योविस्तारो भवेद्यस्य द्विगुणा तत्समुन्नतिः॥ उच्छ्रायाद्यस्तृतीयोंश
स्तेन तुल्या कटिर्भवेत्॥११॥ विस्तारार्द्धं भवेद्गर्भो भित्तयोन्याः समं
ततः॥ गर्भपादेन विस्तीर्णं द्वारं द्विगुणमुच्छ्रितं॥१२॥ उच्छ्रायात्पाद
विस्तीर्णा शाखा तद्वदुदुंबरः॥ विस्तारपादप्रतिमं बाहुल्यं शाख
योः स्मृतं॥१३॥ त्रिपंचसप्तनवभिः शाखाभिस्तत्प्रशस्यते॥ अधः
शाखाचतुर्भागे प्रतीहारौ निवेशयेत्॥१४॥ शेषं मंगल्यविहगैः
श्रीवृक्षस्वस्तिकैर्घटैः॥ मिथुनैः पत्रवल्लीभिः प्रमथैश्चोपशोभयेत्
॥१५॥ द्वारमानाष्टभागोना प्रतिमास्यात्सपिंडिका॥ द्वौ भागौ प्रति
मा तत्र तृतीयांशश्च पिंडिका॥१६॥ मेरुमंदरकैलासविमानच्छ
न्दनंदनाः॥ समुद्रपद्मगरुडनंदिवर्धनकुंजराः॥१७॥ गुहराजो वृ
षो हंसः सर्वतोभद्रको घटः॥ सिंहो वृत्तश्चतुष्कोणः षोडशाष्टास्त्रय
स्तथा॥१८॥ इत्येते विंशतिः प्रोक्ताः प्रसादाः संज्ञया मया॥ यथो
क्तानुक्रमेणैव लक्षणानि वदाम्यतः॥१९॥ ॥ ॥ ॥ ॥

देवालयके चौफेरके चौडईके जितने हाथ होंय॰ उस्के दूना हाथ देवालयकी उ
चाई होय उचाईके तृतीयांश इतनी कटी कहिये भीतरका गर्भ किंवा घुंम
डरकी उचाई होय॥११॥ चौडईके अर्ध इतनी गर्भ की चौडई (औरलंबा
ई) होय॰ गर्भ के चौफेर भीती (दीवाल) करना॰ गर्भ के चौडईके चतुर्थांश
इतनी दरवाजेकी चौडई करना औरउस्के दूना द्वारकी उचाई करना॥१२॥ द्वा
रके उचाईके चतुर्थांश इतनी बाजूके शाखाकी चौडई होय॰ तैसेही डेवढी कर
ना॰ शाखाके चौडईके चतुर्थांश इतनी शाखाकी मोटाई होय॥१३॥ यह मोटा
ई ३।५।७।९। इत्यादि शाखासे (पल्लेसे) पूरी करना॰ बाजूके नीचेके चतुर्थांशमें प्र
तीहार (नंद्यादिक) रखना॰॥१४॥ शाखाके शेष ऊपरका भाग मंगलपक्षी॰ श्री
वृक्ष॰ स्वस्तिक घट॰ मिथुन॰ पत्रवल्ली॰ गण इनकरके सुशोभित करना॥१५॥
द्वारके उचाईके अष्टमभागसे कमती॰ पिंडिकासहित प्रतिमा करना॰ उस्मे दो
भाग मूर्ति औरतिसरा भाग पिंडिका करना॰॥१६॥ १ मेरु॰ २ मंदर॰ ३ कैलास॰ ४
विमानच्छंद॰ ५ नंदन॰ ६ समुद्र॰ ७ पद्म॰ ८ गरुड॰ ९ नंदिवर्धन॰ १० कुंजर॰॥१७॥
११ गुहराज॰ १२ वृष॰ १३ हंस॰ १४ सर्वतोभद्र॰ १५ घट॰ १६ सिंह॰ १७ वृत्त॰ १८ चतु
ष्कोण॰ १९ षोडशास्त्रि॰ २० अष्टास्त्रि॥१८॥ यह २० नाम प्रासादके हमने कथन
किया आगेके श्लोकसे क्रमसे यह प्रासादके लक्षण कहते हैं॥१९॥ वह प्रासाद
के मध्यमे षट्कोण॰ बारमरातिब्बा नानाप्रकारके कुहरे (खिडकी मोखा

तत्र षडस्त्रिर्मेरुर्द्वादशभौमो विचित्रकुहरश्च॥ द्वारैर्युतश्चतुर्भिर्द्वात्रिं
शद्धस्तविस्तीर्णः॥२०॥ त्रिंशद्धस्तायामो दशभौमो मंदरः शिखर
युक्तः॥ कैलासोपि शिखरवानष्टाविंशोष्टभौमश्च॥२१॥ जालगवा
क्षकयुक्तो विमानसंज्ञस्त्रिसप्तकायामः॥ नंदन इति षड्भौमो द्वा
त्रिंशत्षोडशांडयुतः॥२२॥ वृत्तसमुद्गनामा पद्मः पद्माकृतिः शया
नष्टौ॥ शृंगेणैकेन भवेदेकैव च भूमिकानस्य॥२३॥ गरुडाकृतिश्च
गरुडो नंदीति च षट् चतुष्कविस्तीर्णः॥ कार्यश्च सप्तभौमो विभूषि
तो अंडैश्च विंशत्या॥२४॥ कुंजर इति गजपृष्ठः षोडशहस्तः समंततो
मूलात्॥ गुहराजः षोडशकस्त्रिचंद्रशाला भवेद्वलभी॥२५॥ वृष
एकभूमिशृंगो द्वादशहस्तः समंततो वृत्तः॥ हंसो हंसाकारो घटो
ऽष्टहस्तः कलशरूपः॥२६॥ द्वारैर्युतश्चतुर्भिर्बहुशिखरो भवति स
र्वतोभद्रः॥ बहुरुचिरचंद्रशालः षड्विंशः पंचभौमश्च॥२७॥॥

झरोखा इनकरके युक्त चारो दिशामे चारद्वारसे युक्त ३२हाथ चौडा ६४हाथ ऊंचा
ऐसा मेरुप्रासाद होता है॥२०॥ षट्कोण ३० हाथ चौडा ६० हाथ ऊंचा दस मरातिः
का शिखरयुक्त मंदरसंज्ञक प्रासाद होता है कैलासप्रासाद भी षट्कोण शिः
खरयुक्त २८ हाथ चौडा ५६ हाथ ऊंचा आठ मरातीका होता है॥२१॥ विमानसंज्ञ
क प्रासाद जालीदार खिडकी गवाक्षसे युक्त २१ हाथ चौडा ४२ हाथ ऊंचा आठ
मरातीका होता है नंदनसं० ६ मरातिका ३२ हाथ चौडा ६४ हाथ ऊंचा १६ शिख
रसे युक्त ऐसा होता है॥२२॥ समुद्गसं० वर्तुल और पद्मसं० कमलाकार अष्ट
कोण दूनो प्रासाद ८ हाथ चौडा १६ हाथ ऊंचा एकही शिखर और एक मरातिः
ऐसे दूनो प्रासाद होते हैं॥२३॥ गरुड और नंदिवर्धन यह दूनो गरुडाकृति होते हैं
उस्मे प्रथम पक्ष पुच्छ सहित और दुसरा पक्ष पुच्छ रहित और २४ हाथ चौडा
४८ हाथ ऊंचा सातमजला २० शिखरसे शोभित ऐसे दूनो होते हैं॥२४॥ कुंज
रसंज्ञक हस्तिपृष्ठके समान इस्की १६ हाथ चौडई ३२ हाथ ऊंचाई होय गुहराजसं
ज्ञक गुहाकार १६ हाथ चौडा ३२ हाथ ऊंचा और दोनो प्रासादकी एक भूमी और व
लभी तीन शिरोगृहसे युक्त होय॥२५॥ वृषसं० प्रासाद (देवालय) एकमजला
और एक शिखर १२ हाथ चौडा २४ हाथ ऊंचा और वर्तुलाकार (गोल) होय हंस
सं० हंसाकार एकमजला और एक शिखर ८ हाथ चौडा १६ हाथ ऊंचा होय घटसं
ज्ञक कलशके समान ८ हाथ चौडा और १६ हाथ ऊंचा एक मजला और एक शिखर
होय॥२६॥ सर्वतोभद्रसंज्ञक चारदिशामे चारद्वारसे युक्त बहुत शिखरसे युक्त

सिंहः सिंहाक्रांतो द्वादशकोणोष्टहस्तविस्तीर्णः॥ चत्वारोंजनरूपाः
पंचांडयुतस्तु चतुरश्रः॥२८॥ भूमिकांगुलमानेन मयस्याष्टोत्तरंशतं
सार्द्धं हस्तत्रयं चैव कथितं विश्वकर्मणा॥२९॥ प्राहुः स्थपतयश्चात्र
मतमेकं विपश्चितः॥ कपोतपालिसंयुक्तान्यूना गच्छंति तुल्यतां॥३०
॥ प्रासादलक्षणमिदं कथितं समासाद्गर्गेण यद्विरचितं तदिहास्ति स
र्वं॥ मन्वादिभिर्विरचितानि पृथूनि यानि तत्संस्मृतिं प्रति मयात्र कृतो
ऽधिकारः॥३१॥ ॥इति प्रासादलक्षणं॥ ॥अथ वज्रलेपः॥ आमंतिंदु
कमामंकपित्थकं पुष्पमपि च शाल्मल्याः॥ बीजानि शल्लकीनां धन्व
नवल्को वचा चेति॥१॥ एतैः सलिलद्रोणः क्वाथयितव्योऽष्टभागशेषश्च
॥ अवतार्योऽस्य च कल्को द्रव्यैरेतैः समनुयोज्यः॥२॥ श्रीवासकरसगु
ग्गुलुभल्लातककुंदुरूकसर्जरसैः॥ अतसीबिल्वैश्च युतः कल्कोऽयं व
ज्रलेपाख्यः॥३॥ प्रासादहर्म्यवलभीलिंगप्रतिमासु कुड्यकूपेषु॥
संतप्तो दातव्यो वर्षसहस्रायुतस्थायी॥४॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बहुत सुंदर शिरोगृह से युक्त २६ हाथ चौडा ५२ हाथ ऊंचा पांच मजला· चतुरस्र हो
य॥२७॥ सिंहसंज्ञक· सिंह के समान द्वादशकोण· ८ हाथ चौडा १६ हाथ ऊंचा· एक
मजला करना· इन· चतुष्कोण· षोडशकोण· अष्टकोण· यह चारोंही नामके समान
(वर्तुल· चतुष्कोणादि) अंधकार युक्त· एक शिखर होय· उसमें चतुष्कोण मात्र पांच
शिखरसे युक्त होय· शेष तीन एक शिखर होंय॥२८॥ मयनामकके मतमे १०८ अंगु
ल भूमिका (सर्व ऊंचाई) होय· विश्वकर्माने साढे तीन हाथ भूमिका कथन किया॥
२९॥ विद्वान् शिल्पशास्त्रज्ञ जो सो यह दूनो मतका ऐक्य करते हैं· सो ऐसा की· क
मती मान कपोतपालिके से युक्त करनेसे बराबर होता है·॥३०॥ यह प्रासादलक्षण
जो हमने कथन किया वह गर्गने किये प्रासादलक्षण सर्व हैं· मन्वादिकने किया वि
स्तारसे जो प्रासाद लक्षण वह देखके हमने इहां यह अधिकार किया·॥३१॥ ॥ इ
ति बृहत्संहितायां प्रासादलक्षणं नाम षट्पंचाशोऽध्यायः॥५६॥ अथ वज्रलेपः
॥ अपक्व तेंदूके फल· अपक्व कैथके फल· शाल्मली वृक्षके पुष्प शल्लकी वृक्षके बीज·
धन्वन वृक्षकी छाल· वच· यह द्रोण (२५६ पल कहिये ८५३ $\frac{1}{3}$ तोला) परिमित जल
मे डालके काढा करके अष्टमांश शेष रखके उतारना· नंतर श्रीवासक (देवधूप) वृ
क्षका दूध· रस· (पारा) गुग्गुल· भेलावा· लोहवाण वा देवदारुका दूध· राल· अलसी·
बेलफल इनसे युक्त वह काढा करना तो यह वज्रलेप नामक लेप होता है·॥१॥२॥३
॥ देवालय· गृह· गवाक्ष· शिवलिंग· देवप्रतिमा· भित्ति· कूप· (कुंवा तलाव इत्यादि ज
लाधार)

लाक्षाकुंदुरुगुग्गुलुगृहधूमकपित्थबिल्वमध्यानि॥ नागबलाफ
लतिंदुकमदनफलमधूकमंजिष्ठाः॥५॥ सर्जरसरसामलकानिचे
तिकल्कः कृतोद्वितीयोऽयं॥ वज्राख्यः प्रथमगुणैरयमपितेष्वेवका
र्येषु॥६॥ गोमहिषाजविषाणैः खररोम्णा महिषचर्मगव्यैश्च॥ निं
बकपित्थरसैः सहवज्रतरोनामकल्कोऽन्यः॥७॥ अष्टौसीसकभागाः
कांसस्यद्वौतुरीतिकाभागः॥ मयकथितोयोगोऽयंविज्ञेयोवज्रसंघा
तः॥८॥ ॥इतिवज्रलेपः॥ ॥अथप्रतिमालक्षणं॥ जालांतरगेभानौ
यदणुतरंदर्शनंरजोयाति॥ तद्विद्यात्परमाणुंप्रथमंतद्धिप्रमाणानां
॥१॥ परमाणुरजोवालाग्रलिक्षयूकायवोंऽगुलंचेति॥ अष्टगुणानियथो
त्तरमंगुलमेकंभवतिमात्रा॥२॥ देवागारद्वारस्याष्टांशोनस्ययस्तृ
तीयोंऽशः॥ तत्पिंडिकाप्रमाणंप्रतिमातद्विगुणपरिमाणा॥३॥

इनकेविषे यह पूर्वोक्त वज्रलेप गरम करकेदेना (लगावना) तो वह दसहजा
रवर्षतक तैसेहीरहताहै (छूटतानही)॥४॥ लाख देवदारुकादूध गुग्गुल
गृहधूम कैथकाफल बेलकीगुद्दी नागबलाकाफल (गणगेरी) तेंदुकाफल
धतूरेकाफल मौहाकाफल मंजीठ सालवृक्षकादूध (राल) रस (पारा) अंबरा
इनका काढा पूर्ववत्करके अष्टमभागशेषलेना और गरमकरकेलगावना
यह दुसरा वज्रलेप पूर्वोक्त गुणसेयुक्त पूर्वोक्तप्रासादिकमेदेना॥५॥६॥
गौ भैंस मेढा इनकेसींग गर्दभकारोंवा भैंस और गौ इनके चर्म निंब कैथकाफल
रस (पारा) इनकाकाढा पूर्ववत् करना तो यह वज्रतरलेपसंज्ञक दुसराकाढा पू
र्वप्रमाण लगावना॥७॥ आठभाग सीसा दोभाग कांसा पितल वा जस्ता वा लो
हकाकीट एकभाग इस्कोएकत्रकरना यह वज्रसंघात मयनामक शिल्पज्ञ
नेकथनकियाहै यह पूर्वकेसमान देवालयादिककोलगावना तो पूर्वके प्रमा
णरहताहै॥८॥ ॥इतिबृहत्संहितायांवज्रलेपोनामसप्तपंचाशोध्यायः ५७॥
॥अथप्रतिमालक्षणम्॥ ॥सूर्यकिरण गवाक्ष (मोखेमे) जोआवे उसमेजो सूक्ष्म
रज दृष्टिगोचर होताहै वह परमाणुहै यह सर्वप्रमाणमे प्रथमहै॥१॥ परमाणु
रज वालाग्र लिक्षा यूका यव अंगुल यह पहिलेसे अष्टगुणितकरेतो आगेकीअं
गुल संख्याहोतीहै (८ परमाणूका १ रज ८ रजका १ वालाग्र ८ वालाग्रका १ लिक्षा
८ लिक्षाका १ यूका ८ यूकाका १ यव ८ यवका १ अंगुल)॥२॥ देवालयके द्वारकी जो
उचाई उसमेउसीका अष्टमांशकमकरके शेषांकका जो तृतीयांश वह पिंडिकाका
(बैठक) प्रमाणहोताहै उससे दूना प्रतिमाका प्रमाणजानना॥३॥ ४॥ ५॥ ६॥

स्वैरंगुलप्रमाणैर्द्वादश विस्तीर्णमायतं च मुखं॥ नग्नजिता तु चतुर्दश दैर्घ्येण द्राविडं कथितं॥४॥ नासाललाटचिबुकग्रीवाश्चतुरंगुलास्तद्वत्कर्णौ॥ द्वे अंगुले च हनुके चिबुकं तु द्व्यंगुलं विस्तृतं॥५॥ अष्टांगुलं ललाटं विस्तारात् द्व्यंगुलात्परे शंखौ॥ चतुरंगुलौ तु शंखौ कर्णौ तु द्व्यंगुलं पृथुलौ॥६॥ कर्णोपांतः कार्योऽर्धपंचमे भ्रूसमेन सूत्रेण॥ कर्णस्रोतः सुकुमारकं च नयनप्रबंधसमं॥७॥ चतुरंगुलं वसिष्ठः कथयति नेत्रांतकर्णयोर्विवरं॥ अधरोंगुलप्रमाणस्तस्यार्धेनोत्तरोष्ठश्च॥८॥ अर्धांगुला तु गोच्छा वक्त्रं चतुरंगुलायतं कार्यं॥ विपुलं तु सार्धमंगुलमव्यात्तं त्र्यंगुलं व्यात्तं॥९॥ द्व्यंगुलतुल्यौ नासापुटौ च नासापुटाग्रतोऽत्तेया॥ स्याद्व्यंगुलमुच्छ्रायश्चतुरंगुलमंतरं चाक्ष्णोः॥१०॥ ३॥

(पीठकी उचाई छोडके फकत मूर्तीकी उंचाई लेके उस्का १२ अंश लेना· नंतर वह द्वादशांशका नवमांश निकालना जो नवमांश आवे सो यह कार्यसंबंधी अंगुल समझना यह अंगुलके मानसे मूर्तीका १०८ अंगुल प्रमाण आगे कथन किया है· उदाहरण ५६ अंगुल मूर्ती करना है उस्का १२ अंश ४ ⅔ उस्का ९ अंश कहिये अर्ध अंगुल वा किंचित् अधिक आवता है· तितने यह कार्यसंबंधी अंगुल समझना) यह अंगुलसे १२ अंगुल लंबा और १२ अंगुल चौडा प्रतिमाका मुख करना· नग्नजितने १४ अंगुल प्रमाण कथन किया सो द्राविडदेशका मान है॥४॥ नासिका· ललाट· चिबुक· (अधरोष्ठके नीचेका भाग) कंठ· कर्ण· यह अवयव चार चार अंगुल होय· २ हनु और चिबुक यह भाग दो अंगुल विस्तार होय हनु कहिये मुख और कंठ इनकी संधी और चिबुक कहिये मुखका अधोभाग॥५॥ ललाटका विस्तार आठ अंगुल करना· वह ललाटके दोनो तरफ दो अंगुल आगे शंख करना सो नीचे चार अंगुल दीर्घ करना· कर्ण दो अंगुल पृथुल (विस्तीर्ण करना·॥६॥ नेत्रके कोनेसे साढे चार अंगुल परकान करना और उस्का ऊपरभाग भौं इतना ऊंचा करना· कर्णच्छिद्र और सुकुमारक (छिद्रके समीपका ऊंचा भाग) यह भाग नेत्रप्रबंध (नेत्रमलस्थान) इसके तुल्य (१ अंगुल) करना·॥७॥ नेत्रांत और कर्ण इनका मध्यभाग चार अंगुल होय ऐसा वसिष्ठ ऋषी कहते हैं· अधरोष्ठ १ अंगुल और ऊपर ओष्ठ अर्ध अंगुल करना॥८॥ गोच्छा (मोछ) अर्ध अंगुल विस्तीर्ण करना· मुख चार अंगुल विस्तीर्ण और डेढ अंगुल चौडा करना· मुख हसित करना होय तो· मध्यसे ३ अंगुल व्यात्त (विस्तीर्ण) करना·॥९॥ नासिकाका पुट दो अंगुल और नासापुटाग्र भी दो अंगुल और नासिकाकी ऊंचाई भी दो अंगुल करना· दो नेत्रके अंतर चार अंगुल करना·॥१०॥ ३॥

द्व्यंगुलमितोऽक्षिकोशो द्वे नेत्रे नतत्रिभागिका तारा॥ दृक्तारा पंचांशो नेत्रविकाशोंऽगुलं भवति॥११॥ पर्यन्तात्पर्यन्तं दश भ्रुवोऽर्धांगुलं भ्रुवोर्लेखा॥ भ्रूमध्यं द्व्यंगुलकं भ्रूर्दैर्घ्येणांगुलचतुष्कं॥१२॥ कार्या तु केशरेखा भ्रूबंधसमांगुलार्धविस्तीर्णा॥ नेत्रांते करवीरकमुपन्यसेदंगुलप्रमितं॥१३॥ द्वात्रिंशत्परिणाहाच्चतुर्दशायामतोंऽगुलानि शिरः॥ द्वादश तु चित्रकर्मणि दृश्यंते विंशतिरदृश्याः॥१४॥ आस्यं सकेशनिचयं षोडश दैर्घ्येण नग्नजित्प्रोक्तं॥ ग्रीवा दश विस्तीर्णा परिणाहाद्विंशतिः सैका॥१५॥ कंठाद्द्वादश हृदयं हृदयान्नाभिश्च तत्प्रमाणेन॥ नाभीमध्यान्मेढ्रांतरं च तत्तुल्यमेवोक्तं॥१६॥ ऊरू चांगुलमानैश्चतुर्युता विंशतिस्तथा जंघे॥ जानुकपिच्छे चतुरंगुले च पादौ च तत्तुल्यौ॥१७॥ द्वादशदीर्घौ षट्पृथुतया च पादौ त्रिकायतांगुष्ठौ॥ पंचांगुलपरिणाहौ प्रदेशिनी त्र्यंगुलं दीर्घा॥१८॥ अष्टांशाष्टांशोनाः शेषांगुलयः क्रमेण कर्त्तव्याः॥ सचतुर्थभागमंगुल मुत्सेधोंऽगुष्ठकस्योक्तः॥१९॥

नेत्रके पलक (नेत्राच्छादन) दो अंगुल· नेत्र दो अंगुल· उसके तृतीयांशसे तारा (पुतरी) दो अंगुलका पंचमांश नेत्रविकाश (नेत्रविस्तृती) १ अंगुल करना·॥११॥ भौंके अंतसे दूसरे भौंका अंत १० अंगुल· भ्रुकुटीकी रेषा अर्धांगुल विस्तृत· भ्रूमध्यभाग २ अंगुल· एकएक भ्रुकुटी चारचार अंगुल लंबी करना॥१२॥ ललाटपर केशरेषा भ्रूबंधतुल्य (१० अंगुल) दीर्घ और अर्ध अंगुल विस्तीर्ण करना· नेत्रके अंतमे १ अंगुलप्रमाण करवीरपत्रक (मूषिका इति प्रसिद्ध) करना॥१३॥ मस्तकका वर्तुल घेर ३२ अंगुल और विस्तार १४ अंगुल करना· उसमेसे चित्रकर्ममे १२ अंगुल नजर (पड)ता है· और २० नजर पडता नही·॥१४॥ केशसमूहसहित मुखकी लंबाई १६ अंगुल (१४ अंगुल मुख और केशसमूह २ अंगुल) नग्नजित् शिल्पज्ञने कथन किया· ग्रीवा (कंठ) १० अंगुल विस्तीर्ण और घेर २१ अंगुल करना॥१५॥ कंठसे १२ अंगुल हृदय और हृदयसे नाभी १२ अंगुल और नाभीमध्यसे मेढ्र (लिंग) मध्यभाग १२ अंगुलही कथन किया है·॥१६॥ जंघा २४ अंगुल और पेंडुरी भी २४ अंगुल दीर्घ करना· ढेउना ४ अंगुल और पादभी ४ अंगुल दीर्घ करना॥१७॥ पादएडीसे अंगुष्ठतक १२ अंगुल लंबा और ६ अंगुल चौडा करना· अंगूठा ३ अंगुल दीर्घ और ५ अंगुल घेर करना· प्रदेशिनी (अंगुष्ठके पासकी तीन अंगुल दीर्घ करना॥१८॥ शेष तीन अंगुली प्रदेशिनीके अपेक्षा अष्टांश कमती क्रमसे करना· कहिये प्रदेशिनीके अपेक्षा मध्यमा· मध्यमासे अनामिका· अनामिकासे कनिष्ठिका· यहअ

अंगुष्ठनखः कथितश्चतुर्थभागोनमंगुलंतज्ज्ञैः॥शेषनखानामर्धांगु
लंक्रमात्किंचिदूनंवा॥२०॥जंघाग्रेपरिणाहश्चतुर्दशोक्तस्तुविस्तारः
पंच॥मध्येतुसप्तविपुलापरिणाहात्त्रिगुणिताःसप्त॥२१॥अष्टौतु
जानुमध्येवैपुल्यंत्र्यष्टकंतुपरिणाहः॥विपुलौचतुर्दशोरूमध्येद्वि
गुणश्चतत्परिधिः॥२२॥कटिरष्टादशविपुलाचत्वारिंशच्चतुर्युतापरिधौ॥अंगुलमेकंनाभिर्वेधेनतथाप्रमाणेन॥२३॥चत्वारिंशद्द्वि
युतानाभीमध्येनमध्यपरिणाहः॥स्तनयोःषोडशचांतरमूर्ध्वेक
क्षेषडंगुलिके॥२४॥कार्यावष्टावंसौद्वादशबाहूतथाप्रबाहूच॥बा
हूषड्विस्तीर्णौप्रतिबाह्वंगुलचतुष्कं॥२५॥षोडशबाहूमूलेपरि
णाहाद्द्वादशाग्रहस्तेच॥विस्तारेणकरतलंषडंगुलंसप्तदैर्घ्येण॥
॥२६॥पंचांगुलानिमध्याप्रदेशिनीमध्यपर्वदलहीना॥अनयातु
ल्याचानामिकाकनिष्ठातुपर्वोना॥२७॥पर्वद्वयमंगुष्ठःशेषांगुल्यस्त्रि
भिस्त्रिभिःकार्याः॥नखपरिमाणंकार्यंसर्वासांपर्वणोऽर्धेन॥२८॥ ॥

शाकमतीकरना॰सवाअंगुलअंगुष्ठकीउचाईकहाहै॰॥१९॥अंगुष्ठका नख॰पौन
अंगुल प्रतिमालक्षणज्ञने कथनकिया॰शेषसर्वअंगुलीकेनखअर्धअंगुलअ
थवा क्रमसेकुछकमती —— जिसप्रकारसे सुंदरनजरपडे ऐसेकरना॥२०॥
पेंडुरीके अंतमे १४ अंगुलघेर॰पांचअंगुलविस्तारकरना॰ पेंडुरीका मध्यभाग ७
अंगुलविस्तार और २१ अंगुलघेरकरना॰॥२१॥ऊनेकेमध्यभागमे ८ अंगुल पृ
थुल(विस्तीर्ण)और २४ अंगुलपरिणाह(घेर)करना॰जंघामध्यभागमे १४ अं
गुलविस्तीर्ण और २८ अंगुलपरिधी(घेर)करना॰॥२२॥कटी १८ अंगुलविस्ती
र्ण और ४४ अंगुलघेरकरना॰ नाभी गहिरी १ अंगुल और विस्तीर्ण एकअंगुल
करना॥२३॥ नाभीकामध्यघेर ४२ अंगुलकरना॰ स्तनकाअंतर॰(मध्यभाग)
१६ अंगुलकरना॰ स्तनकेऊपर ६ अंगुल तिरछीकांख करना॰॥२४॥ स्कंध॰ ८ अं
गुलदीर्घकंठके बाजूसेकरना॰ १२ अंगुलबाहु और प्रबाहू भी १२ अंगुलदीर्घकरना
बाहु ६ अंगुल और प्रबाहू ४ अंगुल विस्तीर्णकरना॰॥२५॥ बाहूके मूलप्रदेशमे १६
अंगुलघेर और हस्ताग्रमे १२ अंगुलघेरकरना॰ हस्ततलकी चोडई ६ अंगुलऔर ७
अंगुललंबईकरना॰॥२६॥ मध्यांगुली ५ अंगुलदीर्घकरना॰ प्रदेशिनी मध्यांगु
ली पर्वार्धसेकमतीकरना॰ प्रदेशिनी इतनी अनामिकाऔर कनिष्ठिका अना
मिकाके पर्वकेअर्धसेकमतीकरना॰॥२७॥ दोपर्वका अंगुष्ठ करना॰ शेषसर्व अंगु
लीतीन ३ पर्वकरना॰ सर्वअंगुलीके नख वह वह अंगुलीकेपर्वार्धसेकरना॰॥२८॥

देशानुरूपभूषणवेषालंकारमूर्तिभिः कार्या॥ प्रतिमालक्षणयुक्ता संनि
हिता वृद्धिदा भवति॥२९॥ दशरथतनयो रामो बलिश्च वैरोचनिः शतं विंशं॥
द्वादशहान्याः शेषाः प्रवरसमन्यूनपरिमाणाः॥३०॥ कार्योष्टभुजो भग
वांश्चतुर्भुजो द्विभुज एव वा विष्णुः॥ श्रीवत्सांकितवक्षाः कौस्तुभमणि
भूषितोरस्कः॥३१॥ अतसीकुसुमश्यामः पीतांबरनिवसनः प्रसन्नमु
खः॥ कुंडलकिरीटधारी पीनगलोरःस्थलांसभुजः॥३२॥ खड्गगदा
शरपाणिर्दक्षिणतः शांतिदश्चतुर्थकरः॥ वामकरेषु च कार्मुकखेटक
चक्राणि शंखश्च॥३३॥ अथ च चतुर्भुजमिच्छति शांतिद एको गदा
धरश्चान्यः॥ दक्षिणपार्श्वे ह्येवं वामे शंखश्च चक्रं च॥३४॥ द्विभुजस्य
तु शांतिकरो दक्षिणहस्तोऽपरश्च शंखधरः॥ एवं विष्णोः प्रतिमा कर्त्त
व्या भूतिमिच्छद्भिः॥३५॥ बलदेवो हलपाणिर्मदविभ्रमलोचनश्च
कर्त्तव्यः॥ बिभ्रत्कुंडलमेकं शंखेंदुमृणालगौरवपुः॥३६॥ ॥ ॥

देशाचारके अनुरूप. भूषण. वेष. अलंकार. इनकरके लक्षणयुक्त प्रतिमा करना.
वह सन्निहित (पास) रहने. वृद्धिकार होती है॥२९॥ दशरथका पुत्र राम और वि
रोचनका पुत्र बलि यह १२० अंगुल करना. शेष सर्व देवतोंकी मूर्ती १२० मे १२ अंगुल
कमती १०८ अंगुल करना. वह उत्तम ९६ अंगुल मध्यम. ८४ अंगुल कनिष्ठ हो
तीहै॥३०॥ भगवान् विष्णु. अष्टभुज वा चतुर्भुज अथवा द्विभुज करना. श्रीवत्स
से चिन्हित वक्षस्थल. कौस्तुभमणीसे भूषित उरस्क. अतसी (नीसी) के पुष्पस
मान श्यामवर्ण पीतांबर वस्त्रयुक्त. प्रसन्नमुख. कानमे कुंडल और मस्तकपर कि
रीट धारण करनेवाला. कंठ. वक्षस्थल. स्कंध. बाहु. यह पुष्ट. दक्षिण हस्तमे
खड्ग. गदा. बाण. यह आयुध और चौथा नीचेका हस्त शांतिद. (प्रश्नकर्त्ताके स
न्मुख ऊर्ध्वांगुली) ऐसे और बाए हस्तमे धनुष्य. ढाल. चक्र. शंख. यह आयु
ध अष्टभुजामे करना॥३१॥३२॥३३॥ चतुर्भुज करनेकी इच्छा करे तो दहिना
एक शांतिद और दूसरा गदाधर. वाम शंख और चक्र इनको धारण करे ऐसे
चार हाथ करना॥३४॥ द्विभुज विष्णुके हस्त दक्षिण शांतिद. वाम शंखधर.
ऐसे करना. इस प्रकारसे विष्णूकी प्रतिमा ऐश्वर्य इच्छावालेने करना॥३५॥
नांगर हाथमे मदसे चंचल नेत्र एक कुंडल कानमे धारण करनेवाला और
शंख. चंद्र. कमलतंतु इनके समान गौर शरीरका ऐसा बलराम करना॥३६॥
॥एकानंशा (नामकी) देवी बलदेव और कृष्ण इनके बीचमे कटीपर बांया
हाथ और दहिने हस्तमे कमल धारण करनेवाली. ऐसी द्विभुजा करना॥३७

एकानंशा कार्या देवी बलदेवकृष्णयोर्मध्ये ॥ कटिसंस्थितवामकरा सरोजमितरेण चोद्वहती ॥३७॥ कार्या चतुर्भुजा या वामकराभ्यां सपुस्तकं कमलं ॥ द्वाभ्यां दक्षिणपार्श्वे वरमर्थिष्वक्षसूत्रं च ॥ ३८॥ वामेष्वष्टभुजायाः कमंडलुश्चापमंबुजं शास्त्रं ॥ वरशरदर्पणयुक्ताः सव्यभुजाः साक्षसूत्राश्च ॥३९॥ सांबश्च गदाहस्तः प्रद्युम्नश्चापभृत्सुरूपश्च अनयोः स्त्रियौ च कार्ये खेटकनिस्त्रिंशधारिण्यौ ॥४०॥ ब्रह्मा कमंडलुकरश्चतुर्मुखः पंकजासनस्थश्च ॥ स्कंदः कुमाररूपः शक्तिधरो बर्हिकेतुश्च ॥४१॥ शुक्लश्चतुर्विषाणो द्विपो महेंद्रस्य वज्रपाणित्वं ॥ तिर्यग्ललाटसंस्थं तृतीयमपि लोचनं चिन्हं ॥४२॥ शंभोः शिरसींदुकला वृषध्वजोऽक्षि च तृतीयमप्यूर्ध्वं ॥ शूलं धनुः पिनाकं वामार्धे वा गिरिसुतार्धं ॥४३॥ पद्मांकितकरचरणः प्रसन्नमूर्तिः सुनीचकेशश्च ॥ पद्मासनोपविष्टः पितेव जगतो भवेद्बुद्धः ॥४४॥ आजानुलंबबाहुः श्रीवत्सांकः प्रशांतमूर्तिश्च ॥ दिग्वासास्तरुणो रूपवांश्च कार्योऽर्हतां देवः ॥४५॥ नासाललाटजंघोरुगंडवक्षांसि चोन्नतानि रवेः ॥ कुर्यादुदीच्यवेषं गूढं पादादुरो यावत् ॥४६॥

चतुर्भुज करे तो बाँए २ हाथमे पुस्तक और कमल · दहिने २ हाथमे याचकको वर देना और रुद्राक्षमाला यह होय ॥३८॥ अष्टभुजा करे तो बाँए ४ हाथमे कमंडलु · धनुष्य · कमल · पुस्तक यह आयुध और दहिने ४ हाथमे वर · बाण · ऐना · रुद्राक्षमाला यह होंय ॥३९॥ कृष्णपुत्र · सांब इस्के हाथमे गदा और प्रद्युम्न सुंदररूप और हाथमे धनुष्य · ऐसा करना इनदूनोंकी स्त्री ढाल और तरवार धारण करे ऐसी दो करना ॥४०॥ हाथमे कमंडलु · चारमुख · कमलपर बैठा ऐसा ब्रह्मा करना · कुमार (पांच वर्षका लडका) इस रूपका · शक्ति धारण करनेवाला · मयूरध्वज ऐसा स्कंद (कार्तिकस्वामी) करना ॥४१॥ श्वेत और चारदंतका इंद्रका हाथी · उस्के ऊपर हाथमे वज्र (आयुध) और तिरछा ललाटपर तीसरा नयन यह भी चिन्ह · ऐसा इन्द्र करना ॥४२॥ शिवके मस्तकपर चंद्रकी कला · वृषभध्वज · ऊपर तिसरा नेत्र · एक हाथमे शूल और दूसरेमे पिनाक सं० धनुष्य ऐसा शिव करना अथवा वाम अर्ध अंगपर पार्वतीका अर्धांग करना तो अर्धगौरीश्वर होता है ॥४३॥ कमल चिन्हयुक्त हाथ और पाद · शांतस्वरूप · बहुत छोटे केश · कमलासनपर बैठा · सर्वजगतका पिता समान ऐसा बुध (बौद्ध) करना ॥४४॥ आजानुबाहू · (ढेउनेतक लंबे हाथ) श्रीवत्सचिह्न · शांतमूर्ति (जितेंद्रिय · हास्यवदन) नग्न · तरुण · सुंदररूप ऐसा अर्हतका कहिये जैनका देव (जीन) करना ॥४५

विश्राफः स्वकररुहे पाणिभ्यां पंकजे मुकुटधारी॥ कुंडलभूषितवद
नःप्रलंबहारो वियद्गवृतः॥५७॥ कमलोदरद्युतिमुखः कंचुकगुप्तः
स्मितप्रसन्नमुखः॥ रत्नोज्ज्वलप्रभामंडलश्च कर्त्तुःशुभकरोऽर्कः॥५८
सौम्यातुहस्तमात्रावसुदाहस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा॥ क्षेमसुभिक्षायभ
वेत्त्रिचतुर्हस्तप्रमाणा या॥५९॥ नृपभयमत्यंगायां हीनांगायामकल्य
ताकर्त्तुः॥ शातोदर्यां क्षुद्भयमर्थविनाशः कृशांगायां च॥६०॥ मरणंतु सक्ष
तायां शस्त्रनिपातेन निर्दिशेत्कर्त्तुः॥ वामावनता पत्नीं दक्षिणविनता
हिनस्त्यायुः॥६१॥ अंधत्वमूर्ध्वदृष्ट्या करोति चिंतामधोमुखी दृष्टिः॥
सर्वप्रतिमास्वेवं शुभाशुभं भास्करोक्तसमं॥६२॥ लिंगस्य वृत्तपरि
धिं दैर्घ्येणासूत्र्य तत्त्रिधा विभजेत्॥ मूले तच्चतुरस्रं मध्ये त्वष्टाश्रि
वृत्तमधः॥६३॥ चतुरस्रमवनिखाते मध्यं कार्यं तु पिंडिकाश्वभ्रे॥
दृश्योच्छ्रायेण समासमंततः पिंडिकाश्वभ्रात्॥६४॥ ७॥ ७॥

नासिका· ललाट· पेंडुरी· जंघा· गाल· छाती यह सूर्यका ऊंचाकरना· उदीच्य (उत्तर
दिशाके पुरुषके वेषके समान वेष) पांवसे छातीतक गुप्त· (चोलकधारी) अपनेन
खमेबाहू यही २ कमल धारण करने वाला· मस्तकमे मुकुटधारक· कुंडलसे शो
भितमुख· कंठमे लंबाहार· वियद्ग (सारसपक्षी) इनकरके वेष्टित॥५६॥५७॥ क
मलके गर्भके समान कांतीसे युक्तमुख· कंचुक (अंगरखा) इसे गुप्त शरीर· हा
स्ययुक्त और प्रसन्नमुख· रत्नके समान उज्वल कांति मंडलसे युक्त· ऐसा सूर्य·
करनेवालेको शुभकारक होताहै·॥५८॥ १ हस्तप्रमाण ऊंची प्रतिमा शुभ २ हा
थ ऊंची प्र॰ द्रव्यदायक ३ हस्त प्रतिमा कल्याणकारक होतीहे· और ४ हाथ ऊंची
प्रतिमा सुभिक्षकारक होतीहैं॥५९॥ प्रतिमा अति स्थूल होयतो राजभय· अंग
हीन होयतो कर्त्ताको अशुभकारक· कृशउदर होयतो दुर्भिक्षभय· प्रतिमा कृश
होयतो द्रव्यनाश·॥६०॥ व्रणसे युक्त होयतो शस्त्रपातसे कर्त्ताको मरण कह
ना। वाम अंग नम्र होयतो कर्त्ताके स्त्रीका नाश· दक्षिण अंग नम्र होयतो कर्त्ताका
आयुष्यनाश·॥६१॥ ऊर्ध्वदृष्टी होयतो कर्त्ताको अंधत्व· अधोमुख दृष्टि (नीचे
नजर) होयतो कर्त्ताको चिंता होतीहै· इसप्रकारसे सर्व प्रतिमाका शुभाशुभ फल
सूर्यप्रतिमाके समान जानना·॥६२॥ लिंगके वृत्तका घेर नापके उतना लंबा करना·
उस लंबाईका तीन भाग करना· उसमे पहिला चतुरस्र· मध्यमे अष्टकोण· तिसरा
वर्तुल (गोल) करके पहिला चतुरस्र भूमीमे· मध्य अष्टास्रि पिंडिकामे बैठावना
तिसरा गोलभाग चारो तरफसे उचाईसे समान दृश्य ऐसा करना· जितना लिंगका

कृशा दीर्घं देशघ्नं पार्श्वविहीनं पुरस्य नाशाय ॥ यस्य क्षतं भवेन्मस्त
केविनाशाय तल्लिंगं ॥ ५५ ॥ मातृगणः कर्त्तव्यः स्वनामदेवानुरूपकृ
तचिन्हः ॥ रेवंतोऽश्वारूढो मृगया क्रीडादिपरिवारः ॥ ५६ ॥ दंडी य
मो महिषगो हंसारूढश्च पाशभृद्वरुणः ॥ नरवाहनः कुबेरो वाम
किरीटी बृहत्कुक्षिः ॥ ५७ ॥ प्रमथाधिपो गजमुखः प्रलंबजठरः कु
ठारधारी स्यात् ॥ एकविषाणो बिभ्रन्मूलककंदं सुनीलदलकंदं ॥ ५८
॥ इति प्रतिमालक्षणम् ॥ ॥ अथ वनसंप्रवेशः ॥ कर्तुरनुकूलदिव
से दैवज्ञविशोधिते शुभनिमित्ते ॥ मंगलशकुनैः प्रास्थानिकं च वन
संप्रवेशः स्यात् ॥ १ ॥ पितृवनमार्गसुरालयवल्मीकोद्यानतापसाश्र
मजाः ॥ चैत्यसरित्संगमसंभवाश्च घटतोयसिक्ताश्च ॥ २ ॥ कुब्जा
नुजातवल्लीनिपीडिता वज्रमारुतोपहताः ॥ स्वपतितहस्तिनिपी
डितशुष्काग्निप्लुष्टमधुनिलयाः ॥ ३ ॥ तरवो वर्जयितव्याः शुभदाः स्युः
स्निग्धपत्रकुसुमफलाः ॥ अभिमतवृक्षं गत्वा कुर्यात्पूजां सबलिपुष्पां ॥ ४

दृश्य भाग उसके उचाई इतना श्वभ्र (गहिरी) समंततः (चारोतरफ) पिंडिका हो
य ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ लिंग कृश वा दीर्घ होय तो देशनाश जो पार्श्वभाग मे हीन सो नग
रका नाश करता है जिस लिंग के मस्तक पर क्षत (गडहा) वह कर्त्ता का नाश कर
ता है ॥ ५५ ॥ मातृकगण अपने नाम के देव के समान चिन्हका करना (मातृसमू
ह) रेवंत (पंचवा मनु) अश्वारूढ मृगया क्रीडादि परिवार युक्त करना ॥ ५६ ॥
यम दंड हस्त और महिषारूढ (भैंसे पर बैठा) ऐसा करना वरुण हंस पर बैठा
भया और पाश हाथमे ऐसा करना कुबेर मनुष्य पर बैठा और वाम भाग मे मु
कुट और विस्तीर्ण कुक्षि ऐसा करना (कहीं खरवाहनः कुबेरो ऐसा पाठ है)
॥ ५७ ॥ गणेश हाथी के मुखका लंबा जठर कुठार धारण करनेवाला एकदंत मूलक
कंद और सुनीलदलकंद इसको धारण करनेवाला ऐसा करना ॥ ५८ ॥ ॥ इति बृहत्सं
हितायां प्रतिमालक्षणं नामाष्टपंचाशोऽध्यायः ॥ ५८ ॥ ॥ अथ वनसंप्रवेशः ॥ प्रतिमा
करनेवाले को अनुकूल दिन मे ज्योतिषी ने विशोधित शुभनिमित्त मे प्रयाण संबंधी
शुभशकुन मे वन मे (बहुत वृक्षस्थान मे) प्रवेश करना ॥ १ ॥ श्मशान मार्ग देवाल
य वल्मीक बाग तपस्वी का आश्रम इसमे के वृक्ष चैत्य गावमे का बडा वृक्ष नदीसंग
म मे उत्पन्न वृक्ष और घट के जल से सिंचन किए वृक्ष ॥ २ ॥ कुब्ज (छोटे) अनुजात
(पीछे से उत्पन्न) वल्ली से पीडित (युक्त) बिजुली और वायु इसे पीडित स्वतः गिरा हा
थी से पीडित नीरस अग्नी से दग्ध मधुमक्षिका के स्थान ॥ ३ ॥ ऐसे वृक्ष वर्ज्य करना

सुरदारुचंदनशमीमधूकतरवः शुभा द्विजातीनां ॥ क्षत्रस्यारिष्टाश्व
त्थखदिरबिल्वा विवृद्धिकराः ॥५॥ वैश्यानांजीवकखदिरसिंधुकस्यं
दनाश्च शुभफलदाः ॥ तिंदुककेसरसर्जार्जुनाम्रशालाश्च शूद्राणां
॥६॥ लिंगं वा प्रतिमा वा द्रुमवत्स्थाप्या यथादिशं यस्मात् ॥ तस्माच्चिह्न
यितव्या दिशो द्रुमस्योर्ध्वमथवाधः ॥७॥ परमान्नमोदकौदनदधिपल
लोल्लोपिकादिभिर्भक्ष्यैः ॥ मद्यैः कुसुमैर्धूपैर्गंधैश्च तरुं समभ्यर्च्य ॥८
॥ सुरपितृपिशाचराक्षसभुजगासुरगणविनायकाद्यानां ॥ कृत्वा रा
त्रौ पूजां वृक्षं संस्पृश्य च ब्रूयात् ॥९॥ अर्चार्थममुकस्य त्वं देवस्य परि
कल्पितः ॥ नमस्ते वृक्ष पूजेयं विधिवत्संप्र गृह्यतां ॥१०॥ यानीह भू
तानि वसंति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तं ॥ अन्यत्र वासं परिक
ल्पयंतु क्षमंतु तान्यद्य नमोऽस्तु तेभ्यः ॥११॥ वृक्षं प्रभाते सलिलेन सिक्त्वा
पूर्वोत्तरस्यां दिशि सन्निकृत्य ॥ मध्वाज्यलिप्तेन कुठारकेण प्रदक्षिणं शेषम
तोऽभिहन्यात् १२

और पत्र-पुष्प और फल जिस्के स्निग्ध (चिक्कण मृदु) ऐसे वृक्ष शुभ होते हैं. अपने
को जो वृक्ष उस्के पास जायके बलि और पुष्प इसकरके पूजा करना ॥४॥ देवदारु-
चंदन-शमी-मोहा-यह वृक्ष ब्राह्मणको शुभ-निंब-अश्वत्थ-खैर-बेल-यह वृक्ष क्षत्रि
यकोवृद्धिदायक ॥५॥ जीवकवृक्ष-खैर-मेउडी-तेंदू यह वैश्यको शुभफलदायक
तेंदू-मौलसरी-अर्जुन-आम-साल-यह शूद्रको शुभ होते हैं ॥६॥ लिंग अथवा प्रति
मा वृक्षकी जैसी दिशा तैसी स्थापन करना-कहिये वृक्षकी जो पूर्व सो प्रतिमाकी पू
र्व दिशा-वृ० अधो भाग सो प्र० अधो भाग-वृ० ऊर्ध्व भाग सो प्र० ऊर्ध्व भाग इस प्र
माण करना इसवास्ते वृक्ष की दिशा और ऊर्ध्वाधोभागमे चिन्ह करना ॥७॥ क्षी
र-मोदक-भात-दही-कूटातिल-उल्लोपिका (पक्वान्नवि०) इत्यादि भक्ष्य पदार्थ-म
द्य-पुष्प-धूप-गंध इसकरके वृक्षकी पूजा करके ॥८॥ देव-पितर-पिशाच-राक्षस-ना
ग-दैत्य-प्रथमादिगण-विनायक (विघ्नहर्ता) भूत-प्रेत-सिद्ध-गंधर्व इत्यादिक
की रात्रीमे पूजा करके वृक्षको स्पर्श करके प्रार्थना करना ॥९॥ अमुक देवकी प्रति
मा करनेके वास्ते तुमको कल्पना किया है हे वृक्ष तुमको नमस्कार करते हैं-यह य
थाशास्त्र किया पूजा ग्रहण करो ॥१०॥ जो यह वृक्षपर भूत रहते हैं-सो यथाशास्त्र
दिया यह बली ग्रहण करके दुसरे स्थानमे रहनेके वास्ते जगा कल्पना करके और
हमारे ऊपर क्षमा करो-आज उनके कारण नमस्कार है ॥११॥ प्रातःकालमे वृक्षका
जलसे सिंचन करके ईशान दिशामे मधु और घृत इसे लिप्त ऐसे कुठारसे तोडनेका
प्रारंभ करके उसे प्रदक्षिण-शेष रहा वृक्ष तोडना ॥१२॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पूर्वेण पूर्वोत्तरतोऽथवोदक्पतेद्यदा वृद्धिकरस्तदास्यात्॥ आग्नेयकोणात्क्रमशोऽग्निदाहः क्षुद्रोगरोगास्तुरगक्षयश्च॥१३॥ यन्नोक्तमस्मिन्वनसंप्रवेशे निपातविच्छेदनवृक्षगर्भाः॥ इंद्रध्वजे वास्तुनि च प्रदिष्टाः पूर्वं मया तेऽत्र नथैव योज्याः॥१४॥ ॥इति वनसंप्रवेशः॥ ॥अथ प्रतिमाप्रतिष्ठापनं॥ दिशि सौम्यायां कुर्यादधिवासनमंडपं बुधः प्राग्वा॥ तोरणचतुष्टययुतं शस्तद्रुमपल्लवच्छन्नं॥१॥ पूर्वे भागे चित्राः स्रजः पताकाश्च मंडपस्योक्ताः॥ आग्नेय्यां दिशि रक्ताः कृष्णाः स्युर्याम्यनैर्ऋत्ययोः॥२॥ श्वेता दिश्यपरस्यां वायव्यायां तु पांडुरा एव॥ चित्राश्चोत्तरपार्श्वे पीताः पूर्वोत्तरे कोणे॥३॥ आयुः श्रीबलजयदा दारुमयी मृन्मयी तथा प्रतिमा॥ लोकहिताय मणिमयी सौवर्णी पुष्टिदा भवति॥४॥ रजतमयी कीर्तिकरी प्रजाविवृद्धिं करोति ताम्रमयी॥ भूलाभं तु महांतं शैली प्रतिमाथवा लिंगं॥५॥ शंकूपहता प्रतिमा प्रधानपुरुषं कुलं च घानयति॥ श्वभ्रोपहता रोगानुपद्रवांश्चाक्षयान्कुरुते॥६॥

पूर्व ईशान उत्तर यह दिशामे वह वृक्ष गिरे तो वृद्धिकारक होता है अग्निमे अग्निदाह दक्षिणमे रोग निर्ऋतिमे रोग पश्चिममे रोग वायूमे अश्वक्षय यह फल होते हैं॥१३॥ जो वृक्षनिपात छेदन वृक्षगर्भ यह वनसंप्रवेशमे कथन किया नही वह इंद्रध्वज (अ॰४३ श्लो॰१९।२०) इसमे और वास्तुप्रकरणमे पूर्वमे हमने कथन किया है सो इहां तैसे योजना करना॥१४॥ ॥इति बृहत्संहितायां वनसंप्रवेशो नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः॥५९॥ अथ प्रतिमाप्रतिष्ठापनं॥ उत्तर वा पूर्वदिशामे पंडितने अधिवासन (मूर्त्तीस्थापनके पूर्वदिनमे पूजा इत्यादि करना) इसका मंडप चार तोरणसे युक्त और प्रशस्त (यज्ञिय) वृक्षके पल्लवसे आच्छादित ऐसा करना॥१॥ मंडपके पूर्वदिशामे चित्रवर्ण माला और पताका कथन किया आग्नेइमे रक्तवर्ण दक्षिण और निर्ऋतीमे कृष्णवर्ण॥२॥ पश्चिममे श्वेत वायव्यमे पांडुवर्ण उत्तरमे चित्रवर्ण ईशानमे पीनवर्ण ऐसी माला और पताका करना॥३॥ काष्टकी अथवा मृत्तिकाकी प्रतिमा आयुष्य लक्ष्मी बल जयकारक हीरकादि मणिमय प्रतिमा लोककल्याणकारक सुवर्णकी प्र॰ पुष्टिकारक॥४॥ रौप्यकी प्र॰ कीर्तिकारक ताम्रकी प्र॰ प्रजावृद्धिकारक पाषाणकी प्रतिमा अथवा लिंग बडा (बहुत) भूमीलाभ करता है॥५॥ शंकूसे (शस्त्रके टोकसे) उपहत (दुःखित) प्रतिमा मुख्य पुरुष और कुल इनका नाश करती है श्वभ्रा (गड्डा) से उपहत जो प्रतिमा सो सब काल रोग और उपद्रव करती है॥६॥ मंडपमे भूमी लीपके वालुका और दर्भ——आस्तरण (बिछायके) भद्रासन (राजासन) इसके ऊपर मस्त

मंडपमध्येस्थंडिलमुपलिप्यास्तीर्यसिकतयाथकुशैः॥भद्रासनकृत
शीर्षोपधानपादांन्यसेत्प्रतिमां॥७॥प्लक्षाश्वत्थोदुंबरशिरीषवटसं
भवैःकषायजलैः॥मंगल्यसंज्ञिताभिःसर्वौषधिभिःकुशाद्याभिः॥
८॥द्विपवृषभोद्धृतपर्वतवल्मीकसरित्समागमतटेषु॥पद्मसरःसु
चमृद्भिःसपंचगव्यैश्चतीर्थजलैः॥९॥पूर्वशिरस्कां स्नातांसुवर्णर
त्नांबुभिश्चससुगंधैः॥नानातूर्यनिनादैःपुण्याहैर्वेदनिर्घोषैः॥१०॥
ऐंद्र्यांदिशींद्रलिंगामंत्राःप्राग्दक्षिणेग्निलिंगाश्च॥जप्तव्याद्विजमुख्यैः
पूज्यास्तेदक्षिणाभिश्च॥११॥योदेवःसंस्थाप्यस्तन्मंत्रैश्चानलंद्विजो
जुहुयात्॥अग्निनिमित्तानिमयाप्रोक्तानींद्रध्वजोच्छ्राये॥१२॥धूमा
कुलोपसव्योमुहुर्मुहुर्विस्फुलिंगकृन्नशुभः॥होतुःस्मृतिलोपोवा
प्रसर्पणंवाऽशुभंप्रोक्तं॥१३॥स्नातामभुक्तवस्त्रांस्वलंकृतांपूजितांकु
सुमगंधैः॥प्रतिमांस्वास्तीर्णायांशय्यायांस्थापकःकुर्यात्॥१४॥॥
सुप्तांसुनृत्यगीतैर्जागरकैःसम्यगेवमधिवास्य॥दैवज्ञसंप्रदिष्टे
कालेसंस्थापनंकुर्यात्॥१५॥

ककरके तकियापरपांव ऐसीप्रतिमारखना॥७॥प्लक्ष(पाकर) पीपर·गुलर·शिरस·बड
यह वृक्षकेपल्लवसे युक्त गरमजल औरमांगल्यसंज्ञक कुशादि सर्वौषधी (जया·जयं
ती·जीवपुत्रा·पुनर्नवा·विष्णुक्रांता·अभया·विश्वम्भरी·सहा·सहदेवी·पूर्णकोशा·श
तावरी·अ०४८ श्लो०३९।४०) इस्करके·गज और वृषभ·इनेखोदित·पर्वत·वल्मीक
नदीसंगमकेतीर·कमलयुक्ततलाव·इनकीमृत्तिका·पंचगव्य·तीर्थजल·इसकर
के·सुवर्ण और रत्नसे युक्त सुगंधिजलसे॥८॥९॥पूर्वमेमस्तककरके स्नानकरा
ना·उसकालमे नानाप्रकारके वाद्यके और पुण्याहवाचनके और वेदके शब्दघोषहो
नेरहे·॥१०॥पूर्वदिशामे इंद्रदैवत्य मंत्रका और आग्नेयीमे अग्निदैवत्य मंत्रकाजप
श्रेष्ठब्राह्मणनेकरना· और वहब्राह्मणकी दक्षिणादिकसे पूजाकरना॥११॥जि
सदेवताकी स्थापनकरनाहोयतो उस्केमंत्रसे अग्नीमेब्राह्मणने होमकरना·उस
कालमे अग्नीके निमित्तहमने पूर्वमे (अ०४३श्लो०२२) इंद्रध्वजखड़ाकरनेके कालमे
जोकहाहैसोइहां भीदेखना॥१२॥धूमसेव्याप्त·वामज्वालासे फिरनेवाला·बारंबा
र स्फुलिंग (चिनगी) करनेवाला ऐसा अग्नी शुभनहीं·तैसेही हवनकरनेवाले पुरोहि
तके स्मृतिकालोप वा पीछेहटना अशुभकथनकिया॥१३॥स्नानकराई नवीनवस्त्र
से युक्त उत्तमअलंकार·पुष्पगंध·धूप·इत्यादिकसे पूजित ऐसी प्रतिमा उत्तमप्रकार
केशय्याकेविषे प्रतिष्ठाकरनेवाले ने स्थापनकरना·॥१४॥ वहशापनकराए प्रतिमाके

अभ्यर्च्य कुसुमवस्त्रानुलेपनैः शंखतूर्यनिर्घोषैः॥ प्रादक्षिण्येन नयेदा
यतनस्य प्रयत्नेन॥१६॥ कृत्वा बलिं प्रभूतं संपूज्य ब्राह्मणांश्च सभ्यांश्च
॥ दत्वा हिरण्यशकलं विनिक्षिपेत्पिंडिका श्वभ्रे॥१७॥ स्थापकदैव
ज्ञद्विज सभ्यस्थपतीन् विशेषतोऽभ्यर्च्य॥ कल्याणानां भागी भवती
ह परत्र च स्वर्गी॥१८॥ विष्णोर्भागवतान्मगांश्च सवितुः शंभोः सभ
स्म — द्विजान् मातृणामपि मातृमंडलविदो विप्रान्विदुर्ब्रह्मणः॥ शा
क्यान्सर्वहितस्य शांतमनसो नग्नान् जिनानां विदुर्ये यं देवमुपाश्रि
ताः स्वविधिना तैस्तस्य कार्या क्रिया॥१९॥ उदगयने सितपक्षे शिशिर
गभस्तौ च जीववर्गस्थे॥ लग्ने स्थिरे स्थिरांशे सौम्यैर्धीधर्मकेंद्रगतैः॥
॥२०॥ पापैरुपचयसंस्थैर्ध्रुवमृदुहरितिष्यवायुदेवेषु॥ विकुजे दिने
ऽनुकूले देवानां स्थापनं शस्तं॥२१॥ सामान्यमिदं समासतो लोकानां
हितदं मया कृतं॥ अधिवासनसंनिवेशने सावित्रे पृथगेव विस्तरात् २२

आगे उत्तम नृत्य और गायन पूर्वक जागरणादि करके उनग प्रकारसे अधिवासन पूर्वमे क
रके नंतर ज्योतिषीने कथित मुहूर्त्तमे वह प्रतिमाका स्थापन करना॥१५॥ वह प्रतिमाकी
पुष्प·वस्त्र·गंधादि इस्करके पूजाकरके शंख और वाद्य इनका शब्द होने रहते·अधिवास
नमंडपमेसे निकलने. देवालयके दक्षिणतरफसे वह प्रतिमा प्रतिष्ठाकरनेवालेने भीतर
लेजाना॥१६॥ नंतर बहुत बलिकरके सभ्य ब्राह्मण इनकी पूजाकरके बैठकके गढेमे
सुवर्ण खंड डालके उसमे प्रतिमा स्थापन करना॥१७॥ उसकालमे स्थापनकर्त्ता ब्राह्मण
दैवज्ञ·ब्राह्मण·कसबी (बढई इ०) इनकी विशेष पूजाकरना·ऐसे प्रतिमा स्थापन करे तो
यजमान कल्याणका भोक्ता यहलोकमे और परलोकमे स्वर्गवास करनेवाला होताहै॥
१८॥ विष्णूका स्थापन करनेवाले भागवत्·सूर्यका स्था० मगसंज्ञक ब्राह्मण·शिवका
भस्मधारण करनेवाले (पाशुपत) मातृगणका·मातृमंडलवेत्ता·ब्रह्मदेवका ब्राह्म
ण·सर्वहितका (बौद्धका) शांतमनजो शाक्य (रक्तवस्त्रधारी) वह·जिनका नग्न (जैन)
संस्थापक जानना·जिस देवताका जिन्ने आश्रय स्वकीय शास्त्रसे किया उसने वह
देवताकी क्रिया (स्थापनादि कर्म) करना॥१९॥ उत्तरायणमे·शुक्लपक्षमे·शिशिरऋ
तूमे बृहस्पतीके गृह·होरा·द्रेष्काण·नवमांश·द्वादशांश·त्रिंशांश·यह षड्वर्गमे चंद्र
रहते·स्थिर लग्नमे·स्थिरांशमे·लग्नसे ५।९।१।४।७।१० यहस्थानमे शुभग्रह और ३।६।
१०।११ यहस्थानमे पापग्रह रहते·ध्रुव·(तीनो उत्तरा और रोहिणी·मृदु·(मृग·रेवती·
चित्रा·अनुराधा) श्रवण·पुष्य·स्वाती यह नक्षत्रमे भौमके विना दूवारमे·कर्त्ताको शुभ
कर ऐसे दिनमे देवताकी प्रतिष्ठा (स्थापना) शुभ होती है॥२०॥२१॥ यह प्रतिष्ठापन संक्षे

॥ इतिप्रतिष्ठापनम्॥ ॥अथगोलक्षणम्॥ ॥ पराशरःप्राह बृहद्रथाय गोलक्षणं यत्क्रियतेततोयं॥मयासमासःशुभलक्षणास्ताःसर्वाःस्ल थाप्यागमतोभिधास्ये॥१॥सास्राविलरूक्षाक्ष्यो मूषकनयनाश्चन शुभदागावः॥प्रचलच्चिपिटविषाणाःकरटाःखरसदृशवर्णाश्च॥२॥ दशसप्तचतुर्दंत्यःप्रलंबमुंडाननाविनतपृष्ठाः॥ह्रस्वस्थूलग्रीवा यवमध्यादारितखुराश्च॥३॥श्यावातिदीर्घजिव्हागुल्फैरतितनुभि रतिबृहद्भिर्वा॥अतिककुदाःकृशदेहानेष्टाहीनाधिकांग्यश्च॥४॥वृ षभोप्येवंस्थूलातिलंबवृषणःशिरातनक्रोडः॥स्थूलशिराचितगंड स्त्रिस्थानं मेहनेयश्च॥५॥मार्जाराक्षःकपिलःकरटोवानशुभदोद्वि जस्येष्टः॥कृष्णोष्ठतालुजिव्हःश्वसनोयूथस्यघातकरः॥६॥स्थूल शकृन्मणिशृंगःसितोदरःकृष्णसारवर्णश्च॥गृहजातोपित्याज्यो यूथविनाशावहोवृषभः॥७॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यसेसबदेवताका एकही लोकका कल्याणकारकऐसा हमनेकिया यह अधिवास न और प्रतिष्ठा सावित्रशास्त्रमे सर्वदेवतोंकी भिन्नभिन्न और विस्तारसेकथन कियाहै॥२२॥ ॥इतिबृहत्संहितायांप्रतिष्ठापनंनामषष्टितमोध्यायः॥६०॥ ॥अथ गोलक्षणम्॥ ॥पराशरऋषीने बृहद्रथनामकस्वशिष्यको जोगोलक्षणकथन कियासो देखकेहम यहउस्कासंक्षेपकहतेहैं गौसर्वजोभी शुभलक्षणहै तथापिशास्त्र प्रमाणसेकहतेहैं॥१॥स्रवे और स्वच्छनही औररूक्षऐसे है नेत्र जिनके ऐसी मू साकेसमाननेत्रकी ऐसी गौ शुभद नही हिलने और चिपटे हैं सींग जिनके ऐसी काला लाल और खरकेवर्णकी॥२॥१०।७।४ दांतकी लंबे मुखकी औरशींगकेबि ना पीठमे गहिरा ऐसी छोटी और स्थूलगरदन यवमध्य (पेटमात्रबडा पीछेऔ र आगे सूक्ष्म) फैलेखुरकी॥३॥श्याम और अतिलंबी जिव्हाकी बहुतछोटे और बहुतबडे गुल्फकी (कन्नखुरी) बडेगरदनकी कृशदेहकी कमतीवा अधिक अवयवकी ऐसी गौ शुभनही॥४॥वृषभभी ऐसाऊपरकेलक्षणसे युक्त शुभनही बडा और लंबा वृषण (आंड) शिरासे व्याप्त उदर बडे शिरासे व्याप्त गाल जिस्के त्रिस्थानमे हते (मूत्रपुरीष एककालमे करनेवाला और नेत्रका लिंगसे कहिये मू त्रसे सिंचनकरनेवाला)॥५॥बिलारकेसमाननेत्रका काला और करडे वर्णका ऐ सा वृषभ शुभनही परंतु ब्राह्मणको इष्टहै ओष्ठ तालु जिव्हा यहकाला जिस्का ऐ सा और श्वास करनेवाला ऐसा वृषभ यूथका (समूहका) घातकारक होताहै॥६॥श कृत (गोबरका चौथ) मणि (लिंग) सींग यह जिस्का बडाऐसा सफेद पेटका कुछ

श्यामकपुष्पचितांगो भस्मारुणसन्निभो बिडालाक्षः॥ विप्राणामपि न शुभं करोति वृषभः परिगृहीतः॥८॥ ये चोद्धरंति पादान्पंकादिव योजिताः कृशग्रीवाः॥ कातरनयनाहीनाश्च पृष्ठतस्तेन भारसहाः॥९॥ मृदुसंहतताम्रोष्ठास्तनुस्फिजस्ताम्रतालुजिह्वाश्च॥ तनुहस्वोच्चश्रवणाः सुकुक्षयः स्पृष्टजंघाश्च॥१०॥ आताम्रसंहतखुरा व्यूढोरस्का बृहत्ककुदयुक्ताः॥ स्निग्धश्लक्ष्णतनुत्वग्रोमाणस्ताम्रतनुशृंगाः॥११॥ तनुभूस्पृग्बालधयो रक्तांतविलोचना महोच्छ्वासाः॥ सिंहस्कंधास्तन्वल्पकंबलाः पूजिताः सुगताः॥१२॥ वामावर्तैर्वामे दक्षिणपार्श्वे च दक्षिणावर्त्तैः॥ शुभदा भवंत्यनडुहो जंघाभिश्चैणकनिभाभिः॥१३॥ वैडूर्यमल्लिकाबुद्बुदेक्षणाः स्थूलनेत्रवर्माणः॥ पार्ष्णिभिरस्फुटिताभिः शस्ताः सर्वेऽपि भारवहाः॥१४॥ घ्राणोद्देशे सवलिर्मार्जारमुखः सितश्च दक्षिणतः॥ कमलोत्पललाक्षाभः सुबालधिर्वाजितुल्यजवः॥१५॥ ॥ ॥ ॥

काला और कुछ श्वेत ऐसे रंगका ऐसा वृषभ अपने घरमे भया होय तथापि उस्का त्याग करना कारण वह वृषभ पशु समूहका नाशकारक होता है॥७॥ श्याम (काला) वर्णपुष्पसे युक्त अवयवका भस्म और लाल बिडालके नेत्रके समान नेत्रका वृष भले तो ब्राह्मणका भी कल्याण होता नहीं॥८॥ जिस वृषभपर बोझा रखनेसे कीचडमेसे पांव निकालना ऐसे पांव उठावने है वह सूक्ष्म कंठके भीतियुक्त नेत्रके पीठ झुकावे ऐसे वृषभ बोझाके उपयोगी नहीं॥९॥ मृदु मिले भए और लाल ऐसे हैं ओष्ठ जिनके ऐसे तनु (सूक्ष्म) स्फिज (पीछेका भाग) तालु और जिह्वा लाल ऐसे सूक्ष्म छोटे ऊंचे ऊंचे कानके सुंदर कुक्षिके सरलजंघाके॥१०॥ थोडे ताम्र और मिले भए खुरके अत्यंत दृढ वक्षस्थलके बडे स्कंधसे युक्त स्निग्ध मृदु और पतीले ऐसे है त्वचा (चर्म) और केश जिनके ऐसे लाल और सूक्ष्म ऐसे है सीग जिनके ऐसे॥११॥ सूक्ष्म और भूमीको स्पर्श करे पुच्छ जिनके ऐसे लाल है नेत्रके प्रांतभाग जिनके ऐसे बहुत ऊंचा सिंहके समान है स्कंध जिनका ऐसे सूक्ष्म और थोडी है कंबल (स्कंधके नीचेका भाग हिलता है सो) जिनके ऐसे उत्तम है गती जिनकी ऐसे वृषभ शुभ होते हैं॥१२॥ बाएं बाजूमे बाए फिरे भए और दहिने बाजूमे दहिने फिरे भए ऐसे केश जिनके ऐसे और बकरेके समान जंघाके बैल शुभ होता है॥१३॥ श्यामवर्ण हंसके नेत्र समान पानीके बुल्लेके समान जिस्के नेत्रके भौंमे स्थूल केश है ऐसे खुरोंके पीछेके भाग फूटे नहीं है जिनके ऐसे सर्व बैल बोझा लेजानेको योग्य हैं॥१४॥ नाकपर बली (रेषा) सहित बिलावके समान मुखका दहिने अंगमे श्वेत श्वेतकमल और नीलकमल और लाख इनके